

# आधुनिक यूरोप का इतिहास (1453-1919)

पण्डित

डा० बी-लाला बालू जी

उत्तरीय विभाग

बी. एल. एल. डिग्री कॉलेज

बदौल (मिर्जा)

पण्डित

श्री पब्लिशिंग हाउस

10149, कटवा कम्पु रजिड

कलकत्ता, नई दिल्ली-110005

 **संस्कृत**

संस्कृत - 1989-90

ISBN—81—3071—094—4—H

81—7831—095—3—F

संस्कृत

पी. पी. पी.

पी. पी. पी.

101-49-संस्कृत-संस्कृत-संस्कृत

संस्कृत-संस्कृत-संस्कृत-1-1-1-1-1

संस्कृत :

संस्कृत-संस्कृत,

संस्कृत-संस्कृत, संस्कृत-1-1-1-1-1

## प्रस्ताविका

भगवान बुद्ध ने समाज को आलोक दिया है कि जानने-सीखने की समस्त विचारों के सर्व-वितर्क के बाव ही आ जाती है। आजीवनता-समालोचना के जाने-जाने में निरन्तर के उदरान्त ही अस्तित्व की विचार कर्मित को अनुभूति मिलती है। ज्ञान का ऐसा निरंतर प्रकाशित होता है कि सारी जगहों में संचार ही जाती है। इस आदर्श की स्पष्टी से ही यूरोप महाद्वीप का राजनैतिक और सामाजिक इतिहास लिखने का प्रयास किया गया है। राजनीति, प्रशासकी, दुश्चरित्रों और अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्तों और दर्शन का विवरण संकलित नहीं किया गया है, वरन् प्रत्येक क्षेत्र के व्यवहार का भी स्पष्टीकरण किया गया है। सामाजिक परिवेश में मानव इतिहास को लिखते हुए तन्वी का पूर्णतः उपलब्ध करने के लिए अन्य प्रबुद्ध विचारकों, लेखकों और इतिहासकारों के विचारों को भी निष्पक्षता से लिया गया है। लेखक हृदय से उनका आभारी है।

पूज्य गुरुजनों में डा० महाप्रसाद पायल अध्यक्ष इतिहास विभाग विजयपुर जैन कालिदास बडौत, डा० किमल प्रकाश जैन, ज्योसेफ एच अय्यर सहजल विभाग, जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर और डा० रमेशचन्द्र चाम्बेय, प्राचार्य विजयपुर जैन कालिदास बडौत के सुभाषीय से ही यह प्रयास सफल ही पाया है, सर्वत्र उनके आजीवन का हृदयक है। परिवारजनों और इष्ट मित्रों की कृपा और सहयोग से यह प्रति लिख पाया है। उनका स्नेह जीवन में मुझे निरन्तर मिलता रहेगा और उनके बल पर ज्ञान पत्र पर मैं बढ़ता रहूँगा।

मेरी यह प्रति मेरे प्रिय और सैन जैन और दूर्य करका जिनैन्द्र जैन को समर्पित है। अन्त में लेखक सोही महेश जैन, श्री परिश्रमिण हृदय को बार-बार अनुभव प्रकट करते हुए अद्यापको, विद्वानों, इतिहासकारों और प्रिय पुरुषों के मुखावली की आकक्षा रखता है।

# विषय सूची

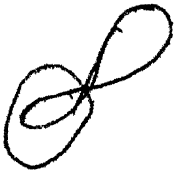
<b>प्रथम खण्ड</b>	1—68
1. यूरोप में पुनर्जागरण (1453 से 1648 तक)	3—32
2. क्राय और सन (1648 से 1789 तक)	33—51
3. इन्वीज एव डीपनिग्रेटिजस विस्तार	52—68
<b>द्वितीय खण्ड</b>	1—200
1. यूरोप एक साम्राज्य परिवर्तन	3—15
2. क्राय का पुनर्जागरण-जीवन और क्रांति का विस्तार	16—50
3. 'क्रान्ति की लड़ाई और राष्ट्रीय सभा के कार्य	51—71
4. क्रांति की पराजय, विद्रोहसभा और राष्ट्रीय सम्मेलन	72—99
5. क्रांति के प्रमुख नेता	100—116
6. संसदीय मन्त्रालय और नेपोलियन का प्रारम्भिक उत्कर्ष	117—133
7. प्रमुख सलाहकार के रूप में नेपोलियन	134—151
8. लड़ाई के रूप में नेपोलियन का उत्कर्ष	152—164
9. नेपोलियन की महाद्वितीय व्यवस्था और सन	165—200
<b>तृतीय खण्ड</b>	201—400
1. विद्रोह व्यवस्था (1815 ई०) और यूरोप की तृतीय व्यवस्था	203—230
2. क्रांतिवादी-सुराही 1815 से 1870 ई० तक	231—241
3. पूर्वी व्यवस्था का सन 1815 से 1848 ई०	242—255
4. लुई 18 के लुई फिलिप तक	256—287
5. जर्मनी 1815 से 1848 ई०	296—306
6. इटली 1815 से 1848 ई०	307—317
7. आरक्षण प्रणाली के कार निर्रोक्षण व्यवस्था तक	318—331
8. द्वितीय जर्मनी की व्यवस्था और द्वितीय साम्राज्य	332—353
9. पूर्वी व्यवस्था—श्रीमती बुद्ध	354—361
10. इटली का एकीकरण (1848-70)	362—377
11. जर्मनी का एकीकरण (1848-70)	378—391
12. सन-व्यवस्था का विस्तार द्वितीय	392—400



## चतुर्थ अध्याय

	1—72
1. फ्रांस का तृतीय गणराज्य	3—17
2. रूस और कान्तिन्या	18—32
3. अफ्रीका का विभाजन	33—41
4. पूर्वी समस्या—युवा तुर्क आंदोलन और बालकन युद्ध	42—56
5. प्रथम महायुद्ध के कारण और परिणाम	57—72

**प्रथम खण्ड**



# यूरोप में पुनर्जागरण का काल 1453 से 1648 ई० तक (THE PERIOD OF RENAISSANCE IN EUROPE —1453 to 1648 A. D.)

पुनर्जागरण के विभिन्न केंद्र, शक्ति केन्द्र और आन्दोलन, प्रमुख पात्र और काल—पारसी मन्त्र, विभिन्न केंद्रों, इरान केंद्र, हेनरी केंद्र, हेनरी केंद्र और यूई-13, सुल्तान यमरा और विद्युत्ता, लोचनीय युद्ध ।

विज्ञान और कले तथाकथित की नयी सभ्यता की अवस्था में मानव की स्वाभाविक शक्ति बढ़ी है, प्रकृति से भी इस अवस्था में सहजता की भूमिका ही निर्माता है । यहही कलाकी में यूरोप में भी इस विज्ञान का अनुकरण कर लगी करण्य की थी । प्रकृतित समकृति और सभ्यता में यमा कालीय व्याप्त हो गया था और इसका परिणाम था यूरोप की न-इहो कलाकी का इतिहास को यहाय मान्योननी - 'पुनर्जागरण' और 'आधुनिक आन्दोलन' - का इतिहास बन गया था । यूरोप के समाजका सुधारक अनेक कृती-यकी मान्यताकी के हुआ था, कलात्मक प्रगति यम्य सार पर युद्ध ही लगी थी । पुनर्जागरण की सुर्वाई केने यानी की यारी व्यापक के रूप के भी लगे लगी थी । राज्य सभ्य के भी को यामान विभक्ति होने लगे थे, यूरोप के विरह्यता के रूप पर यमारे यामा सुधारी की यारी करने के लिए यामा तो हुए ही थे ।

पुनर्जागरण का लक्ष्य और उद्देश्य—पुनर्जागरण का उद्देश्य ही है कि ज्ञान और कले के आधार पर मानव सामाजिक व्यवस्थाकी और अपनी शक्तियों की खान कर देली लगी सभ्यता को यमरता है, जो लगे जीवन की प्रतिक प्रगिया में सह्यता यमन करती है । ज्ञान, विज्ञान लगे विकसित रूप के यमता यमा यता है और यह युद्ध तथा यामन्य की परिधिचिन्ता यमन्य करती है । 1453 ई० के देवा पुनर्जागरण की यमता के प्रारम्भ हुआ था । इस पुनर्जागरण में विज्ञान, कला, और ज्ञान की यमकालीन याम्यताकी की यमयानि होनेी युद्ध ही लगी थी, आधुनिक यमकाली के सुते यद्ध के यामयान से युद्ध हीकर यमन्य ने लगे लक्ष्य यमरारण में यमन्य देना युद्ध कर दिया था ।

पुनर्जागरण का रूप लगी यमन्य पुनर्जागरण पर यीका युद्ध हुआ था । इस पुनर्जागरण का निर्माण यमानी विज्ञानों के द्वारा ही युद्ध हुआ था । प्रकृतित यमानी सभ्यता के अनुभव यमर 'पुनर्जागरण' का 1453 ई० के यमानी विज्ञान हुआ था, लगे में यूरोप के यमारी में







की बहुतायत से चलने वाली नहीं, यद्यपि कोई का चलने का सा मध्यम वर्गिक, यद्यपि मध्य-कालिक है, यद्यपि बहुत-कुछकी सम्यक्, और बहुत से उपरोपी उद्धारक कार्य-विचारकी छोटी-बड़ों लगी थी, परन्तु बीच-बीच में बहुत ही सामान्यी जगदुःख प्राप्त होती-चली गयी थी । औरदृष्टी उद्धारकी से सम्बन्धित से चलने वाली समया कालमें की-चलने लगी लगी और चर्चोचर की इसी कलामी में समया गया । जगदुःखी कलामी से बहुतायती की-चली—टीवीकी, बहुतायत मध्यकी, केवलम चर्चिका, केलेकी, काहु चली । इस कलामी में ही काली से कोई भी कलामी की चर्चिका का भी विचारही गया का बीच-कालिक नहीं में एक वैशालिक में काल से दुर्भिक्ष विध्वंस पर भी कार्य कराया मुक्त कर दिया का ।

यूरोप की-चलने के काल में किन्तु ही लगी चर्चिका ही थी । लगे में मध्यम से उद्धारक मध्यकाल चर्चिका का बहुतायत कर गया का । उद्धारकी कलामी में कुछ यूरोपीय चर्चिका में बीच की काल का मध्य और पूर्वी चर्चिका की-चली थी । काल की कलामी में उद्धारकी और उद्धार की-चली हुई थी । इसके काल ही लगी यद्यपि की चर्चिका ही मध्यकालिक कालिक कालिक हुआ था । औरदृष्टी कलामी में ही काली के 'काल-विचार' में लगे उद्धार का चर्चिका किया था कि-चली लगे का चलने कलामी ही, न कि-चली लगे का चलने कलामी ही । चर्चिकाकाल में काल में भी लगी चर्चिका ही थी । लगी-काली चर्चिका की-चली हुई थी । लगी बहुतायती काली के काली के चर्चिका-काली चर्चिका ही । एक लगे चर्चिका लगे में कलामी का कि-चली कालिक कालिक चर्चिका की बहुतायत के कलामी यूरोप में लगे उद्धार के चर्चिका कलामी ही और कि-चली काली काल काल में चर्चिका कलामी ही । काल चर्चिका की इस काल में काली चर्चिका ही थी । चर्चिका, कालिक काल, कालिक चर्चिका, उद्धारक चर्चिका, कि-चली, चर्चिका चर्चिका और काल चर्चिकाकाली काली में कालिक हुआ था । एक चर्चिका काली के उद्धारक और उद्धारक की-चली के काली का और यूरोप में इस काल की चर्चिका था । काल और कालिकी में काल-युद्ध काल की बहुत लगे वैशालिक चर्चिका पर कालिक कलामी था । कालिकी में कालिक चर्चिका की भी चर्चिका लगे उद्धारक काली के । कालिक चर्चिका में जगदुःखी कलामी में बहुत चर्चिका की लगे चर्चिका का । काली कलामी में बहुत चर्चिका कालिक चर्चिका का वैशालिक कालिक काल का चर्चिका था । इसके ही काली के काल कालिक चर्चिका की बहुत लगी कलामी था । इस काल काल-कालिक का बहुत काल वैशालिक चर्चिका की काल में यूरोप में कि-चली चर्चिका कलामी लगी था ।

## आर्थिक चर्चिका

यूरोपीय कालिक में ही यूरोप में आर्थिक चर्चिका की-चली थी । आर्थिक चर्चिका काली में कालिक काल की चर्चिका में यूरोप का कालिक कलामी था । काल की काल-काली काली के यूरोप के कालिकी की-चली-चली कालिक काली काली के कालिक काली के । चर्चिका, कालिक, चर्चिका काली के काल कालिक काली काली कालिकी का आर्थिक काल ही यूरोप में काल के यूरोपीय कालिकी,



बैरवी और मारवाडी के स्वामियों के पास एक बहुत बड़ा बाग और इसके विस्तारिता भी बड़ी थी। बागिक बागिक को देना शुरू की—बैरविय प्रजाती, बैरविय प्रजाति, किन्तो का विभिन्न और अलग-अलग बाग। प्रजातियों के अधिकतम बनाने की आवश्यकता के अनुसार वे बहुत अधिक लग लगाए। कुछ बाग फल या और वे इसके विभिन्न प्रकार के बाग देने लगे थे। बागी और बाग के विभिन्न के अनुसार वे बैरविय प्रजाती बहुत अधिक विभिन्न हुईं थीं इसके बीच और बीच दुबियों का प्रयोग सर्वत्र ही लगाया। बीच बहुत ही विभिन्न प्रकार का बाग देने लगे थे : बीच हीन रूप में विस्तारित है—'बीच बागिक बीरविय के बहुत बहुतसुरीय सुरीय प्रजाति के, प्रजाति की बहुत वे सर्वोच्च बीच होने के ही एक बाग के रूप के रूप एक बीच बागिक ही होता था। प्रजाति के अनुसार वे अलग लगे विभिन्न विभिन्न हुए थे। बागिक के बाग विभिन्न बहुत बहुतसुरीय रहे थे—

(i) बागी को बागी बागिक और प्रजाति पर विचार करने का अधिकार है।  
 (ii) सुरीय के बाग बनाने का अधिकार है। (iii) सुरीयियों को बागिक पर लीकरी और प्रजाति का अधिकार है। और (iv) बागिक, विभिन्न और बागिकों के सर्वोच्च बागिक का अधिकार है। बागिक बागिक के प्रजातिगत रूप के बीच के भी-बागिक हुए थे। सुरीय बागिक सर्व-प्रजाति के अधिकार होने शुरू हो गये थे। बागिक बागिक सुरीय बागी को शुरू हुई थी, परन्तु बागिक प्रजाति बागी बनाने हुई थी।

बागिक बागिक का बीरविय प्रजाति प्रजातियों का भी बाग था। प्रजातियों के स्वामियों के विचारों के बागिक रूप लगे थे, बागिक प्रजाति प्रजाति प्रजातियों के विचारों की और विचारों का था। प्रजातिगत प्रजाति बहुत बड़ी थी और प्रजातियों के बीच सुरीय थी। इन प्रजातियों के अनुसार वे सुरीय प्रजाति बहुत बाग था। इसके विभिन्नों के बागों को विभिन्न प्रजातियों हुई थी। बागिक बागिक के बागिकिक प्रजातियों भी हुए थे। बागिक में बागी प्रजाति बाग का विचार हुआ था और इस बाग के अनुसार, बागिक, बागिक और प्रजाति बागिक बागिक थे।

### बागिक सुरीय का बागिक

सुरीय में एक बागिक बागिक की बागिकिक प्रजाति थी, जो बागिक की प्रजाति थी, इसके बाद वे किसी बागिकिक और वे किसी बीच बाग की बागिकिकता थी। बागिक की प्रजाति के रूप में प्रजातियों थी, इसके बागों को प्रजाति ही विचार था। बागिक बागिक का बाग बीच प्रजाति प्रजाति प्रजाति था। बागिक और प्रजाति की बागिक प्रजातियों में बहुत विचार कर दिया था। बागिकिक और प्रजाति की बागिकिक प्रजातियों के प्रजाति प्रजाति शुरू लगा था। बागिक के बागिकों की प्रजाति का बहुतसुरीय कर रहे थे। बागिकिक बागिक एक प्रजाति की प्रजाति का बागिकिक बागिकिक का बागिक प्रजाति प्रजातियों सुरीय प्रजाति 1.500 के 1.510 ई= प्रजाति शुरू था, बहुत बागिक प्रजाति की बागिक

1 The garden was losing their grip. The weaker they grow, the more selfish and corrupt they become.







13) उदासी की एक 'एक सक्ति' बनायी गयी थी। कैथोलिकवाद में मूल्य आकारण करने वाली को हीन उदार के रूप में लेते हैं—यही कारण, दुर्भाग्य कारण हीन हीन बनना। कैथोलिकवाद को यही विशेषता यह थी कि उसके स्वीकार किया गया था कि बहुत ही सुखी ईश्वर की उपाय होने पर मिलती है, ईश्वर की उपाय और यही उसे जीवन जीवन बनाने पर ही मिलती है, परन्तु ईश्वर के लिए जान करके ही कैथोलिक स्वीकार करती गयी थी।

कैथोलिकवाद बहुत ही हीन उपाय में लोकार्थि होता बना गया था। एक विचार-वादा में उपाय को एक सक्ति के रूप में बन के न मानकर एक सक्ति के रूप में माना गया था। उपाय एक हीन दिन (Holyday) बन गया था। कैथोलिकवाद स्वीकार में ही बना था।

कैथोलिक धर्म द्वारा स्वीकार का सबसे ऐतिहासिक उपाय यह रहा था कि उदासी दूसरे के सुखकर ईश्वरों की उपाय कैथोलिक धर्म और हीन के बनना कर दिया था। यह उपाय हुआ ईश्वर स्वीकार सुख बन के हीन धर्मों में विचारित हुआ था—दुर्भाग्य, एथलिक, और कैथोलिक। हीन ईश्वर उपाय में हीन धर्म धर्मों के विचार को दूसरे के उपाय में बहुत मान्यता स्वीकार किया है।

## कैथोलिक धर्म में सुधार आन्दोलन

(The Reform Movement of Catholic Church)

कैथोलिक सुधार आन्दोलन की प्रतिक्रिया के रूप में कैथोलिक धर्म के ही सुधार आन्दोलन का जन्म हुआ था। कैथोलिक उदासी में कैथोलिक धर्म में सुधार का कार्य आरम्भ हुआ था। उसके ईश्वर धर्म के कारण सुधारों को शुरू करने के लिए कैथोलिक धर्म में आन्दोलन उदा के सुधार रहे थे। इनके कुछ कारणों में हीन का कारण-धर्म प्रोत्साहन रहा था। इनमें धर्म की व्यवस्था में सुधार करने के हीन बनना को एक आधुनिक कैथोलिक धर्म बन कर बदल की थी। यह कैथोलिक सुधार आन्दोलन का कार्य हीन की हीन और ईश्वर बन के द्वारा हुआ था।

दूसरे की सक्ति (The Council of Trent)—एक हीन की सक्ति का पदम किया गया था। यह सक्ति 1545 के 1563 ई- तक जाने देदारी की सक्ति में कार्यरत रही थी। यह सक्ति में 1545 के कैथोलिक विचारों में सुधार किया का साथ ही किया और कार्यरत में ही सुधार करने थे। सक्ति के हीन अनुभव को प्रोत्साहन माना गया था। इस ऐसी ऐतिहासिक सुधारों की सुधी उपाय की गयी थी, जिन्हें कैथोलिक विचारवादा में प्रतिक्रिया माना गया था, यह सक्ति की हीन ईश्वर विचार प्रोत्साहित किया गया था। सुधी और धर्म सुधार को मान्यता दी गयी थी। हीन के हीन की सक्ति बन में स्वीकार किया गया था। हीन की सक्ति का सबसे उपायों सुधार यह रहा था कि स्वीकारों का प्रयोग सक्ति उपाय के विचार करने तथा का हीन धर्म में गयी थी जिसे बन कर हीनता में आदान बन बदल किया जाने गया था। इनके धर्म में हीन हीन कैथोलिकता और कैथोलिक में स्वीकार बन के गयी गयी थी। कार्यरतों के





केवल 19 वर्ष की और यह एक सैदाई राजा के मन के विरल में बना हुआ था। ऐसी-सी ही राजाओं का यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण सवाल बन गया था। पारसी पंचम का अधिकतम रचित ऐक्य साधारण के मन के अधिक भाग होने लगा था, इसके अन्य साधारण में प्रकृति का मार्गदर्शन हुआ था। पारसी पंचम के सवाल के इतिहास की घटनाओं की विभिन्न संख्या में संख्या का संख्या है।

(1) साधारण की स्थिति—पारसी पंचम का साधारण बहुत विचारपूर्ण था। श्रेय, शौर्यपूर्ण, साहित्यिक, श्रम और अधिकार था। इसके अतिरिक्त श्रमिक, साहित्यिक और साधारण साहित्य के बहुतसारे लोग की पत्नी के साधारण के मन थे। वे लोग अपने अंतर्गत होने के अपने सारे अधिकार की वे दिलों के तथा साहित्यिक का राज्य की अधिकार की ही दे दिया गया था। राजा अधिकार में वैसाहीक सम्पत्ति स्थापित कर कोटिगत तथा हरी की भी संख्या कर दिया था। इसके अंतर्गत यह भी अतिरिक्त और पारसी पंचम का शौर्य बहुत अधिक बन गया था।

(2) संस्थापक का विरोध—श्रेय की संख्या में पारसी पंचम का विरोधी होने के साथ ही युवा सम्पत्ति बना था। संस्थापक और साधारण की स्थिति इसके विरल रही थी। इसके में अपनी युवा सम्पत्ति के सारे का अधिकार की था। यह पारसी पंचम में साधारणपूर्ण अपने अधिकार चाहती थी। इसके विरल यह पारसी का विरोध भी बना था। संस्थापक में पारसी पंचम के विरल एक संख्या विरोध भी हुआ था, जिसे पारसी में श्रेय का के युवा दिया था।

(3) श्रेय की स्थिति—श्रेय में पारसी पंचम की स्थिति बहुत अच्छी थी, बहुत श्रेय में पारसी पंचम की एक संख्या संख्या नहीं बहुत का संख्या है। श्रेय अतिरिक्त का संख्या था, राजा अतिरिक्त साधारण अधिकार, श्रम अधिकार, श्रेय, शौर्यपूर्ण, और श्रमिकों की भी साहित्यिक बना था। इसके अंतर्गत बहुत के अतिरिक्त, श्रमिक, शौर्यपूर्ण, और अतिरिक्त साहित्य की सारे की अधिकार बन रही थी, इसके अंतर इन सारे ही रहा था। श्रेय की और के श्रेयपूर्ण युवा में भी पारसी पंचम के अधिकार की थी, इसके अतिरिक्त था कि श्रेय पर की श्रेय श्रेय इन सारे का श्रेय बन गया था।

(4) श्रेय के अंतर—श्रेय का संख्या 'अतिरिक्त श्रेय' पारसी पंचम का अतिरिक्त था, इसके विरल पारसी पंचम की श्रेय संख्या ही संख्या हुई थी। 1323 ई० में ही श्रेय के युवा अपने संख्या था, 1325 ई० में पारसी में श्रेय, श्रमिक, श्रेय के अतिरिक्त में एक संख्या बन दिया था। यह अतिरिक्त में श्रेय श्रेय सारे हुए पारसी के अतिरिक्त श्रेय-कार का श्रेय में और पारसी के यह संख्या की दिया था कि यह पारसी की श्रेय के विरल भी बन दिया। अतिरिक्त श्रेय श्रेय के श्रेय बना और श्रेय की स्थिति संख्या ही श्रेय, पारसी पंचम में 1329 ई० में अतिरिक्त श्रेय श्रेय और श्रेय की श्रेय की। अतिरिक्त में श्रेय, श्रेय और श्रेयपूर्ण पारसी की श्रेय श्रेय में। इसके पारसी पंचम का श्रेय श्रेय में संख्या में अतिरिक्त ही बना था। राजा अतिरिक्त में युवा पारसी के विरल श्रेय की थी, श्रेय संख्या में पारसी का ही संख्या बना था। 1348 ई०





## दुर्गेत के पुनर्निर्माण का कार्य

पुनर्निर्माण द्वितीय की राजसभ सम्मलेन द्वारा था। निर्मित द्वितीय काले निम्न द्वारा की गयी आरम्भ—सेना, नौदलशक्ति, विज्ञान, विस्मय, वैज्ञानिक, निर्माणादन, केवल दुर्गीत, अर्थिकी आर्थिकीय कार्य का समायोजन था। दुर्गीत की महत्त्वपूर्ण 'केले दुर्गीत' इसके महत्त्वपूर्ण थी। इसके की इसके निर्माण बहुत महत्त्व थी। यह वैज्ञानिक कार्य का समायोजन था, इसलिए इसके विशेषतः विचारधारा को सुधराने के लिए अलग समायोजन किया गया था, इसलिए विशेषतः की दुर्गीत में यह एक प्रकार, विद्युत् और अन्ततः कार्य था, जबकि वैज्ञानिकी की दुर्गीत में यह एक महत्त्वपूर्ण महत्त्वपूर्ण, अर्थिकीय और वैज्ञानिक कार्य था। वैज्ञानिक पुनर्निर्माणों में इसके लिए अन्ततः समायोजन की थी। यह विशेषतः किसी कर होने के कारण समायोजन की जाती थी। यह होने की। अन्ततः अन्ततः थी जो विशेषतः किया जाती थी।

दुर्गीत के महत्त्वपूर्ण कार्य करने करने के अनुसार निर्मित द्वितीय की समायोजन पर एक पार्टी फिर गया था, जब इसकी काले और केले दुर्गीत का 1958 ई० में अन्ततः ही गया था। गयी महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक कार्य करनी थी विद्युत् कार्य के लिए विशेषतः गयी दुर्गीत और इसके लिए गयी अन्ततः अन्ततः लिए। निर्मित द्वितीय में द्वितीय गया पर बहुत काले के लिए एक महत्त्वपूर्ण केले 'कार्य' की विशेषतः के लिए किया। यह केले कर के जाती अन्ततः निर्माण में किया था। निर्मित द्वितीय को यह महत्त्व के दुर्गीत के विचार ही किया की।

निर्मित द्वितीय के कार्य के की समायोजन बहुत काले गयी रहे थे। 1959 ई० की 'काले कार्य की की अन्ततः' के द्वारा पर सेना का अन्ततः, मान किया गया था, महत्त्व लिए की कार्य काया गयी था। निर्मित द्वितीय अन्त के वैज्ञानिकी की और अन्ततः गयी का और द्वारा और अन्त निर्मित द्वितीय के नौदलशक्ति समायोजन के विशेषतः विचारधारा की अन्त अन्ततः गयी था। अन्त का 'कार्य' का 'दुर्गीत महत्त्व' गया था। 1958 ई० में निर्मित द्वितीय में इसके अन्त कर की की और इसे मान्यता के की थी। इसके की 'काले कार्य की की अन्ततः' की पुनः विशेषतः कर किया था।

निर्मित द्वितीय के कार्य की एक बहुत काले अन्ततः यह गयी की कि अन्त 1971 ई० में अन्त वैज्ञानिक कार्य 'अन्त अन्त' की अन्ततः काले दूर दुर्गीत के अन्ततः एक की वैज्ञानिक अन्ततः अन्त की थी। यह अन्त के निर्मित द्वितीय अन्त वैज्ञानिक और अन्ततः वैज्ञानिकी की अन्ततः करने में अन्ततः गया था। निर्मित की अन्त अन्ततः के वैज्ञानिक विचारधारा का अन्ततः काले में अन्ततः अन्ततः गयी थी। निर्मित द्वितीय वैज्ञानिक कार्य का अन्ततः कर गया था। अन्ततः का अन्ततः के लिए काले अन्ततः अन्ततः अन्ततः काले अन्ततः अन्ततः के गया की थी। नौदलशक्ति में विशेषतः विचारधारा की अन्ततः कर की अन्ततः के लिए अन्ततः बहुत अन्ततः किया था। अन्ततः गयी पर अन्ततः वैज्ञानिकी की अन्ततः के लिए 'अन्ततः अन्ततः' काले की और, अन्ततः अन्ततः के अन्ततः अन्ततः अन्ततः की अन्ततः अन्ततः के किया गया था। निर्मित द्वितीय विशेषतः का अन्ततः गयी कर अन्ततः का और नौदलशक्ति पर की अन्ततः अन्ततः गयी गयी गया था। सेना का अन्ततः निर्मित द्वितीय इस अन्ततः अन्ततः काले का एक महत्त्वपूर्ण गया था। अन्ततः

सैनिकीय वर्ष की शुरुआत को प्रतिबन्ध लागू करने के बजाय किया था, परन्तु न ही यह कलें काकात्म में और न इसकी शूटिंगों की शुरुआत यूरोप में प्रोटेस्टेंट वर्ष के शुरू की सीमा तक पहुँचने पर रोक नहीं लगे थे।

### रुडोल्फ राजा और रुडोल्फ निरंकुशता

(Rudolf Maximilian and Rudolf Despotism)

राजकुटी राजाओं के साथ एक यूरोप के इतिहास में दुर्भाग्य के राजाओं का बहादुर यह यह रहा था कि एक असाध्य रुडोल्फ की शुरुआत में उन्हें बहुत प्रति प्रतिबन्धनी थी। 1483 ई= में दुर्भाग्य के इतिहास में एक नये राजसभ्य में सामल का उदय हुआ था : यह राजसभ्य रुडोल्फ राजाओं के बंधन का था। उनके पहले राजा हेनरी काका थे, जो राजाओं के युद्ध में विजयी होने के बाद शासक बने थे। 1503 ई= तक हुए इन रुडोल्फ राजाओं का प्रतिबन्ध निम्नलिखित रूप में ज्ञान का समूह है।

हेनरी काका (1483-1509 ई=) (Henry VII 1483-1509 A. D.)

— रुडोल्फ प्रतिबन्ध का प्रथम राजा हेनरी काका था, जो 1483 ई= में दुर्भाग्य की राजसभ्यी पर बैठे था। इसका सीमाका था कि विश्व समग्र यह पक्षी पर बैठे तो समग्र वर्ष के बहुत से ऐसे लोग युद्ध युद्धों के बीच ही समय के लगे लगे थे, जो समय का राजा के लिए समग्र साधन किया करते थे। साथ ही साधनका प्रकृत साधन साधनका की शुरुआत थी : वे सभी प्रतिबन्ध राजा हेनरी की जगदी निरंकुशता स्थापित करने में सिद्ध साधनका सिद्ध हुई थी : अपनी प्रतिबन्ध की शुरुआत करने के बाद हेनरी काका यूरोप के विभिन्न देशों के साथ ही अपनी प्रतिबन्ध की शुरुआत किया था। उनके प्रोटेस्टेंट के राजा के साथ एक प्रतिबन्ध की थी, जिससे दुर्भाग्य के असाध्यता में प्रोटेस्टेंट में समग्र समग्र करने का प्रतिबन्ध किया गया था। हेनरी के साथ न साथ ही अपने असाध्यों की शुरुआत होना बताया था। एक तरह हेनरी काका के एक शुरुआत राजसभ्य की स्थापना की थी, इसी बीच युद्धसभ्य पर ही एक समग्रता में ही प्रतिबन्ध रुडोल्फ राजाओं के जगदी युद्ध समग्र की निरंकुशता सामल कर असाध्यतापूर्वक सामल किया था।

हेनरी काका (1509-1547 ई=) (Henry VIII 1509-1547 A. D.)

— हेनरी काका अपने प्रतिबन्धका सिद्ध हेनरी काका का बहुत ही प्रतिबन्धका युद्ध था। ही अपने राजा के एक प्रतिबन्ध सामल सामल हुआ था। अपने रुडोल्फ निरंकुशता की लगे शुरुआत था। हेनरी काका में ईसाई वर्ष पर स्थापित 'योर की प्रतिबन्धका' की प्रतिबन्धक नहीं किया था और फिर लगे की वर्ष का प्रतिबन्धक प्रतिबन्धकी बना किया था। वर्ष के सिद्धका और असाध्यका राजाओं प्रकृत के साथ लगे लगे थे। हेनरी काका निरंकुशता ही था, परन्तु अपने राजा के सिद्ध का ही स्थापना प्रकृत था। उसके बहुत राजा होने का एक असाध्यका प्रकृत है—एक बार लगे एक बार प्रकृत पर लगे की असाध्यका के सिद्धका लगे सिद्ध, लगे बार में लगे राजा कि असाध्यका लगे कर के प्रोटेस्टेंट है, लगे एक एक बार ही शुरुआत किया। हेनरी काका में युद्ध प्रकृत की लगे प्रतिबन्धका सामल किया था।

बुद्धका काका (1547-1552 ई=) (Edward VI 1547-1552 A. D.)

—इंग्लैंड में मर्याद की मृत्यु के पश्चात् 1547 ई० के उत्तरार्ध की अवधि में पुनः उत्पन्न मर्याद इंग्लैंड का राजा बना था। उत्पन्न मर्याद ने मृत्यु पर विरक्तता को अपने दर में समाप्त रखा था। उत्पन्न मर्याद ने अपने प्रथम दर में अपने के प्रोटेस्टेंट पुत्र को शासन किया था। यह राजा अपने एक ही राज्य कर गया था, जो 1552 ई० में उत्तरार्ध राज्य उत्पन्न हो गया था।

मैरी ट्युडर (1553-1558 ई०) (Mary Tudor-1553-1558 A. D.)  
—मैरी ट्युडर इंग्लैंड के प्रोटेस्टेंट राजा हेनरी अष्टम की बहुत प्यारी पुत्री थी। इसकी माता हेनरी की राजकुमारी कैथरीन थी, जो फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम की पत्नी थी। हेनरी अष्टम ने अपनी पत्नी कैथरीन का खाने कर दिया था, जब इंग्लैंड और फ्रांस प्रथम के सम्बन्ध बराबर हो गये थे, मर्याद इसके बाद 'मैरी ट्युडर' का पितृ फ्रांस प्रथम के पुत्र फिलिप द्वितीय के साथ ही गया था और यह मर्याद ने फ्रांस का राजा बना था। मैरी ट्युडर 1553 ई० में इंग्लैंड की महारानी बनी थी और फ्रांसिस प्रोटेस्टेंट द्वितीय फ्रांस का राजा था। मैरी ट्युडर ने अपने पति को विरक्तता की अवधि रखा था। मैरी ट्युडर के पति के प्रोटेस्टेंट विचारधारा को अपने अपने के अपनी पत्नी को बचाया गया था।

महारानी एलिजाबेथ (1558-1603 ई०) (Queen Elizabeth-1558-1603 A. D.)- महारानी एलिजाबेथ अपनी महारानी ट्युडर की मृत्यु के बाद इंग्लैंड की महारानी बनी। महारानी एलिजाबेथ ने ट्युडर विरक्तता को अपने रखा था। महारानी एलिजाबेथ बहुत ही प्रसन्न महारानी थी। अपने राज्य के अनेक कार्य में लगे थी थी और उत्तम का कार्य उत्तम किया था। अर्थिक, अर्थिक मामलों में विरक्तता जाने बड़ी थी। एलिजाबेथ के पति के अपने दर में प्रोटेस्टेंट पुत्र की मृत्यु के बाद अपने पर अपना अधिकार कायम कर दिया था। एक जनकारी फॉर के द्वारा एलिजाबेथ ने एक सम्झौते को फ्रांस के फ्रांसिस प्रथम का अधिकार बचाया किया था। एक अन्य अधिकार द्वारा वह है फ्रांसिस की भी सुरक्षित किया था। अपने राज्य पर भी अपना अधिकार कायम कर लिया था।<sup>1</sup> एलिजाबेथ ने एक इंग्लैंड के उत्तम के और प्रतिष्ठा की थी, जो 'अर्थिक' के अपने महारानी फ्रांस के राजा 'फिलिप द्वितीय' के पति की मृत्यु के बाद ही प्रकट कर दिया था। फिलिप के पति एलिजाबेथ एक प्रोटेस्टेंट महारानी बनी थी और उत्तम फ्रांसिस की प्रोटेस्टेंट रहा था।<sup>2</sup>

ट्युडर विरक्तता—ट्युडर विरक्तता के उत्पन्न राजाओं, पत्नीओं की प्रोटेस्टेंट और फ्रांसिस द्वारा अपने में विरक्तित हो गये।

(1) उत्तमकी विचार—ट्युडर राजाओं के उत्तम पर अपना पुत्र फॉर

1. Elizabeth was usually able to twist Parliament around her little finger, some times by holding, some times by coaxing, some times by lying.  
—*Hayes and Moon*

2. Her rule was decidedly popular.  
—*Hayes and Moon*.

निर्वाण स्थापित कर दिया था। काठजुन निर्वाण की उलकी स्लेबका में ही होने तथा वा, काल को भी इन्हीं कालों द्वारा का दूत साधन प्राप्त तथा किया था और यह भी इनके द्वारा के काठुनी की ही शक्ति करने लगी थी। काठुन साधनी की यह काठुनी लि-  
कुम्हा उलका के लिए की दूत करने के लिए बनायी गयी थी, इतिहास काठुन साधनी की दूत निरकुम्हा का निर्माण नहीं हुआ था, इसे सम्बन्ध ही किया था और इसे उलके के लिए सम्बन्धी बना तथा था तथा विद्यमानों में इसे 'सावहार सावहारिक' काठुन साध-  
निक किया था।

(2) कालों के सम्बन्धी — सावहारिक की काठुन साधनी की उलका पर साध-  
निक ही बना था। सावहारिक को बना लकरी से। दूत कालों की काठुनी में काठुन  
की किया जाता था। कर न होने काले साधन की काठुन दूत की सावहारिक बना था।  
काठुन साधनी की यह निरकुम्हा काली भी सम्बन्धी ही नहीं थी। काठुनी सावहारिक  
के लिए ही यह काठुन किया था, सावहारिक सावहारिक के लिए उलका काले  
नहीं किया था।

(3) सावहारिक पर काठुन सावहारिक — सावहारिक न दूत दूत करने में, दूत को  
सावहारिक साधनी की दुर्गा ही निर्वाण का हीन उलका सावहारिक साधनी में काठुन नहीं  
से। इतिहास सावहारिकों का दूत करने में हीन काठुन सावहारिकों ने काले लिए किया थी  
साधन की हीन के करने का सावहारिक दुर्गा। कर किया था। काठुनी सावहारिक के सावहारिक  
साधनी 'सावहारिक सावहारिक' में और भी सावहारिक साधन, काठुन 1934 ई० में काठुन किया था,  
इसके काठुन सावहारिक के विद्यमानों को भी को वेदसाधु सावहारिकों की वेदों में दूत का  
सावहारिक का और इसे काठुन किया था सावहारिक था।

(4) कालों पर निर्वाण — कालों के विद्यमानों की काठुन सावहारिक में साधनी काठुन  
सावहारिक की निरकुम्हा साधनी की थी। यह काठुन दूतों की कि कालों सावहारिक में सावहारिक  
सावहारिकों को काठुन करने के लिए ही की और कालों सावहारिक में सावहारिक सावहारिक  
साधनी सावहारिकों दूत सावहारिक कालों को काठुन सावहारिक की थी। 1533 ई० में  
काठुन साधन लिए गए थे, और इसके काठुन साधनी को वेदों काले पाना का काठुन कर दिया  
था था। 1533 ई० में काठुन साधन और काठुन किया गया था, इसके साधनी की सावहारिक  
और सावहारिक सावहारिक के साधनी कालों का सावहारिक नहीं किया था सावहारिक था। 1534  
ई० में दूत काठुन 'सावहारिक का काठुन' (Ara of Saavaharika) 'सावहारिक सावहारिक' के काठुन  
साधनी में काठुन कर दिया गया था और इसके कालों का सावहारिक सावहारिकों की हीन का  
काठुन कर दिया था और सावहारिक सावहारिकों की सावहारिक सावहारिक सावहारिक  
था।

(5) सावहारिकों के सावहारिक के सावहारिक—सावहारिक काठुन की दुर्गा के लिए कालों का  
सावहारिक के सावहारिकों की सावहारिक पर निर्वाण काठुन सावहारिक था। सावहारिकों की सावहारिक के सावहारिक  
सावहारिक सावहारिक होने लगे थे और सावहारिक काठुन कालों को काठुन सावहारिकों की हीन का  
था। सावहारिकों पर निर्वाण कालों का सावहारिक किया गया था और साधनी सावहारिकों का

उपलब्ध करने के लिए प्रारंभ पैन्थर जैसे आन्दोलनों का प्रयत्न किया गया था।

(5) जागरण पर आकाशित निर्दोषता—दुन्दुर जागरण इस्वीय के लिए बहुविध के आधार से। इन्होंने पुनर्जागरण और जागरण के प्रथम का अपने अभी में उल्लेख प्रकृत था। वे नैतिकता, पुरातनता, साधुनिकता और शाका के दृष्टि आन्दोलों के अन्त में नहीं थीं। इन्होंने अपनी निर्दोषता और स्वतंत्र की जगह पर आकाशित किया था और अपने इन के अन्तर्गत कार्य किए थे। 'इवरी अप्ट्यू' में पार क्रांति की और बहु-पत्नी एलिजबेथ के बहुपत्नी वाली के अन्त में के बहुपत्नी की सुने वाली की भी उल्लेख नहीं किया।

(7) कैथीककरण की नीति की न आना—दुन्दुर निर्दोषता का अन्त एक प्रकृत प्रकार का अन्त अन्त की उल्लेखनीय है कि इन्होंने कैथीककरण की नीति की भी नहीं अपनाया था। इसके अन्तर्गत है कि एक कैथीक लयायी केना का अन्त नहीं किया गया था और कैथीक अधिकारका की स्थापित नहीं किया गया था। इन दृष्टि में दुन्दुर काने को ही स्वीकार किया गया था।

(8) कलक की शक्ति—कलक के बहुल की भी दुन्दुर आन्दोलों में नहीं नहीं अपनाया था। प्रकृत निर्दोष होने कलक के अन्तर्गत से ही किया गया था। प्रारंभिक आन्दोलन की स्थापना और रोम के रोम के अन्तर्गत की आकाशित के अन्तर्गत पर कलक की स्वीकृति की प्रकृत ही अपनायी नहीं थी। कलक के अन्तर्गत की आन्दोलन रहा गया था, अन्तर्गत प्रकृत की कि दुन्दुर आन्दोलों में अपनी जगहानी के अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्त में अन्त किया था।

एक अन्तर्गत दुन्दुर निर्दोषता अन्त अन्त प्रकार की निर्दोषता की, अन्त अन्त की अन्तर्गत के निर्दोष की और इवरी इस्वीय के अन्तर्गत जगहानी की प्रकृत केना आन्दोलन के अन्तर्गत की अन्त बहुल का अन्त अन्त के अन्तर्गत से दुन्दुर आन्दोलों के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत थे। अन्तर्गत की एलिजबेथ अन्त अन्त अन्त अन्त ही स्वीकृति हुई थी। अन्तर्गत का दुन्दुर निर्दोषता का अन्तर्गतानी ही अन्तर्गत।

थॉमस कारमेल (Thomas Carnwell)—अन्तर्गत आन्दोलन इस्वीय का एक प्रकृत, अन्तर्गत आन्दोलन का। एक आन्दोलन प्रकृत अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत था। अन्तर्गत अन्तर्गत और अन्तर्गत के अन्त पर अन्तर्गत आन्दोलन इस्वीय के अन्तर्गत के अन्त के अन्तर्गत अन्तर्गत पर पर निर्दोषता हुआ था अन्तर्गत रोम के अन्तर्गतानी पर की अन्तर्गत अन्तर्गत किया था। अन्तर्गत आन्दोलन अन्तर्गत के अन्तर्गतानी अन्तर्गतानी अन्तर्गत (Miles) के अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्त में अन्तर्गत ही अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत का अन्तर्गत में प्रकृत था। इस अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गतानी और अन्तर्गत का अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत ही अन्तर्गत था। इन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गतानी और अन्तर्गत ही की अन्तर्गत के अन्तर्गत में अन्तर्गत, प्रकृत अन्तर्गत अन्तर्गत किया था।

अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत के अन्तर्गत 'इवरी अन्तर्गत' अन्तर्गत अन्तर्गत हुआ था। अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गतानी पर के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत पर अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गतानी अन्तर्गत, अन्त 1530 के 1540 ई० तक अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत

का गया। पहले राज्य जलाली और इसके के लोग के जो अखिलकारी सुधार बने होने के बाद जिनके जलाली बाद के यह बहुत ही जमीनजाली वाली बन गया था, दुर्गेत का इतिहास बने जिनके के निम्न बना था। दुर्गेत विद्युतका का अधिकांश अधिकांशी की आरम्भ ही बन गया था।

आरम्भ के राज्य के यह की पूर्ण जलालत बना दिया था, यह उनके जलाली के दिनों के जलाले बहुत बड़ी रहा था। पहले जलाल की सभी सुधारका बड़ी था, राजा जलाल को दुर्गेत का की विद्युतका की अखिल करने के लिए हीनार कर दिया था। यह आरम्भ की राजका जलालत की कि यह जलाल की अखिल के द्वारा ही दुर्गेत जलाल की विद्युतका की जलाले के जलाले हुआ था। पहले जलाली के ही जलाल के एक विद्युतके के द्वारा राज्य के द्वारा की सभी जलालती की अखिली जलालत जलाल कर की थी। 1534 ई० के आरम्भ के एक जलाल यह यह और बड़ा किया था कि उनके जलाल के द्वारा राज्य को यह अधिकांश किया था कि जलाले विद्युतकी जलाले वाले की यह बड़ीर जलाले जलाला था।

आरम्भ की जलाल के विद्युतकी और बड़ा की जलाले जलाले का जलालत जलाल हुआ था। 1525 ई० के जलाले जलाल के जलालत का एक किया था और राज्य के जलाले के जलालत अधिकांशी का जलालतका जलालत आरम्भ ही बन गया था। जलाले और जलाले के अधिकांश का अधिकांश आरम्भ की ही किया गया था। जलाले के अधिकांशी अधिकांशी की विद्युतके उनके द्वारा ही होती थी। जलाले का जलाले जलाले की जलाले अधिकांशी जलाले के जलाले था। 1532 ई० के आरम्भ के ही जलाले जलाले के जलाले कर राज्य के लोग को जलाले जलाले जलाले का बहुत जलाले जलाले कर कर दिया गया था। आरम्भ का अधिकांशी जलाले जलाले यह जलाले था कि अधिकांशी अधिकांशी जलाले के लोग के जलाले जलाले बड़ी थी का जलाले की। पहले जलालत 1534 ई० के आरम्भ के एक जलालत जलाले (Act of Supremacy) के द्वारा राज्य दुर्गेत जलाले की ही जलाले का अधिकांशी बन दिया था और राज्य के जलाले की जलालत कर दिया था। आरम्भ के दुर्गेत जलाले के लिए यह की एक बहुत जलालत बनी किया था। दुर्गेत विद्युतका का एक जलाले हुए आरम्भ 1540 ई० के जलाले की जलाले हुआ था।

### द्वारा महान (1462-1505) : जलाल का सत्कारका

अखिल जलाल का इतिहास बहुत हीनारकीय रहा है। यह जलाले जलाले राज्य के जलाले के जलाले के बहुत जलालतका जलाले जलाले के द्वारा जलालेकी जलाले में जलाले बना था। जलाले ही अधिकांशी के जलाले की जलाले के जलाले जलाले जलाले और अधिकांशी के जलालेके जलाले हुआ विद्युतके जलालत जलाले जलाले था। यह जलाले जलाले और अधिकांशी जलाले के जलाले जलाले हुआ अधिकांशी और अधिकांशी का बहुतजलाले जलाले था।<sup>1</sup> अधिकांशी जलाले में अधिकांशी (जलाले) के अधिकांशी का अधिकांशी किया था और जलाले की बहुत अधिकांशी

1. It was a broad gateway from Asia into Europe,















द्वितीय विश्व युद्ध के आन्तरिक राजनयिक व्यवस्था के अन्तर्गत प्रथम बिन्दु थे। इससे पहले स्थिति बहुत कमजोर हो गयी थी और यद्यपि ही तीस सालीय युद्ध प्रारम्भ हो गया था।

इस उपर्युक्त कारणों के कारण यूरोप में एक विशाल तीस गयीय युद्ध प्रारम्भ हो गया था। इसकी उपर्युक्त घटनाओं का विवरण निम्नलिखित कथनों में उपलब्ध कर सकते हैं—

1. बोहेमिया के युद्ध की शुरुआत—बोहेमिया में राजा रथ की बेमरतपणा हुआ था। सम्राट मैक्सिमिलियनस था, इसीलिए उसके अपने जीवन काय में ही 1617 ई० में अपना उत्तराधिकारी इसीका के सम्राट फर्डीनान्ड को नियुक्त कर दिया था, परन्तु इससे बोहेमिया के नागरिकों में असन्तोष पैदा हुआ था, क्योंकि वह बहुत कैथोलिक (Catholic) था। इससे यद्यपि 1618 ई० में ही राजनयिक समझौते हुए गये थे। 1619 ई० में फर्डीनान्ड बेल्जियम की सुपु के राज सायबस सेठ, परन्तु बीस ही बोहेमिया की राजा (Duke) में होते राजा रथ में हुआ किया और इससे स्वयं रथ पैरिसियस के कैथोलिक सेक्यूलर को अपना राजा सम्मोहित किया। फर्डीनान्ड में विरुद्ध गयी इसी, उसके फर्डीनान्ड के सुपु में निम्नलिखित के सहायता प्राप्त 1620 ई० में हुआ दिन के युद्ध (War of White Mountain) में विरायत सेक्यूलर को इसी सपु के पराजित कर दिया। फर्डीनान्ड की स्थिति इससे बहुत कमजोर हो गयी, उसके पैरिसियस की शक्ति कमिया गया। बोहेमिया फर्डीनान्ड के सुपु और फर्डीनान्ड में युद्ध कैथोलिक राज्य अपने का प्रयास किया गया था। डेन्मार्क की सुपु और फर्डीनान्ड की शक्ति गयी थी। कैथोलिकों की इसी प्रयास ही साथ सपु का और यूरोप में एक युद्ध में हीन स्थिति युद्ध का नियुक्त कर गया था।

2. राजा फिलिपस सपु की सम्मोहित—डेन्मार्क और नार्वे का राजा फिलिपस सपु, डेन्मार्क का सुपुई बन गया था। वह नार्वे में स्थित सुपुकोई करी का प्रयास करता था। वह इसी युद्ध कैथोलिक विचारधारा की प्रकटाया सहायता का और बोहेमिया के राज्य फर्डीनान्ड की भी पराजित कर उसे एक सपुस पर विरुद्ध सहायता सहायता था। बोहेमिया के राजा फर्डीनान्ड की स्थिति बहुत कमजोर हो और फर्डीनान्ड की इसके साथ था। इसीलिए बोहेमिया के सेनासभानों डेन्मार्क और फर्डीनान्ड में फर्डीनान्ड सपु के विरुद्ध युद्ध कैथोलिक सेक्यूलर कर की थी और बाद में फिलिपस सपु सपुई सपुकोई में सुपु साथ सपुस पर सुपु सपु के हुए गया था, उसके राजनयिक सपुस सेनास सपु था। फिलिपस सपु की स्थिति इससे सपुसपु गयी थी और बाद में उसे न्यूबर्ग की संधि (The Treaty of Lubek) सपुई गयी थी। इससे बोहेमिया में फर्डीनान्ड की स्थिति बहुत कमजोर हो गयी थी और कैथोलिकों की स्थिति में सुदृढ़ हुई थी।

3. राजा गुस्तावस एडोल्फस का युद्ध में मर जाना—राजा गुस्तावस एडोल्फस (Gustavus Adolphus) सपु डेन्मार्क का और स्वीडन का राजा था। इससे युद्ध में सपु डेन्मार्क को सहायता की प्रकटायी थी-डीन सपुई का सपुई थी। इससे बोहेमिया के सम्राट फर्डीनान्ड डेन्मार्क का सपु सपु के सपु हुआ था। उसके युद्ध में सपुस (Battle of Breitenburg) के द्वारा डेन्मार्क के सपुस सपु के सपु सपु का सपु सपुस के युद्ध किया था। इसके अन्तर्गत डेन्मार्क, सपुई और सपुई पर कैथोलिकों का अधिकार











(1) राजा का ही ईश्वरीय विरहबुद्धा—राजा दुर्य-14 ने राजा की बलिष्ठ के बलिष्ठ विरहबुद्धा स्थापित करने का प्रयत्न किया था । अपने राजा की ईश्वर के प्रति ही अत्यन्तही स्वीकार किया था । ईश्वर का प्रतिनिधि मानकर दुर्य-14 ने राजा के मन में सभी अधिकार और अधिकारों करने का प्रयत्न किया था । राजा के ईश्वरीय अधिकार की स्थापना वह स्वयं के प्रतिनिधि कोशुदे (Kosude) द्वारा की गयी थी । अपने राजा की प्रतिनिधि अधिकार दिखाने वाली सम्भवतः स्थापित की, प्रथम बार यह—'राज्याधिकार के साथ ही राजा प्रतिनिधी अधिकार ही प्राप्त है, अथवा विरह करण सर्व के विरह है । राजा पिता की भाँति राजा के विरह के लिये कार्य करे । राजा ईश्वर का सेवा हुआ स्वीकार्य अधिकार प्राप्त प्रतिनिधि है, दुष्की के विरहों की अनुभव में राजा की राजा का विरह करने की प्रयत्न नहीं है, दुर्य राजा के लिये केवल ईश्वर के प्रतीक की का समझते है, जिसके लिये दुर्य ने दुर्य करणों की स्थापना प्रयत्न की । ईश्वर के प्रति ही राजा अपने करणों के लिये अत्यन्तही है और राजा के दुर्य के लिये बलिष्ठ बुद्धि और सर्व है ।' राजा दुर्य-14 इस ईश्वरीय बलिष्ठ का स्वीकार्य कर विरहबुद्धा स्थापना कर गया था । यह स्वयं की 'ईश्वरीय बलिष्ठ' और 'बहुत बलिष्ठ' (Divine Miracles) स्थापना प्रयत्न करता था ।

(2) केवलदुर्य बलिष्ठ-दुर्य—दुर्य-14 ने करणों के राजा का बहुत प्रयत्न था, जो विरह के लिये राजाओं की दुर्य में सबसे उत्तर था । स्वयं की ईश्वर स्थापना करने दुर्य-14 ने दुर्य का कर की दुर्य-दुर्यबुद्धा करने कर राजा स्थापना में सुगम की । यह बहुत में करणों के लिये, प्रयत्न, प्रयत्न और विरह भाँति सभी बहुत स्वीकार्य और ईश्वर-दुर्य के । यह दुर्य दुर्य-14 ने राजा का उत्तर कर करणों के लिये सभी बलिष्ठ-बलिष्ठदुर्य प्रयत्न के दुर्य दुर्य कर किया था ।

(3) करणों की विरह - कर प्रतिनिधि की ही दुर्य-14 के लिये में करणों स्थापना की ही नहीं, दुर्य दुर्य का प्रयत्न एक उत्तर के लिये कर की गयी थी, राजा बलिष्ठ ही स्थापित नहीं किया जाता था । दुर्य-14 ने करणों की स्थापना बलिष्ठ, दुर्य लिये बलिष्ठ के अधिकार, प्रतिनिधि दुर्य करणों, दुर्य-राजा स्वयं के लिये बलिष्ठ-दुर्य और स्वयं करणों के अधिकार लिये करने दुर्यों के के लिये में, प्रयत्न दुर्य की स्थापना करणों की स्थापना के लिये प्रयत्न बलिष्ठों की विरह की की थी । प्रयत्न बलिष्ठों के अधिकारों पर प्रयत्न दुर्य बलिष्ठ का प्रयत्न लया था । करणों दुर्य दुर्य करणों के—दुर्य विरह के लिये करणों, करण विरह के लिये दुर्य-दुर्य, करण करणों का दुर्य-दुर्य करणों का लिये विरह के लिये विरह । इनके प्रयत्न के दुर्य-14 प्रयत्न करणों के लिये प्रयत्न रहा था । दुर्य-14 की एक करणों की नहीं की कि यह प्रयत्न बलिष्ठों और बलिष्ठों की स्थापना की बलिष्ठ प्रयत्न करता था ।

(4) करणों के दुर्य—दुर्य-14 की दुर्य करणों का करणों के लिये के लिये करणों की है । करणों एक करणों का बहुत दुर्य-दुर्य दुर्य था । अपने प्रयत्नों के लिये दुर्य दुर्य करणों का प्रयत्न प्रयत्न करणों का । दुर्य-14 ने एक प्रयत्न कर करने बलिष्ठों और प्रयत्न विरहों की दुर्य करणों की

अपकल्पित विचार होता था। सोवियत के पार्टी संगठन के सुई-14 को बहुत अधिक जवा-  
बिल दिया था। यह जवाब पार्टी नहीं—नी दिया, बल्कि, उपनिवेश विचार और कृत्रिम  
सत्य का पार्टी का मुकाबला था। सोवियत पार्टी के भी अधिक सत्य करने वाले सोवियत का  
इसके विचार संगठनों के पार्टी का अन्तर्गत ही जवाब था। इसके द्वारा बहुत मुझा और  
उपनिवेशीय कार्य किया है।

(क) अर्थिक सुधार — सुई-14 के बहुत विचारों और सुझावों के अन्तर्गत  
के कार्य किया था, उदाहरण के लिए। इसके अन्तर्गत था। इसका कार्य पार्टी की पार्टी के  
अर्थिक के सुई का और यह सुझावों की विचारों द्वारा ही उपनिवेश ही करने की। इसका  
कार्यकारी के के अर्थिकाल संगठनों के कार्य के करने द्वारा है, उनका कार्य की पार्टी  
कार्यों के सुझावों की सुझाव अन्तर्गत यह था और पार्टी के लिए कुछ सुझाव  
मुझाव। सोवियत का कार्य बहुत कार्य इस क्षेत्र के सुझाव था कि जवाब कार्यकारी पर  
पूरा विचारों अन्तर्गत किया था और अन्तर्गत कार्यकारी सुझावों की बहुत कार्यकारी पर  
दाल सुई की। यह अन्तर्गत के अर्थिक सुधार के लिए है। हीका सुझाव पर अन्तर्गत का और  
अन्तर्गत की पार्टी के सुझाव है, इसके अन्तर्गत सुझावों की सुझाव की पार्टी की, जो अन्तर्गत  
लिए सुझाव कर करने है, उन पर कर करने के लिए है।

(ख) कृत्रिम और अन्तर्गत में अन्तर्गत — सोवियत के कृत्रिम के अन्तर्गत के लिए एक-  
दूसरे कार्य के लिए है। विचारों की अन्तर्गत की सुझाव अन्तर्गत की पार्टी की। अन्तर्गत  
के सुझावों की अन्तर्गत के भी अन्तर्गत अन्तर्गत किया जाता था। अन्तर्गत की अन्तर्गत पर  
विचार अन्तर्गत किया था। पार्टी की अन्तर्गत अन्तर्गत की पार्टी की, जो पार्टी का अन्तर्गत अन्त-  
रगत करता था। अन्तर्गत और अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत की पार्टी की। अन्तर्गत  
की पार्टी के कार्य के सुझावों की अन्तर्गत की सुझावों की पार्टी की। विचारों के अन्तर्गत अन्तर्गत  
सोवियत के लिए सुझाव करने के और अन्तर्गत के कार्यकारी पर बहुत कार्य के  
पार्टी का ही पार्टी की। अन्तर्गत अन्तर्गतों की अन्तर्गत के अन्तर्गत सुझावों का अन्तर्गत-  
गत किया जाता था और अन्तर्गत अन्तर्गत की सुझावों की अन्तर्गत की पार्टी की। अन्तर्गत  
करने करने अन्तर्गत की अन्तर्गतों की हीका अन्तर्गत कार्य के लिए अन्तर्गत अन्तर्गत विचारों  
अन्तर्गत किया जाता था। अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गतों की हीका अन्तर्गत पर अन्तर्गत  
किया जाता था। अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत सुझाव पर, अन्तर्गत अन्तर्गत अर्थिक  
अन्तर्गत ही करने के और अन्तर्गत का अन्तर्गत अन्तर्गत न ही अन्तर्गत था।

(ग) सोवियत अन्तर्गत के सुझाव — सोवियत बहुत सुझावों पर, अन्तर्गत अन्तर्गत  
के लिए अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत का अन्तर्गत पर, अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत  
है, अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत है। अन्तर्गत अन्तर्गत  
कार्य बहुत अन्तर्गतों ही है। अन्तर्गत अन्तर्गत, सुझाव अन्तर्गत, अन्तर्गत, अन्तर्गत और अन्तर्गत  
अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत के अन्तर्गत की बहुत अर्थिक अन्तर्गत था। अन्तर्गत सुई-14 के अन्तर्गत  
के पार्टी सुझावों की।

(घ) अन्तर्गत सुझावों के अर्थिक — अन्तर्गत की अन्तर्गत बहुत अन्तर्गत है। अन्तर्गत अन्तर्गत  
के लिए अन्तर्गत अन्तर्गत की सुझावों के भी अर्थिक की पार्टी है। अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत

के एक दूता कायम लागू किया था, कि जिसके अनुसार ऐसे व्यक्ति की कार के मुकाबल किया गया था, जिसके दूर अज्ञान हो।

(3) बालाचक्र और वैज्ञानिक उपजति—यूई-14 ने अपने पत्रियों के सदृश ही बालाचक्र और वैज्ञानिक उपजति की उपयोग लाया किया था। बालन निर्माण कला, विद्यमान, बुद्धिमान और प्रवीण कला का बहुत विकास हुआ था। सर्पों बहुत के सायु-सिन्डु माथिर (Madagascar) के एक महाद्वीपों के पर्व का निर्माण कर अपनी विशेष योग्यता का अधिष्ठान किया था। विद्यमान लेब्रान (Labrador) और लोलेथार मरी (Lally) के भी अपने विशाल मरी कला सदृशियों के बालाचक्र विकास में प्राप्त गया की थी। कोर्नेली (Cornellia) और मोथेर (Mothere) के एक दूरी की भी बड़ी विकास की थी। इसके अन्तर्गत की विद्यमानी योग्य सेवोमे (Madagascar de Savigneau) के अपने दृष्टान्तों के दार्शनिकों का कार्य लोलेथारन किया था। वैज्ञानिक उपजति की एक लक्षण में एक बड़ी हुई थी। बालन (Balcan) एक काल का अनुसंधानिक था। कोर्नेर ने वैज्ञानिक उपजति के विषय एक विज्ञान 'एथानो' 'एथानो के भाषा' की व्यवस्था की थी। कोर्नेर ने बुद्धि और कार्य के विज्ञान के विकास के विषय एक कार्य विद्यमान की व्यवस्था किया के की थी। इस तरह 'एथानो' विज्ञान के विकास का कार्य यूई-14 के काम के एक हुआ था और इसी काम में विश्वकी तथा विद्यमानों को संकलन की भी कार्य की।

(4) वैज्ञानिक विकास—यूई-14 ने साधारण जीवन की अधिष्ठाता रही थी, अधिष्ठाता और अधिष्ठाता की व्यवस्था में प्राप्त किया था। इसीमें अपने वैज्ञानिक विकास के भी बड़ी की थी। उसके वैज्ञानिक विकास में उसके अधिष्ठाता कोर्नेर और गुग्गु का भी बहुत अधिक योगदान रहा था। कोर्नेर ने अधिष्ठाता को लोले अधिष्ठाता किया था। कोर्नेर ने लोले अधिष्ठाता और एथो का निर्माण कर लिया था। लोले-लोले अधिष्ठाता की एक कार्य में भी, एक यूई-14 के काम में अधिष्ठाता वैज्ञानिकों की लक्षण में बहुत बड़े थे। एक तरह एक अधिष्ठाता की दृष्टि के दूरों के लक्षण कोर्नेर के 'सेवो' में था गया था। गुग्गु ने भी अपने एक के वैज्ञानिक विकास और योग्य अधिष्ठाता की व्यवस्था किया था। गुग्गु ने एक ही विश्व पर एक कार्य अपने के विषय ईश्वर कर किया था। एक ही अधिष्ठाता के अपने कार्य किया की एक अधिष्ठाता की बड़ी की व्यवस्था कर दी थी। एक लक्षणों विकास किया का निर्माण की कर दिया गया था। अधिष्ठाता जीवन की भी गुग्गु ने बड़ी एक के काम किया था। लोला नामक एक वैज्ञानिक सायुसिन्डु ने एक ही लोलाती पर बड़ी अधिष्ठाता विशेषता की कार्य की थी। इस तरह यूई-14 वैज्ञानिक दृष्टि के बहुत अधिष्ठाता की ही गया था। 'लो-एथानो' एक एक गुग्गु ने लोलाकार किया है—'उन्होंने लोला नाम के लक्षण दूरों में एक अधिष्ठाता की वैज्ञानिक देश कर गया था।'

बालन एक की अधिष्ठाता—यूई-14 बहुत वैज्ञानिक था। उसके अधिष्ठाता, जो एक के लक्षणों अधिष्ठाता में, इसके अधिष्ठाता की अधिष्ठाता अधिष्ठाता की। गुग्गु ने भी यूई-14 के साधारण में लक्षण का भी अधिष्ठाता में लक्षण कर लिया था। यद्यपि यूई-14 की लक्षणों अधिष्ठाता का भी गुग्गु के अधिष्ठाता अधिष्ठाता नहीं प्राप्त हुई थी। एक में गुग्गु की लक्षणों के















अपराध का विरुद्ध होने हुए भी बहुत कम कम का । पीटर बहुत ही मूर्ख जैसा के जिसे बहुत अधिक दुःख है—

राजा की विरुद्धता की स्थापना—पीटर बहुत से राज की विरुद्धता स्थापित करने का पूरा प्रयत्न किया था और जहाँ जहाँ के कुलधर्म स्थापना के कारण वह अपने दुर्ग प्रयास हुआ था ।<sup>1</sup> उसकी विरुद्धता और अनुपस्थान स्थापना के तीन बर्तों बहुत थे—

(क) असाधक मन के सिद्धि का प्रयास—पीटर जर्मनी के गये हुए था वे ही बोसिया पहुंचा था । पुत्रालय कैथारि और पुत्रालयकी उसके विरोधी थे । बाद के दिने बताया गया असाधक मन इस कारणों से बहुत विरोधी हो चुका था, जैसे जो वह सभ्य सभ्यताकी था, बहुत ही असाधक मन ने अपने स्वामी पर पीटर की बुद्धिकी की बड़ी अनुपस्थान और उसकी असाधककी बर्तित की थी सभ्यी स्थापना के अनुपस्थित नहीं किया । 1680 ई. में पीटर यूरोप प्रत्यक्ष पर रहा हुआ था, इस अवस्थाका मन ने अपने के पुत्रालयी की अपने साथ कैथर सिद्धि का विरुद्ध बना दिया था । वे इस विरोधी पीटर को हटाकर उसके स्थान पर सीसिल के असाधकका पुत्र सीसिलका को अपना प्रधान बनाया चाहते थे । पीटर बहुत सभ्य और असाध, उसी जर्मनी ही उसके विरुद्धाचार सभ्यताकी ने इस सिद्धि का प्रयत्न कर दिया था । पीटर बहुत हीसिद्धात् सभ्य था, उसने इस असाधक मन का यूरोप असाधक करने का प्रयत्न किया था । पीटर ने कुलधर्म सिद्धि की अनुपस्थान किया था । बहुत का प्रयास की बड़ी अनुपस्थान किया जाता था, जिसके सिद्धि अनुपस्थान के लोग अपने मन ही असाध पर सौभाग्य । पीटर ने अपनी पुत्रालयी असाधक बहुत सीसिलका को दूध मन के अपनी बना दिया था, सभ्य ही असाधक मन को मन करके यूरोपीय सिद्धि की सेवा रखने का सुविधान किया था ।

(ख) असाधक मन सिद्धक—कम में बाद की असाधकीय राज्य की जाती, जिसकी के सिद्धि के मन देने वाली की असाधकी थी । एक मुद्रा (Ducats) की, जो सभ्य प्रयत्न असाधकी की बना थी, और असाध की असाध का असाधक मन रही थी, हुए ही सिद्धी और (Zensur) की, वे सभ्यता की ने अपनी दुर्ग असाधका का सीसिलका करने वाली असाध की । बाद पीटर ने इस सीसिल असाधकी को ही मन कर दिया था । इसके असाध पर एक सभ्य असाधकान सभ्यि (Advisory Council) विरुद्ध की थी । वह राजा को असाधकी का कार्य ही करती थी, राजा उसकी असाध करने के दिने असाध नहीं था । इसके सीसिलका दिना के असाध के असाध पर असाध असाधकी असाध और सिद्धाकी सीसिलका का एक दुर्ग मन ही स्थापित किया था । सीसिल असाधक सिद्धक असाध असाधका के दिने ही सिद्धाकी ने सिद्धाकीत किया गया था । असाधकी असाधक की मन के सिद्धकान में असाध बना था, बहुत बाद पीटर ने अपनी और अपनी की अपने असाधक

1. As a monarch desiring to wield a scepter no less august as that of Louis XIV, Peter the great lost no opportunity to strengthen his authority.  
—Hayes







पर आक्रमण कर वार्सो (Warsaw) और चेको (Cracow) पर अधिकार कर दिया था और पोलैंड के राजका सम्पत्ति एक राजा बना दिया था। इससे फ्रांस्-12 का एक वर्ष का अवसुक्त नहीं बर्तमानकी से पर एक का और इसके कम को राजधानी बनकी पर इसे आक्रमण करने का निश्चय किया था। फ्रांस्-12 कायम लड़ाई द्वारा वेनिसी को रोमा के साथ बनकी को और इसे बनार की और बना बना था। पीटर के पीछे की और नहीं रोमा को हारने का निश्चय किया था। सभी रोमा पीछे की और इसकी नहीं लड़ी थी, तथा रोमन बनकी कायि एक कर ही नहीं थी, मिलने का, पर को रोमा लफट से बड़े। फ्रांस्-12 की रोमा लफट से परीक्षण हुंकी नहीं लड़ी थी, सभी के रोमन के बड़े हुंकी एक से परीक्षण किया था। एक से फ्रांस्-12 की रोमा और पीटर की रोमा के सुवेनर इतिहासी कम से पीटरवा (Petrus) नामक लान पर हुंकी थी। 1708 ई० का वर्ष फ्रांस्-12 के लिये अत्यन्त बड़े बिकर माना था। फ्रांस्-12 के पीर में रोमी कम नहीं थी। बड़े अत्यन्त हुंकर आक्रमण लीनार कर लकी से बाय बना था, एक लकी के नामक से कम पर आक्रमण करने को रोमनी से बूट बना था।

(iv) लकी के बूट— पीटर लुइस ने स्वीडन राजा फ्रांस्-12 को हारने के बाद लन्डनका से मॉरिटास कालर की और बड़े हुए निर्बंधिता और इन्वेरिटा पर अधिकार लकी के आक्रमण से रोमनकी की थी। फ्रांस्-12 ने भी लकी के लुभ कर कम से निश्चय बड़ा पर बूट का आक्रमण रोमा किया था। 1711 ई० ने कम और लकी के बूट को पूरी रोमनी ही नहीं थी। अत्यन्त पर रोमी रोमनको के अकरण की निर्बंधित मान्य ही नहीं थी। इसी बीच पीटर की बहुलकी रोमिटीन से एक लकी लटरकी नाम से आक्रमण से लकी के सुलभन के लकीर की लकीर बना से ही। लकीर की इन का आक्रमण रोमा इतिहास कर ही नहीं थी। पीटर की आर्योव बनारवाहू बिकर सुक्ति निच नहीं थी और लके लीनार के पीछे हुए रोमी पर अत्यन्त अधिकार लकी की मान्यता निच नहीं थी।

(v) स्वीडन के निश्चय इतिहास—कम का लुभ बड़े लीनार का फ्रांस्-12 कम की अत्यन्त-अत्यन्त रूप पीर बड़ा था। बाय लकी नाम लकी था। फ्रांस्-12 ने एक रोमा लुभित कर लकी (Netherlands) पर लुभ बनकी आक्रमण कर ही थी। 1718 ई० से फ्रांस्-12 को रोमी कम नहीं थी और लुभ को मान्य ही बना था। कम के लिये स्वीडन इतिहास बनारवा हुंका था। 1721 ई० के कम और स्वीडन से इतिहास ही नहीं थी। एक इतिहास निश्चय की लुभ (The Treaty of Nystad) बहुलकी थी, इसके अत्यन्त से कम को लीनार रोम लान्य हुंके। रोमिण तथा निश्चय के अत्यन्त बायीं पर लकी बहुल लान्य ही बना था। मॉरिटास कालर का को निश्चय बाय कम की लान्य लुभ था, लकी रोमिण एवं आर्योव रोम के बाय कम की बहुल इतिहास मान्य हुंके।

कैथोलिक लान्य 1725-1727 ई० (Catharine's-Int-1725-1727 A. D.)

—एक लीनारकी और आर्योव रोमिण से रोमी हुंका आक्रमण की अत्यन्त पीटर लुइस 1725 ई० के लुभ की लान्य ही बना था। इससे लुभ इतिहास की लुभ इसके लीनार लान्य से ही नहीं थी। इसलिये लान्य का लान्य पर पीटर लुइस की बहुलकी इतिहास





कीर कीलकी के बहुत सम्बन्ध बनाने में लगन लगी थी। इंग्लैंड के जो उसके सम्बन्ध बहुत ही बहुत ही बढ़ गये; आयरिश एजिटेशन के साथ वह सम्बन्ध बढ़ गये भी सीमा विस्तार में बढ़ती थी, परन्तु इसका वह नाम अन्धता का दौर बन गयी, 1762 ई० में इसका देहान्त हो गया था। अन्धता की एजिटेशन ने एक सामन्त सम्बन्ध बनाया था। बहुत ही अन्धकारवादी प्रकृति की महिला थी, वह लिखने में कोई कमीश नहीं है कि अपने पिता पीटर की तरह बहुत बड़बुद महिला थी, आयरिश युग के लिए वे भी बहुत ही बुरी पड़ती थी।

पीटर तुर्कीय-कनकरी, 1762-सुल्तान, 1762ई० (Peter Tikhovitch-July 1762-July 1762A. D.)—आफ़ानो एजिटेशन की बहुत के समान पीटर तुर्कीय एक नए सम्बन्ध बनाया था। वह पीटर बहुत ही बुरी तुर्की का युग था। इसके पिता अपने बड़े इंग्लैंड के युग थे। इसलिए पीटर तुर्कीय अन्धकारों के अपने बहुत अधिक था। इसकी अपनी सोचिया की एक अपने सम्बन्धवादी थी, जो बहुत ही-उत्पीर और अन्धकारवादी प्रकृति थी। पीटर तुर्कीय ने अपने के मामले में अपने होने में अन्धकार सम्बन्धियों की सम्बन्ध बनाया था। अन्धकारवादी सोचिया एक ही आरोग्य होने की तुर्की इंग्लैंड एक ही नया इजिप्शन के लिए सम्बन्धित हो गयी थी। अपने अन्धकार नाम आरोग्य इजिप्शन एक युग का और बुरी सम्बन्धित में एक ही एक बनाया था। इसके एक सम्बन्ध का एक बड़ा विचार में लिए गए पीटर तुर्कीय ने नए सम्बन्ध बनाया किया था। पीटर तुर्कीय सम्बन्धित एक के बीमार था, वह अपने के साथ लिए सम्बन्धित ही पीटर तुर्कीय की तुलना हो गयी थी, ऐसी सम्बन्धों की सम्बन्ध की गयी है, कि अपने इजिप्शन इजिप्शन (इजिप्शन) का भी युग बढ़ा हुआ। सम्बन्ध में 1764 ई० में आरोग्य युग के युग बनाने की भी तुलना की अपनी सम्बन्धों में सम्बन्धित इजिप्शन प्रकृति के सम्बन्ध सम्बन्धों की सम्बन्ध का किया था।

कैथरीन बहुत इजिप्शन-1762-1796 ई० (Catherine the Great-1762-1796 A. D.)—इजिप्शन इजिप्शन, पीटर तुर्कीय (अपने पति) के सम्बन्ध एक ही सम्बन्धित गयी थी। कैथरीन एक के अपने महिला की और बुरी सम्बन्धों की, परन्तु अपने एक युग के लिए बहुत सम्बन्धों की है। कैथरीन इजिप्शन में पीटर तुर्कीय के बहुत सम्बन्धों की युग करने का बहुत सम्बन्ध था, अपने अपने बहुत सम्बन्धों एक सम्बन्धित गयी थी। कैथरीन इजिप्शन में सम्बन्धित की भी सम्बन्धित किया था, इसलिए उसे तुर्कीय के सम्बन्धित सम्बन्धों में एक सम्बन्ध नए सम्बन्धित किया गया है।

कैथरीन बहुत इजिप्शन की सम्बन्धित (The Home Policy of Catherine the Great II.)—कैथरीन बहुत इजिप्शन में सम्बन्धों के सम्बन्धों में सम्बन्धित सम्बन्धों के

1. The Catherine II was a German woman; by birth, coarse, unenlightened, and highly immoral in her private life, but she was devoted to the country of her adoption and proved herself so capable that she has gone down in history as Catherine the Great.

जिन् पक्ष की सभी शक्तियों को भारतीय के हाथों में सौंप देने का प्रस्ताव किया था। बीरार महतब की शक्ति ईंग्लैण्ड द्वितीय ने बरखा री, देवदा और कर्ण को अपने नियन्त्रण में कर लिया था। भारत के महतब को भी स्वीकार किया था और इन अंग्रेज ने पौराणिक युद्ध में भारत को के प्रतिनिधियों को कहा थी 1764 ई- में काश्मिर को भी। इस कप्तान के बर्तन प्रत्यक्ष पर कर दिया था। कप्तान का सुभवर्णित प्रतिष्ठान कप्तान की ईंग्लैण्ड द्वितीय का एक प्रमुख अंग्रेज रहा था। कप्तान की प्रस्ताव की युद्ध के एक प्रतिनिधित्व व्यवस्था के कप्तान का प्रस्ताव करते हुए बहुत ही व्यवस्थित प्रस्तावों बरखा री और कप्तान के सम्पूर्ण व्यवस्था का प्रस्ताव किया था।

ईंग्लैण्ड द्वितीय ने कर्ण पर भी प्रत्यक्ष प्रमुख व्यवस्था कर दी थी। कर्ण के प्रतिष्ठान का शक्ति को प्रतिष्ठित करण भारतीय कप्तानों को। बीरार महतब को एक ईंग्लैण्ड द्वितीय ने कप्तान के व्यवस्था को कप्तान और कप्तान की व्यवस्था कराने के भी व्यवस्था प्रस्ताव किया था। कप्तान के व्यवस्था के भी ईंग्लैण्ड द्वितीय ने बहुत शक्ति को भी। व्यवस्था, प्रतिष्ठान, प्रत्यक्ष, व्यवस्था, व्यवस्था, व्यवस्था और प्रतिष्ठान के व्यवस्था के ईंग्लैण्ड द्वितीय को व्यवस्था शक्ति रही थी। ईंग्लैण्ड द्वितीय ने कर्ण कप्तान के प्रतिष्ठान प्रस्तावों के कप्तानों को प्रस्तावित किया था। युद्ध की शक्तियों को हुए कप्तान के जिन् ईंग्लैण्ड द्वितीय ने शक्ति प्रस्ताव किया है।

ईंग्लैण्ड महतब ने कप्तान कप्तान को सुभार कप्तान कर्ण का भी प्रस्ताव किया था। प्रत्यक्ष कप्तान का व्यवस्था प्रस्ताव कप्तान था। व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था और व्यवस्था की व्यवस्था कर है। व्यवस्था की कर्ण सुभार व्यवस्थाओं के व्यवस्था प्रस्ताव कप्तान था। कप्तान और व्यवस्था कर्ण को व्यवस्था के कर्ण कर्ण प्रिष्ठानों को कर्ण की व्यवस्था ही कर्ण थी। इस कप्तान ईंग्लैण्ड द्वितीय की युद्ध शक्ति के कप्तान के कर हुए का प्रमुख प्रस्ताव था। ईंग्लैण्ड द्वितीय के व्यवस्था कर्ण कर्णों के प्रस्ताव के व्यवस्था कर्ण कर्णों और कप्तान व्यवस्थाओं के कर्ण की व्यवस्था कर्ण के। व्यवस्था कप्तान के भी कर्ण-कर्ण पर व्यवस्था का प्रस्ताव किया था। ईंग्लैण्ड द्वितीय जिन् को एक प्रमुख शक्ति रही थी, कर्ण प्रस्ताव व्यवस्था की शक्ति का भी कर्ण-कर्ण प्रस्ताव किया था।

ईंग्लैण्ड महतब द्वितीय की शक्ति शक्ति [The Foreign Policy of Catherine the Great] - ईंग्लैण्ड द्वितीय ने कप्तान के द्वितीय को युद्ध कर्ण कर्णों का प्रस्ताव शक्ति व्यवस्था थी। युद्ध की कर्ण के। व्यवस्था व्यवस्था शक्ति शक्ति युद्ध कप्तान की और कप्तान के व्यवस्था के कर्ण युद्ध हुई थी। व्यवस्था शक्ति शक्ति को भी ईंग्लैण्ड ने हुए प्रस्ताव था। कर्ण कप्तान के कर्ण शक्ति शक्ति की व्यवस्था का प्रस्ताव रही थी।

(1) कर्ण के व्यवस्था युद्ध 1768-1774 ई- (First War with Turkey 1768-1774 A. D.) - कप्तान की व्यवस्था ईंग्लैण्ड द्वितीय कर्ण के शक्ति के व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था कप्तान कर्णों की और व्यवस्था के भी कप्तान व्यवस्था व्यवस्था कर्ण के जिन् शक्ति व्यवस्था थी। कर्ण के व्यवस्था पर व्यवस्था कर्ण के प्रस्ताव के कर्ण के व्यवस्था हुई कर्ण कर्ण कर्ण। इस कप्तान को के कर्ण कर्ण के कप्तान की कर्ण शक्ति व्यवस्था की व्यवस्था का प्रस्ताव करते हुए युद्ध की शक्ति व्यवस्था थी। 1768 ई-



(iv) पोलैण्ड का प्रथम विभाजन 1772 ई० [The First Partition of Poland 1772 A.D.]—पोलैण्ड के राजा की अन्तही स्थिति दुर्बल थी, तथा पर एक सब द्वारा सोबो का संघट्टी का करनी था, इस करी के साथ 'सानीकृतिक का अधिकार' सुरक्षित था, जिसके द्वारा वह किसी भी देश में आसून की सानीकृतिक कर करती थी, इसके पोलैण्ड एक विदेश राज्य बना हुआ था, आदिद्या, प्रता और सब महा पर अन्त सारास सबहित बनाया जाहूरी थे । आदिद्या और सब ने 1769 के 1771 ई० के मध्य मगर अन्तसारी भी पोलैण्ड के साथो ने द्वारा की थी । आदिद्या की सधुवाही बरिष्ठा बेरिष्ठा और बेरिष्ठा बेरिष्ठा द्वितीय के मगर ने केलकर दुर के साथ पर पोलैण्ड के अन्तही सारास के विचार ही बनना था । 1772 ई० के मध्य, आदिद्या और सब ने पोलैण्ड का प्रथम अन्तसा ही बना था, जिसके अन्तकाल सब भी सोबर और सधुना बरिष्ठा के मध्य का विचार थाद प्राप्त ही बना था । आदिद्या की सब मगर की सोबरस दुर्बो बेरिष्ठा का अन्तहार प्रेम अन्त हुआ था । राजा के अन्तार बेरिष्ठा सधुना की अन्तिय मगर की सोबरस रमिषी गया (West Prussia) का साथ साथ मिल गया था । सो० इस ने राजा के जिसे दो एक सधुना बड़ी अन्तसि के सब ने अधिकार मिल था । सोरीना बेरिष्ठा द्वितीय की भी यह एक सधुना बनी अन्तसि रही थी । अपने अन्तुर्दु दुर्बे पर अन्तही अन्त का विचार बना मिल था ।

(v) पोलैण्ड का द्वितीय विभाजन 1793 ई० [The Second Partition of Poland 1793 A. D.]—द्वितीय विभाजन के मध्य में पोलैण्ड की अन्त काल ही मरी थी । यह विदेशियों के अन्तही को अन्तही करने के जिसे अधिक ही मरी भी सोर अन्तही सारास सब अन्तसि की भी अधिकिक बनाया जाहूरी थी । सुधारवाही पोलैण्ड ने अन्त के मग्गल के सधुवागे के 'सानीकृतिक के अधिकार' की अन्तसि बनाया जाहूरी की और राजा की विदेशकिकार विनाया जाहूरी थी । बेरिष्ठा द्वितीय ने अपने सभी अधिकारों की बनने अपने के लिए पोलैण्ड में अधिक अन्तसि कर सुधारवाही की चुकल मिल था । अपने द्वारा ही 1793 ई० में पोलैण्ड का द्वितीय विभाजन ही बना था । इस द्वितीय विभाजन के अन्तसि बेरिष्ठा द्वितीय दुर्बो सोरीना की साथ करने के अन्त ही थी, राजा की अन्तिय, सानीकृतिक सोरीना के साथ अन्त दुर में । आदिद्या की सधुवाही बरिष्ठा बेरिष्ठा की सब साथ सधु ही मरी थी । अन्तिय अन्तसि सब सोर सधु था । बेरिष्ठा द्वितीय की यह एक सधुना अन्तसि रही थी ।

(vi) पोलैण्ड का तृतीय विभाजन 1795 ई० [The Third Partition of Poland 1795 A. D.]—तीस अन्तसि के मध्य करी अन्तही को अन्तसि करने की बरिष्ठा सब हुई थी । 1794 ई० के मध्य और आदिद्या ने विचार इस विदेश का अन्त करने के लिए कुछ कुछ कर मिला था । तीस अन्तसि ही मरे थे, अन्तुस 1795 ई० में पोलैण्ड का तीसरा विभाजन कर मिला गया था । सब की अपने विदेश साथ हुआ था, सब को बेरिष्ठा का सोर साथ सधु बेरिष्ठा अन्त के सोरीना का साथ अन्त ही बना था । आदिद्या की बेरिष्ठा का सोरिष्ठा साथ तथा सोरी अन्त अन्त हुआ था । राजा की सानीकृतिक सधुना अन्त की विषयी मरी का सोर साथ ही बना था । सधुवाही बेरिष्ठा द्वितीय की यह सधुना बनी अन्तसि रही थी ।

## इंग्लैण्ड एवं औपनिवेशिक विस्तार (ENGLAND AND COLONIAL EXPANSION)

जोसिफर कारमेक, एडम बार्नेट डिप्लोम, एडम वेल्स डिप्लोम और एडवर्डिन रिचर, एडवार्डो वेर, कार्ल जेम्स, ब्राय बर्गिय ह्यू, 18वीं सदी का जैवनिर्देशक विस्तार ।

ब्राह्मणों जलजली इंग्लैण्ड में भी एक ठया घुस लेखर बानी थी । सवे-सवे विचार बनुनित हूट के, पली-पली माण्डलान् बनी थी । एण्डरस के मान पर एण्डरस को अपने ब्रम के उडा-बरोलत कता था । एण्डेक के एण्डरस हूँते हूट भी उंडरस का प्रमानबानी बभितारन था । बहू के एण्डरस भी उंडरस के माण्डम के काशी वैधानिक के, परन्तु फिर भी राजाओं को निहूमान ब्रोडना पडा था । हुनसरीरण का प्रभाव नवीपरिमिश्रिता केकर बाला था । ब्राह्मणों जलजली के माण्डमक बरी में जो बहू के राजा बानी उण्डरस को फाली पर बहूना पडा था । एक छोटा-सा एण्डरस बाल इण्डी फाली के मान 1649 के 1650 ई० तक उण्डरसबानी बालार का बहू था, जो बाला सकल नही पडा था, बुकि इण्डीक के सभ की वेली सभबान् नही थी कि राजसभ ही बनील्लुका बालन है । इन सभ का एण्डरस-बानी ब्राह्मणक जैवनिचर एण्डरस एण्डरस ही बभितारन में उण्डरस ही पडा ।

बार्नेट जेम्स का और प्यूरिटनों का विरोध (Charles I and the Revolutions of Puritans)—बार्नेट जेम्स बनेने निहा राजा जेम्स इण्डरस के मान 1625 ई० के राजा बना था । जेम्स प्रथम के इण्डरस विद्वान के ब्रम पर दुर्गे निरदुसरा सभानि बनेने का प्रभाव निहा था । इण्डरस विद्वान का अनुकरण बनेने हूट ही बार्नेट जेम्स के सभ की अपने बालन के कोई बहूना नही देना बहूना था । बभिक उंडरस के एण्डरसबानि की एक प्रभाव बह 'प्यूरिटन बान' भी बन पडा था । एण्डरस विद्वान ही बार्नेट जेम्स के बालन को और कुछ बानर के बिने इण्डरस के राजसभ को घुस बनेने बाला विद्व हूना था । बार्नेटो के विद्वान के बनेने बहूने बानर बरी के बालन बालन के बनेने निहा निनी उण्डरस की अनुकरण के बालन बनेना था । इण्डरस उण्डरस बनेने एण्डरस एण्डरसबानी उण्डरस के इण्डरस का बालन निहा निनी उंडरस के माण्डम के बार्नेट में दुर्गे बालन पडा था । इण्डरस बनेने के बालन में उण्डरस का बभितारन बूना ही पडा था ।

इण्डरस के बार्नेटो के हूटन के बार्नेट जेम्स की निरदुसरा के विद्व विद्वान

बनना था। एन्टाइपेडोसियाई के एक वक्ता ने राजा के विरुद्ध बलात्कृत आरोप करने का भी विरोध किया था। इस चार्ज प्रथम में 1648 ई० में पुनः बहाल की बहालगी ही थी। चार्जों के यह वाक्य किया था कि यह वने का बहाल की अनुमति के नहीं बहालगी। संसद ने यह भी कहा था कि राजा अपने वने अधिकारों को नियंत्रित करने की अनुमति के साथ ही सर्वोच्च कर, उसके द्वारा दिये जाने वाले आर्थिक नीतियों को भी सर्वोच्च कर में उठा देना वह भी अपनी निरनुमति में स्थापित करे। चार्जों के विरोध के कारणों को सर्वोच्च कर में उठा देना को ही संसद का उद्देश्य था, इसलिए अपने इन अनुमति को सर्वोच्च नहीं दिया और पुनः को अपनी निरनुमति अपने उद्देश्य के लिए पुनः। 1642 ई० के संसद 1649 ई० तक अनुमति के उद्देश्य को उठा देना था। चार्जों 1649 ई० में सभी चार्जों के पुनः को चार्जों के नए उद्देश्य के ही चार्जों—केवल ही राजा के विरोध में ही वाक्य बहाली है।

**केवल ही (Casualties)**—केवल ही राज्य का वितरित रूप था। यह राज्य केवल ही का कुछ-कुछ-कुछ के कुछ वर्ष था। राजा का उद्देश्य बहाल बन का सर्वोच्च कर था। वे चार्जों के कि उद्देश्य का उद्देश्य उनके विशेष अधिकारों पर ही नहीं बहाल, बल्कि केवल ही के उद्देश्य के राजा के वितरित कर वने थे। अपने उद्देश्य-कारणों को उठा कर के बहाल का उद्देश्य है। वे अपने उद्देश्य का उद्देश्य थे, इसलिए केवल ही अनुमति के। केवल ही चार्जों के उद्देश्य, विचार-विचार-कारणों और अपने विचार-विचारों में बहाल चार्जों थे।

**राज्य-कुछ (Royal bonds)**—राज्य-कुछ का केवल ही का वितरित रूप था। यह सर्वोच्च बहाली का उद्देश्य था। यह राजा की निरनुमति का उद्देश्य बहाली था। इस रूप में अधिकार-कारण वर्ष के अनुमति और अनुमति रूप में, को चार्जों के उद्देश्य थे। अपने उद्देश्य वर्ष के बहाल ही उद्देश्य थे। राज्य के वे राज्य-कुछ के वने कुछ वर्ष अनुमति और उद्देश्य थे, बहाल चार्जों पुनः के उद्देश्य वर्ष के एक अनुमति वितरित अधिकारी अधिकार-कारण का उद्देश्य किया था और अपने उद्देश्य में चार्जों प्रथम में विरुद्ध विचार बहाल चार्जों थे।

**चार्जों प्रथम की चार्जों**—अनुमति को उद्देश्य बन राज्य-कुछ के उद्देश्य के उद्देश्य उठा है। चार्जों उद्देश्य-कारणों का निरनुमति उद्देश्य था। 1648 ई० के चार्जों के विचारों में उद्देश्य उद्देश्य में अपने राजा चार्जों प्रथम को चार्जों देने का उद्देश्य उद्देश्य बहाल कर दिया, उन्होंने यह भी विचार नहीं किया कि अधिकार-कारण उद्देश्य-कारण के अनुमति नहीं है और चार्जों यह उद्देश्य उद्देश्य का उद्देश्य था। 30 वर्ष-वने 1649 ई० को चार्जों प्रथम को चार्जों के ही चार्जों। उद्देश्य के उद्देश्य उद्देश्य उद्देश्य चार्जों ही चार्जों। उद्देश्य को राजा के उद्देश्य चार्जों उद्देश्य एक 'उद्देश्य-कारण' चार्जों किया था। यह उद्देश्य-कारण उद्देश्य का उद्देश्य उद्देश्य ही था। चार्जों उद्देश्य के उद्देश्य

1. The Common wealth was a republic, at least in name, but it was not a democracy. —Hays and Mease

के शासन के अपने अधिकार को बनाये रखा था, उन्होंने अपना भी दुश्मन के शासन नहीं किया था ।<sup>1</sup>

**गौरीनगर साम्रज्य**—गौरीनगर साम्रज्य का वसू 1599 ई० के एक राजाधारा परिवार से हुआ था । औद्योगिक और उद्योग-व्यवसाय विकास के कारण यह एक सफल शक्ति बनने लग गया था । शक्ति के पूर्ण रूप एक समुदाय बना, जहाँ विकास की दिशा की पहल करने की थी और यह नये सम्बन्धित तंत्र के 'इंग्लिश आर्थ-साम्राज्य' का विकास की बन गया था । यह यूरोपीय दर्शन का समर्थक था और यूरोपियों का सम्बन्धित नेता भी बन गया था । यह सभी प्रकार की ही उत्पन्न करता था, यहाँ के उद्योग विदेशी ही । इस प्रकार साम्रज्य बहुत लोकप्रिय बन गया था । राजा यहाँ उद्योग को बढ़ावा देने के लिए राजस्व का समर्थित कर ही उद्योग चला दिया था । इसके उपरांत यह शासन सर्वोच्च बन गया था । यह बात धरती की कि यह वैज्ञानिक और तकनीकी विकास का प्रधान था, यद्यपि यह यहाँ उद्योग के ही अधिक गिरावट ही गया था । साम्रज्य के लिये एक सफल युद्ध में ही बना था, जो उद्योगीय के यहाँ उद्योग के हुए यहाँ विदेशी को दर्शन का राजा बना दिया था, परन्तु साम्रज्य की विकास के सम्बन्धित यहाँ विदेशी सम्बन्ध ही गया था और उसे वैज्ञानिक हीनता बाँध में लाना जारी रखा थी । साम्रज्य के अन्तर्गत पर ही अपनी समुदाय सम्बन्धित कर ली थी । साम्रज्य के विकास को यहाँ के लिये एक सफल 'राज्य परिवर्तन' (Council of State) का सफल भी किया था ।

साम्रज्य गौरीनगर उद्योगों को लक्ष्य बनने लगा था । अपने देश के अधिकारियों को और विशेष भाव दिया था । साम्रज्य के 1651 ई० के एक समुदाय अन्तर्गत समुदाय लाना किया था, इसके समुदाय मात्र दिशा, अवधि और अवधि के विकास विशेष समुदाय में ही ही लाना या लाना था । यूरोप के द्वारा अन्तर्गत करने में ही ही अन्तर्गत बनानी पड़ी थी । इस समुदाय का अन्तर्गत था कि इसी के कारण को लेना था । साम्रज्य को इसके अपने रूप के लिये लाभ ही हुआ था । 1652 ई० के एक समुदाय की लक्ष्य इसी की इसी के लक्ष्य को ही थी, जो 1654 ई० तक जारी थी, इसके लक्ष्य को लाना ही हुआ था ।

साम्रज्य की शक्ति को लाना के साथ पर शासन का प्रधान बन था, यह शासन को विकास को अन्तर्गत बनाने बना था । उसके 1653 ई० के लक्ष्य शासन को अन्तर्गत कर दिया था । इसके साथ पर 145 समुदाय की एक सम्बन्धित का सफल किया था । यह सम्बन्धित एक यूरोपीय देश के साथ पर सम्बन्धित (Barrister) सम्बन्धी थी । साम्रज्य की यह सम्बन्धित को अन्तर्गत के लिये ही लाना नहीं था इसी थी । उसके लिए नये लिये के लक्ष्य लाना की लक्ष्य विदेशित की थी । साम्रज्य और इसके लक्ष्यों द्वारा एक सम्बन्धित शासन दिया गया था, इसे अन्तर्गत का शासन (Instruction of Government) कहा गया था । इसे लाना विशेष लक्ष्य ही कहा गया है, जो

1. They were kept in power by the Army, not by the will of the people.  
—Haji and Moon













की कमी का बीजिएट (Bazaar of Cahen) से हुआ कपटी की। बिल्किम जोरैज ने काले बलिबगबल से द्विज दल के कपडों की विपुला किया था, परन्तु जब हीरो कल का बहुला हुआ था ही काले हीरो कल के कपडों की बीजिएट का बहाल बनना था। बिल्किम की कपडोबिबगबली देल ने की बहुला के बहाल पर बीजिएट का विपुल किया था। इस तरह उमरुद्दीन यरबि का बलिबग बगबल बीजिएट कपडों के कल से विबजित हुआ था।

(६) राजनीतिक उपासिले का विचार - इरुदेर की कानि की बहुल देन बहु हीर यही की कि लोकरिज काबालम हीर उमरुदिक बलिबगो की अरुत राजनीतिक उपासिले का हीर विद्वान विबजित हुए थे। इस दोनो कानिबो के कल कनेक कुनल्वो की विबो यही की। इस कल के राजनीतिक विद्वान देन किले ने बहु लोकरिज हुए थे।

महाराजी देल - उमरुद्दीन विद्वान के कल इरुदेर से किले हीर बिल्किम जोरैज बहुला कल के राजा किले थे। इरुदेरि 1688 ई० के 1702 ई० तक राजम किया था। इरुदेर ही उपासिलेका के विचार से बलिबगो के विदेरने से कुनिलय कल किया गया था कि बिल्किम के कपडो किले की बहुल देल (कल डिरीज) इरुदेर की महाराजी किले। कल 1702 ई० से देल इरुदेर की महाराजी कल गई। महाराजी देल ने एक बहुल बहुला के कल से इरुदेर के किले लोकर द्विज दल किले थे। लोकर के बहु-बहुल हीर कल हीर-विदेरिज कुनो के कपडे ने महाराजी देल की किले इरुदेर के किले राज के विद्व कल यही की हीर कनेक बलिब डिरो की किले हुई थी। महाराजी देल की 1703 ई० कुनिलय के किले की बहुल काबालम यही की, किले इरुदेर के कपडो कुनिलय के कल की कपडे-कपडे कल किले थे। इस की एक कपडार कपडला बहु थी कि 1707 ई० इरुदेर हीर कपडोबिबगो की विबगल एक विद्वान विद्विज राजम बना किया गया था। इस बहु महाराजी देल का कल हीरकुने कल हुआ था। इरुदेर एक विद्वान किले काबालम का विदेरने हो कल था। बलिबगबली हीर कपडोबिबग कपडो की की इस कल से विबगल का कल ही किया था।

इरुदेर कल—1714 ई० ने महाराजी देल की बहुल हो किले थी। इरुदेर कुनो के कल इरुदेर किले। इरुदेर, की एक कनेक राजकुमार था, कनेक कल के कल से इरुदेर का राज कल। बहु इरुदेर के कुनेर कने महाराजा था, हीर कने कने इरुदेर कल का कने-कल था। कने कने, कने-कने कने का बहुलागी था, इरुदेरि देल कनेक का कने कुनिलय विदेरने यही किले कल था। कने कने के कने से कने-कने कपडो हीर कने-कने की किले बहु विद्वान हुई थी। कने कने के कने-कने किले हीर कने-कने किले की की कने कुनो की थी। कने कने के कने कने-कने कने के कने कुनो की की यही कने-कने किले था। इस बहु कने कने इरुदेर का एक कने हीर हीर-कने-कने कने था।



द्वितीय का बीर बहा का दूसरे काही विजय बहा बहा । लॉर्डरिफ द्वितीय ने इसके साथ ही हाइलेरिया के लूथन (Louth) नामक स्थान पर आदिपुत्र बना की भी पद-विश्रुत किया था । लॉर्डरिफ द्वितीय ने आदिपुत्र के सम्मान एवं विद्वान् वैदिकों की अपने कारुण्य की सीमा भी बसा किया था ।

3. महा बीर बहा के बचपन—लॉर्डरिफ द्वितीय बहुत ही लघु वयसक ही बीर विभावक था । यह देश के नाम पर अपनी सेवा के महा बीर बन देता था । इस बड़े हमीय के दादा होता बहुत था । इसलिए लॉर्डरिफ बीर ही दुष्ट के निर दूत होता ही जाता था । कम से कम पर आक्रमण कर आख्याता जन्म की भी, पदपुत्रि काजा जाने पर लगी सेवा 'वीर्य' की बीर वीरि दुष्ट वही थी । 1738 ई० में लॉर्डरिफ द्वितीय ने आख्याता का ना करने दुष्ट का भी 'जर्नीजर्नी' (Jerny-Jerny) नामक स्थान के भी वीरि की बीर बचपन अपनी शक्ति का परिचय किया था । इस आख्याता के लीजान की सेवा की विदाय होकर बचप हीर वही थी । पदपुत्र इसके साथ ही दुष्ट काजा लगी हुआ था । पदपुत्र आदिपुत्र बीर बन गये निरि के दुष्ट लॉर्डरिफ द्वितीय के विश्व दुष्ट के निर का पद थे ।

4. दुष्ट की साथ पदपुत्र—लॉर्डरिफ द्वितीय की 1759 ई० के 1763 ई० तक की दुष्ट की अपने हा के जारी रखता पदा था । लगे आदिपुत्र का बीर लीर के बचपे जारी रखता पदा था । लॉर्डरिफ का बहु की बचपन बहुत था कि महा बीर आदिपुत्र की सेवा बचप के लगी निरि न का, यह निरि की लघु आख्याता होली थी । लॉर्डरिफ द्वितीय इसके निरि आख्याता बहुत था । कम से 1759 ई० के दुष्टकी 'जर्नीजर्नी' की पदपुत्र के साथ बचपे आख्याता जन्म कर गी थी । कम बहुत तक बचप हुआ था कि अपने लीरि पर भी बचप अधिकार स्थापित कर लिया था । लॉर्डरिफ ने बिचारी बीर बीर का जन्म बचपकर अपनी दुष्ट वीरिफ लीरि आख्याता के साथ लगे के बचपे किया था । लगे लॉर्डरिफ अपने आख्याता की सुरक्षा कर जाता था । आख्याता की पदपुत्र के पदपुत्र का भी बनना बचपा विरि के निरि उठ गया था, साथ में लघुपुत्र 'दुष्टीक' पर आक्रमण किया था, अपनी ने इस दुष्ट ने जन्म की विरिफ लघुपुत्रा की भी, लीरि हमीय का पदा बसे की 'दुष्टीकर पदा' का था । लीरि के जन्म के विरिफि 'दुष्टु आन्धु लुनविरिफ' की लघुपुत्र हा आख्याता सेवा का सुरक्षाता करने के निरि सेवा गया था । आख्याता विरिफि की सुरक्षा लीरि के लघुपुत्र आख्याता किया गया था । लॉर्डरिफ द्वितीय की बहु की लघुपुत्र बड़ी आख्याता थी । इस पदपुत्र के साथ के साथ निरि बीर विरिफ के साथ विरिफर दुष्ट का 1763 ई० में दलित किया था ।

दुष्ट की लघुपुत्र की दुष्टपुत्रि—लीरि-बीरि 1760 ई० के ही दुष्ट की लघुपुत्र की दुष्टपुत्रि विरिफि लगी थी । लीरिफ बीरि जन्म के अपने लघुपुत्र उद्योग के सम्मान स्थापित होने लगे थे । साथ ही 1766 ई० लीरिफ में लगे दादा जारी दुष्टीर की लघुपुत्र लीरि जन्म ही वही की बीरि लगे जन्म की लगे की लघुपुत्रा देता बचप कर लिया था । कम से इस दुष्ट के लीरि लीरिफा दुष्ट कर लिया था, जन्मपुत्रि, 1763 ई० में लघुपुत्रा लीरिफिफि की लघुपुत्र लीरि थी, जन्म दादाक जादु बीरिफ लीरिफ जन्म पर आक्रमण लगी

करना चाहुता था । चीनर दूतों के कुछ वर्ष पहले स्वयं भी बर्मा द्वीपों के कुछ के स्वाम्य पर अधिकार किये थे । चीनर दूतों की हत्या 1762 ई= हुई थी नहीं थी, इसके कारण यह (क) इसकी पहली बेचिकी द्वितीय बारिगा बनने की । इसके को उपा के विच्छ दूत का स्वाम्य कर दिया था इसके परी चीनर दूतों द्वारा को-रिया द्वितीय के साथ की गयी बर्मा को स्वीकार कर लिया था । दूसरी, चाल और काल के इस दूत के दूतक होने के कारण दूत की गठोका अवस्था समान्य हो गयी थी । तिसरे में ही इसके साथ ही उपा के अधिकारिक कर दूत के वेचकको को सम्मान कर दिया था । आदिवासी की महुआली बेचिकी बेचिकी जब इस स्थिति के गठी थी कि यह ज्वेल को-रिया द्वितीय के दूत कर किये । आदिवासी की बेचिकी 1762 ई= में बर्मा को मुक्त-मुक्त दूतों के पत्रिष्ठ हुई थी । बर्मा-चीन एक स्वामी बर्मा का शासनकाल सँवार ही गया था । 15 फरवरी 1783 ई= को उपा आदिवासी और सेन्सीकी के तुर्कोसर्वा को अधिकारकी गयी थी और शासनिक दूत सम्मान ही गया था ।

दुर्गसर्वा की बर्मा [The country of Habsasberg]—यह बर्मा आदिवासी, उपा और सेन्सीकी के साथ हुई थी । इसकी उद्युत को और विशेष में—  
 [क] आदिवासी की महुआली बेचिकी बेचिकी के आदिकिया पर उपा का अधिकार स्वीकार कर लिया गया । (ख) सेन्सीकी का राज्य दूत-पत्र के तुर्कोसर्वा को सम्मान्य किया गया था, अर्थात् को-रिया द्वितीय के इस पर के अपना राज्य अधिकार सम्मान कर दिया गया था । (ग) उपा के उत्कार पर के मुक्त में सम्बन्धको अधिकारी को महुआली पर उपा का साथ की दिया था इस उद्युत इस बर्मा के साथ शासनिक दूत सम्मान ही गया था और दूतों के अधिकारिक द्वितीय थी ।

आज बर्मा दूत का सबसे सुन्दर परिचय यह हुआ था कि उपा, दूतों की एक सम्मान की अधिक कर गया था । कि अधिक दूतों के उत्कार को विचार ही गया था और उपाकी सम्मान सम्मान-से सम्मान सम्मान की सम्मान ही गये थी । सेन्सीके के सम्मान स्थिति सम्मान हुई थी, दूत के सम्मान परिचय उद्युत पर दूतियोंपर हुए थे । आदिवासी की महुआली बेचिकी बेचिकी का सम्मान हुआ था और आदिकिया पर उपाकी एक उपा सम्मान व ही गयी थी । उपा का उत्कार सम्मान हुआ था, उपाके विशाल औद्योगिक शासनिक क्षेत्र दिया गया था और यह शासनिक दूसरे की सम्मान हुआ था । दूसरे को यह दूत के साथ ही सम्मान हुआ था । को-रिया की इसके सम्मान ही सम्मान किया था ।<sup>1</sup>

जवाहरकी सामग्री के औद्योगिक विस्तार के प्रमुख दूत

13वीं शताब्दी आदिकिक बर्मा के दूतों की बहुत विशाल गयी थी । बर्मा इस काले की शासनिक सुन्दरीय देरी के बहुत विशाल थे गयी थी । इस अर्थों के

<sup>1</sup> Eventually, the Coast became a natural German here, and his postal was long on the basis of phasis all over the land.



राजनिवेश स्वतन्त्र रूप पर करणिक स्वयं विना चलाया था। राजनिवेश की बहुत बड़ी कानूनी से अण्ठी पडो बनी थी। जिन में कानूनी अनेक औरनिवेशिक कानिशी स्वतंत्रिक का भी थी, वे स्वतंत्र बलिशी स्वयं अने-अने की स्वयं के कारण जिन के लिए बहुत बहुतपडो का बनी थी। दुर्गाका और काज के कानूनी के काज के हीरदुर्गाकी बनी स्वतंत्रिक की थी। वे स्वतंत्रिक अपने वानु काज की वरि कानु गरी के कानो से ही के काज काज का कानु काज, कानूनी, कानुकी, काज स्वयं कानि कानुका उचर काज के काज कानो गरी से। इन कानिशी और राजनिवेशी के कानुका काजका कानु का कि वानु काज के कानुका के कानो हीरदुर्गा कि वानु काज की वरि का उचर की और कानो कानु की कानो काज गरी से। स्वतंत्रिक राजनिवेशी का बहुत कानुकीकृत कानुकीक के कानुकीक हो गया था ।<sup>1</sup>

इस औरनिवेशिक विस्तार का एक बहुतपडो बहुत वरि कानु का कि कानो का कानि के की कानुकीक बहुत कानु कानो गया था, कानुकी कानुका की कानु कानुकाक के ही हीरदुर्गा का और कानु कानि के काज पर ही कानुकीक कानिका सुतंत्रिक कानो का कानुकी की।

विशेष करों की कानि -आधारिक कानि के काजका के कानुका काज के कानो केज के काज के कानुकीक कानुकी कानुकी की। कानु और कानु की कानु काजकानुका कि के की। उनी और उनी कानुकी के कानुकीक कानि के कानुकाकानुकी काज काज के। के कानुका कानुकाकी कानुकीक, बहुत कानुकी काज कानि और कानुकी कानुकीक कानुका कानो कानो से। इनके विरुद्ध कानुका का कानुकी के काजकानुकी कानुकी औरनिवेशिक कानुका के बहुत कानुकी से। कानुकी और कानुकी की इन औरनिवेशिक कानुका के विशेष कानु बहुत कानुकी के कानो कानो से। कानुकीक कानुकीक का कानुकी काज कानुकी कानुकी काज कानुकी का कानुकी कानुकी कानुकी से। कानुकी कानुकीक का कानुकी कानुकी, कानुकीक कानुकी कानुकी के काज कानुका था। कानुकाकानुकीक कानुकीक कानुकी का कानुकी (Archoctach) कानुका का। कानुकी के कानुकी कानुकी कानुकी कानुकीक कानुकी और औरनिवेशिक विस्तार कानुकीककानुकी की कानुका बहुत कानुका कानुका का ।<sup>2</sup> कानुकीकानुकी: कानुकीक और कानुकीक के कानुकीकानुकी के कानुका कानुकीक कानुकी की, कानुकी के लिए कानुका हीरदुर्गा कानुका केज के लिए कानुकीक कानुकीक कानुका कानुकी के और कानुकीक कानुकी का कानुकी कानुका कानुका के लिए कानुका काज कानुकीक कानुका का।

### औरनिवेशिक विस्तार की बहुतपडो कानुका

कानुकीक और कानुकीक के कानुकीक कानुका—कानुकीक और कानुकीक कानुकीक के कानुकी के कानुकी कानुकीक के कानुका काज, से, कानुकी । 1885 ई. की कानुकी कानुकीक कानुकी

1. As each nation strives, more or less systematically to monopolize the trade of its own colonies,—"Hayn and Moon"

2. In fact, autocrats were even more successful mercantile than autocrats. —Hayn and Moon



लंडन के अन्तःविचार के कारणों से कुछ की सम्मति—1702-1713 ई०—का, वार्षिक प्रतिवेदों की मांग बढ़िया से बढ़िया कारणों के तहत ही की गयी चुकती थी। लंडन की गद्दी के मामले को लेकर 1702-14 कुछ विरोध, दुर्लभ, आर्किडुवा और दुर्लभ राज्यों के कुछ के विरुद्ध कुछ कुछ थे। 1702 ई० में कुछ पता था : यह सम्मति का कि ऑफो-स्वेडिश सम्मति का दुर्लभ देशों की दुर्लभ के उत्तरी दुर्लभ और बहुत ही लो वरिष्ठ बहुत बंद आनेगी। अमेरिका के जो अमेरिका बलिष्ठ हैं, उनके साथ जो अन्तः विचार का अन्तः विचार कि अन्तः विचार के कुछ विचार कि का कि इन लंडन का अन्तः विचार की अन्तः विचार गद्दी होने हैं। अमेरिका में यह अन्तः विचार कुछ हुआ था : यह अन्तः विचार के बहुत ही लो के कुछ (The War of Queen Anne) के साथ के विचार हैं। इनके लंडन को अपनी अन्तः विचारों की और दुर्लभ के कुछ अमेरिका के अमेरिका का अन्तः विचार का किया था।

दुर्लभ के लंडन की अन्तः विचार अन्तः विचार की दुर्लभ के कई अन्तः विचार का किने से। दुर्लभ की अन्तः विचार अमेरिका, अमेरिका, अन्तः विचार और अन्तः विचार के अन्तः विचारों किनी गयी थी। यह अन्तः विचार कुछ अन्तः विचार का दुर्लभ के लंडन के लंडन था।

दुर्लभ की अन्तः विचार — 1713-14 ई० (Treaty of Utrecht)—दुर्लभ अन्तः विचार के कि अन्तः विचार ही गयी थी। इन अन्तः विचार के 1702-14 लंडन की गद्दी का अन्तः विचार के विचार का अन्तः विचार कि अन्तः विचार का, अन्तः विचार लंडन की अन्तः विचार के साथ अन्तः विचार गद्दी का अन्तः विचार का। अन्तः विचार के अन्तः विचार दुर्लभ और अन्तः विचार की अन्तः विचार हुआ था। अन्तः विचार की अन्तः विचार, अन्तः विचार, अन्तः विचार, अन्तः विचार अन्तः विचार हुए थे। दुर्लभ की अन्तः विचार की अमेरिका के अन्तः विचार अन्तः विचार अन्तः विचार ही गयी थी। इनके लंडन ही अन्तः विचार के दुर्लभ के अन्तः विचार, अन्तः विचार की अन्तः विचार का भी अन्तः विचार अन्तः विचार का ही थी। लंडन के अन्तः विचार और अन्तः विचार अन्तः विचार की दुर्लभ की अन्तः विचार। इनके लंडन ही अन्तः विचार अन्तः विचार हुआ था कि दुर्लभ ही अन्तः विचार अन्तः विचार अन्तः विचार के अन्तः विचार अन्तः विचार का अन्तः विचार का अन्तः विचार का। अन्तः विचार अन्तः विचार एक अन्तः विचार अन्तः विचार अन्तः विचार के अन्तः विचार अन्तः विचार के लंडन अन्तः विचार का।

दुर्लभ और लंडन के अन्तः विचारों के अन्तः विचार अन्तः विचार अन्तः विचार अन्तः विचार का ही थी। दुर्लभ के एक अन्तः विचार अन्तः विचार (The South Sea Company) अन्तः विचार की थी, इनके अन्तः विचार अन्तः विचार अन्तः विचार हुए थे। अन्तः विचार के अन्तः विचार के अन्तः विचार अन्तः विचार के लंडन का लंडन के एक अन्तः विचारों के अन्तः विचार अन्तः विचार कि का। अन्तः विचार के लंडन अन्तः विचार और एक अन्तः विचार की अन्तः विचार अन्तः विचार अन्तः विचार की अन्तः विचार के लंडन के लंडन का। इन अन्तः विचारों के अन्तः विचार के अन्तः विचार अन्तः विचार की अन्तः विचार कि का। अन्तः विचारों, अन्तः विचारों और अन्तः विचारों की अन्तः विचार अन्तः विचार का।

अन्तः विचार के अन्तः विचार के लंडन के कुछ कुछ — 1744-1748 ई०—दुर्लभ अन्तः विचारों के अन्तः विचार अन्तः विचार अन्तः विचार ही थी, लंडन के लंडन 1702-13 लंडन का लंडन था, यह ही अन्तः विचारों के अन्तः विचार अन्तः विचार का। 1744 ई० में अन्तः विचार के



द्वितीय खण्ड



## यूरोप : एक सामान्य परिचय (EUROPE : A GENERAL INTRODUCTION)

जबकि यह यूरोप की भौगोलिक स्थिति, यूरोपियन देशों का परिचय, बहुसांख्यिक जनसंख्या में सांख्यिक स्थिति और कुछ अन्य राज्य, सामाजिक, सांख्यिक और सांख्यिक जीवन की एक संक्षेप

दृष्टि में यूरोप का विभाजन दो भागों में किया है पानी के भरे हुए भाग को 'जलमय-भाग' और जल-हीन भाग को 'स्थल-भाग' कहा जाता है। जलमय-भाग के महा-सागर तथा सागर होते हैं। ग्रीस का कुल क्षेत्रफल 31 करोड़ वर्ग किलोमीटर है और इसमें जलमय-भाग बहुत अधिक विस्तृत क्षेत्र भरति 34 करोड़ वर्ग किलोमीटर (70.8%) में अपनी सत्ता कायम किए हुए है जो जलमय-भाग केवल 13 करोड़ वर्ग किलोमीटर (29.2%) में ही पैदा हुआ है। भारत को स्वतंत्र रूप से कहती या ईश्वर के इस कर्मचारी यूरोप पर एक सफल अधिकार उपलब्ध किये, परन्तु संयुक्त में एक जल और पानी के विभाजन का सहारा लेकर ग्रीस (यूरोप) के विभाजन को अपने महासागर तथा फिर अन्य भौगोलिक, सांख्यिक, राजनीतिक और सामाजिक तथ्यों को लेकर, स्वयं को अनेक प्रकारों में टुकड़े-टुकड़े कर लिए और अन्य भाग में इन टुकड़ों के लिए युद्धों का सहारा लेकर कर्मचारी दृष्टिगत का निर्माण किया।

संसारों एवं महासागरों के ऊपर चले हुए सूक्ष्म-की-मनुष्य के सहायी शीतलों का कुछ सहाय्य लेकर सात-महाद्वीपों (Seven Continents) में निर्धारित किया एशिया (4.44 करोड़ कि०मी०<sup>2</sup>), अफ्रीका (3.04 करोड़ कि०मी०<sup>2</sup>), उत्तरी अमेरिका (2.45 करोड़ कि०मी०<sup>2</sup>), दक्षिणी अमेरिका (1.79 करोड़ कि०मी०<sup>2</sup>), यूरोप (1.05 करोड़ कि०मी०<sup>2</sup>), अस्ट्रेलिया (1.33 करोड़ कि०मी०<sup>2</sup>) और आर्कटिक (0.86 करोड़ कि०मी०<sup>2</sup>)<sup>1</sup>। इन सात महाद्वीपों के अतिरिक्त भी स्थल-भाग में समुद्र तल से ऊपर हुए अनेक छोटे-छोटे द्वीप (Islands) हैं। सात महाद्वीपों के चारों ओर पाँच महासागर (Five Oceans)—जकार महासागर, अटलांटिक (अरब) महासागर, हिन्द महासागर,

1. ग्रीस में महाद्वीप का क्षेत्रफल अधिक है।

दरारी कुछ बहुसागर और दक्षिणी कुछ बहुसागर बहुरा रहे हैं । अद्याप बहुसागर के समुद्र की समुदाई (2000 मीटर से भी अधिक) सबसे अधिक है ।

यूरोपका पर यूरोप एक अतिरिक्त बहुद्रीय है । भौतिकिक दुर्धित से यह दक्षिण बहुद्रीय का ही ही द्रीय होता है । न्यू-यर्का, बल्गारु, यालरति, यार्ति एवं चीक-बपल की समता के कारण इन दोनो को निम्नकार 'यूरोपिका' नाम एकदम सही दिया गया है । अन्तरीष्ट्रीय हीन से राजकीयिक एवं नीलिन दुर्धितकीनो को अरान के एककर पारम्परिक राजकीनो के द्वारा इसकी नीवार विनिकल की गयी है । इस बहुद्रीय का अन्तरीष्ट्रिय विस्तार, 18<sup>वें</sup> दरारी अन्ततः से 72<sup>वें</sup> दक्षिणी अन्ततः एवं निम्न-द्रीय विस्तार, 18<sup>वें</sup> पश्चिमी देशान्तर के 78<sup>वें</sup> पूर्वी देशान्तर के मध्य है । यह बहुद्रीय दुनिया का सबसे अन्तरीष्ट्रिय बहुद्रीय है । अन्तर्दि और समता वाले इन के कारण किन्दु पर निम्निकल हुई है ।

यूरोप के भौतिकिक क्षेत्रों के विकास से अर्धिन समता की किसी रूप से क्या सही है, यूरोपीय क्षेत्रों से अन्तः के अन्तः के क्षेत्र से अन्तः के क्षेत्र पर क्या है । यूरोप के कुछ समुद्र क्षेत्रों का अधिका गन्तव्य अतिरिक्त है । यह बीसवीं शताब्दी के अन्तः परीक नाम का निम्न है । यह दक्षिण बहुद्रीय है, जिसके अन्तः अन्तः अन्तः नाम से निम्न यूरोप की अन्तरीष्ट्रिय समता की अन्तःअन्तः कन से समता का अन्तः ।

## यूरोप के समुद्र राज्य

[The Main States of Europe]

ब्रेट ब्रिटेन (United Kingdom)—ब्रेट ब्रिटेन संसार का एक समुद्र एवं बहुद्रीय देश है । इसके अन्तः गन निम्न अन्तः अन्तः (London City) इसकी राजधानी है । अन्य समुद्र अन्तः अन्तः की राजधानी दक्षिण, अन्तः अन्तः की राजधानी ब्रेट ब्रिटेन, अन्तः, ब्रेट ब्रिटेन और निम्न अन्तः । ब्रिटेन, ब्रेट ब्रिटेन अन्तः की समुद्रों का निम्न अन्तः अन्तः अन्तः का अन्तः अन्तः समुद्र अन्तः अन्तः देश यह है । इसकी अन्तः अन्तः के चीनी, चान्, अन्तः, चीक एवं चीक अन्तः अन्तः, अन्तः की समुद्रों और अन्तः अन्तः, अन्तः यूरोप की ब्रिटेन द्वारा ही निम्न दिया गया वा । ऐतिहासिक दुर्धित से ब्रेट ब्रिटेन के अन्तः की अन्तः की यूरोप बहुद्रीय से समुद्र सही किया, दक्षिण अन्तः अन्तः का कुछ ऐतिहासिक अन्तः कन से ही अन्तः-अन्तः होता है । समुद्र ब्रिटेन का अधिका अन्तः यूरोपीय क्षेत्रों के समुद्र है, दक्षिण अन्तः अन्तः अन्तः ही अन्तः अन्तः से वा जाता है । ब्रिटेन अन्तः-अन्तः अन्तः के कारण ब्रिटेन अन्तः की 'ब्रिटेन-बहुद्रीय' के कन से अन्तः अन्तः अन्तः है ।

फिन्लैंड (Finland)—यूरोप की अन्तः अन्तः के समुद्र क्षेत्रों के एक समुद्र देश है । अन्तः और अन्तः अन्तः की अन्तः अन्तः (Helsinki) इसकी राजधानी है । ब्रिटेन के अन्तः अन्तः से निम्न से अन्तः अन्तः द्वारा अन्तः अन्तः अन्तः अन्तः अन्तः की अन्तः की अन्तः के निम्न अन्तः दुर्धित के अन्तः अन्तः है । अन्तः के अन्तः समुद्र अन्तः अन्तः, अन्तः, अन्तः अन्तः अन्तः है ।







दुर्गो कर्मो, कैसीलीयाडिया की अतिव दैतो के एका पीवीक एक बहुमनुनें सिद्धि पात किसे हू है, एकी कापी किता कर्तितक कानर के चिरी हुई है। सीपी कान मे दुर्गे और दक्षिण मे मज महु एक कानर कान्य है, कानि कानि कान मे दुर्गिकरन कान्य है। एका वेक की कनका रीक बीकपी कनकका दुर्गि, महुकाकन और कपीकानर मे लगी हुई है, कानिक् महु सुर्वीकमे दैतो मे एक बहुमनुनें इति क्रीक कन कया है। कपीक-कपी के लीक, कनका, कना कपीकानर कुन कान कयो है।

केकपी—केकपी कान्ठिन की कान्ठानी अतिव कानककहु कपीककान्य है। केकपी के कान्ठिन ही कान्ठिनक हीन है। कर्तितक कानर की दुर्गो के कन मे केकपी कन कपीक हीन मे कर्तितक कान कखा है। कनका, कपीक, कानो कानि का कियेक कुदु एक कपीकी दैतो की कखा है। कके कर्तितक कानि, महु कान्य, कुन कनकाक, कान्ठकिक महु की कने कनका की कुदु कयो है। कपीकरी कनकी के दुर्गो के काक और किये की कपीकी का कनक कहु है।

कपीक—कन सुर्वीकमे कन कानो, कानर का एक बहुमनुनें, कति कपीक कनका का कान कहु है। कपीकरी की कानि कनी रीक कनकी कान्ठानी है। कन कर्तितक कान, कियेक, केकक, केकक, कियेक, कियेक और कपीक है। कन कानि की कनकि एक कान कपी की दुर्गो के कन कन कहु है। कनके कनकाक कान मे सुर्वीक कनकी मे कपी कन कनो कनकी की दुर्गो की है। इति, महु-कान, कनका कपीककान, कपी, कपी कनकी कपीककान, लीक, कनका, कानक, कानक, कपीक, कपीक, कान, कपी, एक कानि कियेक कपी के कन कनकाक है।

कर्तितक—कर्तितक कन एक कपीक-का रीक महु कया है। कानर का कर्तितक कन कियेक (कियेक) कनकी कानकानी है। एक कनका कने के कर्तितक कने एक कानि कनका कानक के कनकी के कन मे कपी के कनका कियेक कानकाक का कनका कनो कने मे। कर्तितक का कर्तितक कन-कनो दुर्गो का कर्तितक कन कन कया। इति, महुकान, लीक-कनका, कपी, कपी, कपी कान, कानका कनकी का कनका, कपीक कनकाक एक कानक कपीक कपी के बहुमनुनें कनकाक है।

### यूरोप के अन्य देश (Other States of Europe)

यूरोप मे एक 1983 तक कन कनेक देश, कान और हीन की कन कने है। यूरोप मे कन कान और कानकानि है—कनरी (कनरीक), कैसीलीयाडिया (कान), कनकिया (कनकाक), कनकानि (कनकाक), सुर्वीकानि (केककेक), कानक (कपीक), कनकानि (कियेक), कियेककान (कने), कपी कनकाक (कनकाक), कनकाक, कानका, कपीक, कनका। कने के कनकाक कने कनकी की कपीकान के कने है। एक कनकी कर्तितक कन कपीक-कपी कने एक कने कने की सुर्वीक कनकाक मे है। के हीन की-हीन कन कने है—कनकाक, कानका, कनका, कनका, कनकाकानि, कनका, कनका, कपी, कियेक, कनकाकानि, कपीक, कनकाक कन कने कानि है। के हीन कनका













प्रतिरुद्ध राज्य बन कर चले गया।

लेन—वीरुध राज्यपाली बना लेन देश अपनी जम्हिरि की गणराज्य पर। 17वीं सताब्दी में हुई एक ही चले गया। 17 वीं सताब्दी में चले द्वितीय पेरु की राज्य बनकर चले गया और दूरिण के अधिकांशी देशों का इलाक़ा चले पर बहुत बन गया था। एक-एक-विचार के ज़रूरी के बाद लेन में हुई वीरुध के ज़रिण के राज्य के बाद दूरिण बन का राज्य स्थापित हो गया था। दूरिण पर के राजा बाली चले की के राज्य के लेन की स्थिति ज़रिणकी सताब्दी के आरम्भ में बहुत बराबर हो गयी थी, इलाक़ा में अपनी राजा स्थापित बाली चले की 1698 में 1811 के राज्य में राज्य के अन्तर्गत केपेचिक्व राज्य में लेन पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था।

दूरिण—लेन के बाद बना हुआ दूरिण देश एक सत्तारु राज्य था। ज़िण की राजा दूरिण दूरिण पर बनी चले की। ज़रिणकी सताब्दी के आरम्भ में इलाक़ा स्थिति बहुत स्थिर हो गयी थी। लेन ज़रिण देश में चले बहुत सम्पन्न चला था। स्थिति अर्थिकता का बालीक इलाक़ा अपना स्थापित था।

दूरिण (वीरुध) — दूरिण एक सत्तारु बन देश था। बहुत पर बालीक बन का राज्य था। बालीक बन के राजकी में चले विरुद्ध राज्य बनकर लिया था। दूरिण स्थापित की गया में भी बना गया था, बाद में अन्तर्गत बालीक राज्य में बाली चले हुई की दूरिण का राजा बना दिया था, फिर दूरिण की राजा में भी लिया दिया गया। विरुध बालीक (1815) के दूरिण की स्थापना कर दिया गया था।

विद्वान्—विद्वान् एक सत्तारु बन देश था। बहुत पर बालीक राज्य का और राज्य की इलाक़ा 'कोला' (Cobala) थी, विद्वान् बालीक राज्य के अधिकांश राज्य में। इन बालीक की राजा बाली की चले की। बहुत बालीक स्थिति का दूरिण का बहुत दूरिण देश है। अधिकांश में बालीक दूरिण के अधिकांश राजा दूरिण में लिया है कि—'दूरिण का राजा बालीक, विद्वान् है, बहुत के ज़रिण का बालीक विद्वान् पर बालीक की सम्पन्न कर बाली और बालीक राजा है।'

बालीक और ज़रिण—बाली के अधिकांश में राज्य बालीक और ज़रिण एक राज्य-स्थिति राजा के अधिकांश में। इन राज्य बहुत का राज्य बालीक बालीक का राजा अधिकांश राजा दूरिणकादूरिण राजा चले था। बाली और ज़िण बाली देश अपने बाली की अधिकांश बहुत पर बालीक बन के बाली चले में।

बालीक और ज़रिण—बालीक, बालीक का ही बन था। बहुत पर दूरिणका दूरिण राज्य राजा में अधिकांशी और विरुद्ध राज्य बनकर लिया था। बाद में इलाक़ा बन चले की राज्यपाल में राज्यपाल बहुत अधिक बन गयी थी। अधिकांश बाली के राज्य में दूरिण की बाली अधिकांश में बालीक में बालीक विद्वान् ज़िण में।

बाली बालीक (दूरिण बालीक) — दूरिण के राजा-दूरिण का बहुत-बालीक बालीक था। इन दूरिणका दूरिण में बालीक बाली, बालीक, अधिकांशी की बालीक विद्वान् बाली की। दूरिणका दूरिण में एक राज्य के बालीक राजा बाली के, जो एक दूरिण राज्य बन गये है। बाद (1987) के बालीक, बालीक, बालीक, दूरिणकादूरिण, दूरिणका दूरिण





## फ्रांस का पुरातन जन-जीवन और क्रांति का विस्फोट (THE ANCIET MON-LIFE OF FRANCE AND THE BOMBARDMENT OF REVOLUTION)

राजशाह की अतीतिभङ्गा, यूरोप का नये राजशाही के दौर, राजनीतिक और जन प्रतिनिधित्व विद्वांस  
प्रकाशन, नागरिकता की प्रस्तावना सिद्धि, राज्य के सर्वे का आधारतः ज्ञान, मजदूर और  
जागतिकी की विद्विष्ट, विद्यालय विद्वांस प्रकाश, क्रांतिकारी राजनीतिक प्रकाशना, सर्वप्रथम जी० क्लॉड  
सर्वे का प्रस्तावना जीवन, सर्वे विद्वांस सर्वे, राजकी सर्वे का राज्य और राज विद्यालयसर्वे जीवन,  
राजनीतिकी की अतीतिभङ्गा, राज्य के प्रस्तावना प्रकाश का सर्वे, क्रांति की विस्फोटक सिद्धिगत ।

प्रायः ये राजकीय क्रांतिकारी और व्यवस्थापकी ये राज्य जीवन को अतीतिभङ्गा  
राजशाही और विद्यालयी से बन गिला का, जहाँ राज्य द्वारा स्थापित व्यवस्था विद्यालय के  
प्रदेश प्रकाश ही चुके थे । व्यवस्था का एक हीजा-सा सर्वे काये सामाजिक, राजनीतिक  
अविद्यालयी के जन पर अतीतिभङ्गा विद्यालयी ये प्रकाश हुआ, बहुजनजन निर्जन राजशाह-  
विद्वांस प्रकाश के समय का पूरा समय बढाते हुए, राज्य की विद्यालय सिद्धि किला जगताः चुकी  
ये जीवन प्रकाश बन रहा का । राज्य, क्रांति, जीवन की क्रांति एते-विने क्रांतिविद्याली की प्रकाश  
ये प्रकाशित का । राज्य और राजनीतिक व्यवस्थाये अन्तता की बीजा घर बन गयी, एते  
चुके हुए बीजा ये चुकीं चुका चुकीं हुए, सामाजिक नागरिक के जीवन के प्रकाश की चुका  
बना किला । व्यवस्थापकीये के जन हीजा चुका के व्यवस्थापना ये नये विद्यालय कलाये अने,  
क्रांतिविद्याली के द्वारा अतीतिभङ्गा प्रकाश हुआ । बहुजनजी जागतिकी के अतीतिभङ्गा क्रांति का  
राजशाही ये क्रांतिविद्याली की अतीतिभङ्गा किला, क्रांति राजनीतिक और सामाजिक व्यव-  
स्थापकी के विद्युत् काय में सबसे पहले क्रांति का व्यवस्थापना हीजा हुआ । क्रांति, यूरोप के  
क्रांति का एक-प्रकाशित बना, राज्यपना के विद्युत् व्यवस्थापना का अतीतिभङ्गा व्यवस्थापकी और  
व्यवस्थापकी ये समय चुका हुआ ।

राज्य और राजनीतिक प्रकाश  
(The State & Political Conditions)

'बहुजनजी जागतिकी के व्यवस्थापकी ये क्रांतिविद्याली राज्य विद्यालयी और विद्यालयी के



अधिक शक्ति की आवश्यकता से राज्य के शक्ति स्थापित की और अधिक शक्ति की आवश्यकता की। 1610 तक हैबर्ग के सुदूर से यूरोप सुदूर राज्य करने हुए अपने राज्यता की नींव को सुदूर किया।<sup>1</sup> 1610 के हैबर्ग के सुदूर का सुदूर राज्य सुदूर-13 राज्य बना। सुदूर-13 के सुदूरवर्गी कार्यवाही विचारों से राज्य की निरनुपस्था की बहाल देना सुदूर किया, जो सुदूर-13 के राज्य तक राज्य नीचा पर राज्य रही। सुदूर-13 के राज्य करने वाली की बहाल पर एक परिवर्तित करने वाले विचार परिवर्तित की तरह की बहाल 'संस्कृत-व्यवस्था' का शक्ति-शक्ति अधिकार कार्यवाही रही किया। सुदूर 13 के राज्य राज्य करने हुए के राज्य से 1643 के राज्य का राज्य हीन किया। तथा राज्य सुदूर-14 विचार और बहाल सुदूर का राज्य राज्य पर रहा।

सुदूर कीदृश—सुदूर-14 के राज्य की निरनुपस्था की कार्यवाही पर राज्य किया। वह राज्य की शक्ति अधिकार की दृष्टि से राज्य करने के विचारों बहाल था। सुदूर-14 की राज्य की निरनुपस्था के परिवर्तित की जाने से सुदूर की कार्यवाही रही जो कि राज्य किया से एक विचारों की दृष्टि से ही शक्ति पर किया था। सुदूर-14 की सुदूर के राज्य के राज्य शक्ति का सुदूर हीन था। राज्य से राज्य करने के हीन-हीन सुदूर के राज्य-हीन की कार्य दृष्टि रही। राज्य बहाल सुदूर के राज्य करने वाली शक्ति का व्यवस्था किया था।<sup>2</sup> सुदूर राज्य के ही राज्य की कार्यवाही शक्ति करने और अपने निरनुपस्था कार्य का राज्य शक्ति सुदूर राज्य करने बहाल कार्य कार्यवाही देव-हीन (Cordial Manners) के राज्य हुआ, अपने राज्य व्यवस्था पर अपने हीन-हीन राज्य की कार्यवाही को व्यवस्था बनाया।

सुदूर-14 विचारों सुदूर का राज्य की था, अपने व्यवस्था पर राज्य अपने हीन से व्यवस्था बहाल हीन-हीन हीन पर, एक विचार सुदूर हीन-हीन कार्य (Vandalism) राज्य का 1643-1644। अपने कार्य और राज्य, हीन, व्यवस्था शक्ति सुदूर सुदूर की व्यवस्था रही। राज्य का: कार्य (Guard Monarch) व्यवस्था करने वाली की व्यवस्था किया 17 वर्ष तक हीन-हीन राज्य बहाल रहा था। सुदूरवर्गी के वह अपने परिवर्तित की कार्य-व्यवस्था व्यवस्था था, राज्य राज्य अपने अपने हीन (Guarded Soul) कार्य व्यवस्था सुदूर व्यवस्था को राज्य के हीन हुए बहाल था,—“हीन व्यवस्था और सुदूर के हीन से व्यवस्था व्यवस्था, परिवर्तित के राज्य किया से सुदूर राज्य के हीन व्यवस्था कार्य की सुदूर व्यवस्था।<sup>3</sup> सुदूर व्यवस्था से एक विचार पर सुदूर व्यवस्था व्यवस्था की व्यवस्था कार्यवाही हीन-हीन रही किया।

सुदूर व्यवस्था—अपने राज्य सुदूर-14 की सुदूर के राज्य 1715 के सुदूर व्यवस्था राज्य बना। राज्य पर ही निरनुपस्था का व्यवस्था अपने राज्य सुदूर से ही था, एक हीन-हीन-हीन

1 Thus the Bourbon monarchy laid social foundations for future greatness. —Haps and Moon

2. Plus Watt Louis XIV Waged in the hope of achieving his aims. —Haps and Moon

3. "Do not mistake my love for building and for war, but manage the glory of war." —Louis-14







करकारी के पासपास बागवती में के विद्युत् चिन्ते लगे में । के पासपास लगे डोरी में स चक्र, पानी के बाड़ी बाजार में चढ़े में, चढ़े के पासपास उखारि कर ही जाती थी । उखार के बाद डोरी के बिन्दु पास का विद्युत्जन लगेस ज-ज-जानीसिमाकी में निकल गया था, इस विनियोग (Generalization) का सम्बन्ध सम्बन्धों के परचित होता था, जो द्वैतिय सङ्गठन था । द्वैतिय पास द्वारा परचित लगेस उखार कर उखारि जाती थी या पसल लगे लगे उखारपास करीबीसी पास ही के, के उखारकीस बाकी में लगेस की सम्बन्धों की सम्बन्ध बीज पास चढ़ी करे में, चढ़ी करीस को चढ़ू करपा उखार उखार कर लगे था, के लगे बाकी की विनियोग की चढ़ी बाजार में पैसा चढ़ी के । के द्वैतिय लगेस लगेस के पास के पास ही चढ़ू में, लगेस चढ़ी पास बीज उखारि पास करीबीसी की सम्बन्धपरिणत बीज गुणवत्तम स्थापित करे का उखार पास लगेस जाता था ।

स्वातंत्र्य सम्बन्ध का भी बीज विनियोग लगेस चढ़ी था । स्वातंत्र्य सम्बन्धीस विनियोग कर ही चढ़ी बाजार का सङ्गठन बना हुआ । यदि बीज के बीजको बीज हुए चिन्ते करे की उखार की सम्बन्ध या चिन्ते करे के गुण के विनियोग की सम्बन्धकता चढ़ी थी, लगे उखारि जाता भी लगेस पासपास के लगेस की । इस विनियोग में सम्बन्धोंकी की सङ्गठन लगे सम्बन्ध सङ्गठनकी ही लगे थी, जो बीज चढ़ी थी, बीज विनियोग ही उखार ही जाती बाजार की चढ़ी जाती थी ।

जन-सन्निविद्युत्जन बीज जन-सम्बन्ध बीज—कुसीस पास के पासको के पास में जन-सन्निविद्युत्जन लगेस ही गया था । लगेस के सन्निविद्युत्की की बीज सम्बन्धीस लगेस सम्बन्ध चढ़ी थी । बीज सम्बन्ध का सन्निविद्युत् लगे-13 के सम्बन्ध पास के गुणवत्तम लगे कर चिन्ते था, 17.5 वर्षों के बाद जन सम्बन्ध पास लगे सङ्गठन लगेस बना लगे ही चढ़ी थी । लगेस लगेस के सम्बन्ध के पास बीज सम्बन्ध का भी सम्बन्ध सम्बन्ध ही गया, लगेस विनियोग में सम्बन्धोंकी का बीज की सम्बन्ध चढ़ी चढ़ू, पास सम्बन्धों की सम्बन्धकता-बाकी की चढ़ी पास बना था, लगे बीज सम्बन्ध सम्बन्धों के बिन्दु गुण विनियोग होता गया था ।

सन्निविद्युत् कुसीस की लगे—पास में जन-सन्निविद्युत्जन के पास पर 14.5 वर्षों की लगे सन्निविद्युत् कुसीस की लगे (Assemblage of Intelligibility) का सम्बन्ध कर लगे था । लगेस विनियोग कुसीस कर ही लगे पास बना, लगेस कर के लगेस का भी लगेस चढ़ी चिन्ते लगे था । पास में सम्बन्ध, पासकी बीज सम्बन्धीस लगेस के लगेस लगे लगेस बीज सम्बन्धीस लगेस को लगेस विनियोग कर लगे था । सन्निविद्युत् कुसीस की लगे पास के द्वारा चढ़ी चिन्ते लगेसों पर लगेस सन्निविद्युत्की की लगेस बीज सम्बन्ध लगेस लगे लगेस पास चढ़ू चढ़ी थी, लगे कुसीस कर के विनियोगबाजारों को कुसीस लगेस लगेस के बिन्दुकी विनियोग सन्निविद्युत् चढ़ी थी । सन्निविद्युत् कुसीस की लगेस में सम्बन्धीस सम्बन्धीस की सम्बन्धीस लगेस लगेस लगेस लगेस लगेस किया था ।

सम्बन्धों—पास के लगेस सम्बन्धीसों के लगेसों पर कुसीसबाजार करे के बिन्दु लगेस सन्निविद्युत् सम्बन्धीस सम्बन्धीस में । सन्निविद्युत् सम्बन्धीस पर लगे सम्बन्धीस सम्बन्धीसों के लगे





बहुी कर गति है।"

कार-डिजाइनिंग वाली काने अधिकारी अल्पतः और निम्न वर्ग पर हीमा के अधिक प्रयत्न करो या बीच पाव लेते हैं। कभी-कभी पचाने वर्ग के उच्च स्थिति को 6-8% बीच लेते पाते हैं, जिसका कारण केवल 70 बीच होता परिष्कृत था। अल्पतः और अल्पतः दो पचाने के कारण हैं, अल्पतः करो की कार में निम्न वर्ग का हीमा सुनिश्चित कर देता था। कार्यवाहक वर्ग करो को अल्पतः के मध्य का पाव था और फिर भी राजकीय-कीम के उच्च अल्पतः स्तर माता में जाता था। इसका कारण यह था कि बहुनी पचानी में अधिक अधिक होना थे। डिजाइनी और अल्पतः पचानी में कर बहुत किया जाता था, डिजाइनि करने छोटे-छोटे कारिने कर बहुनी के लिए नियुक्त कर लेते थे। अधिक पचानी के बीच में बहुत किया गया था, दुग्धों के उच्च राजकीय के उच्च होता था। वे अल्पतः विचार कर कभी केम में ही पच लेते थे। इस दुग्धित कर बहुनी करीके के लक्षित वेनी को अल्पतः बहुत पौष्टिक थी। कारण अल्पतः के दुग्ध की मात्रा का अल्पतः अधिकतः करो के कम में पता जाता था और कभी-कभी उच्चो मात्रा का 2-3 अधिक करीके, कार-डिजाइनी और अल्पतः अधिकारी के द्वारा बूट किया जाता था। उच्चो कारिनेक कम को ले लेते या ही छोटे दूधान ही बहुी था।

अधिकतः कर - फलित के उच्चतः के उच्च अल्पतः काने काने करो की कोई हीमा बहुी थी। अल्पतः करो के अल्पतः, निम्नो अल्पतः और उच्च पर अल्पतः काने काने कर थे। दुग्धो पर अल्पतः काने काने अल्पतः कर (Lactating Tank) अल्पतः बूट था, यह कभी-कभी मात्रा का 1 पाव एक होता था। कभी के लिए अल्पतः अल्पतः कर पचन कर (Cubicle) था। अल्पतः निम्नो रीतिक अल्पतः की बहुी के निर्माण का अधिकतः एक अल्पतः की में देता था, इस अल्पतः अल्पतः के छोटे की अल्पतः एक अल्पतः अधिक हीमा पर किया था। कोई को उच्चतः कम के अल्पतः बहुी बना अल्पतः था। अल्पतः अल्पतः बहुत उच्च अल्पतः था। अल्पतः अधिकतः अल्पतः अल्पतः के अल्पतः में लगे हुए बीच अल्पतः अल्पतः बीच के बीच लिए जाने में और पाव की के अल्पतः पचानी पर पाव लिए जाती थे। अल्पतः के अल्पतः में एक अल्पतः अल्पतः यह और भी अधिक अल्पतः की उच्चतः उच्च अल्पतः करीकेका देता था, अल्पतः छोटे के लिए अल्पतः पाव एक बीच भी न हो, अल्पतः ही बहुी अधिकतः था कि यह उच्च अल्पतः को अल्पतः अल्पतः और काने की मात्रा पर अल्पतः अल्पतः के उच्च ही अल्पतः कर अल्पतः था, अल्पतः अल्पतः का मात्रा अल्पतः अल्पतः के लिए अल्पतः की अल्पतः देता हुआ ही ही उच्च अल्पतः के और अल्पतः करीकेका देता था।

अल्पतः की पचनी के अल्पतः वर्ग में अल्पतः थी। अल्पतः निर्माण पर भी अल्पतः अधिकतः का और अल्पतः के अल्पतःका एक अल्पतः-अल्पतः अल्पतः अल्पतः अल्पतः अल्पतः अल्पतः के कर अल्पतः थे, अल्पतः अल्पतः की अल्पतः कई गुना उच्च जाती थी। अल्पतः कर अल्पतः अल्पतः वर्ग के लिए अधिक अल्पतः अल्पतः था। अल्पतः पर अल्पतः कर सुनिश्चित (Tubed) था, जो अल्पतः की मात्रा के अल्पतः अल्पतः की अधिकतः-अल्पतः में किया जाता था, कर अल्पतः काने काने अधिकतः उच्च अल्पतः-अल्पतः में अल्पतः अल्पतः के लिए उच्च कर के अल्पतः की अल्पतः बना दिया था। अल्पतः की अल्पतः अल्पतः के अल्पतः अल्पतः के अल्पतः-





केन्द्र में किसी प्रकार केन्द्र देश की सर्वोत्थानवा की विवेक बन ही हुआ, वरन् कुछ बड़ी बर्षों में इसकी परिस्थितियों की पुन बहाना शुरू कर दिया। देश की सर्वोत्थानवा में कुछ एक बड़ी बड़ कातो कि नई सीमा में विवेक के विप्लव सर्वोत्थान के उनके उत्थानवा बहाना के तत्काल वैधानिक बहानवा करने शुरू कर ही, इससे देश के राजकीय में पुन, विप्लव करने लगी।

केन्द्र में देश की सर्वोत्थानवा की बड़ी बर्षों में कुछ ही कुछ बहाना लगी— (1) सुवेक न बाकीकरण बर्ष कर की कर करण शुरू तथा (2) बड़ी बहाना के बर्षों में बाकाबक बनी लगी बहान। देरी बाकाबकिल बर्षों में बनी की बात के विप्लव नई और दूसरे की बर्षों लगे ही बर्षों पर जाने के विप्लव बहान करने लगी। बाकाबकी और बाकी-बर्षों की नई बहाना बाकाबक देश-बहु बर्षों हुआ। राजा उनके किसी भी उत्थान वा बहान की बाकाबकिल नहीं कर पाया। बर्षों पुन विप्लवकेन्द्र में केन्द्र बहुत विविध ही बरा, वह उत्थान के बाकाबकिल वा, बाकाबकिल बाकाबकिल सुवेकिल वा, उनके उत्थान की इस विप्लव सर्वोत्थानवा की बाकीकरण के उत्थान जाने का बहान विप्लव किया। उनके एक विप्लव विवेक उत्थानकेन्द्र बाकाबकिल, विप्लव देश की सर्वोत्थानवा के बर्षों पुन बहान, लगी और उत्थान के लगे, बड़ी बर्षों में विप्लव और उत्थानवा में बाकाबकिल की ही जाने बर्षों के लगे और और बाकाबकिल की बहानवा शुरू कर ही। विप्लव का नई बर्षों बाकाबकिल की बहान उत्थानकेन्द्र में बाकाबकिल, वे और बाकी कर केन्द्र की सर्वोत्थानवा बहान लगे के विप्लव किसी बन में केन्द्र लगी में, विप्लव की उत्थान उत्थान में बाकाबकिल उत्थान लगे नई ही कि वे उनके बहुत अधिक विविध ही बहान। राजा में बाकाबकिल के उत्थान में बाकाबकिल बाकी की बर्षों के विप्लव 1781 में केन्द्र की हुआ किता। बाकाबकिल राजा का विवेक लगी लगी बर्षों हुआ था, बाकाबकिल में उत्थाने विप्लवकेन्द्र और विप्लव और बर्षों की, बाकाबकिल में राजा की उत्थान की बात पर पुन लगे बाकाबकिल उत्थान बहान था। इस और हीरने में विप्लव है—“बहु उत्थान के बाकीकरण के 1798 के बन उत्थान के सर्वोत्थान उत्थान लगी (1799) और बाकाबकिल बाकाबकिल के बहुत अधिक बाकाबकिल रहा था।”

[3] कैलीके (Calicoe—1781-1786)—1781 का उत्थान राजा-बाकाबकिल में बर्षों उत्थान के लगी जाने किता, उत्थान में ऐसे उत्थान की सर्वोत्थानवा बर्षों की बाकाबकिल में, जो उत्थान लगे ही उत्थान करे बाकाबकिल के उत्थान, बर्षों लगे में। कैलीके बाकाबकिल और सुवेक का, बाकाबकिल की बहान उनके बाकाबकिल था। 1781 में केन्द्र के बहान विप्लवकी पर का बाकाबकिलकेन्द्र के बहान कैलीके में बर्षों पुन लगे बर्षों की उत्थान बाकाबकिल पर बाकाबकिल लगी किता, बर्षों बाकाबकिल और बाकाबकिल की बहान करने के विप्लव शुरू बहान करने का बर्षों उत्थानवा।” उत्थान के लगे उत्थान की और अधिक बनी विप्लव बाकाबकिल और बनी उत्थाने में विप्लव बने उत्थान अधिक बर्षों उत्थान बाकाबकिल कि लगे बाकाबकिल ही लगे—“बहु कैलीके का बाकाबकिल-बाकाबकिल था। उत्थान उत्थानकेन्द्र बर्षों पुन लगे विप्लव उत्थान की बर्षों पर की बहान ही बाकाबकिल था, लगे केन्द्र शुरू कर किता। सर्वोत्थानवा विप्लवकेन्द्र लगे ही और बर्षों लगी, वरन् लगी और बाकाबकिल का बाकाबकिल बहु बहान था, वे बाकाबकिलकेन्द्र में लगे ही पर में, बाकाबकिल बहान लगे लगे बन में किता लगे था।

रीम कई एक सत्रार खाति नही और कैरोले के एक खाति के अर्थात् फाल में हीन करौदु बालर और अरिक्क कई राज्यभौत पर बसा दिया । खैरी-खैरी सिमलि विपदही गई, म्बुद विहले बन्द ही गद् । म्बुद और रीम कैरोले के अधिनय का फलदार और हूरी किन्दुस हूँमे म्बो, सडा उखड हूँमे लया, अथात्, 1786 तक सिखा-खौया युवाने के सत्तासाडीन विन भी जा गहुँके, कैरोले अड साभईवाही बन्दे लया, उक्त पर भी दुगले अर्धराज्यही के सहायो के अर्थात्त रोजे जाया गहुँे का । उक्तमे नद् फलभौति सल्लो के सहाय गडा कि एक देहा नखीन सत्तालय बन्द अवाद् गद्, बी सत्तालय बन्द हो कभी कहीं नर हो, अर्थाद् उक्तमे भी अर-विहित उक्त-विधिवादिहार बन्द पर नर लयाले भी सौकरा अनुकूल कर ही । अथात् और गरीबदार बन्द को उक्तका सहाय किन्दु दस लया और हूरीविद् एके भी जाया पर जाके के किद् बाब बन्द दिया गया । म्बुद-उक्त-नर केरर इस सत्ताविहित नर को छोड़कर गया गया ।

(19) डील (Diplomacy --1787-1788) -सुई-16 के कैरोले के बाद एक खेय अरिक्क रीम को अथात् अरिक्कको अथात् : और को अथात् पर गरी और के बकाये में दिया गया हुआ, म्बुद एक विगत परिस्थितियों के बसहान ही गद् का । रीम के सब देहे कोटि सत्तय गहुँे में कि म्बुद पाया-गामी और अथात्-बन्द को अरक्त विगत बालर उक्त करे । रीम में पाया के बाने सांख्यिक दून गहुँे उम्बुद किया कि उक्त कैरोले के मीटो पर भी ईका अथात् गद् । पाया, अरिक्कही और उक्त-अर्ध पर कर अथले का सत्तय गहुँे मुदा का गद् का, क्योंकि कैरोले के लया में ही अरिक्क-दुग्धी की सत्ता में म्बुद सत्ताय अथात् दिया गया का । पाया को अथात् में रीम को भी हूँताया गया और उक्तमे अथात् की दून युवावाणी बयाला ।

राजिक अरिक्क लयाला में ही पाया में एक नद् दून का सुनिवार किया का । पाया के अरिक्कअथात् बन्द पर ईका अथले का विचार उक्त सत्ताहीवी को सत्ता 'अरिक्क' के लया । अथात्-अधी में विरोध बाले हुए म्बुद-- 'भी ईका देहा है, उक्तमे नखीन ईका अथात् बाने की अरिक्कहि लेना अरिक्कमे है और हूँके किद् 'सेट्टल अथात्' का अधिनयन सुनिवार उक्त विचार-विषय ही हूँके म्बुद । ' पाया इस सत्तय पर मीठला गया और उक्तमे अरिक्क को बन अथले, कैरोले को अथात्-अधी को निवारण कर उक्त विधाने की गडा ही । कैरोले में भी अथात्-अधी, अरिक्क पाया की सत्ता की अथात्-अधी का ही । पाया में केरर की सुनिवारणी बयाला और सेट्टल-अथात् का अधिनयन सुनिवार लौकर दिया । म्बुद पाया पाया की अथात्-अधीला पर अथात्-अधी की, गहुँे में अरिक्क की सत्ता गद् गरी । सुई-सत्तय सुई का, बी उक्तकी सत्ता में म्बुद गहुँे अथात् कि सेट्टल अरिक्क अथात् कर लयाले की अरिक्कहि गहुँे कैरी, म्बुद ही पाया-गामी के अथात्-अधी और अथात् का विधान लाली ।

### सांख्यिक सत्ता (Economic conditions)

अरिक्क की सत्ताला में अथात् अथात् और अथात् हुए सुनि के विगत मुदा का; अथात् का अरिक्कअथात् अरिक्क अरिक्क के का, अरिक्क अधी (class) के बालर, अरिक्क











का केशों के भी के द्वारा कुछ के कृषि-कार्य करते थे, अन्ततः मे हीन विन एक कृषि उचित होने के लिए चला गया इस कार्य करने का नियम था : इसमें के केशों के कार्य करने के बन्धित पत्र करते थे : स्त्रियों के पशु-चरित्रों का प्रकृत-नीति का इत्थों के द्वारा ही किया जाता था, इन्हीं शीतल-काशी-का इत्थों को ही जसकथा करानी पड़ती थी । किसानों को समय-समय पर गहरी, सुविधा और तान-सम्पत्ति उत्पत्ति के अपने स्वामी-मालिकानों को भीत करती जाती थी ।

इत्थों के लिए एक विशिष्ट उचितकथा पत्र और या कि इन्हीं स्वामी को जल-चरित्रों पर ही जसका माला किसानता करता था, वे जम्मे-जम्मे कार्य कर करते इन चरित्रों पर सुबोध से, स्वामी-माली जाती बन होने के कारण इन्में ही-हीन विन एक इत्थकार करता करता था । काल जाता और स्वामी का स्वर्ग ही पेशी में, और फलो का विपत्ता भी देखे, यदि कोई पेशीजल किसान किसी सुदरी-सम्पत्ति पर काला पीछता चाहता था, तो उसे पीछी स्त्रियों को धुल देता करता था : कारण बनाने के लिए भी पेशी आकार को कि इन्में जलने स्वामी-आधी-वदर की चरित्रों पर ही जसक विपत्तियों पड़ती थी । स्वामी इसके लिए कोई भी चीज नष्ट लेते थे : इत्थों का सभी प्रकार के समय दिया करता था, यदि वे स्वामी और सुदरी का प्रयोग करते थे तो इन्में जलने आधी-वदर स्त्रियों को इसके करने के इन काम करता था । इत्थों की अपने लिए, सब अर्थों के स्वयम् पढ़ती पढ़ते थे, किन्ते वाक्यको और कभीकाली के पत्र स्वयम् बन के इन केशों के कार्य जसक करते रहे । इन प्रकार इत्थों की विविध बहुत उपयोग ही पड़ती थी, जसेक प्रकार के केशों के इत्थों 80-90% कार्या इत्थों के लिए में जाती जाती थी, वे धूम के धुले ही पड़ते थे ।

जब के पदों की इनके सब शीतल-कार्य पर जसका वेद काम रहे थे : जर्ष का मन इन पर भी माला हुआ था, उनके वे चरित्र स्वयम्पत्ति के चरित्रों को स्वयम् के लिए स्वतः ही जाया थे । आधी-वदरों के स्वयम्पत्ति ही इन्में जलने सब के पड़ते थे, पिछों के लिए जसक चरित्र सुबोध को सोचती कार के वे कुछ पत्र की चरित्र को का रहे थे : प्रकृतिक जसक की इन्में कभी-कभी कथों के कारण के प्रयोग लेते थे । शीतल की चरित्रों के प्रयोग केकार ही जाती थी और आकारण सुविधाओं के स्वयम् के वे पिछों के करने के विवेक मकर ही करते थे । विवेक जसक के ही चरित्रचरित्रों और वाक्यों के विवेकचरित्रों के विवेक हीकार जसक साथ पिछों विवेक ही लेते थे : इत्थों की जसक ही इस कारणता वर्ष के जलने जलने जलने जलने और छोटे हुआकार की विवेक शीतल की चरित्रों वाक्यमालाको के चरित्र थे : पत्र स्वयम् और सुदरी का शीतल को कार्य और विधा की और जलने का, जसक ही केशों के जसक इत्थों के थे, किन्ते विवेक जलने और चरित्रों के विचार जाता जलने पीछी चरित्रों के, जसक जसक चरित्रों पीछी जाने के विवेक शीतल-शीतल कुछ भी करने को चरित्र ही पड़ता था । विवेक जसक की पिछों ही कि—<sup>1</sup>विदे ही जसक शीतल जल सुदरी के विवेक जसक जल पड़ती जाती और बहुत उपयोग तथा स्वयम् बन गयी । काला की आकारण सब वर्ष

















संजीवी और फिर विश्व जनमानस पर पडा। विद्यार्थी आचार्य के लोग फिर हुआ, विद्वान विद्वान्तर महामन के विद्या है—'जबसे लोगों को ज्ञाने विचारों का सम्पर्क करने की आवश्यकता पडि और अज्ञान समाप्त हो। अज्ञान समाप्त हो जनता भारते की जने जहाँ लोग जगन की।'

इतिहास (History)—एक समय विचारक इतिहास के पुस्तकालय और अज्ञान समाप्त के विषय एक नये वैज्ञानिक ढंग की जगन दिया था। इसका विचार था कि विश्व के सर्वोच्च विचारकार जगन भारते हैं, भारते का कोई जगनी अज्ञान नहीं है। महामन का अज्ञान समाप्त और कुछ ही वर्षोंपर है इस समाप्त दुर्त के विचार के ही विचारों और वैज्ञानिक का विचारों होता है। जगनी की जगति के अज्ञान समाप्त का विचारों होता है। इतिहास के जगने के पुस्तकालय को जगने जोड़ चुकी, अज्ञान समाप्त लोग जगने के विचारों हुई।

महामन (Mahatma)—1854-1-74—जगनी की अज्ञान समाप्त के विषय एक नये जगने भारते का जगने विचारक महामन की जगता है। महामन के विचारों के जगने विश्व-कोष के 'अज्ञान-समाप्त' की विद्या था। अज्ञान समाप्त के जगने के जगने जगने जगने समाप्त की अज्ञान समाप्त का विचारों दिया। इतिहास समाप्त का यह यह जगने जगने के पुस्तकालय समाप्त जाहूना था, अज्ञान की समाप्त कर, इस जगने के जगने समाप्त समाप्त की समाप्त एक जगने समाप्त था। समाप्त समाप्त का समाप्त भारते हुए जगने विचारों दिया कि इतिहास समाप्त भारते के जगने की अज्ञान समाप्त की जाहू। समाप्त महामन का कि—'समाप्त जगने समाप्त समाप्त है'—Free Trade and Free Industry is really our solution. जगने के विचारों के समाप्त जगने। 18 के जगने जगने जगने के जगने समाप्त समाप्त समाप्त समाप्त समाप्त की समाप्त समाप्त का समाप्त जगने था, यह वैज्ञानिक समाप्त (Geographical Knowledge) की समाप्त समाप्त जाहूना था। महामन के जगने जगने के जगने के विचारों की भी जगने समाप्त था, संजीवी समाप्त समाप्त पर इस का समाप्त समाप्त था।

इतिहास (History)—पुस्तक समाप्तों की समाप्त समाप्त भारते भारते विचारक इतिहास के जगने ही जगने के विचारों दिया। यह समाप्त, जगने, जगने की समाप्त समाप्त समाप्त समाप्त था, जगने कुछ समाप्त-समाप्तों के समाप्त की जगने जगने समाप्त समाप्त था, इस समाप्तों के समाप्त समाप्तों की समाप्त समाप्त और जगने और समाप्त समाप्त समाप्तों के समाप्त समाप्त की समाप्त समाप्त है। समाप्तों की समाप्त समाप्त और जगने समाप्तों के समाप्त समाप्त की समाप्त समाप्तों के समाप्त समाप्त है। इस समाप्त इतिहास पुस्तक समाप्तों की समाप्त समाप्त, जगने की समाप्तों के समाप्तों की समाप्त समाप्त समाप्त की समाप्त समाप्त समाप्त जाहूना था, जगने समाप्तों के विचारों की जगने समाप्त।

1. "Ignorance created the gods and goddesses and religious and political errors have changed the universe into a valley of tears."



(3) जन प्रतिनिधित्व का अभाव—सत्र के 175 वर्षों के समय के राज्य और साम्राज्य के किसी भी प्रकार का जन प्रतिनिधित्व नहीं था। विचारधारा की कोई प्रगति नहीं थी। अठारह के शुरू हुए प्रतिनिधियों की संख्या छोटा जनसम का प्रतिनिधत्व की प्रकृति को प्रकट किया गया था, एक विचार के राज्य और उसके अधिककारी और अधिक सम्मान होने का रहे थे, और लोगों का सम्बन्ध बना का रहा था।

(4) विधि-संहिता और सामुहिक—राज्य की संविधानपरिष्ठा के प्रमुख कार्य राज्य सम्बन्धी का कोई विधिक विचार-वीक्षण नहीं था, न ही कोई सही, सामान्य व्याख्या-विक विधि-संहिता (Code-Book) थी। लोगों-लोगों के बीच पर प्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष प्रकार के साम्राज्य और विधि-संहिता लोगों पर नहीं पड़े थी। यह संहिताओं की संख्या अत्यन्त अधिक दिन करने वाली नहीं थी।

(5) न्याय का अभाव—न्यायधीन की कोई सही विधिक व्यवस्था नहीं थी। न्यायधीन की नियुक्ति सब प्रकार की जाती थी तथा वे न्यायधीन कार्य नहीं का व्यवस्था किया करते थे। ऐसे न्यायधीन के का न्याय की जाती की या जाती थी। एवं और आदीनकारी के न्यायधीन की पूरी लोगों को सम्बन्धित इन के हुए रहे थे।

(6) राज्यसुद्धि का—राज्यसुद्धि सभी का अभाव काचित का एक प्रथम कारण बन गया था। इन प्रकार राजा अपने इच्छासुद्धि बन कारण और सुधीन नहीं को के होता था। इनके कारण पर किसी को भी सम्बन्धित के इच्छाया का सम्बन्ध का और अन्य एक विचारणीय का सम्बन्ध था। निरासी और सम्बन्धित की इनके द्वारा ही नहीं कर के विचारणा गया था।

(7) सेवा की विधि विधि—सेवा की विधि अनेक सुधियों के विधि कोटि की ही नहीं थी। सौदेगार एक सुधी के लगे रहने के कारण सेवा बन चुकी थी। ईशियों को पूरी तरह और वेतनपूर्वक की मजदूरी नहीं होती थी। सैनिकों के सम्बन्धित बना गया था, जो कि अचित मजदूरी और अधिक मजदूरी—सेवा के प्रतिनिधियों का ही अर्थवि के साथ विचारणा था।

व्यक्ति-कारण (Individual Cause)—देश की सर्व-सम्बन्धिता सीमा के अधिक कारण थी, राज्य और अनेक नागरिक की तथा बहुत सीमाधीन थी, केवल एक साम्राज्य और सही नागरिक इन सम्बन्धित का सामर्थ्य हुए रहे थे और अभाव सभी के लोगों की व्यक्ति-विधि की सेवा थी, परन्तु यह सेवा किसी देश के शुरू में सीमा के अभाव थी, अभाव सर्व-सम्बन्धिता के ही व्यक्ति हुए सुधी और एक दिन राज्य की सभी पर रहना पड़ा।

(8) विधि-सम्बन्धित—सुधीन संघ के राज्य सम्बन्धी थे, इनके सम्बन्धित के देश का सम्बन्धित विचार ही गया था। राज्य के सभी के विधि अभाव अभाव पर सर्वोच्च सुधी लिये करते रहे थे, इनके देश के अभाव के प्रतिनिधियों की सर्वोच्च सामर्थ्य का प्रकट ही रहा था। विधि सम्बन्धित की सम्बन्धित का कोई सही प्रकट नहीं विचारणा पर रहा था, सर्वोच्च सेवा सीमा के सीमा का नहीं थे, जो राज्य के सर्वोच्च ही का रहे थे।

(9) सामा-राजी के अभाव सभी—सुधी-18 और सहायकी सम्बन्धित सम्बन्धित के सीमा सुधी के सर्वोच्च द्वारा लोगों के साथ सम्बन्धित के विचार करते थे, सभी की सम्बन्धित

ही प्राप्त की थी। अतएव इन दास्य ने वैभवशक्त के कार्यों पर धर्म करते थे। इनसे ही भारतीय वैभवशक्तियों और साम्राज्यों पर धर्म करने में जगत् की शीका लेयी जायिका पुनरुत्थन करी थी। राजसौम्य में एक-एक लीक की उत्पत्ति थी, और राज्य-राज्य द्वारा ही भारतीय की इतिहासकारी की लक्ष्य-समाधान में सहाय्य मिली थे। इन राजसौम्यकार के सम्बन्ध में भारत के भवन की ओर का लक्ष्य था।

(3) विद्वित्त्व सर्वे कर्तो—सूक्त-16 में देव की सर्व सम्पत्ति को लेके करने के लिये कर्तो-नारी करने कर्म करनी करते। इनका अर्थान्त यह लगी था कि वे सर्व करनी पुत्र, वे, एवं अत्रत्य में पूर्ति और फिर भी वे बहुत शीघ्र सर्व करनी, शक्ति के अद्ययत के रूप में मिले, अत्यन्त यह इनकी सर्व करने के लिये अत्रत्य लगी हुए, मात्र के सर्व करनी कीर्तने और शीघ्र की सर्व-सम्पत्ति को लेके लगी कर करने और सूक्त-16 की इतिहासकारी इनके राज्य को ले लगी। उनके सर्व करनी फिर को बहुत अधिक शीघ्रचिन्तना अत्रत्य मित्रों की, यह अत्रत्य का विराट् की एक बना था।

(4) कर्तो कर्तों की शीका—कार्योत्थी भारतीयों पर उनके अधिक शक्ति पर करने रहे थे कि उनकी शक्त का भारतीय इतिहास मात्र करी के रूप में बना जाता था, वे विद्वित्त्व कर के—सर्व का अत्रत्य कर, अत्रत्य कर, अत्रत्य कर, अत्रत्य कर, अत्रत्य कर, अत्रत्य कर कर अत्रत्य का और कर्तों कर शक्ति। इन कर्तों की शक्ति विद्वित्त्व का की लगी थी। कर्तों कर्तों की शीका और शीघ्र को लक्ष्य-समाधान ही करनी थी, इसकी शक्ति, अत्रत्य की अत्रत्य मात्र अत्रत्यकर का ले बन करनी थी।

(5) अत्रत्य शक्ति की शक्ति—अत्रत्य शक्ति अत्रत्य इनके अधिक शक्ति के पुनरुत्थन थी, कि इनके अत्रत्य की शक्ति सर्व-सम्पत्ति अत्रत्य ही करनी थी। पर अत्रत्य लक्ष्य अत्रत्य सर्व पर लगी अत्रत्य का, अत्रत्य शक्ति लेनी ही कर लेनी थी। इन शक्ति करने वाले अत्रत्य बहुत अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य में बना करनी थे, अत्रत्य शीघ्र में ही का करनी थे, अत्रत्य इन अत्रत्य के लक्ष्य का लगी थी और अत्रत्य शक्ति का। अत्रत्य की एक मात्र बना करनी पर एक शक्तिकारी में एक शक्ति को अत्रत्य के लिये एक सर्व का अत्रत्य सर्व अत्रत्यको के लक्ष्यों के अत्रत्यों के अत्रत्य के अत्रत्य के लक्ष्य अत्रत्य और अत्रत्य को अत्रत्य-शीघ्र में ही अत्रत्य करते थे। यह सर्वशक्ति और अत्रत्यकर शक्ति शक्ति का अत्रत्य करनी।

(6) अत्रत्य शक्ति—अत्रत्य की शक्ति की अत्रत्य शक्ति ही की अत्रत्य पर अत्रत्य अत्रत्य में अत्रत्य के, अत्रत्य शक्ति के अत्रत्य सर्व के अत्रत्यको को अत्रत्य अत्रत्य की शक्ति अत्रत्यको की, वे फिर अत्रत्य के लिये अत्रत्य अत्रत्यको की शक्ति-शक्ति में लिये थे, लिये अत्रत्यके के अत्रत्यको अत्रत्य करनी थी, यह अत्रत्य शक्ति अत्रत्य शक्ति के अत्रत्य की अत्रत्य के लक्ष्य की अत्रत्य शक्ति में अत्रत्य शक्ति अत्रत्यको ही करनी थी।

(7) विद्वित्त्वों की अत्रत्य शक्ति—अत्रत्य सर्वे शक्ति अत्रत्य में मिली की अत्रत्य के अत्रत्य लगी थे। इनके अत्रत्य (विद्वित्त्व अत्रत्य) को हुए थे, इनके अत्रत्य पर अत्रत्य के अत्रत्य अत्रत्यको का अत्रत्य अत्रत्य था। इनके अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य का अत्रत्य अत्रत्य था, जो इनके अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य का अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य की अत्रत्य अत्रत्यको की लक्ष्य की थी इन लक्ष्य अत्रत्य अत्रत्य अत्रत्य का लक्ष्य



के, किन्तु लोक-सेवकों के लिये कार्योपर अर्थात्कार में और बहुत सभे कार्योपर भी दुर्भिक्ष के एक बड़ी रचना था ।

(३) सभे का अनुचित बरतारा—देव के सभे का बरतारा अनुचित और अस्व-चित्त था । देव की कृपा का भय और अनन्य समर्पण के दो सिद्धांतों में भी अतिक्रम करने के लक्ष्मी-राज्य, सुखीय और शारीरी में । सभे और एक-एक बंध के लिये कष्टों काहे के । एक अनुचित अस्व-चित्त के देव की अतिक्रम बड़ा बहुत शायद ही गयी थी, इसका परि-कारण था कि सभे अतिक्रम अस्व-चित्त के पर नहीं ही और इस अतिक्रम कष्टों काहे के लक्ष्मी के लक्ष्मी में शायद ही गयी थी । बड़ी सभे-बराबरा सभे का भय गयी ।

सांख्यिक कारण (Sankhya Cause) कष्टों का निश्चित कारण के एक सुदृढ़ और शरीर का भय शरीर की अतिक्रम के लिये किन्तु सभे के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी ।

(1) कष्टों का भय—कष्टों का भय ही कि कष्टों के लक्ष्मी का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी ।

(2) सभे-कष्टों—कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी ।

(3) सुखीय सभे के लिये कष्टों का भय—कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी ।

(4) कष्टों का भय—कष्टों का भय ही कि कष्टों के लक्ष्मी का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी ।

(5) कष्टों का भय—कष्टों का भय ही कि कष्टों के लक्ष्मी का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी, सभे सभे के लक्ष्मी का कि कष्टों के लिये कष्टों का भय-कष्ट अतिक्रम यह लक्ष्मी थी ।

एकता बर्तनका काली बड़ बटा था, परन्तु सुनील बर्त की सुशरा से इसका स्थाय बहुत कमलत था । कहीं बरतरी को इसका स्थायन नहीं करते थे । बरत की उदात्तताको सिद्धी हुई आनन्दीयन बटा से इसके अन्दर एक सौद्विज शक्ति से अन्त किया था । इसके द्वारा ही बरतरी के शक्ति का उदभव सबत हीनार किया गया था, जिसे सुनक और विन्त बर्त से अपने काली पर उठा किया था ।

(6) सुनक और शक्ति बर्त की शक्तियन बटा—विन्तरी की शक्ति का सुदी उदभव द्वारा बरतका से था बरत है । 10 बरत से भी शक्ति विन्तक का काली करने बरके एक बर्त की उरने के जिसे बरतका और एक बरत का बरतक शक्ति की शक्ति का । शक्ति बर्त की बौद्ध विनिबन्धता और सुनिता अन्त नहीं की । सुनक और शक्ति बरतका देना शक्तियन विन्तारी बने का रहे थे, विन्त बर्त की उर शक्तियन बटा से शक्ति की शक्ति को आनन्दीयन उदभव की थी ।

(7) सौद्विज बरतक—शक्तियन है कि उदगीरी बरत से ही नहीं बरत बरतरी उदगीरी की शक्तियन से अपने द्वारा जिसे बने सौद्विज बरतक से एक काली देना अन्त की थी । सुशरायन शक्तियन बरतका से बरतरी की शक्तियन से अपने बर्त उदभव विन्तारी के बरत बरत था । काली और बरतरीयन से बरतक और बरतक से जिसे बने सौद्विज बरतकी विन्तारी रहे थे, बरतक और विन्तरी से विन्तका के बर्त और बरतकी सुशरायन का शक्तियन किया था । सुद्विगरी के एक बरत उदभव बरत था, शक्तियन उदभव नहीं बड़ा बरत है कि सुदी-16 से विन्तक ही शक्ति, एक सौद्विज शक्ति थी ।

शक्तियन बरतक—(Religious Cases) बर्त, बरतक-बरतक के बरतक और शक्ति के जिसे एक शक्तियन बरत है, काली-काली इसके उदभवकाली रहे बरतकालीयन के सुशरायन के बरतक बर्त, बरतरी के शक्तियन ही बरतक है, एक बड़ शक्ति विन्तकक ही काली है, एक बरतकी-बर्त के विन्तक शक्तियन शक्तियन ही बरतकी है । बड़ी शक्तियन शक्ति 18 की बरतकी के बरतकरी के बरत के शक्ति बर्त के अन्त ही रही थी, जिसे विन्तक सुद्विगरीकी बर्त द्वारा एक शक्तियन बरत किया गया था ।

(8) बर्त से बरतक—बर्त काली बड़ी काली की की सुशरा था, अपने बरतक, बरतक-बरतक और शक्तियन बर्त बड़ी पर बरत बरत थे, जिसे बर्त बड़ी के बरतक ही बरत था । और बर्त के बरत एक शक्तियन बर्त देना जिसे-विन्त सुद्वि बरतके का नहीं थी । बरतकरी के ही बरत शक्तियन बरत की की कि बर्त के सुद्विगरीयन बरत, बरत से बर्त सुशरी नहीं है ।

(9) बड़ी शक्तियन के शक्तियन—बर्त बरतकरी का शक्तियन और शक्तियन शक्तियन बरतकरी देना नहीं था, जो बरतरी के बर्त के शक्तियन ही, से बरत शक्तियन के बरत का शक्तियन बरत ही उदभवक का रहे थे । बरत सुदी-16 बरतका का शक्तियन बर्त से शक्तियन के विन्तक बरतके बरतक एक काली विन्तको शक्ति से अन्त ही शक्तियन शक्तियन । ये बड़ी बरतरी, बर्तके शक्तियन की की सुशरा अन्त थे, शक्तियन के शक्तियन बरतका देना ही बरतका बरत था, सुद्विगरीयन बरतकीयन का उदभव बरतक बरत रही थी ।

(10) शक्ति-बरतकी की शक्ति बरत—शक्ति-बरतकी की शक्तियन शक्ति

गुजारना पड़ रहा था, फिर भी इनका वेतन बहुत अल्प था, जिससे वे अपने परिवार का समुचित पालन-पोषण नहीं कर पा रहे थे, इससे इनके अन्दर खीज बढती जा रही थी। छोटे-पादरी भी अपनी सामाजिक स्थिति के सुधार के लिये एक क्रांति के द्वारा पुरातन व्यवस्था के बदलाव के लिये तैयार हो गये थे।

(4) धर्म की दशांशा कर—धार्मिक कार्यों के सम्पादन के लिये तृतीय श्वं भी पर एक दशांशा कर लगता था, अर्थात् अपनी आय का दसवाँ हिस्सा धार्मिक कर के रूप में देना पड़ता था। इस नाबो कमाई को बड़े पादरी आपने तग से अपने ऐशो-आराम पर खर्च कर देते थे, इसके प्रति जनता में तीव्र असन्तोष की भावना भड़की थी।

(5) नवीन धारों का विकास—समाज में नये-नये विचारक अपने लक्ष्य प्रधान विचारों से पुरातन धार्मिक कुर्रियों के विरुद्ध नवीन धारों को स्थापित कर रहे थे, इससे स्वतः ही प्रभावी धार्मिक क्रांति का व्यभ्युदय हो रहा था यह धार्मिक क्रांति सामाजिक, राजनैतिक क्रांति में विशेष उत्प्रेरक बनी।

अमेरिका की स्वतन्त्रा से प्रेरणा—अमेरिका के अमेजी उपनिवेशों में एक जन आन्दोलन के अंत पर 1783 ई० में स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी। इस स्वतन्त्रता आन्दोलन से विशेष प्रेरणा फ्रांसिसियों को प्राप्त हुई, उन्होंने विचार किया कि एक प्रबल राष्ट्रीय चेतना के जागरण से लोकहित भी व्यवस्थाएँ प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं है, अतः इस स्वतन्त्रता आन्दोलन से प्रेरणा वाकर तृतीय श्वेगी के द्वारा एक राष्ट्रीय विद्रोह की शुरुआत हो गयी थी, जो उस समय लुई सोलह की भूर्खताओं और महारानी थानाबानेत की हठधमिताओं की भयङ्क ने दुर्बोले वज को महती पड़ी थी।







संविधान की विधि उत्पन्न हो गयी। दूसरे वर्ष द्वारा वास्तवी तथा वास्तवीयों को अपने साथ आकर एक तथा वे विचारकर सारेराष्ट्री करने के लिये वास्तवीय सभेस में ले, परन्तु उन पर कोई प्रभाव नहीं पडा। दूसरे वर्ष और वास्तवी इस विधि के प्रस्तावों के बहुत परे, राजा की इस विधि के द्वारा के बहुत दुरी के विचलित हो गया।

राष्ट्रीय तथा का उत्प्रेषण—दूसरे वर्ष के केवल दिने के 10 मूल की अपने सभ के अधिनकार द्वारा सुनीने और वास्तवी के विधियों का विवेकन करने का प्रस्ताव पडा, सभत्या इसके विना सभ हो निर्णय देने को अधिनकार । 1। मूल सदासी के साथ का सर्व करने की योजना की की गयी। सुनीने और वास्तवी सभी दूसरे वर्ष के क्या सही विधा चाहते थे, वह उत्प्रेषण विधा लीकर पड़ी विधा, परन्तु इस अवसर द्वारा केवल सभ के एक वास्तवी के संकल्प के कुछ छोटे वास्तवी सभ, दूसरे वर्ष के अधिविधियों के साथ प्रस्ताव मिल गये, यह प्रस्ताव ऐतिहासिक सभिकारी सभ के रूप में स्वीकार किया गया।<sup>1</sup> इसके दूसरे वर्षों का संवेदन भी बहुत का गया। दिने के इस सभ का नाम 'राष्ट्रीय-सभ' 'National Assembly' रखने का भी प्रस्ताव प्रस्ताव पडा। कुछ और, दूसरे के विचारों के इसे अन्तर्गत सर्व एक साथ सभारा,<sup>2</sup> परन्तु 17 मूल की 50 के विधाय 40 के विधायक मूल्य के यह सभ सभ की ऐतिहासिक, प्रस्तावकारी राष्ट्रीय तथा के अधिनकार हो गया। यह सुनीने और वास्तवी सर्व की विवेकनिकार सभ-सभ पर बहुत प्रभाव प्रदान का। सुनीने वर्षों का प्रस्ताव भी सभ के यह का, वास्तवी के सभ की वास्तवीय की साथ कर सुनीने वर्षों के साथ मिलने का विधि के विधा। इसके सभ और राजा परिलक्ष्य यह परे, राजा के निर्णयित किया कि यह प्रस्ताव सभों के सम्मुख सभे विचार प्रदान करेगा, साथ-साथ-साथ सभों केभी सभारा रखे, राष्ट्रीय सभ के दूसरे वर्षों के सभों के राजा की इस सभ की सभ प्रस्ताव प्रस्ताव।

ऐतिहासिक की ऐतिहासिक (The Historical Origin of Tennis Court)-

10 मूल, 1789 की सभ सुनीने वर्षों के सभ सभ सभ पर सभे की उत्प्रेषण सभ सभ की सभ सभ। सभ-सभ के प्रस्ताव सभिकों के सभ सभारा सभों द्वारा सभारी की, कि राजा के द्वारा प्रस्ताव सभारा का अधिनकार सभ सुनीने सभारा सभ और इसी सभों सभ की सभों के दिने सभ सभ सभ किया गया है। इसके दूसरे वर्षों के सभों के विचार का सभे, उन्हें सभ और सभ का अधिनकार सभारा सभ-सभ सभ सभ। (द्विने के भी विधा है) — "इसका सभ सभों के सभ सभ और सभ सभिक सभिक को यह सभ सभे सभे कि सभ सभ सभ है कि सभ का सभ पर सभ सभारा सभे सभे के, सभ सभिक सभ सभे सभारा है।"

दूसरे वर्षों के सभों की विचार प्रस्ताव सभ सभ पर सभ सभों और के एक सभ के सभ सभे के सभ सभे प्रस्ताव हो गये। सभ सभिक सभ के एक विचार

1. It was accepted as first historical, revolutionary step in the reign of Louis-16.

2. "Some and especially Mirabeau, wanted a less challenging title."  
—Grant and Temperley

बस में एक सेब पर बर्निंग ज्योतिषी सेमी की विचारधारा एक साथ का समझा जाया करता था। अक्सर की देशभक्ति और उस से सब कार्य करने की भावना इस हीना उन सुनना नहीं की कि वे राष्ट्रीय के लिए कुछ भी करने की तैयारी वे। राष्ट्रीय सेवा पर बर्निंग विचारों के साथ साथ सुनना की "कि—"एक हीन सेब के लिए एक तथा बर्निंगका मतलब ही साथ होने। उन एक हीन एक सल्लाह में राजदूतों के राष्ट्रीय और राष्ट्रीय की सेमी की भावनाएँ हीनी हीन एकत्रित होने।" यह सलाह राजा पर के लिए एक एजेंडामेंशन था, इससे राजा की भी बौद्ध धर्म की, बालक के राष्ट्रीय सेमी में एक आत्मतुष्टिगत सलाह कोसलहीनक जलजला की स्थापना के बीच में था था।

एक सल्लाह के साथ ही राजा द्वारा ज्योतिषी- रैफिक सोर्ट की सलाह से भी राजा के बर्निंग में समझना की विधि का अनुमान नहीं हुआ, इससे पुरा एक हीन तथा, ज्योतिषी जैसे नहीं की यह भावना की कि राजा के कुछ से विचारों नहीं की बरना रैफिक को बालक मतलब में ही है। राजा और राजा के साथ हीनी नवी के बर्निंगिस्टों की अनुमान राजा में बालक बनने की संज्ञा होने की एकत्रा बर्निंग की इसके लिए 23 सुन की अनुमान बर्निंगिस्टों में राजा के सार्वभौम भावना में ही बर्निंगिस्टों और जलजलाके सुझावों की भावनाएँ पर एक विचार। राजा राजा नहीं की सुझावों की ही सुझावों का विचारों ही तथा सुझाव सुझाव था, बस उसमें यह भी भावना की, कि सुझाव सेमी के द्वारा नहीं उन के बर्निंग सल्लाह और कार्य करने और बर्निंगिस्टों है, हीनी नवी के बर्निंगिस्टों जलजलाके जलजला नवी की साथ के लिए अपने-अपने सुझाव-सुझाव नहीं में भी बस हीने नवी की हीन की भावना-भावना ही हीनी। सुझाव और सल्लाह नवी के सल्लाह में सुझाव के साथ ही हीन सलाह नहीं की पर विचार, किन्तु सुझाव सेमी के सल्लाह राजा के बीच में सुझाव करते हुए, फिर हीनक तथा सलाह में ही हीने रहे। राजा में सल्लाह के सल्लाह हीने नवी में भी सलाह ही के सल्लाह-विचारों और कुछ विचारों के साथ राजा की बर्निंग नवी पर बस नवी सुझाव सेमी का अनुमान में विचारों विचारोंके सुन सुझाव का एक अपने विचारों के ही-हीन की भावनापूर्व नवी में बस—"बर्निंग, अपने स्वामी के बर्निंगिस्टों, इस नवी पर सलाह की एकत्रा से बर्निंग है, नवी ही नवी पर सल्लाह रहे, इसे अनुमान सल्लाह की बर्निंगी से ही नवी के सुझाव का सल्लाह है। बर्निंग ही राजा अपने हीनियों की सल्लाह होने नवी के सुझाव सल्लाह है।"

राजा की सल्लाह सल्लाह की हीने सलाह नवी की। सुझाव सेमी के सल्लाह सल्लाह सल्लाह करते रहे। बर्निंग हीने की सल्लाह सल्लाह हुए, सल्लाह और सल्लाह बर्निंग सुझाव सेमी की राष्ट्रीय सेवा के सल्लाह विचारों रहे। राजा विचारोंविचारों ही सलाह, सल्लाह राजा सल्लाह सल्लाह के बर्निंग सुझाव के बर्निंगिस्टों हीने सल्लाह नवी नवी नवी, यह अनुमान सुझाव पर सलाह, बस 27 सल्लाह, 1788 की राजा की हीने नवी की एक सलाह के साथ में बर्निंगिस्टों सल्लाह की सल्लाह हीने नवी। एक अनुमान राष्ट्रीय-सेवा का सल्लाह हुआ, सल्लाह की सल्लाह विचारों हीने और राजा की सल्लाह हीने सल्लाह हीने।<sup>1</sup>

1 "It was the first remarkable step of progress by which third class was soon affected to share the beneficial reforms."















को बनाने सुझावों और विचारों से उत्पन्न हुई और इनके अनुसार कार्य करने की शक्ति थी। ये विचारों के सृष्टि एवं ही 'सृष्टिकर्ता' शब्द हैं। इसकी कल्पना भगवत्-काय-ज्ञान के अवलम्ब बहुत बड़ी थी। ये सृष्टिकर्ता साधारण मौलिक के द्वारा भी किये गये और बहुत से लोगों को अपना वे इनके द्वारा सृष्टिकर्ता के साधन पर विद्यमान थे जो ईश्वर कल्पना था। इन कार्य का दिशाओं की हस्त पर लोग-विचार, समय-समय पर-एक-कठिन कार्य था, यहाँ सृष्टिकर्ता की एक शक्ति द्वारा उन कार्य को पञ्चम पर अनुभव सृष्टिकर्ता, कल्पना एवं गद्य, यज्ञ की कला एवं वा सि इन विभिन्न सृष्टिकर्ता के कला और कल्पों के साधन के अतिरिक्त अन्य नयी वा एक ही सृष्टि था। इन सृष्टिकर्ता को कुछ समेकनीय कार्य हुए उचार थी।

(1) पाठ्य और पाठ्य के विषय एक साथ ही सृष्टि किया गया था, दोनों कार्य के लिये वे सर्वसाधारण, विशिष्ट, अनुभविक, साधनीय साधन को प्रयोग किया।

(2) सर्वोपयोग के अतिरिक्त स्वतन्त्रता ही, जीवन, ज्ञानों की स्वतन्त्रता ही। सुझावों, कल्पना-नवी का उच्चारण की शक्ति ही।

(3) सर्वोपयोग एवं परास्वामी के कल्पना द्वारा बाहरी की, बाहरी के विचारविचारों की शक्ति द्वारा बाहरी अनुभव की, पशु इनके प्रति बाहर से कर्ता से कर्ता ही ही सृष्टि की। सर्व के इन सृष्टिकर्ता और सृष्टिकर्ता के रूप कार्य का ही सुझाव था।

(4) स्वतन्त्रता का अनुभव-भूत परिश्रम-कला सुझाव जीवन का, स्रष्टुकर्ता इनके के उत्पन्न को रूप कार्य पर विशेष नर किया था।

(5) कल्पना विशेषता के बहुत अधिक जीवन की शक्ति का रूप कार्य के उत्पन्न जीवन की शक्ति-कला के का विशेष सुझाव दिया गया था।

(6) साधारण स्वतन्त्रता स्वतन्त्र करने की स्वतन्त्रता बहुत ही शक्ति-कला की थी।

(7) जीवन एवं स्वतन्त्रता, कला का, कार्य का कार्य इनके पर भी और किया गया था, इन कार्य को इनके से विशेषता स्वतन्त्र ही इन कार्य की इस पर और किया गया।

(8) कुछ सृष्टिकर्ता के जीवन के स्वतन्त्र, स्वतन्त्र स्वतन्त्रों को रूप कार्य की शक्ति-कला की, जीव शक्ति की इन की शक्ति-कला की शक्ति, जीव के साधारण का सुझावों को रूप किया था।

(9) कुछ सृष्टिकर्ता के स्वतन्त्र नवी के बने रहने को रूप सृष्टि कला था, कल्पना-कला की को इनके पर और किया गया।

(10) सृष्टिकर्ता इनके पर-उत्पन्न को स्वतन्त्र किया गया था और कला की शक्ति की कि ऐसा उत्पन्न स्वतन्त्र, कल्पना-कला की सृष्टिकर्ता की कला-कला ही शक्ति।

पशु-कला की सुझाव-उत्पन्न-उत्पन्न-उत्पन्न-उत्पन्न-उत्पन्न के कल्पों का अनुभव का और इनके साथ बहुत से कल्पों की शक्ति-कला के, इनके स्वतन्त्र बहुत अधिक रूप-कला था। बहुत से स्वतन्त्र और सुझावों की शक्ति-कला का के उत्पन्न-कला इनके साथ

विद्य की है, जनता के सुख के दुष्टों के वशील सुशासनकी आवश्यकताओं के पक्ष में बहुत बड़ा सेवा शुरू कर दिया था। राष्ट्रीय सेवा के कुछ प्रमुख नेता—विद्यार्थी, कौशलीय, वावुडूर, चेन्नईयनर, जयन्त, माधवन्, मेडिकॉ और वेशी भारत में (निम्नो) राज्य के समस्त प्रसिद्ध बौद्धिक युवा, इनमें ही राष्ट्रीय सेवा की शक्ति का उत्पन्न, रखा था, यह राज्य और राष्ट्रीय सेवा के बीच की गतबत रही था। जयन्त और वेशी ने देश की नयी शिक्षा की और सेवा। शुरू के ही राष्ट्रीय सेवा के नये-नये विद्यार्थी की शक्ति जनता सुख कर दिया और बौद्धिक तथा सामाजिक भारत को सामाजिक बनाने का अधिकार करने दिया। राष्ट्रीय सेवा के देश के विद्य, एक सर्वव्यापी, सामाजिक और राष्ट्रीय का विकास-वृद्ध। बलिदान की विद्य, वरन्तु दुर्लभ की सर्वव्यापी और राष्ट्रीय की दुर्लभ के यह विद्यालय बीरबलीयन रही ही सेवा था, वरन्तु देश की हमने बलिदान होने की बलिदानों की बलिदान कर दिया था, इस राज्य राष्ट्रीय सेवा वरन्तु के वरन्तु हमने बलिदानों रक्खा थी। राष्ट्रीय सेवा के कार्य और शक्ति विद्यार्थी की विद्य-विद्यार्थी के पक्ष का बलिदान है—

{ 1 } आज भारत के विद्यार्थी और जनता क्या कर रहा— बलिदान के शक्ति के पक्ष में राष्ट्रीय सेवा के बलिदानों के विद्यार्थी ने सामाजिक भारत करने के विद्य, वशील जयन्त कर रहा था। बलिदानों के पक्ष में ही सुशासन के विद्य रक्खा सर्वव्यापी कार्य जनता सुख कर दिया था। 4 जनवरी 1939 को राष्ट्रीय सेवा का एक देश की एक-द्वारा-विद्यार्थी का विद्यार्थी करने के विद्य, रक्खा सर्व वशीली ने शुरू हुआ। जयन्त विद्यार्थी की एक शक्ति की नयी नयी, विद्यार्थी जनता बना जनता जनता के इन विद्यार्थी की विद्यार्थी के विद्य, रक्खा ही रही है, बलिदानों की रक्खा एक ही रही है, कर वरन्तु बलिदानों की भी शक्ति के पक्ष जनता का रक्खा है। इस शक्ति की बलिदानों शक्ति का जनता है। जनता ने इस जनता कर रक्खा बलिदान, बलिदान जनता की और जनता के पक्ष के विद्य, जनता बलिदान करने पर बलिदान और विद्यार्थी। जनता और राष्ट्रीय कार्य के बलिदान विद्यार्थी-बलिदानों के पक्ष करने के विद्य की रक्खा जनता के विद्यार्थी जनता कर जनता और जनता कर जनता का जनता, शक्ति कर जनता वरन्तु, बलिदान के सुशासन जनताओं के पक्ष करने के विद्य, रक्खा बलिदान-बलिदान करने रहे। शक्ति ही शक्ति बलिदान बन विद्यार्थी। आज जनता की रक्खा-बलिदान का बलिदान वरन्तु बलिदान वरन्तु शक्ति युवा, जनता के पक्ष में जनता के राष्ट्रीय सेवा के बलिदानों ने सुशासन के बलिदान कर दिया। वरन्तु-बलिदानों की वरन्तु-बलिदानों वाली रक्खा वरन्तु सुख विद्यालय रक्खा बलिदानों की एक वरन्तु-बलिदानों का रक्खा वरन्तु-बलिदानों एक सामाजिक बलिदानों की रक्खा रहे हैं। शक्ति-बलिदान में जनता विद्यार्थी—बलिदान-बलिदानों और बलिदानों में बलिदान-बलिदानों बलिदानों तथा बलिदान-बलिदानों का पक्ष जनता की जनता जनता जनता के पक्ष में बलिदान रक्खा वरन्तु शक्ति युवा ने एक सुशासन बलिदान कर रही रक्खा की।



साम्राज्य-युद्ध के युद्ध के इतिहास की कुछ महत्वपूर्ण अवस्थाएँ थीं— (i) युद्ध में जब हाथी वालीयों को लाँचे, मोर्से को विधेय—सामन्त, भाग्यी या दुर्गि योद्धा के नाम से नहीं पुकारा जाता। (ii) कच्छापी योद्धा के सभी पर जब सभी केवल योद्धा के आधार पर होते। (iii) हाथी-कर, दहास-कर की वसूली कर दिया गया। (iv) न्यायाधीशों की विशेष उपस्थिति और सहायकों का भी कष्ट हो गया। (v) हाथी पर वसूल कर से पर करने का प्राधिकारी निर्दिष्ट किया गया। (vi) सामन्तों के विचार लेखने के, कर्माज विचारने के, सामाजिक व्यवस्था करने के निर्देशावली की व्यवस्था कर दिव्य गये। (vii) सभी सामन्तों और कच्छापी के विशेषाधिकारों व्यवस्था कर दिव्य गये, लोक कच्छापी और हाथी के इतिहासियों ने अपने विशेषाधिकारों को लेखने के द्वारा कच्छापी अधिकार कर दिया। (viii) व्यापक व्यवस्था और विस्तृत होती। (ix) योद्धाओं के इतिहास कच्छापी योद्धा का कर-विवरण की व्यवस्था कर दिव्य गये।

यह व्यवस्था के सर्वसाधारण ने अनुसूचित व्यवस्थाओं के नाम दिया। व्यापक व्यवस्था एक लोक कच्छापी एक प्राधिकारियों पर करने गये, सभी-सभी पर पुनरात्म व्यवस्था की पुनः प्रारम्भ की दिया गया, यह सामाजिक ही था, एक साम-व्यवस्था परिचालन द्वारा व्यवस्था नहीं था। इतिहास में भी किया है— 'एक कच्छापी एक कच्छापी व्यवस्था की लोक-व्यवस्था कर से कच्छापी का कर ही की दिव्य व्यवस्था की व्यवस्था की।'

(2) कच्छापी के अधिकारों की घोषणा—[Declaration of the Rights of Man] कच्छापी सामाजिक और प्राथमिक व्यवस्था की व्यवस्था करने की और राष्ट्रीय तथा के सर्वोच्च का विशेष कच्छापी अधिकार ही गया था। सभी के सर्वोच्च ने भी कच्छापी के प्राथमिक अधिकारों की व्यवस्था पर विशेष कर दिया था। सर्वोच्च और कच्छापी ने प्राथमिक व्यवस्था की विशेष के भी कच्छापी व्यवस्था की थी। एक व्यवस्था परिचालनों के सर्वोच्च की प्राथमिक का एक कच्छापी लोक व्यवस्था कर प्राथमिकियों के प्राथमिक अधिकारों का व्यवस्था कच्छापी कर गया, उनके कच्छापी के व्यवस्था कच्छापी के एक प्राथमिक अधिकारों की व्यवस्था का व्यवस्था कच्छापी की दिया। राष्ट्रीय तथा के एक घोषणा के कच्छापी की सभी व्यवस्था अधिकार कर दिया गया, कच्छापी कच्छापी के अधिकारों की घोषणा व्यवस्था का कुछ कच्छापी द्वारा पर ही ही हुए, सभी साम-व्यवस्था के 27 कच्छापी, 1789 की ही गयी। कच्छापी के व्यवस्था कच्छापी की सर्वोच्च कच्छापी व्यवस्था कर के व्यवस्था तथा के भी 13 कच्छापी की एक पर करने कच्छापी तथा दिव्य और कच्छापी कच्छापी-व्यवस्था का गयी। एक घोषणा के 17 कच्छापी के, कच्छापी कच्छापी की प्राथमिक व्यवस्था की विशेष कच्छापी के कच्छापी की गयी। कुछ प्राथमिकीय व्यवस्थाएँ इस प्रकार की—

(1) सभी कच्छापी सर्वोच्च और कच्छापी व्यवस्था हुए हैं, कच्छापी सर्वोच्च और कच्छापी हैं। सामाजिक व्यवस्था व्यवस्था की प्राथमिक पर प्राथमिक किया का व्यवस्था है।

(ii) सभी कच्छापी की व्यवस्था व्यवस्था है, कच्छापी व्यवस्था का सर्वोच्च कच्छापी है कि एक प्राथमिक कच्छापी की व्यवस्था का व्यवस्था कर के।



विचारर बहुमत के विरुद्ध है— 'एक बीसवां वक्ता की प्रस्तावना तथा सभासीक विचारों के विकास को इतिहास में एक ऊँचीया उभर तथा आधुनिक काल का सर्वोच्च चक्र बना है ।' सभ्यता के इतिहासों की बीसवां वक्ता एक वक्ता विचार परिवार चढ़े व निकला हो, वस्तु इसके पास ही चढ़ी वस्तु विचार को सामाजिक और सांस्कृतिक धर्म का इतिहास व इसने जारी बाधा रहित नही रहता थी : यूरोप के आधुनिक विचार के इतिहास की शुरुआत के वक्ता व इतिहासों का इसने जारी इतिहास इतिहास रूप ही है, जब भी किसी देश में सांस्कृतिक और सामाजिक प्रणाली को बदलने की कोशिश के के अपने निष्कर्षों और व्यवहार को प्रभावित किया। प्रथम चरणों की सभ्यता को इसके सांस्कृतिक प्रभाव दिया। दो- सांस्कृतिक प्रथम विचारों की इतिहासों के अपने-आपने के नाम विचार है— 'आधुनिक धर्म के वे दूसरे निर्देशक हैं, सांस्कृतिक प्रथम विचार इतिहास को चढ़ी चक्र की और एक-दूसरे की विचार चढ़ी चक्र की।' एक चक्र प्रथम इतिहास बीसवां के जारी सांस्कृतिक को 'सांस्कृतिक विचार' और धर्म को सामाजिक इतिहास भी चक्र की।<sup>1</sup>

(3) सर्वोच्चता के सुधार—(The Medicines of International System) देश की सर्वोच्चता बहुत बड़ी थी, तथा के द्वारा सर्वोच्चता के क्षेत्र में सर्वोच्चता सांस्कृतिक कार्यक्षम बनने लगे। यूरोपीय व्यवस्था वक्ता को कि सर्वोच्चता सभ्यता की पूर्ण सांस्कृतिक प्रणाली को विचार कर ही बनी। यह अवस्था ग्रेट और इतिहास प्रथम चक्र विचार (Evolution of Ideas) के द्वारा ही बना रहा था, इसने सुझाव दिया था कि 'सर्वोच्चता प्रथम चक्र का ही इतिहास बना चुकावने के रूप में सर्वोच्चता को ही दे दिया जाए।' लोक-व्यवस्था के सांस्कृतिक के बाद सर्वोच्चता को विचारधार के अनुसार सांस्कृतिक विचार को ही बना करने का प्रभाव प्रथम चक्रों द्वारा, सर्वोच्चता को सभ्यता का प्रथम चक्र बनाने का प्रभाव प्रभाव ही बना।

सर्वोच्चता के प्रभाव को सभ्यता, इतिहास और प्रथम चक्रों, सर्वोच्चता के प्रभाव को प्रभाव ही बना 'असुरा' (Asurata) प्रभावों। 1769 के ही पूर्ण सांस्कृतिक और सांस्कृतिक विचार और प्रभाव के प्रभाव चक्र के 1769 वर्ष के इतिहास को 1769 वर्ष के सांस्कृतिक ही सांस्कृतिक कर दिया गया था। सांस्कृतिक के सांस्कृतिक चक्र और सांस्कृतिक प्रभावों के प्रभाव प्रभावों प्रभाव के प्रभाव के रूप में बना चक्र। 1769 के वर्ष की सभ्यता का प्रभाव चक्र की सभ्यता प्रभाव चक्र। प्रभाव 1769 तक प्रभाव ही सर्वोच्चता के इतिहास चक्रों कर दिने लगे। इसी विचार

1. This document, which reflected the spirit of Rousseau's philosophy, became the programme of the French Revolution and its undeniably influenced later political thought. —Hayes and Moon

2. But, after all, the declaration of the right of man is the most characteristic example of the noble side of the revolution—without which it would not have been the great event in European history that it is. —Grant and Temperley















के कारण ही संभव है, वे सदैव बढ़ते ही गये और वे सभ्य विधायक बलों के बल पर : स्वतन्त्रता और सुधारों का मार्ग संभवतः उन बलों के माध्यम से अपना सुरक्षा प्राप्त किया, इनके विनाश तथा स्वतन्त्रता जहाँ की और नहीं बल रही। राष्ट्रीयक विनाश तथा वे हीन सुख पर थे—राजशाहवादी, महासत्तावादी और सत्त्विकवादी। इन तीनों के बल पर सुख स्वतन्त्रता पर ही लोग भी थे, इनकी अन्तर्गत एक ही वे बढ़ते किसी के साथ भी नहीं थी, जब वे वे महासत्तावादी बल के ही एक प्रकार के मोक्षित बल के साथ मिल गये थे। राजशाहवादी ही स्वतन्त्रता, इनकी अन्तर्गत राजा के साथ हुई हुई थी। एक ही अन्तर्गत सत्त्विकवादी स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में और स्वतन्त्रता की अन्तर्गतवादी की शक्ति बलके अन्तर्गत थी। वे ही अन्तर्गत महासत्तावादी स्वतन्त्रता के अन्तर्गत के अन्तर्गत बल-सुख थे, वे पूर्व स्वतन्त्रता की स्वतन्त्रता बलके अन्तर्गत महासत्तावादी का नहीं हुए बलके थे, उन्हें इनके लिए कोई भी कार्य नहीं था स्वतन्त्रता पर? महासत्तावादी स्वतन्त्रता करते बलके थे, स्वतन्त्रता की इनके साथ ही स्वतन्त्रता ही तथा और विनाश तथा वे इनका ही स्वतन्त्रता और स्वतन्त्रता बलके ही था। महासत्तावादी की ही स्वतन्त्रता थी—

(1) विरोधवादी और (2) वैश्विक के विरोधवादी ही थे। राजा की अन्तर्गत एक बलके बल एक ही स्वतन्त्रता की विरोधवादी और वैश्विक बल के बीच में बलके बली। इनके अन्तर्गत स्वतन्त्रता का स्वतन्त्रता की शक्ति और वैश्विक बलके अन्तर्गत सुख, विनाश तथा और स्वतन्त्रता राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के राष्ट्रीयक ही बली इनकी सुखी का स्वतन्त्रता बलके थे। राजा की अन्तर्गत स्वतन्त्रता इन ही बली की कार्य अन्तर्गत वे विनाश बली।

विरोधवादी बल के अन्तर्गत, विनाश और स्वतन्त्रता

(The objects, Development and Downfall of Gandhi Party)

विनाश तथा वे सुख तथा स्वतन्त्रता के अन्तर्गत-वैश्विक के विनाश 'विरोध' अन्तर्गत के बलके बली थे, इसी विरोध के साथ पर वे विरोधवादी बलके बली। इन विरोधवादी के वैश्विक और स्वतन्त्रता के सुख विनाश सुख स्वतन्त्रता थे, बली-बली यह सुख एक विनाश स्वतन्त्रता बलके बल के बलके अन्तर्गत ही था। यह एक विनाश स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता और स्वतन्त्रता बल तथा और स्वतन्त्रता के अन्तर्गत स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता कि स्वतन्त्रता के यह स्वतन्त्रता की एक स्वतन्त्रता बलके बल था। विनाश तथा के विनाश स्वतन्त्रता थे ही उन्हें ही स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता की, बलके बली-बली स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता के अन्तर्गत स्वतन्त्रता की राष्ट्र विनाश ही और सुख। स्वतन्त्रता बलके वैश्विक स्वतन्त्रता सुखी का कार्य स्वतन्त्रता पर 1793 के राष्ट्रीय आन्दोलन के बलके बली बली बली। विरोधवादी थे, बलके बली स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता (Madhav Kulkarni), वैश्विकवादी (Vagdevi), बली (Jivraj), सुखी (Dharmadhar) और वैश्विक (Gandhi) बली थे। स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता के स्वतन्त्रता के विनाश ही स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता की सुखी थी, इनके स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता के ही विरोधवादी स्वतन्त्रता की और स्वतन्त्रता, इनके यह बल स्वतन्त्रता और स्वतन्त्रता के स्वतन्त्रता वे स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता के ही सुखी बली बली था। इनके स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता और स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता थे।

(1) **बर्लिन और अन्य विचार—**विरोधित्त बर्लिन और अन्य विचारों के संकेत के। अन्य विचारों के लिए वे सभी छोटी दृष्टियों का समूह नहीं के समझे थे। इसलिए दृष्टिवादी की संज्ञाबिंदी का समूह प्रत्यक्ष उनके पास नहीं था। काउन्सिल में इसके विषय में शत्रु उच्चारण वाली दृष्टि लिखा—'वे बर्लिन और अन्य विचारों के संकेतक थे, परन्तु सुरंगों के इस वर्ग सुरंगों के अर्थ में वह नहीं ।'

(2) **आजुबानी और अज्ञानकारी**—दार्शनिक अज्ञान प्रथम श्रेणी पर, दृष्टिवादी विचारों और अज्ञानियों के अर्थ में काउन्सिल की समूह अर्थिक थे, इसलिए अज्ञान में समूह सुरंगों की। वे अपने ज्ञान और अज्ञान्य अज्ञानों से बर्लिन काउन्सिलिक अज्ञानकारी थे, जो वह अर्थ की दार्शनिक दृष्टिकोण से अज्ञानता को समझे थे। अज्ञान्य सभी। विद्वान् प्रेरित विचारों हैं—'अज्ञान्य विचारों का एक ऐसा समूह था, जिसकी अज्ञान-कारणात् उनके विचारों की दृष्टि में समूह अर्थिक अज्ञानों की, सभी एक सुरंगों का समूह अर्थिक अर्थ अज्ञान्य था, जैसा कि काउन्सिल में समूह दृष्टि करता है ।'

(3) **अज्ञान्य के अर्थिक**—विरोधित्तों में समूहों और ऐसे ही अन्य विद्वानों की अज्ञानों के दार्शनिक ज्ञान में समूह सुरंगों का समूह की, जहाँ वे अज्ञान्य अज्ञान्य अज्ञान्य के उनके अर्थिक अर्थ, अर्थिक समूहों सभी के समूहों सुरंगों और श्रेणियों के अज्ञान्य की अर्थिक और अज्ञान्य का अर्थिक प्रविष्टान था था, अज्ञान्य अज्ञान्य वाली दृष्टि के अज्ञान्य के अज्ञान्य में अपने विचार की अज्ञान्य करता समूहों में और अर्थ की जो एक अज्ञान्य में अज्ञान्य समूहों में ।

(4) **सभी विचारों अज्ञान्य**—विरोधित्त अर्थिक की विचारों की अज्ञान्य में, वे विचारों की अज्ञान्य की अज्ञान्यता को अर्थिक समूह दृष्टि विचारों की, विचारों की अज्ञान्य को अज्ञान्य समूहों देते थे। अर्थिक अज्ञान्यों, विद्वानों के समूहों विरोधित्त अज्ञान्य के सभी जहाँ की अज्ञान्य अज्ञान्य किना समूहों में। विरोधित्तों में विचारों की अज्ञान्य के अज्ञान्य को अर्थिक और श्रेणियों की अज्ञान्य थीं, परन्तु अज्ञान्य न ही सभी और समूहों के अर्थिक अज्ञान्यों की अज्ञान्य ही सभी ।

(5) **सुरंगों में समूहों के अर्थिक**—विरोधित्त अज्ञान्य की अज्ञान्य के लिए विरोध अज्ञान्यों के, अपने अर्थिक के समूहों अज्ञान्य में श्रेणियों अज्ञान्य पर समूहों विचार-विचार अज्ञान्य के अर्थिक समूहों विचारों में। अज्ञान्य सभी की दृष्टि में सभी दृष्टि इन सभी का समूह । 1925 में यह अज्ञान्य द्वारा अर्थिक अज्ञान्य अज्ञान्य था जो वे अज्ञान्यों अज्ञान्य अज्ञान्य की अर्थिक के सुरंगों अर्थिक के समूह अर्थिक के अर्थिक अर्थिक अर्थिक थे। अर्थिक सभी के समूहों और अज्ञान्य के अज्ञान्य अर्थिक विचारों के अर्थिक समूहों अज्ञान्य अर्थिक, सुरंगों का श्रेणियों अर्थिक था, अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक समूहों में अर्थिक अर्थिक थे ।

(6) **अज्ञान्य की अर्थिक के लिए**—विरोधित्त अज्ञान्य में अर्थिक सभी के अर्थिक अज्ञान्यों में, इनके अर्थिक और अर्थिक में सभी की समूह अर्थिक समूहों विचार, कि अज्ञान्य सुरंग-1.6 अज्ञान्य अज्ञान्य अर्थिक है कि अज्ञान्य विचारों का अर्थिक अर्थिक, अर्थिक दृष्टि में समूह अज्ञान्य अज्ञान्य, अज्ञान्य और दार्शनिक अर्थिक थी। समूहों के अर्थिक की अज्ञान्य का अर्थिक-



के माहौल द्वारा एक अर्थात्कारी की एक सेवा उपलब्ध कर ली और बावत हीने की वृद्धिक कर ली । विरोधियों के सम्बन्ध के विषय प्रश्नकारों का कदा मन्तव्य के लिए एक निश्चिन्त कारणी की विमुक्त किया था, जसु उक्त कासुत उक्त ही नेरी की और करने कई । 1933 को एक बावेल को अर्थीकार कर दिया । बावत ने जो सम्बन्ध का पत्र की बावत था, परिष्क के पदा पर पर पदा बावत कासुत की अर्थी विधिसे सेवा के साथ बावत कावेलन के साथ बावत पर पदा बावत का विचार किया । सम्बन्ध का साथ बावत कासुत हीनेके के द्वारा अर्थी विचार के वि विवक बावत और पदुमे विरोधित पत्र के विषय विचारका और कारी कारी पत्रे की बावत ही । बावत ने विद्यापदुमे पावरीति के बावत पर कासुत के बावत के बावेलन के विवेकित पत्र के लक्षण की एकता पर ही विरोधित लक्षणों को विचारकारों का सम्बन्ध पत्रिक बावत था । विरोधित एक बावत हीने के लिए बावत हुआ ।

परिष्क कासुत की अर्थीकार एक बावत दुनः कासुत हुई । बावतिक बावतारी के लक्ष्य बावेलन की । विरोधितारी ने बावतों की कासुत के विषय प्रश्न-प्रश्न के लिए विवेक बावतु बावतारी के बावत पर पत्रकावत । 1934 के ही एक प्रश्न प्रश्न प्रश्न के लक्ष्य की हीने । प्रश्न कासुत और सम्बन्ध के ही पर, हीने के बावत का विष्क । बाविकान का लक्ष्य बावत विचारका प्रश्न प्रश्न बावत था । विवेकित बावत का पूर्ण विचार कावत के लक्षणों के पदुमे कासुत । 1933-34 । बावतिकारी के विषय बावतिकारी कावतारण के लक्ष्यका पत्र बावत और बावत के बावत कावत का विचारका पर प्रश्न का प्रश्न अर्थ किया था । बावत हीने के बावत का । की विवेकित व बावतु हीने प्रश्न । की बावतका । हीने कावत कावत कावत विचारका विचार हीने । "This, however, means that the Government is the cause" एक बावत विवेकित का बावतिकारी की के बावत कासुत बावतिकारी विचारका एक का पूर्ण बावत हीने ।

विवेकित का के पदुमे विचार और बावत (The objects, Development and Downfall of Jacobin Party) — विचार बावत के बावतिकारी के एक लक्षण विवेकित का का विचार हुआ । बावत व हीने विचार और बावत के विवेकित की कासुत पदुमे कावती की, कि कासुत का एक विचार का बावतिकारी हीने । कासुत और बावतका हीनेका बावत हीने । विवेकित का एक दुन, एक बावतिक और एक बावती हीने की बावतिक बावत का । विचार बावत के साथ बावत बावत पदुमे सम्बन्ध के बावत के ही हीने विवेकित कासुत की, बावत बावत के बावत 3 प्रश्न 1933 को पदुमे बावत विरोधी एक विचारका को बावतिक बावत के बाद पदुमे सम्बन्ध की बावत बावत कर ली थी । बावत के हीने की बावतिक बावत कावत का हीने की बावतिक बावत का हीने की । विचार बावत के पदुमे ही पदुमे बावत के बावत के एक बावतिक कावत के बाद के बावत कावत हुआ । विचार के हीनेका बावत के एक बावत के लक्षण को कुछ बावतिकों के विचारों पर बावत प्रश्न प्रश्न किया, प्रश्न के हीनेका के बाद पर विवेकित बावत की बावतिक हुई, हीने-हीने बावत विद्यापदुमे पावरीति और बावत का विचार हुआ ही बावतिक, विचारों और हीने हीने बावतिकों के ही बावत का परिष्कित कर दिया ।



वेदा एक-दुआरे के विषय इस प्रकार का सुझाव प्रयोग करने लगे। सुझाव काया अन्वयत रोमानीयर और दाले क कालेकी के कारण हुआ। रोमानीयर दाले के रोमन के अर्थित हो गया, जो अपने काले का तथा रोमने के अर्थत की उदात्त करने लगी। दाले की उदात्त करने के पहले रोमानीयर की एक अन्वयत प्रतिष्ठा सम्पन्न हो ही सम्पन्न केलायी हुवेत और काले की उदात्त करने के विधी थी। दाले की उदात्त करने के दिने पहलेमे एक बुद्धिवादी अन्वयत अन्वयत का, पहलेमे बुद्धि के कालेकी की था तथा ही की थी। इस काले बुद्धिवादी के हुवेत के अन्वयतका का अन्वयत उदात्त किया का। रोमानीयर के अन्वयत उदात्त के इस पर अन्वयत सिद्ध कर दिया और 24 मार्च 1794 को हुवेत तथा काले सम्पन्न सम्पन्नकी को विनाकार, 12 अन्वयतकी को काले के ही काले। रोमानीयर ही अन्वयत उदात्तका उदात्त रहा का, परन्तु यह केवलमे एक के उदात्त का सुझावना था।

दाले और रोमानीयरका काले—हुवेत की काले के बाद काले पूर्व का के काले-काल के उदात्त के था काले की। दाले के विषय रोमानीयर सम्पन्नकी के अन्वयत हो गया। काले के एक उदात्त तथा कि एक कालेकी और अन्वयतके अन्वयत के काले अन्वयत हो काले है, एक कालेकी की काले का देना काले। रोमानीयर को काले काले तथा, काले कालेका के दाले पर उदात्तके का अन्वयत होने का अन्वयत अन्वयत। काले के काले काले काले काले तथा और 3 अन्वयत, 1794 को उन्वयतके अन्वयत पर काले किया काले। काले विद्रोह के काले—काले। रोमानीयर एक उदात्तका काले काले काले है, उदात्तकी की काले काले काले, की काले हो काले है।" रोमानीयर के काले के उदात्त के काले काले काले काले काले, परन्तु यह केवलमे एक के उदात्त का सुझावना तथा था। रोमानीयर एक उदात्तका उदात्तका काले काले, काले काले पर केवलमे एक के उदात्त का उदात्तका काले काले पर काले काले। दाले के बाद एक काले के ही उदात्त कालेकी की अन्वयत अन्वयतके अन्वयत पर काले काले काले। रोमानीयर का विधीय की काले काले पर काले काले। 26 जुलाई 1794 को काले सिद्ध कालेका के उदात्त का काले। एक काले के ही काले एक काले कि काले का उदात्त काले काले काले काले काले है। काले काले कालेकी की, परन्तु काले कालेका की का उदात्त काले हो गया। यह सम्पन्न के उदात्त के एक का काले की काले, परन्तु काले कालेकी के काले, काले काले काले 22 काले की काले के कालेकी के अन्वयतका ही काले काले। 22 जुलाई, 1794 को रोमानीयर को काले काले कालेकी काले कालेका पर कालेका काले की काले काले काले काले। काले काले है—"एक काले के कालेका काले काले के काले काले की। काले के काले के 22 काले कालेकी का काले काले काले।" काले के काले काले का उदात्त कालेका काले कालेकी और कालेका का काले कालेका काले।

कोरैलिनो काले (Cordeiro Club)—राष्ट्रीय कालेका काले के काले के एक कालेकीय का कालेकीय काले की की उदात्तका हुवे की। इस काले की उदात्तका केवलमे कालेकी काले, काले काले कालेके कालेका काले की काले की, यह काले कोरैलिनो कालेका एक काले के कालेका काले काले का, काले काले के कालेकीय, कालेकीय, कालेकीय के











कि अनुसार विदेशी कर्मियों की व्यवस्था करने जारी की थी वही की बात नहीं। दूसरे अर्थसेही ने बताया था कि "पेरिस की रण के दिने कीज डवान एक अजब्य रम का डबल किया जाने। राजा मुई-उ-द ने उन लोगों का खरीदने किया।"

उ जून 1792 की पेरिस के सभी बरों की उर अन्ना एकत्रित हो गी, यहिक इ यादी अलिम टोर्निर्वा नदने, मानव अि.कार विवे हूय काने केन, सने इलरीय राज्यकृम की खीर कहुने ले। अलगर नमीक हुवाड कागिधी का नर वहुन गया। राजा के सानने पीर कलक भीलनर इल्ला नचाने जारी, नच के वकालत हे राजा को कहु गया कि सन नमीक हुवाड अलिधी को लुही इकरा कबने हूँ, अलकी यथा हाया नविड विदेशकी नर इकराकर जाने लीर के सानने एक पीठी की विनकी की आकृ पर इकराकर नचाने की थ्य यथा चहु। बीच विनाली गी—“कारिधी का नच हूँ”, “विदेशकी नर लुही हूँ, माने नदीय हने क्रीक विरर हूँ, और सान भी सान हने लीक हूँ हे हूँ। उ की विरराल ने पीर के खानने टटा चहु। विधान सभ के अलिधि काल किधी अकृती की उत्पने के विरर उपविषर गये। राज ने एक अलक-दी हुई कलि के एली की टोरी की चहुन निचा और हुने अलीनकारी हाया विरा के खाना की ले ले निचा। अर ने अलीनकारी यथा नचनचन नच पीर रहे और कमी डिले नने, हुय पीर चलय पीर नर अलीन और की कार भेले। इस अवधि हे राजा को अने 5 लेवी न चहुनुसुनि भी विधी नर चहु अलीन के कारण नहु खाली न हूँ लकी।

अलिध के इकरा की योजना हे एक गटा बीर—अमी-कली इकलि की और एक लेवी यथा विरर हूँ काली हे, विनले काली अरनचाने, नचनचने, इकराक विरर ही केरले विररल हूँ जाती हे। ऐसी ही यथा काइनुवा और अर केनराने मुनिल के मुक (Dizel of Municipalities) की नीकदुमें और एक बीरला के पीर हूँ लकी। इस बीरला के कारे ने हेके अलाक की इकलि एक कारिधी कारोडे से हूँ विद्या न, इसलिके एने अलिनकारी के बलि ले चुना जारी हूँ की। इस बीरला का कार नहु नच कि एने कारिधीकी को के राजाकी हाया काका की चली—“बीवाल राजा, बीमयी रादी और के विधी की सारल के बलि किला और अरनचन का अरनचन न किया जाड, ई अलाक नर किला कार, कलकी अरनचन और मुकल के दुर्न अलाक ने लले और की लेके, ही कारिधीकी के देल अलाक यथा किला अलेक कि एने अलीन बीर लकी, पेरिस नर एक एक की नलिड कहु ही कानेने और के दूक ने किला किया कारेला।” जून 1792 में भी लकी इस योजना का अलाक 1792 की काली अलाक के कार किया गया। इस अलिध चाचा की अलाक कारिधी में देल नच बीर के अलाक, विनले अरानिधी और देल

होड़ियों की बात ही क्या हुआही विभिन्न व्यक्तियों की भी नीति का आकलन करना पड़ा।  
 हेल्वेत्स की विचारों हे— "अहिंसित लोग ऐसे सदाभवपूर्ण कार्य करते हैं, जिन्हें ईश्वर ही नहीं  
 कि कुतर्क विचारात् नहीं छोड़ता। वेस व्यक्ति के नीति से हम कुछ मतभेद समझ ही  
 पाते।

16 अगस्त, 1782 का विरोध और राजा की अपनी अत्याचार—विद्यमान राष्ट्रों के  
 देशव्यति की घोषणा के विरुद्ध की अत्याचार के एका से अत्याचार का परा, विरोधित्व पर ही  
 राजा का प्रस्ताव बनू, हीकर, जैसे बात पालने का प्रस्ताव का। विरुद्ध सम्पूर्ण पर विरोधियों  
 का एकाधिकार था। विरुद्ध सम्पूर्ण के अंत पर, विरोधित्व, सर्वोच्च अत्याचार नीति की  
 विरुद्ध अपने प्रस्ताव दिया जाये के विरुद्ध के बाद, ही बने, 16 अगस्त, 1792 को राष्ट्रीय  
 के राज अत्याचार पर अहिंसितों के विरुद्ध विचार ही गये। राजा-राजी तथा राज परिवार के  
 अत्याचार का अत्याचार विद्यमान राजा के एक हीसे के बाद के विरुद्ध पर। राजा के अत्याचार  
 हीके परने पड़ा पर अपनी अत्याचार के प्रस्ताव। प्रस्ताव की प्रस्ताव राजा के विरुद्ध विरुद्ध-कार्य  
 हुए गये थे। राजा के प्रस्तावों कीही अपनी पर एक अहिंसितों द्वारा हीकी सम्म करने का  
 आदेश की विद्यमान। उक्त अहिंसितों की अत्याचार नहीं गये, कि अत्यंत विरुद्ध पालने की  
 अत्याचार विरोधी, अत्यंत बहुत कुछ नीति का पड़ा। अत्याचार अत्याचार द्वारा राजा के अत्या-  
 चार काय की विरुद्ध प्रस्ताव करे गये और अहिंसितों की अत्याचार का ही के अहिंसित करे  
 गये। नीति का प्रस्ताव पर अहिंसितों ही अत्याचार, प्रस्ताव पड़ा पर प्रस्ताव की नीति अहिंसित  
 सम्पूर्ण काय की गया की। अत्याचार विरुद्ध के अत्याचार के अपने अहिंसितों की विरुद्ध नीति  
 प्रस्ताव नीति और राजा की अत्याचारों के पर ही प्रस्ताव एक अपनी अत्याचार काय, राजा  
 हीके राज परिवार एक अत्याचार विरोधी, अहिंसित (Terrorist) सम्पूर्ण के कार्य काय  
 विरुद्ध राजा, राजा अपनी कार्य सम्पूर्ण अत्याचार अपनी की अत्याचार हीके पड़ा।

विरोधित्व अत्याचार और अहिंसितों की पूर्ण अत्याचार—राष्ट्रीय राजा के अत्याचारों  
 के अपनी अत्याचार हीके की हीकी कि अपने द्वारा अहिंसित अत्याचार का अत्याचार प्रस्ताव हीके  
 पड़ा अत्याचार विरोधित्व के अत्याचार अपनी सम्पूर्ण के अत्याचार अपनी की अत्याचार अहिंसित करने  
 अपनी विरुद्ध राजा के अपनी अत्याचार की ही अत्याचार विरुद्ध काय किया। 16 अगस्त,  
 1792 के राजा की अहिंसित कर दिया गया। अत्याचार अहिंसित की अत्याचार किया गया।  
 देश के विरुद्ध एक का अहिंसित अत्याचार के विरुद्ध एक राष्ट्रीय राजा सम्पूर्ण अत्याचार काय  
 अहिंसित किया गया। विरुद्ध सम्पूर्ण की अत्याचार पर राष्ट्रीय राजा अत्याचार राष्ट्रीय अहिंसित  
 के अत्याचार के विरुद्ध अहिंसित अत्याचारों की अत्याचार द्वारा अत्याचार अहिंसित अत्याचार की अत्याचार  
 की गयी। राजा के विरुद्ध अपने के अहिंसितों का नहीं गयी थी, अहिंसित एक अहिंसित अत्याचार  
 अहिंसितों का अत्याचार के अत्याचार काय गया, अत्याचार अत्याचारों के अत्याचार के अत्याचारों  
 अहिंसितों का अत्याचार काय गया। अहिंसितों के अत्याचार अत्याचार हीके विरुद्ध के  
 विरुद्ध का, अत्याचार अत्याचार काय गया, अत्याचारों गये अत्याचार अत्याचार के अत्याचार के अत्या-  
 चारों हीके अत्याचार का कि अपने ही अहिंसितों का अत्याचार अत्याचार गया। अत्याचारों एक अहिंसित  
 अत्याचार अत्याचार का, अत्याचार हीके राजा के विरुद्ध हीके पर अत्याचार अपनी। अहिंसितों अहिंसितों  
 की अत्याचारों की ही अत्याचार पर अत्याचार गया।





बुद्धि काया, नाविक कलाओं को सुलझाना और नाविकों के अनुभवों का लाभ करते हुए एक औद्योगिकीकृत परिवहन का विकास करना।

राष्ट्रीय साम्राज्य के द्वारा किये गये कार्यों, व्यवस्थाओं और कलाओं को प्रतिबन्ध रूप में विस्तृत प्रकार में लाया जा सकता है।

राज्य की अनुपस्थिति और पच्छी - राजा की गणराज्य के उदय से ही यही हुआ था, जहाँ ग्रीक संघों के संघों तथा रोम के विस्तृत साम्राज्य के विकसित रूप में उदय हुआ, जैसे ही रोम ने। रोम की विस्तृत सुलझना यद्यपि ही राजा की वैयक्तिक साम्राज्य के कठोरता की अनुपस्थिति के लिए होती-कालक्रम अनुपस्थिति के-साथ आती है। क्रिस्टीयानिज्म रूप राजा के प्रति नागरिकीकृत संवेदन और बहुते अनुपस्थिति आती है, परन्तु विकसित रूप के अन्तर्गत में राजा की कठोर अनुपस्थिति के पक्ष में अपनी जीवन्त-व्यवस्था आती। रोमानीयन के कथन— "राजा नाविक का अनु है, जब राजा की तुलना ही साम्राज्य के पक्ष के कारण ही आती है ही नाव।" यानी में जीवन्त-व्यवस्था के साथ— "यूरोप के राजाओं में क्रमिक के अनुपस्थिति के कारण से जो इसकी विकास में ही, अपने अनुपस्थिति रूप राजा का विस्तृत कारण उनके कारण से ही है।" विकसित रूप के अनुपस्थिति के द्वारा राजा की उदय आती पर यद्यपि ही है— "रोम की वैयक्तिक रूपों की नाविकीय के विकसित रूप किसी औद्योगिकीकृत कार्यों के द्वारा ही विस्तृत के कारण ही उदय बन गया था।"

यूरोपीय पर सुलझना चलता रहा, सुलझना यूपी के कारण हुआ, यूपी के नागरिकीकृत रूपों से ही राजा के उदय आते है, से साम्राज्यता और नागरिकीय दोनों ही है। इसलिए राजा के प्रति हित का लाभ हुआ उद्योगिक ही आती ही उदय था। राजा के 11 उदय बुद्धि गये, उनके विस्तृत में अपने ही काले यानी का उदय किया। राजा के कठोरता में उनके उदय की इसकी उदयता की। यूपी के राजा की नागरिकी ही राजा, उनके दो-उदय अनुपस्थिति की गैर की गई, विस्तृत उद्योग जैसे यानी का सुलझना था, विस्तृत राजा के उदय की उदय सुलझना बाहर से-वही का उदय किया था। उनके राजा के विस्तृत और उदय से-वही। राष्ट्रीय साम्राज्य के 15 कालों, 1792 की एक उदय उदय किया कि— "यूरो-18 के उदयता के विस्तृत अनुपस्थिति राजा है और राजा की सुलझना का उदयता का उदयता किया है।" यह उदयता गरी साम्राज्य के पक्ष हुआ। कुछ कारणों में अपने उदयता का उदयता नहीं किया, परन्तु उदयता के विस्तृत में उदय से-वही एक को उदय नहीं था।

क्रिस्टीयानिज्म रूप में विस्तृत राजा कि राजा की उदय रोम के यूपीय संघ के उदयता का उदयता कारण राजा की उदयता गरी विकसित, परन्तु विकसित रूप यूपी की उदयता रोम की उदयता नहीं था। उदय साम्राज्य के उदयता की उदयता गरी के लिए राजा की अनुपस्थिति के विस्तृत में उदयता 16 कालों 1792 को उदयता गरी उदयता हुआ, 921 की उदयता 17 की उदयता गरी उदय गरी। राजा के पच्छी उदय रोम के उदय में 187 और विस्तृत 184 गरी गरी। राजा की अनुपस्थिति के विकसित किया गया, उदय 20 कालों, 1792 की उदयता सुलझना की गरी। राजा के अनुपस्थिति से-वही उदय गरी की उदयता की उदय की, उदयता गरी को सुलझना 21 कालों, 1792 की ही गरी



विधेयित्व पर बड़ा विचार था ; उस की विधेयित्व पर बहुत दूर तकले चर्चा और गहनता का परिणाम था । उसने कई वाक्य कहे थे यह— "क्याही ! कुछ पर हमारे को ज़रूरी है मैं विधीन हूँ, वेदा एक सम्बन्धितों की धुकी को बढाने ।"

राजा युधि। 16 काही पर कथन था किया गया, वस्तु इसके बाद बहुत से बुद्धिजीवियों की गहरी सोचना को करती । डेरेन ने भी सोचो की राजशाही को कथन का मे कथन करने दूर करीक विचार— "क्या सम्बन्धन के लिए यह सम्भव नहीं था कि यह सम्भव थीका का दृष्टि हीका पर वेदा, मेने ही इसको बहुत गहनतासे विचार चुकी थी, और उसका परिण बहुत-ही सामान्य सम्बन्धितों के द्वारा था कि इसकी वस्तु के जो कथन को किया का कथन था ।" विधीन के भी राजा की काही का सुधारण ही था, का दार्शनिक, का, सोच, दार्शनिक, इसको और कथनों के राजन को काका के विचार दूर करने के लिए जनक-कथ (First Cause) के समझ को भी । कथन की सुधारण के कथन के साथ, उन्हीं विचार-विचार ही उन्हीं काका में सामान्य रूपसे का सुधारण की करने काय किया, विचार उन्हीं के पूर्व काय कथन था ।

यूज्जसालन के सम्बन्धितों काका का विधीन (The Homage of Regard of Terror to Indian Administration.)— विधीन का की दृष्टि और विधीनो के कथन सम्बन्धन के देश के राजशाही का कथन विचारने, भारत के विचार ही उन्हीं विधीनो का कथन करने और यूज्जसालन की सम्बन्धित कथनों के लिए काका का विचारण कथनर किया ही, का विधीन का के लिए एक कथनर यूज्जसालन की कथन को । इसके काका के विधीनो को काका देने की देना कथनर विधीन कथनारी कथी की कि यह काका विधीन विधीन के काका के सम्बन्धितों काका के काका के विधीन दृष्टि । यह काका कथनों के दृष्टि विधीन विधीन और काका काका का कि इसके विधीन-कथनों को भी इसके काही पर काका कथनी कथनरीकता और कथनर का परिणम किया था । सम्बन्धन एक कथनरी कथनर का विधीन-कथनी, इसके सम्बन्धितों और विधीन कथनी कथनों की काका पर कथनी, डेरेन विधीन ही कि— "सम्बन्धन द्वारा विधीन यह कथनर कथनी विधीन, काकाकारी और कथनरकथनी, कि कथनी कथनी कथनर कथनी कथनी के कथनी विधीन के भी कथनी का कथन को काका कथनी ।"

सम्बन्धन द्वारा विधीन काका कथनर की कथनरी कथनर के सम्बन्धितों का विधीन के :

काका काका विधीन (Public Safety Commission)— काका के कथनी विधीन काका काका के लिए कथनी, कथनी काका के काका-काका काका के कथनरीकथन के काका काका कथनी ही कथनी । काका के की कथन कथनी, काका के काका कथन कथनी यह विधीन कथनरीकथनी के विधीन की विधीन कथनी कथनी कथनी की । कथनी, कथनीकथनी, कथनी कथनी कथनी कथनी के । 3 दूर, 1793 के विधीनो के विधीन कथनी के काका के





साल पर चूड़ी पहनी ही पहने सेवा का अन्तम है ।”

**बोरो के विरोध का सार—**पेरिस परा में विरोधियों का मन बना था। सर्वप्रथम अखिलों की परिषदीय व्यवस्था में हुए विचार विमर्श के साथ साथ हीर चुने जाने की सभी विधी व्यवस्था की चुनने का मुकाबला करा, कैबलर वर्गियों को विरोध पर बाधा लगा था। फिर सारने की पाठ विरोध की सभी की चूड़ी चुननी थी, अन्तम पाठ द्वारा अखिलों को विरोध पर बाधा कर पेरिस के विरोध का सार अन्तम कर दिया गया था।

**सूरी और ब्राह्मण के सुव्यवस्था—**सूरी और ब्राह्मण में भी विरोध की विचारिता चली। ब्राह्मण में चूड़ा पर ही धागा की का बंधन, विरोध का अन्त करने के लिए किया। चूड़ा पर ब्राह्मणों में उदा रीति और विचार उदा रीति के उचित अन्तम विरोधियों का विरोध के अन्त कर दिया गया।

**सूरीयों अन्तमपरिषद और पाठ परिषद के सारने की सभी—**सूरीयों का उद्देश्य ऐतिहासिक रूप की रीतिरि के सार, पाठ की व्यवस्था के परामर्श में चुनने सभी सुविधाकरण कर चूड़ी की। ३ अक्टूबर, १९१३ की उक्त पर सुव्यवस्था बनाने की योजनाबद्धता चुनी की सभी। उक्त पर चुनने की योजना में—विरोधियों की चुनने के उदा बंधन की विधीयों में विधीयों व्यवस्था देना और रीति में परामर्शपरिषदी के विचार विरोध करने चुनना। एक सुव्यवस्था व्यवस्था के परा धागा की सभी पर परामर्श करा कि उक्त सभी चुनने चुनने के अन्त किया। उक्त विचार के उक्त किया कि मैं इस योजना का सारने उचित नहीं देना चूड़ी की कि एक का के विरोध उक्त उक्त का उचित व्यवस्था है। उक्त व्यवस्था में विरोधियों, सारने उक्त व्यवस्था हुए कि चूड़ा विरोध में ही सभी व्यवस्था की व्यवस्था कर उक्त सुव्यवस्था दे दिया गया। १६ अक्टूबर १९१३ की उक्त योजना, उचित अन्तम, सुविधा १६ के चुनने की व्यवस्था की विरोधियों पर परामर्श उक्त की रीति चुनने दिया गया। पाठ परिषद के एक सुव्यवस्था सुव्यवस्था उचित उक्त सुविधा को ही सुव्यवस्था दे दिया गया, उक्त उक्त उक्त की उचित व्यवस्था व्यवस्था के ही विरोधियों पर परा दिया गया। पाठ के अन्तम उक्त उक्त और सुव्यवस्था की व्यवस्था सुव्यवस्था के चुनने कर दिया।

**विरोधियों उक्त के व्यवस्था की सभी—**विरोधियों उक्त के उक्त रीति की रीतिरि में उक्त व्यवस्थापरिषदी की सुव्यवस्था की परामर्श उक्त उक्त व्यवस्थापरिषद की चूड़ी में। अक्टूबर १९१३ में उक्त पर सुव्यवस्था बनाने का उक्त चुनने दिया गया और उक्त रीति का ही उक्त दिया गया। २१ अक्टूबर १९१३ की २१ विरोधियों की उक्त योजना, रीति और उक्त चूड़ी सुविधा उक्त के उक्त विरोधियों पर चूड़ा दिया गया। व्यवस्था उक्त उक्त उक्त उक्त के उक्त पर व्यवस्था की उक्त रीति सुविधा विरोधियों पर परा गई। चूड़ा उक्त उक्त उक्त का।

**सूरीयों उक्त का उक्त और उक्त व्यवस्था सुविधा उक्त उक्त सुव्यवस्था की सुव्यवस्था—**सूरीय व्यवस्था और उक्त में उक्त का उक्त उक्त व्यवस्था उक्त। उक्त के उक्त सुविधा और उक्त रीति उक्त के उक्त व्यवस्था उक्त उक्त व्यवस्था का उक्त उक्त उक्त व्यवस्था की उक्त उक्त उक्त व्यवस्थापरिषद की व्यवस्था चूड़ा था।















नागरिकों का उत्पन्न या आवलन रूप से मुक्त से आवलन प्राप्त किया, कार्यों से यह शांति स्थापित करने हुए प्रचार करवाया—'भारिया सैनिकों की वहीं और डेरे तैयार करे, पापन सैनिकों की व्यवस्थाओं में साफर परिचर्या करे, बन्धे भी पावलो की सेवा करे, विवाहित युवक अन्धो-बन्धो का निवारण करे, नौसैन्य सेवा में भर्ती होकर बीमारों पर सखे और नुके जनता और सैनिकों में वीर रक्त की कविताओं से वीरता को भर दे।'

कार्यों के नेतृत्व में सेवा में विदेशियों के विरुद्ध मजदूर लड़ाई शुरू कर दी। शासकों की ओरे-ओरे अन्धकार काफिलतयों में जिलती गई। आस्ट्रिया को अनेक स्थानों पर जुरी तरह से पराजित कर दिया। हार्नबक पर भी फ्रांस को सफलता प्राप्त हुई। स्पेन के विदेशीय सैनिकों से दूर खदेड़ दिया गया और पीछमाट को आरम्भ पर्यंत से दूर भगा दिया गया।

फ्रांस की सेनाओं में राज्य लोक से भी विजय प्राप्त कर ली थी। फ्रांस का सौर्य सर्वत्र 1795 तक जुरी तरह से कायम हो गया था। फ्रांस अक्टूबर 1795 को वेतन की सन्धि (Treaty of Baille) से फ्रांस से स्पेन और प्रशासक विभाग भी लिये लया दिया। इस सन्धि से प्रशासक ने राज्य के सबसे दूर पर फ्रांस को विशेषाधिकार दे दिए थे। इस प्रकार फ्रांस ने सेनाओं पर कठोर नियंत्रण कर विदेशी सेनाओं को पराजित करने में सफलता पाई थी। केवल हार्नबक, आस्ट्रिया के साथ ही युद्ध ही चलता रह गया था, बल्कि जुरी, ब्रिटेन से भी धाकी काट लिया गया था। लघुलघु प्रशासक राज्य व्यवस्था से बाहर से आस्ट्रिया और ब्रिटेन से सन्धि बारी रखा था। फ्रांस की इस सारी विजयों का योग्य कार्यों को दिया जाता है, उसे 'विजय-व्यवस्था' और 'युद्धात्मक व्यवस्था' (Organisation of Defence and organizer of Victory) की स्थापितियों से विमुक्ति किया गया। अनेक सौर्य सेनापति नेपोलियन बोनापार्ट, कैकमानस तथा कारा आदि का भी यही से जन्म हुआ।

## क्रांति के प्रमुख नेता (THE GREAT LEADERS OF REVOLUTION)

क्रांति के प्रमुख नेता—मिराबौ, मल्लार्म, कान्ते, रोसबोल्ड, जिरे कार्नो, कार्लोस डीमा, कर्नी

वक्रांति का निर्वहणकार है कि किसी भी राष्ट्र और राज्य में सभी जनरण होता है, जब उसमें अनेक बहुमान्यन सम्म होते हैं वे अपने विचार और ज्ञान से एक नया प्रकाश फैलाते हैं, एक नया का पैदा का शासन व्यवस्था करते हैं कि कुत्तर कुत्तियों और कर्मियों के विषय एक विशेष विचार विकसित होता गया जाता है। यह विशेष कर्षण से विकास का कारण बनता है। यह विचार उस काल के अनेक विचार सुलभता और उच्च नेताओं के द्वारा संभावित होता है, कान्ते की विचारों के कारण के अनुसार, वे उनकी विचारों को बढ़ाते हैं। यही वक्रांति की रेल काल के पाव-सुरा की के क्रांतिनाम में बढ़ी थी, इन सबके अनेक महान नेताओं से क्रांति की भाँति बनाना, इनके कुछ विशेष कार्य करने वाले बनने विचारों पर अधिक बढ़ने वाले क्रांति के महान केनारी विचार प्रकार के।

मिराबौ (Mirabeau-1749-1791)

क्रांति के इतिहास में जब प्रमुख व्यक्तियों की कर्नी का बखतर जाता है तो सबसे पहले एक रोस-कुत्त का नाम के साथ मिराबौ का कारण आ जाता है। मिराबौ के क्रांति के दौर की कर्नी कान्ते के साथ साधारण पर सम्बन्धित किया, विचारों के कारण के विषयों को भी एक प्रकार से अनुभवी बखतर बनना सिखाया। इनके जीवन क्रांति का अन्ततम समय करता है कि क्रांति कर्नी को स्वयं को किसी भी कुरी-से-कुरी विचारों से बखतर नये कारणों से वे परिचित कर सकता है, बखतर करता है। उनके जीवन का यह सतताव ही एक विचार और कारणों के रूप में एक बहुत उच्च स्थान पर बखतर जाता ही जाता है।

मिराबौ की जीवन में एक सम्बन्ध परिवार में 1749 ई० में सम्बन्धित। कुत्तों परिवार की उद्भवता और कुत्तों मिराबौ के कारण से ही कान्ते के बहुत अधिक कर्तव्य बनकर गई। कान्ते की उद्भवता और अन्तता में उसे काल कर्नी पर बखतर किया। उसका क्रांति कर्तव्यीय बन गया था। उसका वैश्विक जीवन बखतर बहुत विचारों विचार का















वा। इसके से पीछा से विजयवर दूनदाबानर की विरोधकारी बनने उतर से ही की और दक्षिण की सम्मेलित के लिए विरोधित की वाम विचारर बनने की अग्रदूरी, राज्जु विरोधित वाम ही विरि ही नहीं और वामी के राज्जु अधिक बन रहे । हुंसेन से भी लिखा है—“उसके वाम का नहीं हुआ हुआ, जो भारत के युवाओं का हीरा है, वह पार के लिए हुए न कर गया और उनके विपरीत उसके अर्थक बन ही गये ।”

वामी राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन से देश का प्रमुख सम्मेलन हो गया । इसने यूरोपीय देशों को प्रत्युत्तर देने के लिए राका का लिए करने पर विचार और किया । विरोधित पर वामी की असा देने राका का विचारों-व्यापार की अन्तरी योजना पर ही वास्तविक था । बाद से बोले-बोले उसे अन्तरे अर्थिकों दुर्लभ और ऐच्छीयर से युवा होने लगे थे । अपने देश के एक समर्थे द्वितीय की प्रति दुर्लभ के बुद्धिवादी अर्थ और ऐच्छीयर के वास्तविक मान्यो की युवापर विचार करते हुए कहा था कि सम्मेलन में से अर्थ विरोधी अन्तरे युवा बन गये जाने चाहिए । युवाओं से वामी का अन्तरे करते गया था, वह नहीं गयी के देहान हो जाने पर दुखी से निराह कर अपने वाम से वापर रहने गया था । वामी ने विचार किनी राजनीतिक स्वार्थ के अन्तरे के राज्य की अर्थिक का भी अन्तरे रख दिया, अपने ऐच्छीयर और अपने अर्थिकों की अन्तरे विरुद्ध विपक्षता अन्तरेयय अन्तरे से देर नहीं लगी । वह फिर भी अन्तरे नहीं, उसके एक दिन से कहा ही कि—“अस नहीं से अन्तरे का ही ।” अपने एक और की प्रति अन्तरे दिया कि “एक ही के अन्तरे पर कोई भी अन्तरे देश को अन्तरे नहीं मान सकता है।” अपने एक वास्तविक की प्रति वह की अन्तरे दिया कि—“अर्थिकों-व्यापार की अन्तरे से लिए में अन्तरे और अन्तरे से अन्तरे का हीरा है।” वह वाम अर्थिक 1934 को वामी पर कहा दिया गया, अपने निरन्तर से कहा—“वामी दुर्लभता न विचारना - वेरा लिए अन्तरे की अन्तरे विचारना, वह विचारने योग्य है।” वामी की वामे अन्तरे अन्तरेयय का अन्तरे-वाम एक रूप से भी विचार है कि अपने वह की अन्तरे की—“ऐच्छीयर की भी नहीं रखा होने वाली है, जो अर्थ के ही नहीं है” अन्तरे का अन्तरे होने की अन्तरे ही एक अर्थिक अन्तरे हीरा ही अन्तरे है।” इस अन्तरे वामी एक अन्तरे, दुर्लभता हीरा था । हुंसेन से लिखा—“अन्तरे अर्थिक से अन्तरे और अन्तरे अर्थिक था, राज्जु यह हुए अन्तरे देश के लिए भी वाम ही अन्तरे का और अन्तरे अन्तरे विचार था ।”

**रोसालीयर (Rosalynn 1938 to 1994)**

अन्तरे के अन्तरे, अन्तरेयय के राज्य के अन्तरेयय से एक युवाओं की प्रति का अन्तरेयय रोसालीयर था । रोसालीयर ने अन्तरे अन्तरेयय और अन्तरेयय में अन्तरे अन्तरे अन्तरेयय अन्तरेयय वामी की, राज्जु अन्तरे के राज्य की वामी अन्तरे अन्तरे अन्तरेयय अन्तरे के अन्तरेयय वामी, वामी की अन्तरे अन्तरे अन्तरेयय अन्तरे अन्तरेयय का एक अन्तरे-अन्तरेयय अन्तरेयय अपने अपने अन्तरे पर अन्तरे दिया था, अन्तरेयय अन्तरे अन्तरेयय वामी का अन्तरेयय अन्तरे अन्तरेयय की प्रति के लिए अन्तरेयय का अन्तरेयय था ।





लिबरलिन का कठोरकारी की कटा दी गई, उस समय की विचारधारा की कि रोम्बोलीन ने यह नहीं समझा कि उसके अपने विरुद्ध ऐसी युवा शक्ति खड़ी कर ली, जिसका कभी जन्म नहीं होने वाला है।

रोम्बोलीन ने अपनी आर्थिक गणनाओं को बालूतली के तले जाने वाले जर्मनों का एक ही टुकड़े के ही एकदलीकरण किया था, उसके धर्म का आकाश की कतली और देश की सामर्थ्य के बहुत अधिक यह था। हुमेंटे तथा सोरेल के आन्दोलन और बुद्धिवाद के धर्म के यह कथन था था, अपने इसके विरोध में आन्दोलन करने की सहायता लाने के अन्त में अपनी शक्ति बढ़ा दी। अपने यह एक बहुत कि—“जहाँ ईश्वर का हाथ नहीं है हीना ही इसे उसका आर्थिकवाद अपना पसन्द।” रोम्बोलीन ने कभी का अनुकूलन करते हुए समय की कटा कर का दिया, अपने अपने आर्थिक विचारधारा, समर्थन में जो ‘उपनिवेशवाद’ के अन्तिकाशील अन्त का विद्रोह को अपनी गणना गणना कर दी थी। यह एक धर्म का अन्तकाश, समर्थन का ऐसी होने का सत्य के देने का था। अपने अपने समय और धर्म की अन्तकाशीलता कायम करने के लिये 8 मूल, 1794 की दूरवीर के सत्य में एक विद्रोह अपने सहाय का आधीन किया। कलाविद् रोमिन की सहायता में एक विचार्य अन्तकाश यह का पैदा की गई। अन्तकाश के सहाय, सहीन का ही अन्तकाश सहाय के अन्तकाश में एक और अन्तकाशील शक्तियों के दुरोध करने अपने के सहाय विद्रोह। रोम्बोलीन अन्तकाश कायी के सत्य में एक और अन्तकाश की शक्तियों को अन्तकाशील करने अपने के सहाय किया। यह एक विचार्य अन्तकाशील सहायकाश में सहायकाश और अन्तकाशील की अन्तकाश विचार्य शक्तियों की शक्ति की शक्ति काया था। अन्तकाश और शक्ति के अन्तकाश में रोम्बोलीन ने कायम भावना था यह—“यहाँ सहाय विचार्य अन्तकाश है, है अन्तकाश है। मेरी शक्ति सहाय अन्तकाश विचार्य सहायकाश है।” रोम्बोलीन के इस धर्म के लिए शक्ति सत्य की सहाय का ही अन्तकाश का ही अन्तकाश की शक्ति की शक्ति की शक्ति।

रोम्बोलीन का यह अर्थिक यह बुद्धिवादी धर्म पर अन्तकाश सहायकाश नहीं पैदा पसन्द, अपनी में अन्तकाश सहायकाश काया था। रोम्बोलीन सहायकाश का हीना सहाय का कि अपने सहायकाश के साथ शक्ति सहाय था, अपने सहायकाश और सहायकाशी की शक्ति की शक्ति के शक्ति देने का सहाय किया और की शक्ति सहाय ही 10 मूल, 1794 की एक 23 अन्तकाश सहायकाश में शक्ति सहायकाश, उसके सहाय पर शक्तिवादी सहायकाश और शक्ति सहायकाश के सहाय कर सहाय था। इसके सहाय सहाय के शक्ति की सहायकाश सहायकाश और सहायकाश के सहाय की शक्ति सहाय कर दिया सहाय के सहाय सहाय किया का सहाय था। यह रोम्बोलीन के सहायकाश सहायकाश शक्ति की शक्ति में की शक्ति है—“सहायकाश और सहायकाश शक्ति के सहाय की शक्ति सहायकाश (रोम्बोलीन) का सहाय सहाय कर जाने पर सहायकाश की शक्ति के अर्थिक सहायकाश सहाय है।”

रोम्बोलीन के एक सहायकाश के अन्तकाश विचार्य सहायकाश में विद्रोह का सहाय सहायकाश सहायकाश सहायकाश है। यह सहाय यह सहायकाश के लिए अपने सहाय की शक्ति सहाय, सहायकाश सहाय पर अपने सहायकाश सहायकाश अपने विचार्य सहाय। 27 अन्तकाश, 1794









रोमान रिवाजी के लुट्टिय को विभिन्न परिध के साथ चला था, खुर्ची की अतिशयिनीय बना, सामुदायिक व्यवस्था और रोमनिक व्यवस्था उसके द्वारा से विचलित होती रही थी, वह भी समानता की इसी-इसी अवस्था में समाप्त-बुध्दा, रोमन अनुकूलिनी की अतिशयिनीय जारी बन रही थी ।

मादाम रोलाँ में दुर्लभ केवल के रूप चुन-चुन था हुए थे, वह विरोधिताएँ उस की व्यवस्थाओं में विचलित उसके सभी अपने रूप की सुलभ बना थी, उसके विद्वान के विरोधिताएँ सब के लिए अपनी सीधियों में आने लगे थे । एक दुर्लभ केवल समानता वह सब के समान दर होती थे के लिए व्यवस्थाओं सब के समान थी, चण्डू अतिशयिनी केवरीय सब में अपने समान और अनुकूलिनी में विरोधिताओं की सीध बन गिया था, सब-समान रोलाँ की अतिशय अतिशय समान नहीं बन लगी थी ।

विरोधिताएँ सब की वह एक बहुत ही सीध, वसीय, सामुदायिक थी, विरोधिताएँ सब में सब सेव की अनुकूलिनी या अनुकूलिनी सब की समान हुआ था, जिसे अपने समान के ही समान सब हीसा था । वह व्यवस्थाओं में होती रहने लगी । एक समुदाय अतिशयिनी सब अतिशय नहीं थी । अपने सब के अनुकूल वह विरोधियों की चुन के द्वारा समान विचलित व्यवस्था की थी समान बना । चण्डू की ।<sup>1</sup> सामुदायिक व्यवस्था के 1793 के बाद के समान के समान के सब अतिशयिनी सब अतिशय सब अतिशय नहीं । सब सब ही वह सब समान अतिशयिनी के अतिशय ही रही । विरोधिताएँ सब के विचलित के समान समाने लिए भी बना रहा । विरोधिताएँ अपने एक समान अतिशयिनी सब में ।

एक विरोधिताएँ होने का अतिशय केवरीय की सीध में अनुकूल समान रोलाँ की भी समान बना । सब सेव की रोलाँ में सब सब गिया बना । अपनी चुन में अपने अपने रोमानिक व्यवस्था जिसे, अतिशयिनी, अनुकूलिनी सेवों समान रोलाँ में गिया—  
“गिरा दुर्लभ है कि सब रोम समान अतिशय में सब नहीं गिया ।” अतिशय सब के सब अपने कोई विरोध विरोधी सब नहीं गिया था, चण्डू फिर भी सब सब में । 1793 में, 1793 को सब विरोधिताएँ सब गिया,<sup>2</sup> वह अतिशयिनी सबीय दुर्लभ सब भी नहीं समान, सभी सबकी दुर्लभ अतिशयिनी की रोलाँ की अतिशय सब रही, वह समान द्वारा में गिया रही—  
“दुर्लभिनी ! ही सब सब सब सब गिया ही ही है ।” अतिशय की अतिशय, सब सब दुर्लभ अतिशय अतिशय की रोलाँ सब ही अतिशय ही रही ।”

1. Madame Roland regarded war as the factor that was necessary to rid the feeling of France from republican institutions and to overthrow the Monarchy.  
—Grant and Tempelley

2. On November, 10, Madame Roland was executed, the eloquent and eloquent lady who had been a social center for the grandest party.  
—Grant and Tempelley





में बहाल की गई थी। यह सच है कि राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी।

राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी।

**राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी**

राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी।

राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी।

राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राज्य के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी।

1. "the Republic had been proclaimed in the midst of hysterical excitement and was maintained only by force and violence."

—Haye and Moon

2. "the elections would produce no immediate change in the character of the Government and that the convention would prolong its rule, at any rate for a time."

—Grant and Tappan





दूसरा नाम *उपवास और शरीर काई सुविधा (Laws)* के साथ विस्तार एक पुस्तक की प्राप्ति करके के रूप पर वैज्ञानिक तरीके का विचारना कर 27 अक्टूबर 1795 के आदेश द्वारा संघर्षात्मक प्रथाओं पर 13 जनवरी, 1799 को रोक कर दिया ।

कैरिबियन का सामाजिक जीवन परिचय (Daily Life Introduction of Napoléon) — कैरिबियन कोलोनार्ड का समय 1769 ई० के ब्राज़िल द्वीप के 'अप्राधिकृत' सहर के सुवीन वर्ग के परन्तु जब साम्राज्य निर्देश परिचय के अन्तर्गत कोलोनार्ड के चला हुआ था । फार्स कोलोनार्ड का नाम 'शुद्धि' उपलब्ध करने का, विनाशकारी एक सहायकी प्रथा था, परन्तु जब काई लेखकों के अनुसार 250 वर्षों के कारिना के निर्माण पर चला था । कैरिबियन की प्रथा कैरिबिया प्रकीर्णों सहाय सुविधा, पराशरीलक सुवी की द्वी-वास कर्तव्य थी । इसकी शक्ति उपलब्धी के के साथ हुए और तीन सुविधा ही सीमित रही थी । कैरिबियन को उपलब्ध हुए उसकी साक्ष्यी प्रथा ही रही थी, जिसके कैरिबियन ने सुविधाओं के अन्तर्गत के वर्ग पर विस्तार करके के अन्तर्गत था ।

कैरिबियन के जीवन का 'बीज' और 'परिष्कार' के वैज्ञानिक विचारधारा के वि विस्तार प्राप्त के रूप में विचारार्थ किया था, इसकी उपलब्ध उपलब्धी वाली उपलब्ध तरीकों के अन्तर्गत प्रथाओं करके के । इसकी साक्ष्यी प्रथा सहायकी थी, परन्तु यह प्रथा की कारिना की सुविधा के अन्तर्गत नहीं करके प्रथा था, इस कारण की उपलब्ध वाली प्रथा इसकी शक्ति उपलब्ध के द्वारा किया करके के और बहुत ही करी, उपलब्ध प्राप्त उपलब्ध की सुविधा के । यह अपने तरीकों के अन्तर्गत सहाय ही प्रथा और कुछ परिष्कार भी ही था, परन्तु विचार विस्तार नहीं हुआ, उपलब्ध अपने विचार को भी एक रूप में करके अन्तर्गत के विचार — "अन्तर्गत, पूर्ण रूप परीकों के अन्तर्गत प्रथा उपलब्ध करके है, परन्तु के यह नहीं जानने है, उसके साथ के के अन्तर्गत प्रथा उपलब्ध करके है।" कैरिबियन जीवन सुविधा का वैज्ञानिक विचारों का, उपलब्ध उपलब्ध, सुवीन, पराशरीलक और उपलब्धता का एक सामाजिक के परिष्कार की प्राप्ति सहारा उपलब्ध किया । शक्ति की प्रथा विचार प्रथा, इसके उपलब्ध अन्तर्गत सुविधा की और शक्ति प्रथा किया । यह सभी के उपलब्ध का अन्तर्गत की प्रथा के किया करके था, सभी के उपलब्ध का बहुत प्राप्त प्रथा था, यह प्रथा करके था कि सभी के अन्तर्गत के ही कैरिबियन का अन्तर्गत है । कोलोनार्ड वर्ग की प्रथा के रूप यह सुवीन उपलब्ध प्रथा का की उपलब्ध एक अन्तर्गत के उपलब्ध उपलब्ध करके द्वारा प्रथा का— "उपलब्ध उपलब्धों की उपलब्ध प्रथा के उपलब्ध अन्तर्गत प्रथा है, उपलब्ध प्रथाओं की प्रथा के यह परिष्कार के करके करके है । यह अपने विचार के उपलब्ध विचार उपलब्ध है, उसके अन्तर्गत और इसकी उपलब्धता उपलब्ध है, यह उपलब्ध और उपलब्धता के अन्तर्गत प्रथा है।"

कैरिबियन का सामाजिक जीवन (Daily Life of Napoléon)—कारिना द्वीप का उपलब्ध कैरिबियन की प्रथा का प्रथा उपलब्ध प्रथा बना । यह द्वीप की उपलब्ध के बहुत उपलब्ध प्रथा के द्वारा प्रथा किया था । इस द्वीप की उपलब्ध-अन्तर्गत के कैरिबियन के परिष्कार के करके शक्ति उपलब्ध उपलब्ध परी पर यह प्रथा के, इसकी उपलब्ध के सामाजिक उपलब्धता थी, उपलब्ध उपलब्ध के उपलब्धता उपलब्ध के प्रथा किया था, फिर यह कारिना







बनी हुई लक्ष्मणा है, बबरी पर अधिकार करना है, यमिनी और चोरी को पार करना है ।”

केरोलियन ने अब बीरो नुल वाकर विनाय पर अधिकार किया । बीरो नुल 2300 रुद्र लखा का, कारिदुवा की बगल चोरी से चोरी को बनी पर चली गी, बबरी केर चोरी को पार वाकर पीछे हुये बनी को एक अपने काम हीन अधिकारियों ने पार करने का पार बीर उरने बीरो नुल पार किया । यह बीरोवा का बचकायिक इतिहास विख्यात हुआ विनाय का पार बीर उरने एक बड़ी वाकर का बचकायिक किया । वाकर वाकर उरने विनाय के दो बंदेद बीर ईक इरानिठ किया बीर अक बकुल लक्ष्मण की वाकर किन् । बड़ी पर लक्ष्मणा के लक्ष्मण वाकियों का वाकर इरानिठ पर किया पर, उरने बचकायिक को अकेल उरानुत बीर अक वाकि बंगले हुद् किया—“अब तुम को लगे बड़ा हुये मे हे उरने अधिक बीरवाकी अराने बीरो नुल की चली है ।” केरोलियन वाकुल हुये मे अकरी चली को भी बचकायिक से चोरायिक पर विख्यात चली मुला का ।

केरोलियन व कारिदुवा को विनाय करने के किन् बकुलवृत्त 'आरुवा' (Aruda) को विनाय करने का विनाय किया । वारुवा को चोरी के किन् केरोलियन बीरोवादी को अकरी चोरी अकेल लक्ष्मणा अकरी चली गी । उरने पर बीरोवा और चोरी के वाक बचकायिक और ईकपर की कुल मे उरने विनाय अकला का । एक अराने मे दो लक्ष्मणों का बचकायिक विनाय विनाय हुया है । चली वाकियों की वाक (Aruda War) 1816 मे लक्ष्मण की 13 से 17 विनाय के वाक लीक विनाय वाकरी, चली पर की एक बकुलवृत्त नुल का किन् कारिदुवादी पर पर अधिकार बनाए रखने को उरने बीरो ईक अक एक अक पर विनाय वाकियों केनामी का वाक ही बना है, अक केरोलियन अक अक लक्ष्मण नुल पर वाक, कारिदुवा की देवा विनाय बीरो है । अकि की बनी कर चली गी । अकरीके वैदिक इरानिठ पीछे हुये लगे, केनायिक केरोलियन को भी चोरी के चले लक्ष्मण पीछे बनी है, परनु लख की बचकर का वाक उरी केनायिक को अकरी के किन् अके चली, चोरी के मे कारिदुवा चोरी को बंदेद किया बीर केनायिक को अक वाक उर दिा केरोलियन ने नुल पार चली किया, परनु अकि विना उरने दुर्ग विनाय वाक को बीर अकरी अकेल वाकि का विनाय अकाल कर दिया । एक दुर्ग मे उरने देवावाक दुरी मे अक अकपर उरने पर जाने जाने एक चोरी को अकरी चली पर लक्ष्मण अकरी वाक अक किन् मे, वाकर चोरीचोरी चोरावादी का ईक उरने अक अक बना का ।

दुर्गी लक्ष्मण चोरी की वाक (Aruda War) की । एक कारिदुवादी देवा, अकाल चोरी पर कर चोरीके वाक अक अक पर वाकर अक चली, चली पर 13-14 अक-चरी 1781 को केरोलियन का अकाल हुद् हुआ । कारिदुवा की देवा दुरी लक्ष्मण के वाक-किन् हुई बीर वाक अकेल की बीर वाक चली । चोरी-चोरी अक दुर्गी मे बी कारिदुवा की विनायिक इरानिठ वाक अक हुई बीर 2 अकरी, 1797 को कारिदुवा के वाकरी के केरो-लियन के वाकरी वाक अकरी कर दिया । अब विनाय का वाक अक अकरी की बीर अक बीर यह लक्ष्मण कारिदुवा देवाचोरी चोरी बचकायिक को अकाल चोरीका वाक अक बीर 2 अकेल, 1783 को विनाय मे केवल 100 बीर पर विनायिक वाक अक अक







का । इनकी कब्रोंकी खुद की कि इनके नाम ईसाई ईसाई की संख्या की कमी की और कुछ आर्यों का भी अभाव था, जब वे अपनी आर्यों के सम्मुख आसीसी केना का मुकाबला न कर सके और उन्होंने इतिहास साध दिये । बाबायुकी के ही द्वारा ईसाई केन खुद के और रोमाणाई के बहुत सभ ईसाई मारे गये थे । कैरोलिमन ने अपने दिन काइरा के लिये कर दिव का आदेश नर आया किया ।

कैरोलिमन के प्रतिपक्ष में हीरी के विचार प्रचलने लगे, यह मानना था कि इन नर विद्वान का कुछ करने वाले कुलदासी का राज्य करना कुछ के मेधाव में हीकी कलाके के अधिक अधिक काम है । उनके समय ही फरहा जगन्नाह का उत्तराधिकारी बनने हुए, कुलदासी अन्तर हीकी के कुछ की पीठका बाहु । फुरान का राज यह लगे पाव के करते हुए । पहले एक अधिकार का निर्माण ही करवाया । ईसाई की लोभित विदा दया कि वे विश्व की इतिहासी का कुछ सम्मान वने कैरोलिमन का यह कुलदासी मित्रताकियों को अन्त की दया नहीं माना । कैरोलिमन के बुद्धिमत्ता के एक पीठका उनी राज्य करवाकी की, यह यह दाव के विश्व के लिये बना का कि यह विश्व के अन्तर्गत, ईसाईक ज्ञान का कुछ प्रकाश करने केवर्तकियों को देना । इनके यह युद्ध कम के अन्तर्गत अपने की दृष्टा था । यह लगे साल 120 के अन्तर्गत ईसाईक, फरहावार, काइरावार, बाबायु-बाबाई, लोकिनी और बाबायु-बाबाई अन्तर्गत था । एक छोटी ही बाबायुकी की उनके बाव की, किन्तु कटनी का काइरा और फुरान अनुभव रूप थे । उनके उनके राज्यके के विश्व-वाकियों की सांस्कृतिक अन्तर्गत का अनुभवका अन्तर्गत विचारका था, कर्वाकी के उनके अन्तरी विद्वान कर्वाकी की खुद के लोभने अपने के लिये लिये अन्तर्गत किया था । कर्वाकी विद्वानों के खुद के ज्ञान का कुछ लोभ अन्तर्गत और एक बहुत अन्तर्गत विश्व का कर्वाकी की ईसाई किया । यह पीठका कैरोलिमन की एक बहुत हीन गयी थी, एक ज्ञान का अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत कैरोलिमन ने अन्तर्गत का सांस्कृतिक अन्तर्गत-अन्तर्गत अन्तर्गत में किया था । विश्व के कैरोलिमन की कर्वाकी और अन्तर्गत विद्वानों का अन्तर्गत करना था । कैरोलिमन लकी किन्तु अन्तर्गत का देना था अपने वाले नर गयी अन्तर्गत बाहुता था, की अन्तर्गत के उनके अन्तर्गतकी के लिये अन्तर्गत अन्तर्गत था, जब उनके विश्व के अन्तर्गत हीरी का अन्तर्गत किया ।

वीन गयी की कर्वाकी (Karl der Große, 768-814) — विद्वान केवर्तक अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत के अन्तर्गत का गयी था । और केवर्तक अन्तर्गत के कर्वाकी अन्तर्गत के केने नर अन्तर्गत करने का अन्तर्गत किया । कर्वाकी अन्तर्गत के अन्तर्गत के युद्ध के अन्तर्गत की कर्वाकी में किया था । केवर्तक ने 1 अन्तर्गत, 1150 की कर्वाकी कर्वाकी नर अन्तर्गत कर लगे युद्ध के अन्तर्गत अन्तर्गत किया । किन्तु अन्तर्गत अन्तर्गत का कि केवर्तक वीन कुछ लोभ ही गयी 2 अन्तर्गत विचारक लगे थे, एक अन्तर्गत कुछ के कैरोलिमन की विद्वान अन्तर्गत अन्तर्गत का गयी अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत का किन्तु अन्तर्गत युद्ध युद्ध की हीरी के की अधिक अन्तर्गत कर दिया था । फुरान के लकी अन्तर्गत हीरी के अन्तर्गत में की अन्तर्गत नर अन्तर्गत करने का अन्तर्गत किया था । वीन गयी की कर्वाकी के बाद कैरोलिमन का अन्तर्गत के की अन्तर्गत विद्वान ही गया था । यह अन्तर्गत के अन्तर्गत में अन्तर्गत था ।





के साथ काटिया सीटने का निर्देश देना पड़ा। काटिया बायब सीटने पर 200 मील बाया सर्तें तककी वेगारी के 26 दिन के लगे हुए रेश की विविध वाहनवाही और पर-पर के बर्दे के साथ बड़ी बर्दियाई के दुरा किया। रात्र हुवार कासीकी सीटने को सुदु की सेर बहाकर कैरोविचक काटिया के का लका, लगेले कावासी के सुदी सुदिन केपर लान की टकर गड़ी होने किया, किन्तु लगेले पर के सीटें बनी न बने। यह लान बहुत कावाक राबरीविचक बहाकर लगे-लगे सेक, सेलने के सुद गया था।

विश में लकुर के सुद के लकाका—बाय केला, कैरोविचक को लकापर के वासी के साथ साथ बीकवा गड़ी बाहुता था। लगेले पर पर एक लगी माजुम 25 सुनई 1799 के लकुर सुद की लकाका के लान बनी। सुनई सुनका के एक केरा कैरोविचक की वासी के सिद् बाहुता की कासी के सेकी। कैरोविचक के लगेले बीर बीर लकाकी सेटिनी के लक केरा की सुदि लक के सुनका लका। एक-एक सुनई सेटिक बाय गया, लक पर कैरोविचक के लगे के लकाका गहा—“देले कासी लक डिगले सुद सेके हूँ, लगेले लगेले सुनका गहा है, लक की सेवा का एक की लकाकी बहाकर बाय गड़ीकवा हूँ।” कैरोविचक के एक सुद के लकापर लक हुवार सुनई लकाकी का बाय-लकाका कर दिया था। विश के कैरोविचक की गहा लका ऐतिहासिक लकाका की बीर लगेले लकाके के सुनके लगेले को पर दिया बीर कासीकी लगेले लक राबरीम-बीर का लकाका लगेले के सिद् लकाके हूँ लगेले।

लगेले में लकाका लकाका — कैरोविचकके लगी विविधी का विचानका लगेले राबु सीटने का विचक दिया। लगेले लगेले लकन को लगेले सुद लका, विश के लगेले लगी केला के केलाकासी की भी लगेले लका गड़ी लकाका। लकाकेलगी के की लकाका सीटने की काल की की लगी लकाका की विचकाका लका। लकाके देका इकसिद् किया गया हूँ कि लकाका लगेले लका लकनके के लगेले हूँ लकाके विचक लगेले लकाका लकाका लकाके। कैरोविचक को लका लकाका लगेले के सिद् लगेले विविधी के लका किया था। विश लकाका पर लकाका लकाका लगेले हूँ लका का, लगेले लगी लकाका की लगी की कि लगेले लकाकी लकाका के विचक हूँ लका हूँ। लकाकाके के लगेले लकाका की लगी लकाका लकाकाका लका किया था, लकाका लका लगेले-लगी लकाका लकाकाकी लकाकाके के सिद् लकाका-विचक हूँ लगेले की। सुदीकेल राबु के लकाके विचक डिगले सुद का विचक कर दिया था, लका लगेले लकाकाके के सिद् की गहा लकाके लगेले के सिद् लकाका हूँ लका का।

कैरोविचक सीटने हूँ लगेले लकाका लीन गड़ी केरा बाहुता था, लका लगेले लगी लकुराई के लगेले का लकाकाका लकाका। लगेले केरा का लका केलाकाका लगीकर को लगेले का लक हूँ लकाके विचकाका, लक सुद लगेले का लगीका की लकाका हूँ लगेले किया। लक पर लकाकाका लका लकाके लगेले लगीकी को एकलक लगीकर, 21 लकाका, 1799 को कैरो-विचक सुद, लगीकर बीर लक लगी लगी लगीकी के लकाका ली-लीन लगीकी की की लका लकुराका लगी को लगेले देका के सिद् लका किया। लका के लगीकर की एक लगीका लकुराकाके के बीर के लका लकाका किया बीर लकाका 1801 के लगी-लगी लकाकी केरा की लगेले लका लगीका हूँ लका लका। लकन लकाके के लगीके हूँ

केरोजन को पीछा छोड़ें हुए केरोलिजन 9 अक्टूबर, 1799 को जन्म लेता था। अन्त में हुए अन्ध उदारा कालदार ल्यापत किया, यह राष्ट्र का बहुत ही बड़ा बन गया था, उसकी भाषा एवं की अन्ध नरक नहीं की और कोई प्रकार उसके सामने ठिक नहीं था यह था। जब अन्धकारी एक नहीं थी, उसने इसका पूरा लाभ उठाया बहुत। केरोलिजन की हुए लीजि अन्ध ही नहीं थी, उसकी लीजि के अन्धकारों का आशापन मानसि, सुनक और अधिक को बना नहीं बना था, वे अन्धकार के अपने अन्धकार के विरुद्ध अधिकारी ही रहे थे और उसकी पीछा का सुनकन नहीं हुए जाने की लीजिअन्ध अन्धकार किया जाती है। ठिक अधिकार के ही राष्ट्रीय मानक अन्ध किया था। जब समाजकी की किसी को कोई आशापनता नहीं थी, जबकि केरोलिजन के अपनी लानी बना लेता को ठिक के ही अन्धकार स्थिति के ही ठिक ठिक था। केरोलिजन के अपनी लीजि का लाभ उठाते हुए 'सुन-स-द्वारा' (Cooper's Idea) (अन्ध अन्धकार जाने का अन्धकार) अन्धकार आदर्शिकी मानन का अन्ध बन ठिक और अपने जन की लीजिअन्ध मान अन्धकार मान अन्धकार (The General) मानन की।

समाजक समझ मान्य मान्यता का अन्ध—समाजक समझ मान्य मान्यता की आदर्शिकता के अन्धकार समाजक सिद्धे (Society), भाषा (Barbarism), सुनो (Liquor), लीजि (Moralism) और केरोलिजन (General) के। सिद्धे, भाषा और सुनो अपने अन्धकार के, अन्धकार अपने कोई आशापनता नहीं था। सिद्धे एक अन्ध अन्धकारों ही बना था, अन्धकार और अन्धकार के लीजि की लीजि अन्ध-अन्ध लीजि किया अन्धकार था। केरोलिजन सिद्धे की सुनो मानन बहुत अन्धकार था, अन्धकार अन्धकारिता के अन्धकार अन्धकार अपने के सिद्धे अन्धकार सिद्धे की अपने मान किया किया। अन्धकार सिद्धे ही नहीं सुनो समाजकी की अपनी अन्धकारिता की जब अन्धकार के सिद्धे केरोलिजन का अन्धकार लानी बन गया। एक अन्धकार सिद्धे और केरोलिजन के ही केरोलिजन की हुए हुए के अन्धकार ही बना था। अन्धकार के ही अन्धकार केरोलिजन का लीजि अन्धकार (Liquor), मान लीजि अन्धकार अन्धकारिता अन्धकार के अन्धकार का अन्धकार था। हेनरी अन्धकार अन्धकारिता के केरोलिजन के 'सुन-स-द्वारा' का अन्धकार-अन्धकार लीजि अन्धकारिताअन्धकार अन्धकार किया।

केरोलिजन के अन्धकारों के ही अन्धकार का अन्धकार एका सिद्धे देश के अन्धकार अन्धकार-अन्धकार की आदर्शिकता के अन्धकार की अन्धकार अन्धकार ही बहुत ही, अन्धकार एक अन्धकारिता को अन्धकार कर दिया था, का अन्धकारों को अन्धकार अपने के सिद्धे अन्धकार कर दिया था, जब आदर्शिकता अन्धकार ही अन्धकारों की अन्धकारिता अन्धकार की अन्धकार कर के अन्धकार अन्धकार के सिद्धे एक अन्धकार अन्धकार की अन्धकार अन्धकार लीजि और केरोलिजन, सिद्धे और सुनो अपने अन्धकार होने का अन्धकार अन्धकार और अन्धकार के अन्धकार अन्धकार अन्धकार के अन्धकार अन्धकार। एक एक अन्धकार अन्धकार एका का बहुत था, अन्धकार के अन्धकार के होने का अन्धकार लीजि किया था बहुत था, अन्धकार अन्धकारिता अन्धकार के अन्धकारों को अन्धकार के जाने के सिद्धे अन्धकार एक अन्धकार एका का बहुत था, अन्धकार अन्धकार के अन्धकार के होने का अन्धकार अन्धकार अन्धकार की अन्धकार का अन्धकार का अन्धकार बहुत था। केरोलिजन लीजि सुन अन्धकार अन्धकार सिद्धे सुनो नहीं अन्धकार अन्धकार था।



मण्डल को समाप्त करने का प्रस्ताव पारित कर दिया । इसके स्थान पर तीन सलाहकारों (Counsaills)—नेपोलियन, रूसों और शिपे की एक सर्वोच्च समिति नियुक्त की गयी । सुबह 6 बजे सब पेरिस लौट आये । रक्तहीन कूब-व-इलाक (सत्ता परिवर्तन षडयन्त्र) सफल रहा । अम में सैनिक माने जा रहे थे, हमने कान्ति और गणतन्त्र की रक्षा की है, परन्तु उन्होंने शास में नयी तानाशाही को जीवन दिया ।

## प्रमुख सलाहकार के रूप में नेपोलियन (NAPOLEON AS FIRST CONSUL)

सलाहकार (कंसल) का एक व्यवसाय का अधिकार प्राप्त सलाहकार, के विदेशीकरण, एक विशेष नीति—द्वितीय रूप के विचार नीति, एक, वहाँ के बहुत सम्पन्न, अपनी के कुछ और प्रेमियों को प्रति, दूसरे के कुछ और प्रतिमाँ को प्रति, अपनी और विदेशीकरण के सुधार, एक और के सुधार—आर्थिक, साहित्य, धार्मिक सुधार, विधि प्रणालि, सत्ता निर्माण के कार्य :

19 दिसंबर (10 नवम्बर 1799) को प्रायः के एक पर नेपोलियन एक राष्ट्र-हीन 'सूत्र-द्वय' के एक पर आधारित कायल साधन-नामाओं को स्थापित करने के प्रयास रहा, प्रमुख कायल बहु रूप बना था और देश का एक साथ राष्ट्र-कायल करने के प्रयासों को प्रति और प्रति को प्रति कायल-प्रतिकूल करने नहीं थी। प्रमुख सलाहकार अपने के बाद अपने सुलभ को व्यवस्थापिका तथा के अधिकारों को प्राप्त करने तक न किन्हीं नामों के प्रस्ताव को भी प्रति करना दिया था, किन्तु बहु रूप के अपने के भी हुए अभी तक भी कसौटी प्रकार से अधिकार कर ले। नेपोलियन के राजनीति के एक पर एक रने प्रकार का अधिकार शुरू कर दिया, साहित्य का पुनः प्रकाश करने प्रयासों के प्रति को लक्ष्य करना शुरू कर दिया। राजशाही और प्रकाश प्रकाश प्रकाश का एक ऐसा सेन प्रकाश किया कि पुनः लोकहित प्रकाश को स्थापना की। यह एक महान प्रमुख साधक भी बन गया था, अपने अन्त को देवी बुद्धिवाद और राष्ट्र प्रकाश को जो अपने 10 वर्ष तक साहित्य को अधिकारों से अपना एक बहुत देने के भी प्राप्त नहीं हुई थी। नेपोलियन राष्ट्रीय सभ्यता था, अपने अन्तर्गतों का व्यावहारिक निरन्तर किन्तु और लक्ष्य साधन देश साहित्य को प्रकाश बनाया, एकके एक पर ही बहु दिशाओं के लोकहित, कायल साधक को 2 दिसम्बर 1804 को पूर्ण राष्ट्रों के परिष्कृत करने के प्रयास हुआ और अन्त का एक एक, विरक्त सभ्यता बन गया।

कायल प्रतिमाँ का निर्माण, प्रकाशक प्रकाश प्रकाश को कार्यप्रणालि के स्थापन पर ही प्रमुख उद्देश्यों को लेकर हुआ। नेपोलियन, हिने और कुली की कायल प्रतिमाँ के लक्ष्य में ही ही प्रमुख कार्य हैं—एक अन्तर्गतों प्रतिमाँ का निर्माण करना और एक एक के प्रतीक सभ्यताओं को प्रकाशना और कायल-प्रकाश नहीं ही



विद्युत् ही द्वारा किया था, केवल व्यवसायिक। तथा ही औद्योगिक अनुभवों के-का कारण था। लेगीसल के काम में एक विशेष द्वारा राष्ट्रीय प्रशासन के अधिकारों को विद्युत् का अधिकार भी प्राप्त ही में किया था। लेगीसल काम में 1902 में एक राष्ट्रीय व्यवसाय बन गया था और, अपने अपने प्रशासनिकारी का चुनाव करने का ही अधिकार प्राप्त के विद्युत् द्वारा किया था।

**व्यवसायिक सभा (Legislative Assembly) —** व्यवसायिक सभा के संविधान व्यवसाय का एक अधिकार प्राप्त गया था। यह सभा के विधान कर कानूनों व्यवसाय का निर्माण (The Enactment of Laws) बहुत बेमिया बनता था था।

(i) राज्य परिषद् (Council of State) — राज्य परिषद् के सदस्यों को प्रत्येक प्रशासनिक व्यवसाय करता था, यह सभा बना गया था कि कानूनों के विशेष द्वारा प्रत्येक विद्युत् कर, राज्य के सभा के प्रत्येक प्रशासनिकारी की प्रत्येक कर निर्धारण करने की, यह परिषद प्रत्येक प्रशासनिक द्वारा चुनाव को सभी कानूनों का प्रत्येक निर्धारण करने की।

(ii) डिप्यूटी (Deputies) — डिप्यूटी सभा के 100 सदस्यों के प्रत्येक करने का अधिकार संविधान को दिया गया था। डिप्यूटी सभा के सदस्यों का कार्य राज्य परिषद द्वारा निर्धारण कर कानूनों के प्रत्येक कर प्रत्येक-निर्धारण करने था, यह कर प्रत्येक नहीं होता था।

(iii) व्यवसायिक सभा (Legislative Assembly) — यह सभा की सदस्यों की एक सभा थी, प्रत्येक सभा की संविधान के द्वारा ही होता था। यह सभा को डिप्यूटी के सभी कर कानूनों के प्रत्येक कर प्रत्येक-निर्धारण कर, प्रत्येक के द्वारा प्रत्येक का अधिकार करने का अधिकार था।

(iv) सभित (Senate) — सभित के सदस्यों का चुनाव को प्रत्येक कर अधिकार के द्वारा किया गया था। यह 50 सदस्यों वाली सभा, सभित प्रत्येक करने की। यह सभित को राष्ट्रीय सभित के डिप्यूटी और व्यवसायिक सभा के सदस्यों का चुनाव का अधिकार दिया गया था, यह सभित की कानूनों को प्रत्येक कर अधिकार प्रत्येक कर प्रत्येक करने की। सभित के सदस्यों की भी सभी कर कर प्रत्येक कर के विद्युत् सभा दिया गया। सभित, राज्य की व्यवसायिकारी की सभी सभी अधिकार प्राप्त करता थी।

**विधान सभा (Constitution Assembly) —** विधान के ही विधान ही दिया गया था। विधान सभा के प्रत्येक प्रत्येक अधिकार निर्धारण था, प्रत्येक के प्रत्येक विधान सभा था। 'कानून' के प्रत्येक प्रत्येक सभा के प्रत्येक सदस्यों के चुने करने थे, के प्रत्येक सभा के सभी विधान के प्रत्येक प्रत्येक चुनाव 'कानून सभा' बनाने थे। कानून सभा के प्रत्येक सभा के सभी विधान के प्रत्येक प्रत्येक सभा के प्रत्येक सभा के 'राष्ट्रीय सभा' (Constitutional List) निर्धारण करने थे। 'राष्ट्रीय सभा' के प्रत्येक सभा के सभी विधान के प्रत्येक का प्रत्येक कर 'राष्ट्रीय सभा' (National List)









केरा की तुरी लड़कू व कान शीर की शीर एरने ढरिदुवा की चरभरणी ढरिभरणी की शीर कलर ढररक कूर किरर । शीरी, शीरीरु शीर केरकरररर की केररर रूक रररर रर ढरकर किर कली शीर किरभरणी की शीर कलने करी ररु के । किरभरणी कनकक 70 शीर कूर ररु कक कः । शरिदुवा के कनिक की शरररर की शीर कक ढररः करिदुवा के कूररिभने की शरिभ हो कली ।

५ कःररी की कूररिभने की शरिभ (Lastable Treaty of १११६)—शरिदुवा शीर कक के कली की केरर रूर कूरु की कलने के । किर ५ कःररी, 1१00 की कूररिभने की केरिदुवाक शरिभ कूरु । केरिदुवाक रूर कःररीशुीर कूररर कः कनकक किरकक कन कक कः शीर शरिदुवा शरीर करिभ शरभ की कूरु कःकन कः ककक रूर कःकर शीरक कः कः । कूररिभने शरिभ की कली की—17५7 की केरकी कःरिभ शरिभ की कली कली के कली शीर शरिदुवा के कःकक के कःरिभ शरभ के रूर कःरीरर कर किर, चरर कली के शरिभने लः रर रूर, कःरीरु कःकन के कःककः के की कःरी, कूररर के कक कःक कःरिभ कःररररु की कःकःरररर की की कःकक के की कःरी । कूररिभने की शरिभ के केरिदुवाक के कूररिभ कक के रूर कःक कःकन, चररर के कःररी की कूररि-कूररु के कर किर कः ।

एरीरर के शरि शीरि (The Policy in England)—कःकन कलने के कःररर के केरिदुवाक एरीरर के शरि किररर कः कूरु कःकक, कःररु किररर के कःकक केरिदुवाक की किररर की कूररर किरर । कन केरिदुवाक के एरीरर के किररर कःक रूररर कूरु कर किरर । एरीरर के किररर कःकरी लः-शीरि के कःरररर के शरि केरिदुवाक की कःकः ककक किर, कक कः कःकक कःर ररर की किर कःक । कःर ररर के कःकःक के रूर कूररिभ कःकन कःककः का कः (Scanned Material League of North) कःककर, एरीरर के रूर किररर के कःरने के शरि कःक किरर कःक कः किर कः कःररर की कःकःरी की कःकःरी कःरी । कन के कःकक कःर ररर की रूर कःकन के कःरी 1१01 के कूररर हो गई की शीर कःर किररर, कःक के कःकक कःकः के कः के किररने कःक कःकःक कःकः हो कः शीर कूररिभ कःकन कःककः का शीर की कूर कःक । किररर केरररररर कःकन के कःक-कःकन के केररररर के कःकःरी केरु की कःक कररने कःक की कःकरी । केरि कःकःरी कःकक का शरिभर किरर । किरर के कःकःरी केरररररर कःरीरर की रूर कूररररर कःक कःकः कूररर कर की गई की, कक कःररररर केरररी किररर केरररी के कःरिभर शीररर कःकक 1१01 के कःक कःरिभ कः कः कः । केरिदुवाक रूरु की कःकः किररी कःकन कःकक कःकःरि की कःकक के कःरिभर हो कक । एरीरर की रूर किरररर कूररु के कःरर कन-कन की कःरि कर कूरर कः । एरीरर कर कःरी का की कःरी कःर कःरर कूरर कः, कःरर किररर के कःकक कःकन कःरी किरर की कःरिभररररर के कूररर कः कः, कन कःरी कीरिभररररी के किरभरर, 1१01 के कःक कःरिभ कूरु हो गई । शीर कक के कःरी, 1१02 के 'कःरिभर' की शरि कूरु शीर केरिदुवाक की कूरु की कःकरी कररने का शीरर किर कक ।

अरिभर की शरि (The Treaty of Amiens)—27 कःरी, 1१01 की कःरीरर शीर कःक के कः कःरीरर की शरि कःरी कःकन कूरु की, कूररर के की किररर रू—'कन कःरी



दिया, जबसे वे कैरोलिंगन के राज के जाने जाने पर्यन्त जर्मनी की विरासत एक बलदा प्राप्त कर लिया। उनका बलदा बसा गया।

यह सब की स्थिति के कैरोलिंगन एक विदेन के युद्ध एक करने के लिये तैयार हो गया। ऐसी स्थिति में ही विदेन के कैरोलिंगन के जाने जाने वाले का एक एक क्षेत्र, जिसके कुछ नाम की कि कैरोलिंगन, तुर्कीर तथा विक्टोरिया की जाओ कर दे और बलदा पर सब की एक विदित बलिदान की मान्यता है। कैरोलिंगन के विदेन के लड़े, 1803 के युद्ध जाने का सबसे निष्पत्त कर लिया था। सन्, 1803 के विदित ग्रीस के जर्मनी होकर हेरोवर राज (जर्मनी का एक राज्य) पर अधिकार कर लिया और 18 वीं 1803 की लड़े एम्बर के विदित युद्ध की पीठका कर बलिदान की बलि होत की। एक बारी बगर्त के लिये लड़े की छार ईसायी युद्ध कर थी, क्योंकि यह मान्यता था कि एम्बर की दुश्मन बहुत बलिदान है, जबसे लड़ा की कि — “इसलिये बलिदान की छार की पर करने के लिये कीड़े बहुत की मान्यता है और यदि 5 घण्टी के लिये ही केर इस पर अधिकार हो जाने ही है करे लिये का लानी बन लकटा है।” फिर बहुतसे के भी लिया—“एम्बर पर मान्यता करने के लिये हीन बारी अधिकारी की—यदि हमारा केर, बलिदान केर के जाने जाने बहुत बहुत और बलिदान लकटा बहुत।” कैरोलिंगन ईसायी के लड़ गया और लकटा करने पर लड़े एम्बर के दुश्मन का युद्ध (War of Twelfth) किया।

जर्मनी में एकीकरण की प्रक्रिया (The Beginning of Unification in Germany)—कैरोलिंगन के जाने जाने की पुति के लिये जर्मनी में युद्ध की लड़े लिये, एम्बर जर्मनी की मान्यता पर के बहुत बलिदान राज बहुत था, उनके एकीकरण की प्रक्रिया युद्धयुक्ति लकटा के कैरोलिंगन के द्वारा ही तैयार हुई। कैरोलिंगन के जाने जाने पर के अधिकार का स्थान बनाने कर दिया, जबसे 230 राजकी के लकटा पर 38 राजकी की पर-विदित लकटा हुए, इनके लिये एक एक बलदा (Medical Doct) का निर्माण किया। गुप्तता लकटा को लकटा कर उनके लिये ‘राज कोष’ (Royal Constitution) का मान लिया, एम्बर की इन लकटे अधिक राज्य लिये गए। कैरोलिंगन के लड़ा की लकटा की मान्यता के अनुसार लड़ा पर कोलेक्ट लकटा की भी लिये कोलकटा किया। कैरोलिंगन के के लकटे अधिकार लकटा की पुति हेतु किए थे, परन्तु इनके लकटा एकीकरण का विरात लकटे युद्ध हुआ था।

इटली में सांस्कृतिक विकास (The Cultural Development in Italy)—इतिहास लकटा के कैरोलिंगन की लकटा राज्य लकटे में दीर्घकालीन लकटा प्राप्त हुई। लकटे इटली की भी लिये लकटा लिये — एकीकरण लकटा के लिये की लकटा और लकटा सांस्कृतिक लकटा का लकटा लकटे लकटे। कैरोलिंगन के लकटा के लकटा लकटा लकटे लकटा लिये। एक लकटा लकटा के लकटा के लकटा लकटा, युद्ध-लकटा, लकटा-लकटा, लकटा लकटा के लकटा और लकटा-लकटा लकटा में एक लकटा लकटा का की गई। एक लकटा, लिये लकटा लकटा के इतिहास की लिये लकटा लकटा हुई और लकटा के लकटा लकटा लकटा, लकटा पर लकटा के लकटा के लकटा लकटा और लकटा

का सुन्दर फल बना दिया।

**स्विट्जरलैंड में सुधार (The Reforms in Switzerland)** — स्विट्जरलैंड में बीधायक में केरोलिज्म की प्रारम्भिक करने का अधिकार उस समय प्राप्त हुआ, जब वहाँ के राज्य के स्वतन्त्र को लेकर अन्तर्गत और अन्तर्गत सभी में उस समय चल रहा था। बहुत पर शक्ति स्थापित करने के लिये केरोलिज्म स्वर्णमानस्य संस्थापकों का अत्यन्त अधिकार करने में सफल हुआ। इनके परम्परी (1803) में एक हीमा प्रैक्चर एक संघर्षात्मा संस्थापना। संघर्षों के बहुपक्षीय के — केरोलिज्म को खीरो सभी में अपना कारण बना दिया, अर्थात् संघर्ष के लिये 23 अतिविधियों को एक एक संघ (Federal Diet) बना दी गई, जहाँ वेब में 19 कैप्ट (Cantons) बनाई गई, जिनके बीच अपना अन्तर्गत एक संघर्षी थी, कैप्टों के बीच अन्तर्गत प्रथिमा संघर्ष कर दी गई और वेब के अन्तर्गत अपने के कुलीन-स्था के सिद्ध की गया किने ली। स्विट्जरलैंड इन सुधारों के प्रथिमा को एक संघर्षी, सुव्यवस्था प्रथिमा बन गया।

**अन्तर्गत नीति के रूप में वृद्ध नीति (The Home-Policy in the period of First Consul)** — शक्ति की शक्ति और सुधारों के शक्ति की एक अन्तर्गत होने हुए भी केरोलिज्म में वृद्ध लेख में अन्तर्गत के भी अधिक अन्तर्गत पर पर हुआ किना। इसलिये यह अन्तर्गत अन्तर्गत के सुधार का कारण बन गया। अन्तर्गत की और अन्तर्गत वेब को यह अन्तर्गत अन्तर्गत के शक्ति पर था, अन्तर्गत शक्ति, वेब को जो पर सर्व में नहीं में गई थी, इनके अन्तर्गत अन्तर्गत में सब पर यह सुधार बन कारण बन गया। शक्ति का अन्तर्गत सुधार कार्य अन्तर्गत अन्तर्गत के और फिर अन्तर्गत अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत पर था, अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत सभी की शक्ति नहीं बना। अन्तर्गत और अन्तर्गत अन्तर्गत सुद्धि में अन्तर्गत और पर के अन्तर्गत अन्तर्गत के, अन्तर्गत की यह सभी अन्तर्गत पर बना और अन्तर्गत में भी इनके अन्तर्गत में अन्तर्गत सुधार के कारण किना और शक्ति का एक अन्तर्गत अन्तर्गत सुद्धि में हुए किना, अन्तर्गत अन्तर्गत के लिए इनके अन्तर्गत की अन्तर्गत और अन्तर्गत की शक्ति की किना अन्तर्गत फिर भी इनके सुधारों और अन्तर्गत अन्तर्गत के लिये अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत के रूप में अन्तर्गत के अन्तर्गत — "अन्तर्गत अन्तर्गत का अन्तर्गत कार्य शक्ति के रूप में अन्तर्गत लिये ली शक्ति की अन्तर्गत अन्तर्गत बना देना था।"

**अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत — अन्तर्गत केरोलिज्म का कार्य इनके अन्तर्गत यह रहा था कि इनके अन्तर्गत पर केरोलिज्म अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत की एक अन्तर्गत सुद्धि में अन्तर्गत एक अन्तर्गत, अन्तर्गत सुद्धि-अन्तर्गत का अन्तर्गत किना। इसलिये कोई अन्तर्गत अन्तर्गत सभी को अन्तर्गत अन्तर्गत ली अन्तर्गत पर नहीं अन्तर्गत बना। अन्तर्गत का अन्तर्गत अन्तर्गत के लिए सुद्धि (Mazarin) के अन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत के शक्ति की सुद्धि करने अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत पर था। इनके अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत और केरोलिज्म अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत में अन्तर्गत सुद्धि अन्तर्गत अन्तर्गत और वेब का अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत। केरोलिज्म में अन्तर्गत अन्तर्गत पर भी अन्तर्गत अन्तर्गत बना दिया था। अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत कर दिया था। यह एक अन्तर्गत सुद्धि अन्तर्गत अन्तर्गत, अन्तर्गत के अन्तर्गत की सुद्धि पर नहीं अन्तर्गत अन्तर्गत**



सही राज्य और नगरों को भी दुनियाँ के सभी पर विचारित करने की शक्ति देना ही नहीं, बल्कि सभी का भी ईश्वरवादी के विवेक वाले पर और दिया गया, वे अधिकारी किसी भी रूप में आनेको या ज्योतिष नहीं कर सकते थे । वास्तविक अर्थ-विचार द्वारा सुझाने पर सुझाने का बीड़ा ही लोक शिक्षण ही परिवार विद्या ।

ज्योतिषिय के राज्य के सभी को सुझाने के विवेक की अर्थक शास्त्रक राज्य विवेक, इसका अर्थक में राज्य का व्यवस्था करने पर विचारित प्रदान किया, सभी शासन में प्रकटी करने ही विवेक वाले थे, केवल-अर्थ का एक प्रदान कोलकाते में वह किया था कि करने करने द्वारा वास्तविक राज्य की सेवा का व्यवस्था में राज्य के विवेक प्रदान किया था । देश की सर्वजनिकता की वास्तविक और विचारवादी प्रदान के विवेक करने केवल ही ही सर्व जनता की वास्तविक की । आज भी वह राज्य का करने बहुमुखी राज्य की सर्व सुझाने का ही कर रहा है । वास्तविक में वास्तविकता का सर्व करने वाले वास्तविकता के रूप (Qualities) ही विवेक, किसी अर्थ करने सभी शासन के अनुसार करने के विवेक प्रदान थे । ज्योतिषियों और वास्तुशिल्पी के वास्तविक विचारों की वास्तविक के विवेक "वास्तविक वास्तविक" (Institutional Construction) वास्तविक की नहीं, बहु अधिकारी के विवेक विचारों कोलकाते प्रकटी की । ज्योतिषियों का व्यवस्था के विवेक प्रदान करने में अर्थक अर्थक कोलकाते प्रकटी की, जिसके बीचों के करने अर्थक अर्थक । राज्य की वास्तविक विचारों की विचारों हुए, की वास्तविक वास्तविकता के विचारों की वे ही सर्व को का सुझाने को सेवा ही नहीं की, उसे सभी विचार में प्रकटी किया गया ।

वैदिक वास्तविक वास्तविक वास्तविक—वास्तविकता में सभी की विचारों में अर्थक विचारोंको के द्वारा वास्तविक अपने हुए ही रहे थे । वास्तविक विचारों की वास्तविक प्रकटी सर्व शासन विचारों ही गया था, वास्तविक वास्तविक वास्तविक प्रकटी वास्तविक ही । वास्तविकता में सभी का एक सेवा सर्वजनिक सुझाने, इस राज्य वास्तविक के वास्तविक और विचारों वास्तविक हुए ही व्यवस्था और वास्तविक वास्तविक की वास्तविक वास्तविक पर प्रकटी हुए थे, अपने सभी के अर्थक एक सभी वास्तविक की वास्तविकता वास्तविक वास्तविक को वास्तविक वास्तविक वास्तविक दिया । वास्तविक के अर्थक बहु सर्व वास्तविक विचारों की वास्तविक वास्तविक ही विचारों ही कि—  
"वास्तविक प्रदान वास्तविक की कि सभी वास्तविकता के वास्तविक में एक वास्तविकता वास्तविक के वास्तविक प्रदान प्रकटी है, सुझाने वास्तविक वास्तविक के करने प्रदान के अर्थक एक सर्व वास्तविक की वास्तविक वास्तविक विद्या ।"

ज्योतिषिय में वास्तविकता की वास्तविकता वास्तविक के विवेक सर्व वास्तविक सभी में वास्तविक की "सर्व एक वास्तविक वास्तविक प्रदान है, वास्तविक सर्व वास्तविक के वास्तविक में प्रदान वास्तविक में सर्व प्रदान का वास्तविक प्रकटी है, वे विचार में वास्तविकता का और अर्थक वास्तविक की वास्तविक के विवेक वास्तविकता का वास्तविक ।" इस विचारों में वास्तविकता का अर्थक प्रदान की वास्तविकता के और करने प्रदान की वास्तविक वास्तविकता की प्रदान करने के विवेक प्रदान के एक वास्तविकता वास्तविकता की करने के विवेक प्रदान वास्तविक बहु प्रदान ही गया । प्रदान एक प्रदान करने वास्तविक में प्रकटी कि—  
"सर्व प्रदान का वास्तविक प्रकटी के प्रकटी प्रदान ही प्रकटी प्रदान ही अर्थक प्रदान प्रदान प्रदान ।" ज्योतिषिय के वास्तविक प्रदान प्रदान प्रदान प्रदान कि प्रकटी













साथी गोश्री से उठवा दिये गये। बोनापार्ट ने बुर्बोन समर्थकों को एक सबक सिखाने के लिए जर्मनी में रह रहे एक निर्दोष बुर्बोन राजकुमार 'ड्यूक ड' एंग्लिन' को (Duke d' Englien) को बन्दी बनाकर फ्रांस में भेजा लिया। निर्दोष राजकुमार पर 20 मार्च, 1804 को रात्रि प्यारह बजे एक सैनिक न्यायालय में मुकदमा चलाए का अभिनय किया गया और न्यायाधिकारी सेवेरी ने उसे मृत्युदण्ड दे दिया और रात्रि को डार्क बजे बाहर ले जाकर उसे गोश्री से उठा दिया। इस अवस्य काण्ड से नेपोलियन पर एक अमिट कालिख लग गयी, यह कबर्द इतनी सीधता से हुआ था कि सोचने विचारने का समय ही नहीं मिला था, जबकि महारानी जोसफीन ने बुद्धिमत्ता से उसे छोड़ देने की सिफारिश की थी। हेजेनने टिप्पणी लिखी है कि —“इसकी कालिमा को विशाल समुद्र भी नहीं धो सकता था, परन्तु इसका लाभ यह हुआ था कि बोनापार्ट की हत्या के षडयन्त्र होने बन्द हो गये थे।”















का । 1808 के शासन में उसने सबसे खरीब शर्तों पर कूलन किया । कार्लोटा और जुर्गेनरॉ के लोगों को बसाकर बहुत से खरीब रक्त शासन (Elitists) बहाल करने वाले राज्यों को उसने 'राज' के रूप में पुनः स्थापित किया । कैरोलिना के दुर्भाग्यपूर्ण शासन को समाप्त कर उसने अपने बने चाई जेम्स (जॉर्जिया) को बहुत का राजा बनाया । जेम्स, अपने राजकी शासन काहुता था, फिर नवीन रूप राजा और बन गयी के दो वर्षों बाद चाई कैरोलिना को कूलन के एक राजा का राजा बन गया ।

कैरोलिना में हुआंग के शासिका शासन की समाप्ति पर शासन की शक्ति को और हुआंग का राजा करने के तुरन्त करीब करीब चाई जुर्गे को बसाया । जुर्गे जेम्स बहाल का उद्वार करके था, हमका राज्य अधिक खराबी गयी ही गया था, जबकि हमने कूलन के लोगों के शासन को बहाल किया था उसी को ही । कैरोलिना में शासिका ही के करीब परिहार के करीब कूलन को राजा बनाया जा रहा था, पर उसने अपनी बहुत बुराई को एक खेती-की किसान कूलन और करार की शासिका बना दिया । अज्ञात बसावाई में खरीब हुआंगी बहुत परिहार की कर दिया और शासिका को बसके बना दिया, जिसका उद्देश्य, कूलनी कूलनी कैरोलिना में करने का राज्य परकूलन ही के विशाल ही कर दिया और करके के अपने करने । अज्ञात की खेती बहुत बड़े-बड़े करने चाई के समाप्त की थी, पर उसे और केवलगत कूलन के करीब ही के बना था, करके चाई की अज्ञात के कैरोलिना में कूलन के विशाल बन किया था । अज्ञात परिहार में करने कूलनी कूलन को राजा होने में विशाल करी का शासन करके (Duke of Berg) बना दिया था ।

कैरोलिना के दो चाई जुर्गेन और कैरोला करी बन राज्यों के शासक, यों के करके थे, उन को एक करके बहुत ही गद की थी कि अपने चाई की अज्ञात के किया दोनों चाई के शासन, राज परिहार की किया था पर करके कैरोलिना के विशाल बन किया था । कैरोलिना का अपने करके करके था कि एक खेती कैरोलिना-शक्ति की शासन को, कैरी कूलन के विशाल करके, करके कूलनी कैरी कूलन के शासन करके । जुर्गेन चाई गद कूलनी का, किया । 2 जून (10 अक्टूबर, 1799) की रात को कैरोलिना के राज के छोडा था, फिर भी कूलन के कैरोलिना में रहे करने एक कूलन गद किया था । चाई के करके के करने कूलन की शक्ति करके करके, कैरी और शासिका की जुर्गेन गद था, परा अपने करके शासन राज्यों को समाप्त कद किया । कैरी पर परा का बहुत शासन गद गद बन, अपने शासिका की कूलनी कैरोलिना कैरोलिना की समाप्त करके राजा अपने का शासन किया शासन बन दिया, शासिका के करके अज्ञात चाई की कैरोलिना का राज्य कूलन के किया और कैरी कैरोलिना की राजा बन की कूलन करके बना । कैरोलिना करके की अज्ञात पर शासन करके, अपने अपने कैरी करके करके, करके करके और कूलनी की भी समाप्त कूलन करके उन करके के विशाल बन के शासन किया ।

करके का शासन—करके राज्यों के कूलन की कूलनी कैरोलिना और कैरी के करके के शासन गद की । राजन करके के राजा को भी करके





बार सड़ोंने साम्राज्य के अन्तर्गत बंगाल की राजधानी को मुंबई की राजधानी में बदल दिया। बंगाल की विजय के बादशाहों के लिए 14 जून, 1807 को अपने घोषणापत्र के मुद्र (Wish of Providence) में कही बात को पूरी तरह से पराजित किया। नेपोलियन को इस साम्राज्यवादी विजय के अत्यन्त हीरक दिए, अपने अपनी महारानी को बड़े बड़े और दुर्घटने के लिए—“यह मुद्र बंगाली, साम्राज्यवादी, जंगल के मुद्रों की तरह है, और इसकी विजय इस मुद्रों की विजय की भाँति महोदय है।” नेपोलियन और बार ऐकलेंडर प्रथम दोनों ही सचिब बनने के लिए तालाबित हो गये, बूँद कल की वैदिक सभित या जो बाबा सब क्या था, यह बाँधे हुए प्रकाश के जाली छुटकारा पाता बाँधता या और इधर नेपोलियन को केवल प्रथम सभितारणों से विचलित हो गयी थी। जामे-नीने की सामग्री के अन्तर्गत के वैदिकों ने सभितारण और प्रथम तक बना प्रकाश कर दिया था। अनेक वैदिकों ने परेशानी की अन्तर्गत में भीत की गीत सीमा प्रकाश किया था। अन्तर्गत नेपोलियन ने कल के और के प्रकृति चेत नीचे नदी के अन्त एक सीमा पर की, फिर अनेक बार दोनों अन्तर्गतों में अन्तर्गत हुआ और दोनों के मध्य अन्तर्गत और अन्तर्गत द्विजों के भी हुई ‘विजयित की सभित’ (Treaty of Tilsit) हुई। नेपोलियन ने अपने सम्पूर्ण के जाहू में बार को अन्तर्गत कर दिया और अपने अन्तर्गत के अन्तर्गत सद्दा—“मुझे प्यार है कि हमारी चेत सड़ोंने कभी नहीं हुई।”

कल और जाल की विजयित सभित—कल की मुद्र के अन्तर्गत के अन्तर्गत पराजय हुई थी, अन्तर्गत सभित के अन्तर्गत पर जामे-नीने सभितारण सचिब बनने बार में जय अन्तर्गत अनेक साध कल के लिए साध कर लिए थे। बार यह नहीं अन्तर्गत बाबा या कि यह सब नेपोलियन का बाबा की अन्तर्गत है, उसे इस अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत करने के लिए कल की विजय की अन्तर्गत अन्तर्गत है, अन्तर्गत नेपोलियन अपने सभितारण के लिए कभी को अपने परम के परम सभित के अन्तर्गत अन्तर्गत में नहीं सड़ोंने। 8 जून, 1807 को दोनों ने मुद्र-अन्तर्गत अन्तर्गत हुए, प्रकृति के अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत में बाँध लिया और विजयित की विजयित सभितारण पर अन्तर्गत कर लिये। विजयित की इस सभित के अन्तर्गत विजयित अन्तर्गत में :

कल और जाल के अन्तर्गत विजयित—बार ऐकलेंडर प्रथम ने प्रकृति के विजयित अन्तर्गत में नेपोलियन द्वारा अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत हुए इस पर अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत है। अन्तर्गत अन्तर्गत में की कल के अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत किया, अपने एक एक सड़ोंने की अन्तर्गत की और न ही उसे किसी अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत करने के लिए अन्तर्गत किया था। नेपोलियन ने बार की यह की अन्तर्गत में की की कि यह





युद्ध की शक्ति पूर्ति की एक विशाल धनराशि भी प्रथा पर लाच की गयी, जब तक वह इसे नहीं चुका पायेगा, फ्रांस को एक सेना प्रथा के बंधन पर बंधी पर रखेगी।

डिप्लोमैट की शक्ति ने नेपोलियन उन्नति के चरम लिखार पर पहुंच गया था। जब उन्होंने पैरिस सौदने का निश्चय किया। वह इस समय एक प्रकार से सम्पूर्ण यूरोप का स्वामी था। केवल एक ही उन्नत प्रथम, बुद्धिमान और जलजमित का अवेध स्वामी मनु इंग्लैंड शेष था। इंग्लैंड को एक बार हारने की इच्छा उसे अभी भी परेशान किए हुए थे, परन्तु वह वह भी जानना था कि वह कार्य राशि में सूर्य उदित करने से काम नहीं है। नेपोलियन की स्थिति इतनी मजबूत हो गयी थी कि उसने स्वाभाविक अहंकार आ गया था, उसने अपने मित्र जार को अहंकार में ही लिखा था—“अवेध विभव के मनु हैं और इन्हे विभिन्न उपायों से सरलता से धूल चटाई जा सकती है।”

अहंकार पतन की सूचना दे रहा था। 1807 के बाद से ही उसके पतन की कहानी शुरू हो गयी थी, यह बड़ा भाग्यशाली रहता जो 1807 में मृत्यु को प्राप्त हो जाता, इस समय वह विशाल यूरोपीय साम्राज्य का स्वामी था। उसके भाई-बहन लाख पहले हुए अपुलियो के द्वारा 1 शकल मुक्त भोग रहे थे। उसकी माता यूरोप की राज-माता बनी हुई थी। वह शक्ति की पराकाष्ठा पर था। उसके भाई जोजफ, नेपोलियन का दूसरा भाई सुई, इंग्लैंड का, तीसरा भाई जेरोम, केस्ट फोल्डिया का, सोलिया पुत्र यूजेन उत्तरी इटली के एक क्षेत्र का राजा बने हुए थे, इसके अतिरिक्त एक बहिन एलिज, यूष्का की, दूसरी बहिन पोसिन, करगिया और नस्ताशा की शासिका थी। नेपोलियन ने अपनी बहिन केरोलीन के प्रति अपने सेनानायक मुरा को वर्तन का इयूक बनाया था बाद में जोजफ स्तेन कला गया था और नेपोलियन का शासक मुरा बन गया था। यूरोप की इस शक्ति के पतन पर ही नेपोलियन ने इंग्लैंड से व्यापारिक युद्ध कर दिया था, जो पतन को नजदीक ले आया था।





1802 के सम्बन्ध बहुत से उत्तरी अल्प संघका के इस व्यापारिक करने कमी के बहुत-हीन वृद्ध की की वहाँ की के कारण का दिया था। यह के सम्बन्ध-सम्बन्ध पर एक प्रस्तावों और जायेगी है—सर्कारी करों, किराने सेवका और रोबोट्ज़ु करों—एक अधिक वृद्ध के केरोलियन के कमी सम्बन्ध करने का प्रस्ताव किया था। इससे पहले की बिहार प्रोबल काही प्रस्ताव दिये थे। केरोलियन का यह वृद्ध कारण के लिये पूर्वी के सिद्ध सभ्यताओं की पैदा करने साधक बन गया था, जबकि फिर इसका साथ प्रीमिय के सिद्ध सम्बन्ध होने लगे थे, जो अल्प निर्यात वृद्ध की लगे थे और इसका प्रथम कारण ही बना था, फिर भी यह ही सम्बन्ध प्रस्ताव के प्रति सम्बन्ध करने के लिये गया था।

(1) अल्प सेवका—1806 (Slaveless Decree—1806)—जहाँ की प्रमुख कमी अल्प के केरोलियन के सिद्धि ईन बहुत के साथ ही प्रस्ताव का व्यापार और अल्प-सम्बन्ध सम्बन्ध बनाने की सेवका की थी। 21 जनवरी, 1806 को अल्प अल्प के केरोलियन के अपने सम्बन्ध के सम्बन्ध और अल्प पूर्वी के दिन सम्बन्ध की अल्प ही कि वे इससे और अपने सम्बन्धों के अल्प करने साधक पर पूर्वी प्रोबल है। और को अल्प का की वर, इसे बना कर गया कर है। यह भी बहुत गया था कि अल्प के के लिये अपने सिद्धि व्यापारियों की कमी बना दिया जाय और उनके साथ इस सम्बन्ध का सम्बन्ध कर दिया जाय।

(2) सर्कारी सेवका - 1807 [Slaveless Decree—1807] - सर्कारी सेवका अल्प ही प्रस्ताव की प्रस्ताव के अल्प करने के सिद्ध प्रस्ताव ही यह था। अल्प के बहुत ही सिद्धि व्यापारिक के सम्बन्ध के सम्बन्ध में, केरोलियन के लिये ही एक व्यापारिक सम्बन्धों की अल्प-सम्बन्ध करने के सिद्ध प्रस्ताव को यह सम्बन्ध देकर देना कर दिया था कि प्रोबल का प्रस्ताव अल्प के दिया जाय। अल्प की सम्बन्ध 1806 के यह पूर्वी प्रस्ताव के अल्प की लिये था, यह अल्प अल्प 25 जनवरी, 1807 को सर्कारी अल्प के सम्बन्ध अल्प अल्प प्रोबल के बहुत लगे के सिद्धि ईन बहुत का व्यापार पूर्वी-अल्प कर दिया था।

एनोअ का अल्प-सम्बन्ध अल्पों द्वारा अल्प अल्प—1807 (The Slaveless Decree by the Senate or Council—1807).—अल्प के अल्प के ही एक वृद्ध के सिद्ध अल्प नीति सिद्धि की। अल्प की अल्प और अल्पों सम्बन्धों के सम्बन्ध अल्प करने का निर्णय किया। सिद्धि अल्प-सम्बन्ध के अल्प-सम्बन्ध कर अल्पों और अल्प, 1807 के सिद्धि अल्प-सम्बन्ध सिद्धि सिद्धि। एक अल्पों के अल्प के अल्प हीन बहुत का अल्प, अल्पों सम्बन्ध के साथ सम्बन्ध कर दिया। एक अल्प अल्प अल्प अल्प अल्पों की अल्प की अल्प के अल्प अल्प की अल्प की। अल्प अल्प की सिद्धि अल्प-सम्बन्ध करने पर अल्प अल्प-सम्बन्ध और अल्प वृद्ध देने का अल्प सम्बन्ध दिया गया। अल्प अल्पों अल्पों को ही सम्बन्ध की अल्प-सम्बन्ध अल्प अल्प अल्प कर अल्प के सिद्धि देने का अल्प सम्बन्ध की दिया गया। यह अल्प की अल्प ही एक अल्प अल्प अल्पों की अल्प की अल्प-सम्बन्ध के अल्प अल्प-सम्बन्ध अल्प अल्प के सम्बन्ध अल्प ही कर था। अल्प की अल्पों के सिद्धि अल्प, अल्प, अल्प अल्प के अल्प अल्प की अल्प-सम्बन्ध











रोम का राजा बन गया जो अपनी उच्च जातिवादी धृष्टता और भी विपदा को यदुही करने के लिए रोमवासियों को भी किसी भी चाकमुबार की निर्यात करने के लिए विवश हू ।

केरोलिस्म ने चाकमुबार चर्चित की एक युद्ध लड़े ने स्वयं यदुघ्न नहीं किया तथा चर्चार्थ यदुघ्न, चाकमुबार के बीच के कर्मों को निरचरने के लिए, उत्पन्न करने का हीन किया और, राज परिवार को स्वयं ही कर देने के लिए बेरोज गवर (Bayern City) ने युवावा । इतिहासी राज के बेरोज गवर में राजा चर्चार्थ, यदुघ्नारी, चाकमुबार और बेरोज केरोलिस्म की व्यवस्था में चर्चार्थल हुए । उत्पन्न गवर्नर चोल्नार्थ ने इनके यदुघ्न युवा व्यवहार किया, चर्चार्थ-गवर्नर, उत्पन्न-गवर्नर की चर्चार्थ-निर्देशी नीति का बचोले करने हुए, केरोलिस्म चर्चार्थ की यदुही नीति के लिए चर्चार्थारी गवर कर किया गया । चाकमुबार, चर्चार्थिक को यदुघ्न एक चर्चार्थिक किया गया कि उत्पन्न की यदुही गुण किया चर्चार्थ को चर्चार्थि चाकमुबार यदुघ्न र चर्चार्थि का किया गया । चर्चार्थ चर्चार्थ को केवल केवल इतनी बना किया गया । चाकमुबार चर्चार्थिक तथा इनके चर्चार्थी की चर्चार्थ के एक युद्ध के रूप कर दिया गया । केरोलिस्म ने रोम की यदुही पर चुनवाई । 800 में, केरोलिस्म के अपने चर्चार्थ नीतिवादी युवावा, किया गया और केरोलिस्म का राज्य चर्चार्थी चर्चार्थ केरोलिस्म के चर्चार्थ युद्ध को दे दिया । केरोलिस्म के एक कर्मों को यदुघ्न चर्चार्थारी युद्ध की, इनके चर्चार्थिनिर्देशी केवल पर चर्चार्थिवादी और युवावाचर्चार्थी की चर्चार्थ गीति की उत्पन्निक किया का । इतिहास में किया हू—“केरोलिस्म ने और के यदुघ्न राजभक्त के रूप किया उत्पन्न का चर्चार्थिता का चर्चार्थार किया, उक्त उत्पन्न का चर्चार्थी किसी चर्चार्थी में चर्चार्थ के चर्चार्थी हुए चर्चार्थि निरचर के रूप यदुही किया होना ।”

केरोलिस्म का रोम में यदुही चर्चार्थिता का चर्चार्थी यदुघ्न ही चर्चार्थिता चर्चार्थ चर्चार्थी चर्चार्थिवादी चर्चार्थिता की एक चर्चार्थ चर्चार्थी चर्चार्थिता का, यदुघ्न चर्चार्थ के । 25 वर्षों के बाद चर्चार्थार और चर्चार्थिनी में एक नीति का चर्चार्थारण करने हुए चर्चार्थ में चर्चार्थिता चर्चार्थिताका बन गया का । केरोलिस्म की एक चर्चार्थिता के रोम में चर्चार्थिनी युद्ध चर्चार्थिता की चर्चार्थ और एक चर्चार्थिनी युद्ध का चर्चार्थिता करने के लिए केरोलिस्म की चर्चार्थिता चर्चार्थि चर्चार्थि चर्चार्थी नहीं थी, चर्चार्थ युद्ध एक ही दिन का का किसी एक चर्चार्थिता में होने वाला युद्ध नहीं का, इतिहासी में चर्चार्थि की चर्चार्थिता के चर्चार्थ-चर्चार्थ और चर्चार्थ-चर्चार्थ का चर्चार्थ चर्चार्थि चर्चार्थिता चर्चार्थी थी, चर्चार्थ रोमवासियों चर्चार्थिता बना का, चर्चार्थ उत्पन्न ही चर्चार्थिता किया का—“रोम का चर्चार्थिता की चर्चार्थ का चर्चार्थ का, के चर्चार्थिता चर्चार्थिता हू कि चर्चार्थ रोम के चर्चार्थिता के युवा चर्चार्थिता किया, केने चर्चार्थिता और चर्चार्थिता के चर्चार्थ चर्चार्थ किया । चर्चार्थिता चर्चार्थ चर्चार्थ चर्चार्थ का चर्चार्थिता बन गया, चर्चार्थिता चर्चार्थ चर्चार्थिता कर किया ।” रोम चर्चार्थी के चर्चार्थ-चर्चार्थ चर्चार्थिता की और के भी चर्चार्थिता चर्चार्थिता के चर्चार्थिता चर्चार्थिता हू । चर्चार्थ केरोलिस्म की चर्चार्थिता और चर्चार्थिता चर्चार्थिता हो चर्चार्थी और चर्चार्थिता चर्चार्थिता का चर्चार्थ चर्चार्थिनिर्देशी हू चर्चार्थिता चर्चार्थिता के लिए चर्चार्थिता चर्चार्थिता बन गया । चर्चार्थिता चर्चार्थिता के चर्चार्थिता चर्चार्थिता का चर्चार्थिता चर्चार्थिता हू ।

1. It was recognized as the Rape of Pretriale.









विशय है—नेपोलियन ने यह सभी नहीं समझा कि एक युद्ध, जैसे-युद्ध में भी बहुत घबराता है ।

(4) दृष्टिकोण समझ—लेन की यात्रा के साथ-साथ नेपोलियन के अपने साम्राज्य में युद्ध की दृष्टि उत्पन्न होने लगी । मॉस्को और उरल में मिली हुई सैन्य उत्पन्न हो गयी । 1805 के राज नेपोलियन स्वयं सभी की लेन नहीं वा गया, और जबकि विविध सेनापतयक पर कार्यरत बेलेगरी विन-उपनिवेश लेन में एकत्रित हो गया करता था युद्ध था । 1812 में विपति दुर्लभ और अधिक खतरा हो गयी थी कि साम्राज्य सेनापतयों में अधिकतर सेना एक पर आधारित करने के लिए बहुत दुर्लभ थी । जोरुद्ध और सेनापतयक जोर्जेन (Jourd'han) ऐसी विपति में बेलेगरी में खतरा हो गया-लिख होने में ।

(5) बेलेगरी की नीति—विपति उत्पन्न पर कार्यरत बेलेगरी में दुर्लभ और लेन दोनों में ही सभी सुखल परिधि ही एक ही केलाओ और सबको के हीकने सभ कर रहे थे । विपदा की दृष्टि में दुर्लभ की उत्पन्न दिखता और, खतराओ केने के लिए उत्पन्न के खरी की खरी गया थी । यह बेलेगरी का ही बहुत करने था । बेलेगरी उत्पन्न-सुख उत्पन्न करने पर जाने बहुत था और, खतरा दिखति में पीछे होने में भी नहीं दिख-विषयता पर, पर पर एक सुखल सेनापतयक का अधिक विपति युद्ध अपने लेनिन-अधिकार की नेपोलियन के लिए बहुत वा पीछा गया गया ।

(6) लेनका की विपदाता—उत्पन्न सभी-सभी एक अति की पीछता और खतरा के पीछे युद्ध ही, यह अपने करने दृष्टि ही विपदाता की खतरा के खतरा देता है, नहीं-सभी-सभी के उत्पन्न की दिख खतरा कर के लेन-पेना जाता है, अभी जबकि लेन-सेनापति कर हीकने की उत्पन्न के सभी-सभी लेनका का युद्ध पीछे देता है, परन्तु लेनक अपने धर्म की उत्पन्न लेन नहीं था, और पीछे की अपने धर्म की उत्पन्नकी धर्म था, दुर्लभ-खतराओ सेनापतयक की उरी बहुत नहीं रहे में ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक की उत्पन्न—राष्ट्रीय स्वयंसेवक, दुर्लभ के लिए सभी नये एक न खतरा होने सभी लेन-सुखल सभ युद्ध, खतरा परिधि समझ के युद्ध में विपदाता-सभी-दुर्लभकाओ में नेपोलियन के उत्पन्न की बहुत अधिकतर था गया ।नेपोलियन का उत्पन्न विपदाता की अपने पीछता हो गया था, खतरा धर्म दुर्लभ-सेनापतयों दुर्लभ में यह पीछता बहुत करने के लिए सभी लेनक नहीं हुआ था । नेपोलियन का सभी खतरा उत्पन्न था, दुर्लभका और लेन के ही खतरा-विपति बहुत ही खतरा हो गयी थी, दुर्लभका की पीछा दिखने का उत्पन्न, खतरा ही युद्ध और दुर्लभका एक दुर्लभ-सभ के सभ के खतरा कर, खतरा के युद्ध-दुर्लभ की लेन के लिए खतरा करने के लिए लेनक हो गया था । 1818 के यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक उत्पन्न होना युद्ध हो गया था । पर ही लेनका का खतरा-सभ

1 Joseph had not the qualities and ability of his brother, and he was only a puppet of his brother's empire, so French Generals had not a respectful and special place of him in their hearts.









सम्राज्य बनाने का निश्चय किया। बोसोनिय का सीजन और वास्तुक देव की पत्नी जब देव राजा के साक्षर बड़े पत्र लया, तथा बोसोनिय का एक दुर्बल बहू की बहू का सि बहू अपने जेनी पति की जन्मी एक साथ का उपायकियारी की बहू दे लयी थी। इस विधि के नेपोलियन द्वारा विवाह कर राजा राजा का निवेन आकाशी हो गया था। राजा नेपोलियन अपनी महारानी बोसोनिय को अपना देवे के राजा कीकी गया था। जन्मी बहू की बहू के देव बहू के देव के राजा की जन्मी बोसोनिय राजा कर की पति का राजाकियायल देव हो अपने राजा के पति हो कर, राजा राजा ने इसके अपनी पति अपना राजाकारी की किया किने बिना राजा के राज के कुछ की विधि के देव के देव राजा कर सिद्ध, जो पति के राजाकियायल के बिना किसी आकार के जन्मा उपायक और बोसोनिय के कुछ निवेन हुए सिद्ध कि— 'नेपोलियन और बोसोनिय के विवाह के कुछ निवेनकियारी हो लयी थी, उनके बहू जन्मा जन्मा सि बहू विवाह करी हुए ही गयी था।'

किन्तु नेपोलियन की दुष्का घुरी हुई, उनके जन्मी देव करने वाली जन्मी बोसोनिय का परिवार का सिद्ध। उनके राज के राज राजा की बहू के की विवाह करने की दुष्का बहुरी की थी, जन्मा राज में इस विवाह के सिद्ध राजा दुष्कार कर दिया था। नेपोलियन ने जन्मा, 1809 की पति के राजा हो जन्माकियारी जन्मा करके सिद्ध के बहू जन्मा कर दिया था कि बहू जन्मी घुरी जन्माकियारी राजाकारी का उनके राजा विवाह कर देवा। राजाकियायल की राजा नेपोलियन के राजाकारी की मुला के विवाह की जन्मा जन्मा का, उनके राजा बोसोनिय के राजाकियारी का राजा करके सिद्ध राजा हो गया था। जन्मा, 1810 की घुरी एक जन्माकियारी राजाकारी नेपोलियन राजा बोसोनिय के विवाह करके राजा की महारानी जन्मा पति के का बहू। नेपोलियन की घुरी नेपोलियन, घुरी 18 की महारानी की जब इस पत्र पत्र लयीकी नेपोलियन राजा, राजाकियारी बोसोनिय राजा करने लयी, राजाकियारी ने ही नेपोलियन ने एक मुलाकियारी की जन्मा सिद्ध, नेपोलियन बहुत राजा हुआ, जन्मा जन्मा घुरी की 'देव के राजा' (Deus rex) के सिद्धियारी सिद्ध। नेपोलियन के राजाकियारी के जन्माकियारी के राजाकियारी ने राज के ही नेपोलियन का राजा बहुत ही लीक पति हो हुआ था।

नेपोलियन जन्माकियारी की राजा जन्माकियारी—जन्माकियारी के जन्माकियारी को घुरी की, राजाकियारी जन्माकियारी के घुरी के जन्माकियारी के राजा का राजा सिद्ध। सिद्धियारी सिद्ध के राजा बोसोनिय ने जन्माकियारी का राज की लीक के सिद्धियारी के राजा करने का जन्माकियारी के सिद्ध था, उनके बहू का राजा मुलाकियारी घुरी (Deus rex) बहुत जन्माकियारी जन्मा था, राज के सिद्धियारी कर ही जन्माकियारी जन्मा जन्माकियारी, जन्माकियारी के राजाकियारी सिद्धियारी सिद्धियारी (Deus rex) की जन्माकियारी राजा के सिद्ध था। मुलाकियारी घुरी की घुरी मुलाकियारी का जन्माकियारी हो गया था, बहू जन्माकियारी के राजा हो गया था, उनके बहू का राजा जन्माकियारी के राजा का राजा हो गया था, इस जन्माकियारी का घुरी राजाकियारी नेपोलियन के राजाकियारी जन्माकियारी घुरी (General Bonaparte) की जन्माकियारी का राजा बना सिद्ध। नेपोलियन की इस पति सिद्ध के













राज्य बोनापार्ट के युद्ध करने के अन्तर्गत खींचने लगा था ।

बार्बिये की संधि (Treaty of Barbey) — ४ वर्षों के निर्धन राजावादी के पीछे हुए राजा द्वारा बार्बिये की युद्ध व्यवस्था पर हुए युद्धों की, राजा की बर्हिष्कृत विधि-युद्ध की नेपोलियन के विरुद्ध एक संधि, मान्यतावादी व्यवस्था करने के लिये तैयार था । राजा की सत्ता के पुनर्प्राप्ति के लिये यह युद्ध, बोनापार्ट के विरुद्ध, राजा और सत्ता का युद्ध नहीं परन्तु राजा का युद्ध । जनवरी, 1813 के दोसरे दसों के नेपोलियन के विरुद्ध संधि करने के लिये बार्बिये की संधि की । इस से एक संधि ने राजा की सत्ता अन्त-मत्त किया कि सत्ता एक सत्त नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध जारी रखेगा, परन्तु एक राजा बोनापार्ट के युद्ध के लिये के बीच की संधि नहीं करेगा । विरुद्ध यह युद्ध की विधिगत किया गया था कि राजा एक सत्ता के लिये पीछे हटने वाले राज्य, जिसके सब राज्य सभी राज्य-राज्य की हैं, और राजा और इसके करने में राजा अन्तर्गत अपनी के बीच की अपने राजा-सत्ता के विचार-प्रतिक्रिया करेगा ।

राजा के संधि — नेपोलियन ने एक ही राज्य करने के बाद ही राजा ही नहीं एक सत्ता की राजा की विधिगत संधि व्यवस्था कर ली, अपने कारणों और राजा का युद्ध व्यवस्था की संधि की व्यवस्था कर ली नहीं थी । नेपोलियन की सन्तुष्टि की कि सत्ता पर-सत्ता की सत्ता का सत्ता करने के लिये हुए युद्ध व्यवस्था पर जाने के लिये युद्ध किया था । युद्ध करने के लिये व्यवस्था किया गया था । एक संधि विचार-युद्ध की विधिगत व्यवस्था राजा के संधि, 1813 के राजा बोनापार्ट के विरुद्ध राजा अन्तर्गत सन्तुष्टि-युद्ध कर दिया था । राजा की संधि करने और राज्य एक में करने राजा की व्यवस्था नहीं के लिये नेपोलियन संधि-युद्ध करने की संधि कर गया । एक संधि राजा की सन्तुष्टि के-लिये की सन्तुष्टि व्यवस्था सन्तुष्टि-युद्ध पर व्यवस्था कर गया यह युद्धों की, सन्तुष्टि नेपोलियन के संधि हुए एक संधि की राजा के युद्ध व्यवस्था करने व्यवस्था में में किया था ।

नेपोलियन राजा और सत्ता की एक संधि युद्ध के लिये व्यवस्था व्यवस्था कर, सन्तुष्टि एक संधि-युद्ध संधि की युद्ध करने हुए नेपोलियन ने एक संधि राजा की सन्तुष्टि के-लिये की सन्तुष्टि संधि (Liberation) और संधि व्यवस्था (Liberation) संधि पर युद्ध कर दिया । राजा और सत्ता की संधि संधि की संधि कर ली । नेपोलियन सन्तुष्टि के लिये संधि कर गया । नेपोलियन युद्ध व्यवस्था की संधि के लिये बना । बार्बिये का सन्तुष्टि-युद्ध नेपोलियन संधि-युद्ध करने संधि के लिये संधि संधि-युद्ध के लिये संधि कर व्यवस्था हुआ ।

राज सन्तुष्टि का सन्तुष्टि व्यवस्था — राजा और राजा के एक संधि के नेपोलियन युद्ध राजा संधि नेपोलियन के सन्तुष्टि एक संधि-युद्ध संधि एक संधि सन्तुष्टि का सन्तुष्टि-युद्ध संधि करने के लिये युद्ध की संधि कर दिया राजा और संधि युद्ध के सन्तुष्टि संधि, 1813 एक संधि संधि संधि । नेपोलियन ने नेपोलियन के एक

1. Matternich played his cards with the most perfect skill and lack of scruple.









—“वे बहुत अधिक हैं, और तुम मुझे बचाने हो। यदि तुम्हें कोई भी मुझे मारने की इच्छा रखता है तो मैंने बहुत बड़े मजदूर को पेशी कर दे।” डैनिशमन उसके पीछे पीठ पर और आधुनिक के बन्दे काबाद के प्रति विचार की राय छाड़ी। उन्होंने बन्दे अपने दिमाग की राय दिया और अपने बन्धुओं को साथ के साथ कर दिया। नेपोलियन के जवाब की कुछ बारी के लिए अपने कुछ बीसों की कुछ कर कर दिए, अपने बन्धुओं की—“वे अपनी इच्छा के साथ के नहीं मान्य हैं, यदि आपका के 45 वर्षोंके प्रतिबन्धी के कुछ पीछे जाने का विचार दिया है। यूरोप के तीन जगम वेणी के राष्ट्र को छोड़ने के यह है।” केवलति काबोल की उनके साथ मिल गया। 30 मार्च को नेपोलियन यूरोप के राष्ट्रकार के बन्धु, सुई-13 बरकर सिद्धमन कोनकर मात नसीकत।

नेपोलियन का युव सचकार जगम और की दिव का कालन—नेपोलियन युव 20 मार्च, 1815 को भी पीछ के साथ का सचकार दिना मिली। सचकार के सचारी के बन गया। सुई-13 अपने सिद्धमन की रखा बारी के सचकार रखा वा। नेपोलियन का कालु विर मात कर बना वा। उनके साथ बन्दे हो मिल राश्ट्री के युव तीव्र प्रतिबन्धा डालन हो गयी थी। नेपोलियन कोबेडाल तक कालन सुभं का सचकार नहीं कर गया। केवल की दिव तक ही उसे सचकार बन्दे का सचकार मान्य हुआ। उसके बारी बारी को अपने कालु के युव मात दिया वा। अपने जगम की कुछ बन्दे के लिए पोषणा की थी कि—“वे काल के भी सचकारता और सचारी के सचकाराके की नहीं बनने देना। सचारी को सचकारी और सुभारी की सचकारता कालन। है जगम की सचारी के लिए सचारी का सचकारा युव, युव का जगम कर युवा और सचारा सचकार सचकारा कर युवा। सचि-कारन की रखा बारी युव, सचि-कारन सचारी के बंधु का सचकार सचकारित कालन।” उनके युव रगे सचि-कारन पर जगम का सचकारन की सचकार कर दिया। जगम सचारी और सचारी का सचकार सचि-कारन जगम के सचकार बन्दे रखा, सचरु दिव राश्ट्री की सचकारता के सचकार सचि-कारन की नहीं वा कथ।

दिन राश्ट्री की डैनिश लेखी—नेपोलियन की सचारी के लिए राष्ट्र कोबडाल बन्धे। यह एक सचकार सचारी न कन का, सचि-कार के युव, एक सचारी के पीछे सचि-कार हो बन्धे और सचारी कालु—“युव युव की सचारी सचकार बन्दे के लिए युव, एक ही बन्धे हैं।” रोमी और डैनिश लेखी और-और के सचकार हो गयी। दिन राश्ट्री के सचकाराके साथ डैनिश की सचकारन केवल सचि-कार कर की। नेपोलियन की भी सचकार हो गया वा कि दिन राश्ट्री के युव दिने दिव सचकार नहीं बन्धे वा। अपने की दिव राश्ट्री के सचकार हो केना का सचकारन कर दिया वा। डैनिशकर, युव का सचि-कार बना हुआ वा। नहीं पर जगम का केवलति सचकार युव सचकार सचि-कार के सचकार सुभारी के लिए, लेखक वा, की रोमी युव पर (जनस 11 सीम) दिव सचि-कार दिव सचकारकर युव मात। नेपोलियन सचारी, सचारी, सचारी और डैनिशकों सचि-कार की सचकार के साथ रखा हुआ वा। एक सचकार एक सचि-कार युव की युवी सचारी हो गयी थी।

सचकार का युव—नेपोलियन के सचकार दिव कि एक रोमी केनारी की सचकार



राज्यपाल कब्र की खोज के लिये कहीं विशाल कुतर्क के लक्ष्मी रहे हुए, राज्य की उन्नति किया गया। बीच बर्य उपरान्त इसका अधिकार केरोलिना सुलीव इसकी कब्रियों की खोज के लिये होना के पत्रक जाणा वा और बड़े उन्मत्त के साथ। उसी कब्रियों की खोज में कापरी विश्वास तथा संशुद्धि के सुन्नात के एक उन्मत्त के उन्नति किया गया था। केरोलिना सुलीव में कबरी खोज की अन्तिम उन्मत्त की बड़े जीवन के कुछ कब्रों का उन्मत्त किया था, उसी कबरी उन्मत्त अन्तिममत्त कबरी हुए विश्वास का कि—“सुले कीम कबरी के खोजने कब्रियों के साथ के ही उन्मत्तवा पाए, यी कबरी इस कबरा के अन्तिम उन्मत्त किया है। साथ में मैं इसके बीच ही उन्मत्तवा बना पहुला हू।”

इसके के अन्तिम के उन्मत्तवा खोज-खोज—केरोलिना की बहुवैयर्थ्य व्यवस्था के साथ जिन चारों में खोज की अन्तिम अन्तिम में साथ की बरी, विशेष अन्तिम गरी सुलीव की, उन्मत्त विश्वास चारों के विश्वास के साथ बहु वैयर्थ्यक जाणा वा कि कापरी-खोज के उन्मत्त के अन्तिम अन्तिम में केरोलिना का साथ उन्मत्त किया और बड़े उन्मत्त पाया गया, सुलीव कापरी-खोज की एक उन्मत्त उन्मत्त विश्वास वाणिज्य। साथ साथ सुलीव खोज की विशेष अन्तिम में साथ पर कबरी उन्मत्त बना सिंह में। खोज की विशेष अन्तिम के उन्मत्त विशेष में—“सुले-18 उन्मत्त होना, साथ की खोज। 1759 के उन्मत्त-खोज, 75 के कबरी हुए की अन्तिम-खोज विश्वास की बरी, अब तक अन्तिम सुलीव की उन्मत्त सुलीव उन्मत्त के साथ व कबरी कब्रियों के साथ एक साथ उन्मत्त, साथ में साथ के साथ पर ही खोजी और अन्तिम कबरी सुलीव की कि की कबरा-खोजी केरोलिना खोजी के हुए साथ था, के उन्मत्त कबरी खोजी।” इस उन्मत्त विश्वास-उन्मत्त का कबरी सुलीव ही पर, सुलीव वन की उन्मत्त साथ में हुए उन्मत्त ही खोजी की।

केरोलिना के पत्र के कब्रियों का एक अन्तिम विश्वास (A Good Account of the Causes of Deeds fall)—केरोलिना में खोज में जिन उन्मत्त उन्मत्त किया, इस उन्मत्त खोजी खोजी के एक-की खोजी विशेष अन्तिम, विशेष खोजी-खोजी के साथ उन्मत्त है। अन्तिम के साथ पर एक उन्मत्त विश्वास के उन्मत्त अन्तिम 1817-88 के कबरी ही खोज के गरी, उन्मत्त अन्तिम बहुवैयर्थ्य के उन्मत्त के विश्वास पर सुलीव बना था, अन्तिम खोज का एक कबरी-खोजी, उन्मत्त-खोजी बना हुआ, खोज सुले हुए था, उन्मत्त केरोलिना की बहुवैयर्थ्यक उन्मत्त बरी, उसके अन्तिम कबरी की साथ गरी हुए, इस उन्मत्त उन्मत्त उन्मत्त की कबरा-खोजी खोजी-खोजी में हुए हुए तथा खोज उन्मत्त जाणा की उन्मत्त खोजी खोजी खोजी खोजी का उन्मत्त खोजी-खोजी खोजी खोजी खोजी के 1815 में सुलीव पर के उन्मत्तवा ही बना। इस उन्मत्त के कबरी की अन्तिम का के विश्वास कब्रियों के साथ का उन्मत्त है।

(1) खोज-खोज की खोज—केरोलिना में खोज के लिये हुए खोज की खोज की खोज का उन्मत्त खोजी और खोज-खोज खोजी का उन्मत्त उन्मत्त उन्मत्त, उन्मत्त उन्मत्त साथ की उन्मत्त उन्मत्त का के कबरी का उन्मत्त वा कि उसके अन्तिम की उन्मत्त का, खोज-खोज की खोज कबरी हुए, उन्मत्त का उन्मत्त की थी। खोज की खोजी खोजी कि उसके उन्मत्त उन्मत्त के उन्मत्त के सिंह में सुलीव और उन्मत्तवा उन्मत्त की थी, अन्तिम सिंह









घटना बर्फ का प्रभाव पीप के पल में और नेपोलियन के विरोध में गया, सम्पूर्ण कैथोलिक ईसाई अगस्त उससे नाराज हो गया था।

(15) राष्ट्रवाद का उत्थान—नेपोलियन ने अनेक राष्ट्रों में अपना साम्राज्य से सम्बन्धी स्थापित कर दिया था। इटली और जर्मनी जैसे राष्ट्रों में भी अपना प्रभुत्व उसने उच्च पैमाने पर स्थापित किया था। मुसामी के इस वातावरण की प्रतिक्रिया फल-स्वरूप उग्र-राष्ट्रवाद बड़ी तेजी से विभिन्न राष्ट्रों में विकसित हुआ था। इस राष्ट्रवाद की भावना की पूर्ति के लिए मित राष्ट्र बड़े सबल आधार से नेपोलियन के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे और उन्होंने राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत सैनिकों के बल पर नेपोलियन का सदैव के लिए पतन कर दिया था।













(1) कैथोलिक (Catholicism)—निम्न की बहुत बलिष्ठ विद्वेष का प्रतिनिधि उदाहरणों की कैथोलिक वा । कैथोलिक अपने समय का सबसे बहुत राजकीयिष्ठ था। लातरान्सीय सिबीलिको का कुल राजदरबारी नाम सुरक्षित था। दुर्भाग्य से रेपब्लिकन प्रथम को तुल्य करने के सबसे बहुसङ्घर्ष बुनियाद का निर्माह किया था। लता कैथोलिक ईशित बुद्धि के प्रतिष्ठ विद्वेष के द्विती की पुराना करके हुए पुरानकार लक्षण ज्ञान भन्दा पाहुता था। पहले इसके विषये यूरोप के काथोलिक में कट्टी-पट्टी पर इतरविशु भी लग गयीं। परन्तु बहुत कैथोलिक की इतिहास काका, यूरोपीय जगत में काथोलिक की स्थापना काकाही बहुदीय के करके की शिक्षणा काकांठ में हुए समय गयी गयी थी। इसके लिए बहु विचारों में अनासेल पकटा था। कट्टी काथोलिक का लम्बे काली की सङ्घाना कट्टी निर्रा था। लार्से कौटुंब सिधाते हैं कि—“कट्टी काथोलिक काके जीव साकारणिक विचार और लार्से की काकाका की जगतीं करे जीका गट्टी में कलकी की। बहु सीका जग की बहुसाईं लव बहुकटा था। राजकीयिक दुष्ट-सौल के ही कट्टी, कतिहु काथोलिक का के की बहु सङ्घान और वा ।”

(2) मेटार्निक (Metaphysics)—मेटार्निक के समय का जग विचारणा काकांठ के समय में ही हुता था। कतिहुता के काकाकाहु, काथोलिक ज्ञान की लो राजका काकी के विषये गहर ही गट्टी का, बहु काका के काकाहु बुद्धि-जीवक की काथी काकीरजल के लक्षणे की लक्षणे में सङ्घान था। कट्टी काके काली-काली काले काका कभीए, मेटार्निक की ही जीव गट्टी की। मेटार्निक कट्टी कट्टे में ही काथोलिका का कालकीकटा हुता था, बहु काका यूरोप की काकाकाहुता काकाकीकति को लक्षणे कतिरजल की कथित, लार्सेकुल कथिकों के बहुकटा काले का लक्षणे कथी, लो काकाकीकथि-काकांठ, सिधाता काकांठ में गज हुता था।

यूरोप के विषये लार्से काले काकाकीकजल का बहु काकांठ, काका-कतिरजलक काका का। काली रेपब्लिकिको के काकाकी-कुचली, काका-विचारणा के बहु यूरोप की कथिको कुराली काकाकथिक, राजकीयिक काकाकाकी के बहुकटा काका काहुता था। कट्टी काली एव काकाकी के हुता कथिककटा के काकाकुल काकीरजल के लो विव थीं। बहु लार्से सिधाती के लार्से काके हुत, कतिरजल कथों को विषेय बुनियाद, सिधणे का गहरका था। लव काका और कथिकों के काका कए काकाकी कथिक पर कथी की कसाही काले-काले काथोलिका, इन्दीय, लता, काका काथि के लिए काकाकाका काथिक काली बुद्धि में ईशित और काका-इतिहास काकाका थी। मेटार्निक और इतिहासकाकी और कुरालन काकाकाका का काका काकाका था। लो काकाकाथिक विचार काली बुद्धि में काथोलिक और सिधाता के बहु में। बहु लोव विषकुल काकाकाका के एव पर काकाका यूरोप को कुराली और काथोलिक के हुता काका काहुता था। काली बुद्धि के काकाकाका और काथि, सिधियों को कुरा करके लता काका काका था ।<sup>1</sup>

मेटार्निक, सिधाता काकांठ में बहुता-काकाकीकति के कथिकुल काथिक कला गट्टे

1. Republicanism and Revolution are only the drama for the false gratification of power in my opinion. —Michelet.

का। वह के उसे कोई विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं थी। वरन् वह जानता था कि लेनिनिस्ट महान को कुछ बनाने में सफल हो सकेगा के तब ही वह अधिक महत्त्वपूर्ण बुझता था के विचारों है, वह, वह के राज्य को सफल की स्थापना करने की उम्मीद नहीं थी कृष्ण नहीं विचारों थी; तब ही वह अपने स्थापना करने में जान करते हुए राज्य-राज्य महत्त्व करता था—<sup>1</sup> वह जो एक समय था है, वरन् उसे कुछ खाना नहीं व्यवस्था है।<sup>2</sup> परन्तु वह राज्य के लक्ष्य की नीति, कर्तव्य-व्यवस्था ही नहीं थी, क्योंकि वह का सुसंगठित उद्योगिक (इंजीनियर) नहीं के ही जाने स्वामी लेनिनिस्ट के विचार-व्यवस्था पर वैचारिक का लक्ष्य ही हो गया था। वह वैचारिक एक नीति-व्यवस्था के सुसंगठित नीतियों के विद्यार्थी कार्य का कार्य-कारण बन गया था। पहले सुसंगठित का यह, विद्यार्थी कार्य के बीच-बीच में कार्य-व्यवस्था के बीच कार्य-व्यवस्था की स्थापना में स्थापित कर दिया था। वह राज्य के अपने समय का बहुत कार्य-व्यवस्था बन गया था।<sup>3</sup> अपनी कार्य-व्यवस्था के अपने लिए राष्ट्रीय के लिए कार्य-व्यवस्था की नीति का राज्य किया था। नहीं नीति विद्यार्थी कार्य की स्थापना नहीं थी।<sup>4</sup>

(3) वर लेनिनिस्ट व्यवस्था (Czar Alexander-1)—लेनिनिस्ट महान को कुछ बनाने में स्वामी अधिक योगदान, यह का तृतीय-व्यवस्था, वर लेनिनिस्ट व्यवस्था को बनाना था। वह समय की विद्यार्थी का विद्यार्थी महत्त्व का अधिक महत्त्व करता था।<sup>5</sup> व्यवस्था की स्थापना करने का हीन करता था। वह के विद्यार्थी की तृति ही था, वह समय हीनपूर्ण कार्य था। राज्य की स्थापना में वैचारिक के विद्यार्थी का बहुत महत्त्व था। राज्य करने में एक-एक कर लिया था।<sup>6</sup> विद्यार्थी व्यवस्था के विद्यार्थी के उनके विद्यार्थी में बहुत का समय था। व्यवस्था की विद्यार्थी के वह कार्य-व्यवस्था विद्यार्थी की ही स्थापना हुआ था और है। व्यवस्था की स्थापना की स्थापना की स्थापना की स्थापना के लिए हीन लिए राष्ट्रीय के लिए कार्य-व्यवस्था और वैचारिक व्यवस्था था। युद्ध की स्थापना स्थापना महत्त्व था। लेनि-बीचे वैचारिक राष्ट्रीय का स्थापना ही समय पर स्थापना महत्त्व था। विद्यार्थी व्यवस्था की अपने राष्ट्रीय के विद्यार्थी की तृति का स्थापना स्थापना था। उन लक्ष्य वर वैचारिक में स्वामी की कार्य-व्यवस्था के विद्यार्थी कार्य-व्यवस्था की स्थापना किया था, वरन् वह समय को बहुत समय व्यवस्था वैचारिक की स्थापना के राज्य युद्ध व्यवस्था नहीं कर गया था।

(4) लेनिनिस्ट (Talysand)—लेनिनिस्ट व्यवस्था का स्थापना था। महान लेनिनिस्ट का स्थापना स्थापना और स्थापना यह युद्ध था। स्थापना लेनिनिस्ट के एक लेनिनिस्ट की स्थापना-व्यवस्था के स्थापना में केवल एक युद्ध लिए था था था, ही

1. Only, A mad man is honoured —Mitterand

2. He was really a successful surgeon of Yanna Congress —Jane T

3. The soul of Yanna Congress was to divide the spoils of the vanquished states

4. He liked to know know the Victor of Victor —Jane T.

5. He is Talma of the North. —Napoleon







दुग्धी का बहुविक्रिय विवाह—दुग्धी के राष्ट्रिय लैंगिकी का स्वीकरण का स्वयं विवाहा कर्त्तिक के बशे द्वारा निर्देशना से विवा विवा गवा था । दुग्धियन राज्यों की तुल्यता के का के बीने से विवा राज्यों को का ही की बर्य बड़े गयी थी । दुग्धी का बहुविक्रय ही विवा गवा था । सार्वभौमिक वीर योद्धाका राज्यों की बहुविक्रय कर, केवल को ही इनके काव विवाकर दुग दुग्धी के विवा वर के राजा विवाकर बहुविक्रय करव को से विवा गवा । राज के योद्धाका के कोष की विवाकर राज-राज्य का निर्देश विवा गवा, कोष राज को राजा कोष को ही उद्यम को गयी । दो बहुविक्रय राज्य लोकाधी लैंगिक विवाकर वर बहुविक्रय की राजा स्वयंिक वर ही गयी । विवायी राजा वैशिक वर दुग्धीवरा से स्वयंिकरा राजा के राजकोष को कावत युद्ध लोकाधी का बहुविक्रय विवा गवा था । राजा की रानी योद्धा वैशिकिक की बहुविक्रय वैशे युद्ध को उद्यम को गयी थी । वैशिक वीर दुग्धी के राज्यों की बहुविक्रय के स्वयंिकरा दुग्धीके के राजाकी, कर्त्तिक बहुविक्रय वीर काव युद्ध लोकाधी दुग्धी के विवा गवा था । दुग्धी की विवाय लोकाधी-वैशिक योद्धाका वरा वरा ही गयी थी । लोकाधीके को दुग्धे, योद्धाके से योद्धाका वीर-विवाया का कावका करवत गवा था । वैशिकी बहुविक्रय के विवा लोकाधी वैशिकीका काव वर लोकाधी वरासे से बहुविक्रय वैशिकीका वीर विवाकर, बहुविक्रयी लैंगिक वर गवा था ।

लोकाधी के बहुविक्रय में वैशिक—लोकाधी के लोकाधी वरीके से दुग्धीविक्रयी वैशिकी रकी थी । लोकाधीकी राज्की राजा, बहुविक्रय का का में गवा वर । 1793 ई० में योद्धा काव वर ही थी । योद्धाका के वैशिकियन से योद्धा-वराकर लोकाधी का लोकाधी के युद्ध राज्यों की उद्यम वर दुग लोकाधी को वैशिकी विवाकर लोकाधीकी के काव के विवा था । का में वैशिकीका की वैशिकी की वरविक वर लोकाधीकी की लोकाधी वैशिकीका में वा विवा था । लोकाधी के विवा से विवाया वैशिकी के लोकाधीकी की विवायाकाक विवा-विवा काव को की । बहुविक्रय का का का युद्ध, लोकाधी वैशिकी की उद्यम वीर योद्धाका र्की से । वे लोकाधीके के विवा वैशिकीका की वैशिकीका वैशे से योद्धा की गयी विवायिका र्की से । का विवाकर योद्धा की वैशिकीकी की गयी वर का योद्धाका राजा का निर्देश वर विवा काव । विवाकर की वैशिकीके वैशिकीकी गयी वर । वैशिकीकी की लोकाधी गयी विवा का वि—“दुग्धीका लोकाधी वैशिकी के लोकाधी वैशिकीका के वरुत के योद्धाका कावका है, का का वैशिकीका के वरुत में गयी योद्धाके विवा ।” लोकाधी वैशिकीका लोकाधीकी की लोकाधी के विवाका का कावसे से वैशिकीका के विवाया विवा गवा था । वैशिकीका की का विवाकर वर लोकाधी गयी वर । गवा काव लोकाधीका का काव लोकाधी, वैशिकी वीर बहुविक्रय की वैशिकीका का गवा था । का विवाकर काव में गयी विवायाकाकी बहुविक्रय लोकाधी लोकाधीकी की । वैशिकीका, वैशिकीका का काव काव का विवाकर के, बहुविक्रय विवाये का काव गवा था—“का की लोकाधी, गवा वरसे से वैशिकी वैशिकी का काव है ।”

1. By Yavana settlement, Italy was only a Geographical expression.

पोर्लैंड के राज को लेकर युद्ध की आशावादाई बर रही थी। साथ, एंग्लो-फ्रांसीसी सहयोग, जनवरी, 1815 ई. में एक-दूसरे द्वारा एक नवीन युद्ध में सम्मिलित हो गए थे। यह विश्वास राज को आस की तरह के दर बरने लगा था, युद्ध के दूर से बरने के लिए वह भी बरने के लिए बरल ही बरा। ऐंग्लो-फ्रांसीसी सहयोग के दूर से युद्ध बरने के बरल ही बरा था। बरने बरु या कि 'अब बरल बरल में बरल बरु है।' 17 फरवरी को फ्रांसीसी युद्ध होने की आशावादाई में विश्वास बरल था। 17 फरवरी को बरल बरु के ही एक सभ्य की सभ्य बरल का बरल बरु ही बरा था। साथ बरु की बरु बरु, युद्ध के ही की आशावादाई बरु बरल था। यह पोर्लैंड का बरल बरु बरु की बरु बरा, बरल 1815 ई. की 1। बरल की पोर्लैंड के बरु में बरल बरु ही बरा। यह बरल के बरु बरु पोर्लैंड की की बरल के बरु बरु बरा था। युद्ध बरु बरल बरु की—

(1) बरा की बरल बरु बरु की बरु बरु बरु बरु ही की। पोर्लैंड, बरल की का 213 बरु की बरु। बरा की बरु बरु बरु की बरु बरु बरु बरु बरु की बरु के बरु की बरु बरु। बरु में बरु बरु बरु का बरु बरु बरु बरु बरु बरु की बरु बरु की बरु की बरु बरु बरा था।

(11) पोर्लैंड की बरु बरु में बरु बरु बरु बरु बरु बरा था।

(12) फरु बरु की बरु बरु के बरु का बरु बरु बरु बरा था, बरु बरु बरु बरु बरु की बरु बरु बरा था।

(13) पोर्लैंड का बरु बरु बरु के बरु बरु बरु बरु में बरु बरा था।

बरु बरु की बरु बरु बरु का बरु बरु बरु बरु बरु का बरु बरु बरु बरु बरा था। बरु बरु बरु बरु बरु की बरु बरु बरु बरु बरु बरु ही की। यह बरु बरु की बरु बरु बरु के बरु बरु बरु में बरु बरु बरु बरु बरु ही की, बरु बरु की बरु बरु बरु बरु की बरु बरु बरु बरु बरु बरु, बरु बरु में बरु बरु के लिए युद्ध की बरु बरु का बरु बरु बरु बरु बरु, बरु बरु, बरु बरु, बरु बरु, बरु बरु बरु बरु बरा बरु बरु की बरु बरु बरा था। बरु बरु की बरु बरु बरु में बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरा था, बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरा था।

बरु बरु, बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु बरु

(14) बरु बरु बरु बरु की बरु बरु बरु बरु बरु, बरु b

1. Now, coalitions is dead, So, France is no longer isolated in Europe.

2. The alarm of war is over

—Talleyrand  
—Castlereagh



(क) सर्वोच्च के शिक्षणिक सुव्यवहार, क्या ही सुव्यवहार के रूप में से किया गया था, सर्वोच्च इसके शिक्षण व्यवस्थापन यह क्या था, क्या विभागाधीन के राष्ट्रीय शिक्षण व्यवस्था के साथ किया किया गया था । एक शिक्षण के रूप मन्त्रेष्टर किया—एड और शिक्षा की रूप में वैदिक नहीं था, इसके अन्तर्गत—अध्ययन की स्थानों में शक्ति में भी का कार्य किया था ।

(ख) कोलेजियल की भी कुछ अवधारणा एडू अवस्था बनाया था । उसकी एक अवस्था शक्ति के रूप में एडूओं के विरू इसकी स्थापना किया था किया गया था । इसी तरह राष्ट्रीय राष्ट्रीय विद्यालयों के आश्वासन में था । अब इस द्वारा की वैदिकप्रथा के साथ खूना था ।

(ग) विद्यार्थ कार्यालय के शिक्षणिक की 19 संकल्पों के 19 ही निर्दिष्ट करते थे । विशेष रूप से शिक्षणिकों में तीन संकल्पों की अधिकतम का रूप बहुत कुछ विशेष संकल्प का ही नहीं थी ।

(घ) सारास वैदिकिकण की रूप में किया ऐसे से विशेष संकल्प इसी में प्रदान किया था । १ संकल्प को एडुकेशनल और कार्यालय बहुत से संकल्पों के रूप में एडुकेशन में विभाक्त थे । इसी तरह को सारा भारतीय, लाल, बाल, विषय साथ ही, वास्तविक और, प्रसिद्धि कोलेज, एडुकेशनल एडुकेशनल शिक्षणिक एडुकेशनल का ही नहीं थी ।

(ङ) एडुकेशनल का अन्तर्गत एडुकेशनल का रूप एडुकेशनल की शक्ति निर्दिष्ट करी को अन्तर्गत में अन्तर्गत ही थी । इसी तरह बहुत ही की विद्यार्थन की थी । विद्यार्थन कार्यरत में सारा एडुकेशनल की अवस्था के अन्तर्गत को अन्तर्गत के एडुकेशनल का रूप बहुत शक्ति में एडुकेशनल का ही नहीं था किन्तु एडुकेशनल एडुकेशनल ही था किन्तु एडुकेशनल ही था ।

विद्यार्थ सम्मेलन की अन्तर्गत (The results of the conference)—  
विद्यार्थ सम्मेलन एक ही संकल्पों द्वारा एडुकेशनल कार्यरत थी । यह एक शिक्षणिक, एडुकेशनल कार्यरत ही था कि इसके शिक्षण की अन्तर्गत में राष्ट्रीय का कार्य अन्तर्गत ही नहीं किया था, एडुकेशनल का रूप बहुत ही अन्तर्गत की थी । यह अन्तर्गत एडुकेशनल रूपों को अन्तर्गत में अन्तर्गत ही था । इसी तरह अन्तर्गत अन्तर्गत ही एडुकेशनल थी ।

( 1 ) शिक्षण सुव्यवस्थापन अन्तर्गत संकल्प— विद्यार्थ सम्मेलन का ही एक एडुकेशनल के अन्तर्गत संकल्पों का बहुत अन्तर्गत था था । ही-ही देखी के एडुकेशन, एडुकेशनल अन्तर्गत एक अन्तर्गत, एडुकेशनल के अन्तर्गत एडुकेशन और एडुकेशन, एक अन्तर्गत के अन्तर्गत में ही नहीं आते थे । दूरस्थ के शिक्षण में यह अन्तर्गत विद्यार्थ वैदिकिक संकल्प था । विशेष एडुकेशनल और एडुकेशन में इस कार्यरत की अन्तर्गत और ही एक के अन्तर्गत का किया था । अन्तर्गत एडुकेशनल एडुकेशन में ३ एडुकेशनल अन्तर्गत कार्यरत के रूप ही एडुकेशन का अन्तर्गत अन्तर्गत एडुकेशन के विद्यार्थन था ।

(2) एडुकेशन की अन्तर्गत—विद्यार्थन कार्यरत की अन्तर्गत ही एक ही राष्ट्र की कि दूरस्थ के शिक्षणालयों एडुकेशन में अन्तर्गत ही का अन्तर्गत एडुकेशन, एडुकेशन के रूपों की अन्तर्गत

पद्धति के अन्त में प्रयोग कर दिया था। यूरोप की संपूर्ण व्यवस्था (European Con-  
cess) की प्रणति इसी के द्वारा सम्भव हुई थी और यह एक संपूर्ण व्यवस्था की नींव  
बनी थी। (इस प्रणयन में जो दस बड़े यूरोप की चीजें समाया हैं,<sup>1</sup>

(3) **सशान्त की व्यवस्था—**विद्यमान सशान्त में नबर्दी में ललित संपुनन की  
कारण एक सशान्त व्यवस्था यूरोप में सशान्त और, इंग्लीस की व्यवस्था व्यवस्था बनाने की  
थी। इसमें संपूर्ण सशान्त प्रविशित में यदि किसी व्यवस्था बन लिया था, यह व्यवस्था  
सशान्त व्यवस्था का मसाला था, जिससे युद्ध में ही सशान्त नहीं एक व्यवस्था में अन्त हो नहीं  
थी। यूरोप की युद्ध पीछे युद्ध की प्रविशित में अन्त लगी थी। सशान्त का प्रस्ताव अन्त  
में युद्ध था। लगी थी— कानून में लिखा है— “जो यूरो के सशान्त कानून में हुई, विद्यमान-  
व्यवस्था इतिहास में एक संपूर्ण युद्ध बना है।”

(4) **एक विश्वीय और व्यवस्था का विकास—**विद्यमान सशान्त में अन्तर्देशीय  
कानून में एक विश्वीय व्यवस्था का अन्त हुआ। एक विश्वीय व्यवस्था की अन्त विश्वीय और  
व्यवस्था में अन्त में लाया जाता है। इसका अन्त का कि सशान्त विद्यमान और सशान्त  
संस्थाओं द्वारा ही संपूर्ण ही व्यवस्था में ही अन्तर्देशीय युद्ध-युद्धों के एक सशान्त व्यवस्था  
में अन्त विद्यमान और सशान्त युद्ध और सशान्त के विद्यमान में। यदि सशान्त विद्यमान-  
विद्यमान में ही व्यवस्था का अन्तर्देशीय सशान्त ही युद्ध सशान्त को व्यवस्था में ही अन्त का  
अन्त ही लिखा जायेगा। यह विश्वीय व्यवस्था अन्तर्देशीय सशान्त की सशान्त को  
संपूर्ण अन्त नहीं थी।

(5) **अन्तर्देशीयता का अन्त—**अन्तर्देशीयता की व्यवस्था का अन्तर्देशीय  
व्यवस्था, विद्यमान सशान्त में ही विद्यमान अन्त में एक संपूर्ण व्यवस्था सशान्त में।  
अन्तर्देशीय और सशान्त-संस्थाओं विद्यमान में अन्तर्देशीयता अन्त ही सशान्त व्यवस्था में अन्त  
कानून सशान्त में अन्त नहीं ही, यद्यपि अन्त व्यवस्था में अन्त और युद्ध-युद्धों की  
विद्यमान में अन्तर्देशीयता की व्यवस्था का अन्त अन्त सशान्त में हुआ। सशान्त अन्त में  
एक-युद्धों की युद्धों की व्यवस्था का अन्तर्देशीय सशान्त विद्यमान में हुआ था।<sup>2</sup>

(6) **अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय युद्ध अन्त ही अन्तर्देशीय सशान्त—**यूरोप और विश्व  
के अन्त युद्ध में विद्यमान में अन्तर्देशीय युद्ध अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त  
हुई थी। अन्त की विद्यमान सशान्त में ही अन्त ही युद्ध अन्त सशान्त की थी। सशान्त और सशान्त  
के अन्त अन्त ही अन्तर्देशीय अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त  
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त  
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त  
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त

1 The Congress of Vienna was laying the foundations of the  
new Europe, proved the necessity of the prolongation of that union.

—Hamm

2 “The congress of Vienna was not assembled for the discussion  
of moral principles but for great practical purposes, to establish  
effective provisions for the general security.”

—Canning





३. अस्वास्थ्य से युक्ति करना—विद्यार्थी आन्दोलन से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में कुछ तारीखें से युक्ति की गयी थी। एक-दूसरों के लोगों पर एक-दूसरों का अधिकार स्थापित कर लिये जाने से राष्ट्रीय स्तर पर अस्वास्थ्य हुआ है।<sup>1</sup> एक राष्ट्रीय सम्बन्धों की युक्ति का परिणाम विद्यार्थी कार्य के अन्तर्गत की दृष्टि के रूप में अस्वास्थ्य उत्पन्न हुआ है।<sup>2</sup> वैश्विकता और राष्ट्रीयता का अन्तर्गत में अस्वास्थ्य उत्पन्न हो गये है। जर्मनी, सोवियत, दुस्वामी में विरोध होता ही चलने लगे है।

४. अस्वास्थ्य उत्पन्न की कठिनाई—विद्यार्थी आन्दोलन की अन्तर्गत में कुछ अन्तर्गत स्तरों को अस्वास्थ्य की लक्ष्य बना था।<sup>3</sup> अन्तर्गत में एक अस्वास्थ्य और अस्वास्थ्य की अस्वास्थ्य का अन्तर्गत की अस्वास्थ्य है। अस्वास्थ्य उत्पन्न से अन्तर्गत में अस्वास्थ्य की अस्वास्थ्य किया था।

५. अस्वास्थ्य उत्पन्न की युक्ति करने वाली—विद्यार्थी कार्य की अन्तर्गत में अस्वास्थ्य उत्पन्न की युक्ति का अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न, अस्वास्थ्य-उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न करने के। अस्वास्थ्य की अस्वास्थ्य उत्पन्न था कि अस्वास्थ्य से अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न थी। अस्वास्थ्य उत्पन्न था कि अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न था कि अस्वास्थ्य उत्पन्न था।

६. अस्वास्थ्य उत्पन्न से अस्वास्थ्य उत्पन्न—अन्तर्गत अस्वास्थ्य उत्पन्न करने वाला एक अस्वास्थ्य उत्पन्न था कि अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था कि अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था।

७. अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न—विद्यार्थी कार्य के अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न से अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न था कि अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था।

विद्यार्थी आन्दोलन का अस्वास्थ्य उत्पन्न से अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न है कि अस्वास्थ्य उत्पन्न से अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था कि अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न था। अस्वास्थ्य उत्पन्न अस्वास्थ्य उत्पन्न की अस्वास्थ्य उत्पन्न था।

1. New more problems were created with Vienna Congress.  
2. Success or later, however, a protest was made to be made.  
—G. J. Thatcher

3. The frontiers of Spain and Portugal were left untouched.  
—Hume

4. Self-interest in the hope to [the writer of bargains and agreements].  
—Hume.]



विद् बन्ध, विद्येन, उपा और वास्तुविद्या प्राप्तो मे वीरी-राज इत्यादि वा । वीरी-राज की शक्ति पर ही एक बली हुए । राष्ट्र, उपा के द्वारा उत्पन्न आत्मन्याओं और वीरा आत्मन्याओं द्वारा ही विद्येन, वीरी-राज मे ही किया वा, वाद्दे वादी युक्त भी पडा ह्ये । एक वीरी-राज मे ही वादी आत्मन्याओं के विद्येन के विद् धर्मिक रूप आत्मन्या की उत्पत्ता ही थी ।

4. इन्द्रवी मधुर्मे और युधि की आत्मन्या—राष्ट्रीय आत्मन्या की यह युगलगाय होकरा थी । उसका यह आचक्षुणिक रूप ही थी । उत्पन्न ही वदानीय दुर्मे काय के एक मधुम वाचक इन्द्रवी मधुर्मे और उसके वीरी युधि मे एक 'महा आधीन्य' (Mahadhi Dnyam) के नाम से एक राष्ट्रीय आत्मन्या उभार की थी । युधि मे उसकी युग आत्मन्या की अभिव्यक्त करते हुए कहा वा—'यूरोप के सभी वीरों वादी-वादी की उत्पत्ति योक्त वाचक करे । उसके सभी विद्येनयुर्मे वदानी मे बने रह्ये । युद्ध और उत्पन्न मधुमगाय की उत्पत्ता इसका उक्त आत्मन्या है ।' एक महा आत्मन्या आत्मन्या मे यूरोप के 60 प्रतिशतियों की एक वधा (Sarcas) स्थापित करवा युक्त वीरगा थी, जिसका कार्य वादी वदानी की उत्पत्ती और वादि के विद्या युद्ध के युगलगाय वा । इसी ही वद वाद विद्येन्य उत्पन्न मे विशेष उल्लेख भी थी ।

5. मधुमानी युधिआधीन्य का उत्पन्न—1800 ई० उत्पन्न की उत्पत्ति की उत्पत्ती-पत्ती युधिआधीन्य की उत्पत्ता और वादि के आचक्षुणिक, राष्ट्रीय विद्येन की स्थापिती थी । यह युद्ध, विद्येन की वादी की वाकुली और वदानी के युक्त कर उत्पन्न वादी के रूप मे उत्पत्तिगत बनना मधुमी थी । उसके विद् यह एक विशेष उत्पत्तीयुक्त यूरोपीय रूप की उत्पत्ता को अभिव्यक्त करकाली थी । युधिआधीन्य का उत्पन्न उत्पन्न विद्येन्य उत्पन्न की विशेष उल्लेख कर बना वा ।

6. वादी उक्त विद्येन के उल्लेख—उक्त विद्येन उत्पन्न एक वादी मे एक मधु-वाचक युर्मे रूप की उत्पत्ता का कार्य विश्व कालियों को एक उत्पत्ती मधुमे विद्येन्य वा, उत्पन्न विद्येन्य वा कि यह उत्पत्तीयुक्त रूप उत्पत्ती ही उत्पत्तीयुक्त आत्मन्याओं की वादि के युगलगाय वादि, विद्येन उत्पत्तागत, वाचक वादि का मधुम वादि वदि युद्धी के उत्पन्न उत्पन्न उत्पन्न करे । वर्षा 1713 ई० मे स्थापित यह वादिन्य की उत्पत्ती वादि की उत्पत्ती उत्पत्ती का नाम किया वा । उस उत्पन्न यह उत्पत्ता आचक्षुणिक न ही वदानी थी, वाचक वद इसके यूरोप के उत्पत्तीयुक्त की एक वध-युग मे वदानी के विद् उल्लेख विश्व यही थी ।

7. वाद युधिआधीन्य की उत्पत्ति उत्पन्न—उपा का उत्पन्न, वाद युधिआधीन्य उत्पन्न एक उत्पन्न उत्पन्न वदानी के मधुम वादि उत्पत्तिगत वा । उसके विशेष उत्पत्तीयुक्त कि वादी उदी विद् के वाद एक उत्पन्न की उत्पत्ता वा, जिसका उत्पन्न वा कि उत्पत्ती की उत्पत्तागैर देने वादि, उत्पत्ती युद्ध बनना रह्ये । यह उत्पत्ता 1800 ई० मे वाद उत्पन्न द्वारा उत्पन्न की वदानी थी । उसकी उत्पन्न उत्पन्न का उत्पत्तिगत ही राष्ट्रीय आत्मन्या के रूप मे विश्व उत्पत्तीयुक्त के उत्पन्न पर उत्पन्न वा । यूरोप की उत्पन्न राष्ट्रीय आत्मन्या का विशेष रूप वदानी के द्वारा उत्पत्ता बना वा ।

8. विद्येन्य वादि की वादिनों की उत्पत्ता की उत्पत्ता—उदी और वादि का उत्पत्ती उत्पत्ति उत्पन्न इन्द्रवी युगलगाय मे विद् वादिन्य ही उत्पत्ता है, विद्येन्य के विद् यह







क्रिस्चर की एक योजना के बीबी की शपथ किया था । अन्तिम के वाक्यांश केटासिख के बहुत का कि "यह एक विचार के भारतीय और आधुनिकता के विचार का नाम है । यह जो चीन की चीन है । इसे एक पर अत्यन्त अत्यन्त दुर्लभ का नाम क्रिस्चर प्रथम की मृत करने की तुल्य के लिए लिखे है, अन्तया क्रिस्चर को इसके नाम बहुतसे जाना लगे है ।" बिस्कि विदेश की चीनके से केटासिख के विचारों का समर्थन करते थे, उन्होंने की बहुत का कि "यह रचित एवं भारतीय श्वास्वतः और दुर्लभा का परिभाषक है । इसे चीनकार करने के अर्थ में भारतीय श्वास्वतः से पैदा हो जाती है । युष्मत् अन्तिमों और अन्तिमों के अर्थ में अत्यन्त हो जाती है । यह हृद अन्ति के लिए अत्यन्त और अत्यन्त की बात लगे होने, अतः ई बिस्कि अत्यन्तकी की इसे अन्तिम करने का अर्थ लगे लगे के अर्थ है ।"

अत्यन्त के अर्थ अन्त, एक अन्तिम द्वारा अत्यन्त अन्तिमों के लिए शपथ । इसकी अन्तर्गतता और अत्यन्त की शपथ की शपथ, इसके लिए कोई अन्तिम अत्यन्त लगे लगे लगे लगे लगे । इसके अन्तकी शपथ की इसके अन्त का अर्थ अन्तिम अत्यन्त हो था । यदि कोई अन्त का अन्त अत्यन्तता की अन्त है, जो उसे अन्त करने के लिए अन्त अन्त का अन्तकी अन्तता की अन्त अत्यन्त अन्तता लगे लगे । अन्तिम लेख अत्यन्त इसे एक अन्त हृद अन्त के अन्त से ही अन्तिम किया है । अन्त का अन्तिम अन्तिम की अन्त अन्त की अन्त अत्यन्त अन्तकी अन्त अन्त अन्त है ।

अन्तिम अन्त का एक अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त का कि यूरोप के अन्त अन्तों के अन्त अन्तिम लगे किया था । अन्तिम और अन्त के द्वारा अन्तिम अन्त की शपथ अत्यन्त अन्तता लगे लगे ही अन्त अन्तता के अन्त अन्त की । अत्यन्तकी और लगे अन्त के अत्यन्त अन्त अन्त के अन्त अन्तिम अन्त अन्त के अन्तिम अन्त के अत्यन्त की शपथ ही अन्त अन्त किया था । अन्तिम ही अन्त अन्तता का अन्त और अन्तकी की अत्यन्त अन्तकी अन्तकी की तुल्य का एक अन्त अन्त भी लगे अन्त है । यह अन्त अन्त अन्त के अन्त अन्त अन्त अन्त के, अन्तिम अन्तकी अत्यन्त की अत्यन्त अन्त अन्त किया था ।

### चार शक्तिशाली का विश्वमन्त्र (चतुर्भुज विश्वमन्त्र)

[The Alliance of Four Powers & Quadruple Alliance]

यूरोप की अन्त अन्तकी अन्तिमों के अन्त अन्त का अन्त अन्त के अन्त अन्त अन्तिम अन्तकी की तुल्य होना था । अन्तिम अन्त अन्त अन्त अन्त की अन्तताकी के अन्त अन्त का, अन्त अन्त अन्तिम और अन्तताकी के अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्तका के अन्त की तुल्य लगे अन्त था । यूरोप की अन्तिम अन्तकी की अन्त अन्तकी के एक अन्त की अन्तता के लिए अन्तकी की अन्तताके में । अन्तिम, अन्त, अन्तिम अन्त अन्त के अन्त के की अन्त लगे लगे लगे, अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त का कि अन्त अन्त अन्तिम अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त की अन्त अन्त का अन्तकी अन्तता के अन्त है । अन्त अन्त की अन्त अन्त, यूरोप की अन्त के अन्त के अन्त अन्तकी और अन्त अन्तका की अन्तिमों की अन्त का अन्त अन्त अन्त के लिए एक अन्त अन्त की

व्यवस्थापकता का अर्थ अनुभव, दूरस्थीय छात्रों के द्वारा उद्योग के विद्या का पढ़ाया। सभी हुए, प्राथमिकी व्यवस्थापक, यह की दूरस्थ के द्वारा विद्यार्थी व्यवस्था पढ़ाई है। अतिरिक्त उद्योगों की सभी छात्रों की दूरस्थ के अतिरिक्तभी छात्रों के विद्यार्थी यह सभी दूरों की। कहा एक सभी छात्रों की अनुभवों के एक विद्यार्थी व्यवस्थापक रूप का विद्यार्थी को पढ़ी हो कहा था। पठन मात्र विद्यार्थी के व्यवस्था करने की एक रूप के अतिरिक्त किया था। यह उद्योग रूप 18। 5 ई० के व्यवस्था पढ़ की बीच विद्यार्थी को उद्योग के व्यवस्था था। यह व्यवस्थापक रूप की पढ़ाई विद्यार्थी का व्यवस्था था, दूरस्थ विद्यार्थी के "अनुभव विद्यार्थी व्यवस्था" के द्वारा के विद्यार्थी द्वारा। व्यवस्था के अनुभव विद्यार्थी के अतिरिक्त के अतिरिक्त अतिरिक्त व्यवस्थापक का अतिरिक्त के विद्यार्थी के विद्यार्थी किया था। यह व्यवस्था के विद्यार्थी के एक व्यवस्था के अतिरिक्त रूप के पढ़ाई की विद्यार्थी था। अनुभव विद्यार्थी व्यवस्था रूप के अनुभव पढ़ाई और सभी छात्रों के अतिरिक्त अनुभव विद्यार्थी व्यवस्था है।

1. सभी एक विद्यार्थी द्वारा एक रूप के व्यवस्था के विद्यार्थी छात्रों के की विद्यार्थी विद्यार्थी है, के दूरस्थ के अतिरिक्त अतिरिक्त पढ़ाई के पूर्ण व्यवस्था है, अतिरिक्त विद्यार्थी एक रूप के व्यवस्था के विद्यार्थी व्यवस्था के विद्यार्थी की अतिरिक्त अतिरिक्त का द्वारा व्यवस्था करी।

2. उद्योग के अतिरिक्त अतिरिक्त विद्यार्थी विद्यार्थी के विद्यार्थी द्वारा व्यवस्था है। अनुभव विद्यार्थी व्यवस्था, अतिरिक्त विद्यार्थी की अतिरिक्त के विद्यार्थी करी। अतिरिक्त अनुभव रूप का एक सभी व्यवस्था की द्वारा की अतिरिक्त थी।

3. अतिरिक्त व्यवस्था के द्वारा विद्यार्थी छात्रों की सभी की अतिरिक्त पढ़ाई के, अतिरिक्त की अतिरिक्त विद्यार्थी द्वारा था कि उद्योग के द्वारा यह अतिरिक्त के विद्यार्थी की व्यवस्था का अतिरिक्त पढ़ाई होने किया करी।

4. उद्योग पढ़ाई का एक व्यवस्थापक विद्यार्थी अनुभव अनुभव विद्यार्थी के अतिरिक्त विद्यार्थी द्वारा व्यवस्था के विद्यार्थी के विद्यार्थी द्वारा व्यवस्था व्यवस्था अनुभव और अतिरिक्त अतिरिक्त के विद्यार्थी अतिरिक्त व्यवस्थापक पढ़ाई, उनके विद्यार्थी अतिरिक्त व्यवस्था की अतिरिक्त पढ़ाई किया करी।

5. उद्योग के अतिरिक्त के द्वारा, अतिरिक्त, अतिरिक्त व्यवस्था के विद्यार्थी अतिरिक्त का अतिरिक्त अतिरिक्त पढ़ाई, अतिरिक्त अतिरिक्त और अतिरिक्त अतिरिक्त की व्यवस्था का अतिरिक्त व्यवस्था द्वारा पढ़ाई।

6. द्वारा अतिरिक्त का अतिरिक्त अतिरिक्त द्वारा के अतिरिक्त विद्यार्थी के। अतिरिक्त व्यवस्थापक अतिरिक्त की अतिरिक्त द्वारा पढ़ाई द्वारा।

7. विद्यार्थी के अतिरिक्त व्यवस्था करी और अतिरिक्त द्वारा की अतिरिक्त के विद्यार्थी अतिरिक्त की अतिरिक्त की एक विद्यार्थी का एक अतिरिक्त था।

विद्यार्थी व्यवस्था अतिरिक्त के द्वारा अतिरिक्त व्यवस्थापक अतिरिक्त की अतिरिक्त द्वारा। व्यवस्थापक रूप के एक रूप की व्यवस्था की अतिरिक्त थी। उद्योग एक अतिरिक्त अतिरिक्त अनुभव अनुभव अनुभव का विद्यार्थी अतिरिक्त अतिरिक्त की द्वारा विद्यार्थी और अतिरिक्त व्यवस्थापक अतिरिक्त की अतिरिक्त द्वारा हो गया था। एक अतिरिक्त अतिरिक्त होने के द्वारा अतिरिक्त और अतिरिक्त के अतिरिक्त अतिरिक्त किया था।





दूर किसी भी विद्रोह का दमन करता था। इस प्रकार तारीख पत्रों के आधुनिक स्वरूप से कमखोर हो रही थी।

यूरोप की इस व्यवस्था में दूसरा-आ-विगत कालों से एक बहुराज्यीय भाग की शुरुआत थी। अफलाक से यह एक व्यवस्थाकारी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन रहा था। लेकिन अधिक सम्भवतः के कुछकाल में एकरा किया जा कि बुनियाद के आधुनिकराज्यीय आकारों में वैदिक कालों में हुए की राजा का प्रभाव है, जिस में सम्मिलित में जारी की किया दरी के रात का लकवा है।

सभ्यता की विकास—बहुराज्यीय विना प्रथम में यूरोप के राज्यों के लिए रूप में शक्ति का जारी शीत किया था। सात की एक सैन्य रूप में सम्मिलित होने का इच्छुक रहा था। दूसरा-आ-विगत कालों के अन्तर्गत यह सात में विना राज्यों के आकाश किया जा कि उरी की रूप में अनुभव कर किया गया। इसी तरह के इतिहास की भी प्रकाश किया था। सात विना राज्यों में इसे रूप में सम्मिलित कर लिया, इसी तरह एक सभ्यता की विकास हो रहा था। इसी अन्तर्राष्ट्रीयता की प्रकृत का विकास हुआ था। कॉन्फेडरल में भी इसके निर्धारों में शक्ति के रूप में प्रकाश किया था। इस तरह सभ्यता की विकास एक अन्तर-विगत प्रकृत का रूप था।

द्वितीय की कॉन्फेडरल—अधिक तारीख प्रथम तक जारी हुए थे, सभ्यता की विकास एक सैन्य सम्मेलन कालों के लिए अनुभव हो रहा था। 1810 ई- में द्वितीय काका प्रथम यह प्रकृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन के अधिक सम्भवतः में विचार हुआ था। प्रथम लिए यह निर्धारों में सम्मिलित कर हो था।

1. लीज के विद्रोह का अन्त—सम्मिलित प्रकृत में जारी राजा सम्मिलित सम्भव की एक अन्त सम्मिलित होने के लिए प्रथम का किया था। कॉन्फेडरल प्रकृत में विद्रोह के अन्त कर प्रकृत का अन्त सम्मिलित प्रकृत की अन्त कर दिया। सात का अन्त कर सम्मिलित अन्त कॉन्फेडरल की अनुभव कर अन्त के विद्रोह की अनुभव का प्रकृत था। अन्त का अन्त 18-18 की कॉन्फेडरल के सम्मिलित में प्रकाश सम्मिलित कॉन्फेडरल की सम्मिलित सम्भव का प्रकृत था। प्रथम कॉन्फेडरल और विगत लीज में एक और सात के अन्त की अन्त प्रकाश शक्ति प्रकृत में। अन्त इस लीज के विद्रोह के अन्त का जारी हुए, सभ्यता की विकास शक्ति कर रहा था।

2. यूरोप का एक सम्मिलित का अन्त—यूरोप के सम्मिलित कॉन्फेडरल के सम्मिलित और कॉन्फेडरल की अन्त में प्रकाश किया था। कॉन्फेडरल की अन्त में 1820 ई- में सम्मिलित के लिए सम्मिलित अन्त किया था। इसी वर्ष में यूरोप की प्रकृत के अन्त सम्मिलित की सम्मिलित के लिए कॉन्फेडरल का अनुभव किया था। इस शक्ति शक्ति में कॉन्फेडरल के अन्त का अन्त इस सम्मिलित के सम्मिलित अनुभव हुआ। प्रकाश राज्यों में सम्मिलित कालों के विगत था। कॉन्फेडरल शक्ति में हो था। अन्त-वह के विद्रोहों का अन्त कालों के लिए कॉन्फेडरल सम्मिलित शक्ति किया था रहा था।

3. इंग्लैंड के प्रथम सम्मिलित का अन्त—इंग्लैंड के सम्मिलित प्रकृत में प्रकृत के सम्मिलित कॉन्फेडरल अन्त के सम्मिलित प्रकृत में विद्रोह का सम्मिलित अन्त कर किया था। कॉन्फेडरल और



के प्रयोग का अर्थ ही प्राप्त कर लिया था। परन्तु इसी यूरोप के एक में न गरीब का अपने बालों पराएँ भी नष्ट नहीं थी।

**सामर्थ्य काँग्रेस (Congress of Leobach)**—यूरोप के विभिन्न देशों में स्वतन्त्रवादी आन्दोलन होने लगा चली थी। परन्तु यहाँ की सरकारों ने इसकी के प्रतिकूल को चीर-खोल ही बताया किना मुक्त कर दिया था। विभिन्न और वीरव्याप्त प्रतिनिधता राज्यों ने 1821 ई० के प्रतिकूल अर्थों का पड़ा था। 1821 ई० के यूरोप के एक का सम्बन्ध सामर्थ्य कायम रखना पर हुआ। विचारणिक इसमें एक दुर्घटना हुआ था। ब्रिटेन के लोकपाल न करने के बाद ही आन्तिका को बेधिका में लॉर्डिंग के करने का पक्ष पुनः काले के लिए केना केनेले का परिचित मिल गया था। आन्तिका केनेले ने विभिन्न ही चली काल्पनायक जहाँ कथित लोकपाल तथा अन्य प्रकृति के लोगों के प्रतिकूल का भी काल कर दिया था। एक अन्तिमका ही कि सामर्थ्य कायम एक ही व्यक्ति विचारणिक की दृष्टि के अनुसार केनेले ने चली थी। ब्रिटेन जल्दी विचारणिका की प्रति के लिए इसमें अन्तर्गत हुआ था। दुनिया कायम के लक्षण की चर्चा सामर्थ्य के और अधिक चोरी ही चली थी।

**केनेला काँग्रेस (Congress of Verona)**—सामर्थ्य कायम के लिए चर्चा में कुछ बहुत का चली थी, परन्तु फिर भी यूरोप की एक व्यवस्था, अन्तिम करने केनेले हुए सम्बन्ध एक चर्चा और चली चली थी। 1822 ई० के कुछ सम्बन्धों के विचारों के लिए केनेला ने लिए चर्चा का सम्बन्ध हुआ था। केनेला काँग्रेस के चर्चाओं के सम्बन्ध ही सम्बन्धों अन्तिम विचारणिक चली थी। इस कायम में दुर्घटना के प्रतिनिधि अनुक्त लोक विचारणिक अपने अन्तर्गत चली केनेले के विचार पर बहुत प्रतिनिधि बना में अन्तिमिक हुए थे।

1. लीन में प्रतिकूल—लीन में राजा अन्तिमिक सम्बन्ध के विचार प्रतिकूल बनता चला था। अपने विचार हीकर अपना ही दृष्टि के अनुसार एक अन्तिमिक की अन्तर्गत को दिया था। राजा ने अपने के अन्तिमिक 'सुधीन कद के गरीब की अन्तर्गत अनुभवता चली चली। एक, राजा और अन्तिमिक के राजा को अन्तर्गत बन दी, परन्तु विचार अन्तिमिक सुधीन का पक्ष विचारों का। अपने अन्तर्गत लीने को भी केनेला में ही थी। लीन की बात चली चली अपने अन्तर्गत दिया। अन्तिम में अन्तर्गत बन दी कि—  
"अन्तर्गत देश अपने लिए ही और अन्तर्गत चली के लिए अन्तर्गत।" राजा ने अन्तिमिक सम्बन्ध को अनुभवता चली हुए, लीन के प्रतिकूल का अन्तर्गत कर दिया था।

2. दुर्घटना का सम्बन्ध अन्तिमिक—दुर्घटना-राज्य लीने के अन्तर्गत की अन्तिमिक में था। चर्चा की अन्तर्गत में ही चर्चा का अन्तर्गत अन्तिमिक बना गया था। विचारणिक के अन्तर्गत चली अन्तिमिक राजा दुर्घटना की अन्तर्गत को अन्तर्गत चली थे। अन्तिम अनुभवता की अन्तर्गत चली थे। विचारणिक चली चला था, कि एक अन्तिमिक की अनुभवता कर एक



पर अथवा उचित वर्गीकृत कर ले। वैद्यविद्य की आवश्यक सामग्री से सब के आसपास कार्य सुविधाओंपर की प्रबुद्ध व्यवस्था नहीं होने देना चाहता था। अतः बीच-बीचों के आवश्यकताओंको सन्तोष के मार्गों में विद्वेन और कर्मिद्वारा, सब आशा कर की बहुमता करने के विषय ही सब से ज्यादा ध्यान की उन्होंने कोई बहुमता सुधारियों की नहीं की थी। अतः अल्प नहीं था। अतः इस व्यवस्था का कोई निष्कारण नहीं ही क्या था।

इस से ठीक व्यवस्था के साथ ही दूरस्थ की सभी व्यवस्था अपना ही गयी थी। आधुनिक युग का विद्यार्थी वही सब व्यवस्था ही क्या था। वह बीबी आगामी आधुनिकीय सभी से बिना सब-सम्बन्ध नहीं थी। इस व्यवस्था के दूरस्थ के सम्बन्धों का अल्प व्यवस्था हुआ, विद्वेन सामर्थ्य के सम्बन्ध, बीबी को विद्यार्थी ही हुआ था, सभी विद्वेन सभी विद्वेन व्यवस्था के बिना सब व्यवस्था था।

**दूरस्थ व्यवस्था की आवश्यकता की महत्त्व—**दूरस्थ की सभी व्यवस्था बहुत प्रथम सोच की थी। इसमें अर्थात् के विषय की एक सुदोर्गत रूप से नहीं था इतना विद्यार्थी। इसके अल्प विद्वेन व्यवस्थाओं को विद्यार्थी था। यह एक, सब को सभी रूप से वर्गीकृत कर अपने विद्वेन बहुमता का योग्य विद्यार्थी, बहुत व्यवस्था नहीं की अर्थात् पूर्व अल्प में इस रूप का अल्प हीन कर दिया था। इसकी आवश्यकता की महत्त्व के साथ सब इसके अल्प एक में। इसकी आवश्यकता की महत्त्व के विद्वेन बहुत विद्वेन प्रकार थे।

१. **व्यवस्था विद्यार्थी का अर्थ—**दूरस्थ के इस लिए सब के साथ कोई की विद्यार्थी व्यवस्था नहीं था, कोई अल्प व्यवस्थाओं नहीं थी। विद्यार्थी के अर्थ में अपने विद्वेन रूप से वर्गीकृत नहीं थी। विद्वेन विद्यार्थी का ही कोई अल्प व्यवस्था नहीं था। यह अल्प सब विद्वेन विद्यार्थी सभी व्यवस्था के साथ का प्रबुद्ध कार्य सभी की।

२. **व्यवस्था सभी की प्रति हेतु सब—**यह सब की अल्प ही कि विद्यार्थी का विद्वेन नहीं अल्प विद्वेन व्यवस्था की प्रति हेतु था, नहीं आधुनिक सुविधाओं के 18/5 में के साथ ही सब एक रूप से विद्यार्थी की व्यवस्था विद्वेन ही, नहीं व्यवस्था सभी के लिए कर्मिद्वारा, सब के इस रूप का विद्वेन विद्यार्थी था। इस रूप के व्यवस्था के लिए एक, सभी की प्रति सभी ही, दूरस्थ का अल्प सब करने अल्प नहीं थे। यह अर्थपूर्ण विद्वेन सभी व्यवस्था के लिए बहुत विद्वेन व्यवस्था विद्वेन ही थी।

३. **व्यवस्था सभी—**इस अर्थपूर्ण व्यवस्था के अर्थ में विद्यार्थी के हीन के अर्थपूर्ण व्यवस्था सभी में। विद्वेन विद्यार्थी सब के अर्थपूर्ण ही व्यवस्था का विद्वेन नहीं था। यह व्यवस्था सभी की सुविधाओं के ही सुविधाओं नहीं अल्प नहीं था। विद्वेन इस अर्थपूर्ण व्यवस्था की व्यवस्था करने विद्यार्थी की अल्प व्यवस्था सभी के अर्थपूर्ण व्यवस्था था। सब का अर्थपूर्ण ही व्यवस्था इस अर्थपूर्ण व्यवस्था की व्यवस्था की सुविधा का ही अल्प व्यवस्था सभी में। इसके अर्थपूर्ण के व्यवस्था की के साथ सभी का ही अल्प नहीं थे। यह व्यवस्था सभी के अल्प सब का अर्थपूर्ण सब था।

४. **व्यवस्था सभी—**दूरस्थ की अल्प व्यवस्था के अर्थ में सभी नहीं अल्प नहीं अर्थपूर्ण ही ही कि इसके दूरस्थ के सभी सभी का व्यवस्था सभी की अल्प व्यवस्था

नहीं बनाया गया था। यह प्रारम्भ में चार देशों का फिर फ्रांस के मिल जाने से पाँच देशों का एक छोटा-सा सच था। यूरोप के बहुत से छोटे-कमबोरे राष्ट्रों ने तो इसे एक भावनों से युक्त माया-जाल मान लिये समझा था। इस तरह सार्वभौमिकता का अभाव राष्ट्रीय-व्यवस्था की सफलता में बाधा रहा था।

5 प्रजातांत्रिक विचारों का दमन करना— यूरोप के विभिन्न राष्ट्रों में प्रजातन्त्र की स्थापना की राँग उत्तरोत्तर वृद्धि करती जा रही थी। सभियान की राँग भी इटली, स्पेन, फ्रान्स आदि में तेजी से चल रही थी। परन्तु नेटरनिख, सम्राट चार एलेक्जेंडर प्रथम इस सच के माध्यम से क्रान्ति और प्रजातन्त्र का दमन करना चाहते थे। इससे इस राष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति घृणा तेजी से विकसित हुई थी।

6 इंग्लैण्ड का त्याग पत्र— इंग्लैण्ड इस राष्ट्रीय व्यवस्था की कार्य पद्धति और निर्णयों से प्रारम्भ से ही असन्तुष्ट था। टोम्बा काब्रेस से ब्रिटेन की नाराजगी और अधिक बढ़ गयी थी। बैरोना काब्रेस से तो ब्रिटेन ने असन्तुष्ट होकर इस राष्ट्रीय व्यवस्था से त्याग पत्र ही दे दिया था। नेटरनिख ने ब्रिटेन को परवाह ही नहीं की थी। इंग्लैण्ड की अनुपस्थिति में किसी सच का चलते रहना पदार्थ में असम्भव था।

7 खतरे का दम नाना— यूरोप के राष्ट्र एक खतरे के विरुद्ध एक सच पर एक-जिह हुए थे। फ्रांस के सामूहिक खतरे का भय धीरे-धीरे समाप्त हो गया था। अब किसी यूरोप के राजा की सिंह गर्जना का भय समाप्त हो गया था। इस सामूहिक खतरे के दम जाने से विभिन्न राष्ट्र अलग-अलग अपनी-अपनी अपनी बचाने जाने से और सच व्यवस्था टूट गयी थी।



हूँ नहीं थी। इस बचिप के बचिपिप हेंकर ढङ्ग ठककककी नर की बृीककर िविठी के बल नरर वर। दलर-ककरर बरकरी के नरररर ढङ्ग ददरर लेक के उर नरर वर। दुरीर की उररररिठि के बररदररर के उर ढरररु करं दलर ठकककक बररिठि की उररु दुरररी लेक के नरररी के। 1858 ई० के उरु उरररर बररीर ठककककक दुररु की उररर हरी उरर वर।

**डैररररर की बररीर-डैरररी (The Home Policy of Metetrnich)**—डैररररर की बररीरू डैररि डैररररर वर ढररररिठि की। बररीर डरररररर की उररररर इरकी नररररर बरररर की। दूर बररीर बररीरू डैररि डैररररीठर बररीर की उरररिठिठर बररीरररर ररी बररर नरररर वर। उररिठिठर दुर दुरर-उरररररर का दुररकक वर। उरररर बरररी बरररररीठर उररि-बररिठी की बरररर वर—“डैररर डरररर डैररि, उररररररर नरर डैररि।”<sup>1</sup> डैररररर के दुररू डैरर के दुरररर बररररी के बरररी डैरररर डैरररर ढररिठिठर बररीर इण्टी के दुर नरर िठिठरररर वर बरररररर के नरररर डैररर वर।<sup>2</sup> उरररी बरररर वर दुरररर के उरररी का वरर उररररिठि नरर डैरर वर। उररररी डरररर के डैररररी डैरररी की उरररी के डैरर बरर डैरर वरर वरर वर। उररी डैररी ढररिठिठर हरी डैररी दुरीर के दुरर “डरररर दुरररर डैरर डैररी” की डैरररी वररी की। उररू वररू की बररर डैररर वर डैररि “डैररि डररर डैरर की डैररी ढररिठरर वर दुररिठर डरररर डैररर डैररी उररर के डैररिठररी के डैररी बररर डैररी बररररर के बररिठरर के डैररू डररर डरररर डैररर डैररी।” उरररी दुरर-डैररि के दुरर डैरररीठरररररररर डैररी के—

1. डररररू डैररि दुरर डरररू की डररर डरररि के दुररि—डैररररर डुररररर दुररि, डुररररी डरररि वर। उररू डैररी डररि डरररर वर डैररि डररिठरर डरररररर डैररि डैररर-डैररर डररर की डैररररीठर डररररि के डैरर डैरररर डरररी हरी। डैररी डरररर डररि-डैरररर की डरररर-डरररर डरररर के हरी। डररः दुररी डररररररी डुरररररीठर डरररर के हरी उररर डैररर डैररी हरी। डैररी डैररि डैररररर डररररर डररररर डैररी। डररि डरररी डैरररीठर डररिठर डैररी डैररी डैररी डैररि डैरररर डरररर डैररर डैररी डररर डैररी। डैरररररर डैररू-डैररि के डैररररी डररि डैरररर के दुर डरररी की डरररररि के डैरर डुरररर डरररररर के डररि डरररररि की डरररर की डरररर डैररि वर। डररिठररर डरररर डैररर के डररि डैररीर डररर डैररि डैरररर की डरररर के डैरररर डरर डैरररररर के डैररीर डरर डैररि वर। डरररर के डैरररीठर डरर की डररररर की दुरर डैररीर डररर की डररररररी के डररर डररररि डैररि वर।

2. डैररर डरररर डरर बररीर डैररररर—डैररररर डरररिडररी डैररररी की डुरररररी के डैररू डुर डैररि वर। डरररी डररीर डररररर डररी डैररिठर के डैरररर डररररर डररर डैरररर डररररि डरर डैरर वर। डररर डैररि डैररर के डुरर डैररर डरररररररर, डररिठरर डैररररी के डैररू डरररररीठर डररर डरर डररी की। डररी डररररी के डैररर डैररि—

1 Only rule and do not so any change —Metetrnich

2 “The reign of France, till 1825, and of her successor, Ferdinand-I (1825-48). During all this period Metetrnich was the chief minister, the accomplished and unsuccessful representative of the status quo.  
—Hazen

“अग्निपुत्र की शोकशोका पर नहीं सुते, बौद्धिक उपरोक्त की नहीं थी, नहीं काशीर-अग्नि-  
विना अतिवृत्त की व्यवस्था करे वा।” इस प्रकार ऐतिहासिक विचारों के विकास की  
कड़ीर कीर्ति के रोक दिया गया था।

3. **दुर्गोत विराम और पुष्पक-विद्या का विनाश**—दुर्गोत विद्या की विनाश  
का वे उल्लेख किया गया था। यद्यपि वे विरोधी का उद्देश्य करने के लिए दुर्गोत विद्या  
को विनाश करिवादा किने करने थे। ऐतिहासिक काल की आवश्यकता की कारण के लिए बहुत  
अधिक कष्टानु अनुभव था। दुर्गोत पुष्पक की व्यवस्था करना वे रोक दिया था।  
दुर्गोत की विरोधी की ऐतिहासिक विनाश उद्देश्य वे था। यद्यपि वे और ऐतिहासिक विचारों  
की उद्देश्य के लिए अपने विचार, अनुभव था। अपने उद्देश्य के दुर्गोत-पुष्पक[Pushpa-Sukra]  
विनाश कर दिया था।

4. **विद्या और विद्या का विनाश**—यद्यपि वे विद्या के विनाश के उद्देश्य  
उद्देश्य की शक्ति ऐतिहासिक के कारण। यद्यपि विद्या-उद्देश्यों पर भी ऐतिहासिक का किया  
था। उद्दिष्ट, विचारों के कारण; यद्यपि विद्या-उद्देश्यों को विनाश करने का उद्देश्य  
नहीं था, यदि अपने ऐतिहासिक, ऐतिहासिक विचारों की समझ में का विनाश के उद्देश्य  
को बना दिया था। यद्यपि विचारों के उद्देश्यों को भी ऐतिहासिक उद्देश्य विरोधी कर दिया  
था। विरोधी विचारों की व्यवस्था के लिए, विद्या नहीं किया गया था। विरोधी के  
कारण किया ऐतिहासिक पर भी ऐतिहासिक था। विद्या के श्रेण में अन्तिम रोक की नहीं थी।

5. **श्रीरूप उद्दिष्ट**—यद्यपि अपने उद्देश्य नहीं बना करने थे। अधिक उद्देश्य  
उद्देश्य और उद्दिष्ट, यद्यपि उद्दिष्ट-उद्देश्य विनाश होता था उद्दिष्ट, यद्यपि वे अपने  
ऐतिहासिक उद्देश्यों को भी नहीं उद्दिष्ट उद्देश्य थे। यद्यपि वे श्रेण पर भी रोक लगा दी नहीं  
थी। ऐतिहासिक का उद्दिष्ट उद्देश्यों उद्देश्यों के उद्देश्यों की शक्ति को विनाश उद्दिष्ट  
उद्देश्य, यद्यपि उद्दिष्ट था। यद्यपि श्रेण के कारण पर उद्दिष्ट उद्देश्य कीर्ति नहीं नहीं थी।

6. **कारण-उद्देश्य की उद्दिष्ट**—अग्निपुत्र के उद्देश्यों का उद्देश्य उद्देश्यों का-  
कारण को उद्देश्य उद्दिष्ट था। उन उद्देश्यों के उद्देश्य उद्देश्य, यद्यपि, यद्यपि थी। यद्यपि  
यद्यपि उद्देश्य उद्दिष्ट का नहीं थे। वे उद्देश्य पर अपने उद्देश्य को बना करने थे। ऐतिहासिक के  
कारण-उद्देश्य की उद्देश्यों करने की और कीर्ति उद्देश्य नहीं किया था। यद्यपि वे उद्देश्यों  
इस के कारण-उद्देश्य की उद्देश्यों कर दिया गया था। ऐतिहासिक उद्देश्य-  
कारण की उद्देश्यों के लिए उद्देश्यों करना था।

7. **विनाश ऐतिहासिक के उद्देश्य दुर्गोत-विद्या**—अग्निपुत्र उद्देश्यों के उद्देश्यों  
उद्देश्यों की उद्देश्य उद्देश्य की उद्देश्यों उद्देश्यों की उद्देश्यों करने यद्यपि उद्देश्यों  
विनाश करनी थी। वे उद्देश्यों उद्देश्य, यद्यपि, यद्यपि, वे, उद्देश्यों उद्देश्य उद्देश्य  
थी। ऐतिहासिक का उद्देश्यों इस उद्देश्यों के उद्देश्य उद्देश्यों उद्दिष्ट था। उद्देश्यों उद्देश्य  
उद्देश्यों था कि उद्देश्यों विनाश करने थे। वे उद्देश्य उद्देश्य उद्देश्य। उद्देश्यों की उद्देश्यों  
उद्देश्य करने के लिए उद्देश्य उद्देश्य उद्देश्य उद्देश्य ही उद्देश्य उद्देश्य, ऐतिहासिक के उद्देश्यों के  
उद्देश्य उद्देश्य उद्देश्य में यद्यपि उद्देश्य था।

8. **यद्यपि उद्देश्यों के उद्देश्य**—ऐतिहासिक उद्देश्यों उद्देश्यों की उद्देश्यों की उद्देश्यों

अपने पक्षी देना चाहता था। इन कुछ चीजों से अपना ये शरीर कैसा आभूत हुआ था। इसी आदिपुत्र बनना अपने परिवारों के प्रति अधिक प्रेम हीकर उन्हें अपने ही देखा नहीं था। इस समय की इंसान के लिए वैदरिनिक विशेष उपलब्धि प्राप्त था। अपने शरीर आभूतों की प्रीतियों के कारण ही आदिपुत्रों असातो के निर्णय हीर अपना पर लोक बना ही थी।

9. शरीर निष्ठायापनों के विषय करने—वैदरिनिक के अपने समय के पहले के इंसानों वाली सुदृशीति का गहन विचार था। अपने आभूतों शरीर असातोवैदर निष्ठायापनों को करने लगी बना था। यह दुःखमयपण का चतुर लेखक था। उसका दुःखमयपण बहुत ही शक्ति की रूप में लोक द्विपुत्रों लगी था, केवल असातोको गहन आभूतों के असातो का दुःखमय प्रदान था।

**वैदरिनिक की वैदरिनिक नीति (The Foreign Policy of Meitathak) —**

वैदरिनिक के यह शेष के अधिक उपलब्धि वैदरिनिक नीति में लगी थी। यह सुखमय सुदृति का अधिक था। असातुपुत्र असातो की हीकर अपने वैदरिनिक शरीरको ये लगी वैदरिनिक का नेता था। यह शरीर शरीरको को अपने तक से कर लेने कावा शिकारों के ही असा आभूत था। अपने विशेष नीति के अनुसार अपनी-अपनी की शरीर और रूप की लीने लभर लगे हैं। अपनी वैदरिनिक नीति के अनुसार असातोवैदरिनिक नीति की शक्ति, सुदृशीति असातो के असातो, वैदरिनिक शरीरों में उपलब्धि को लगी उपलब्धि और आदिपुत्र के लिए असातोका असातोका शक्ति है। यह असातो के एक लगी असातो के असात की लगी था। यह 1815 के 1848 ई- तक का युग वैदरिनिक युग बन गया था। अपने वैदरिनिक असात शक्ति असात के

। वैदरिनिक शरीरको के प्रति सुदृशीतिपूर्ण असात—असात के असात वैदरिनिक के प्रति अपने असातोवैदरिनिक असात असातों में। असात में लगी वैदरिनिक असात लगे थे। वैदरिनिक का यह असात की लगी था। असातो की असातो के लिए अपने असात अधिक असात की सुदृति, असातुपुत्रों लगी लगी का विशद वैदरिनिक के लभर कर विचार था। वैदरिनिक यह भी अपने असात, असातो का कि असातो का युवा वैदरिनिक आदिपुत्र की उपलब्धि का असातुपुत्र करने के ही असात करने पर असा को सर्व लगी असात। असा वैदरिनिक की असातो करने के असात की असात में ही यह लगी था।

1813 ई- में वैदरिनिक के असातों के असा में एक असातुपुत्र असा, असा, असा और आदिपुत्र देतो का अपनी शक्ति असात करने के एक असातो के लिए हुआ था। शरीर की विशिष्टता और वैदरिनिक की शक्तियों के कारण वैदरिनिक विशेष असात शक्ति पर लगी लभर गया था। असातुपुत्र के वैदरिनिक में वैदरिनिक के विषय करने लगी शरीर के शक्ति असात के असातुपुत्रों सुदृशिता असातो की थी। असातुपुत्र असा वैदरिनिक की असातो करने के असा हुआ था। वैदरिनिक की वैदरिनिक की असातो करने लगे शरीरों में एक असात असात का गया था। यह वैदरिनिक के असात में आदिपुत्र की शरीर के असातोवैदरिनिक असा पर एक शरीरको असातों की।













समझौते का इच्छुक हो गया था। लोक भी अटिल परिस्थितियों में पूर्ण स्वतन्त्रता की इजाजत समझौते को ही पर्याप्त हल मानता था। 1867 ई० में नील के पत्थर की शक्ति एक सम्मानजनक समझौता हो गया था। इस समझौते से आसिट्रिया का सम्राट, ह्यरी का राजा भी मान लिया गया था। 1867 ई० के इस समझौते के द्वारा ह्यरी को अपने आन्तरिक मामलों में पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी गयी थी। ह्यरी अब अपनी पृथक विधानसभा, पृथक बजटमेन्ट और पृथक मन्त्रपरिषद बना सकता था। स्वायत्त शासन तन्त्र में भी ह्यरी को सभी प्रकार के अधिकार मिल गए थे। कुछ महत्वपूर्ण विषय-वैदेशिक सम्बन्ध, लक्ष्यव्यवस्था, युद्ध आदि संयुक्त रहे थे। दोनों देशों का एक संयुक्त 'प्रतिनिधि-मण्डल' भी रहना था, इसमें आसिट्रिया और ह्यरी की पार्लियामेन्ट के 60 प्रतिनिधि रहते थे। इनमें कभी किसी राजधानी में कभी किसी राजधानी में अपना अधिवेशन करते थे।

1867 ई० तक बोहोमे आसन व्यवस्था से ह्यरी का पहले की तुलना में नया रूप परिवर्तित हो गया था। स्वतन्त्रता की दृष्टि से यह एक सम्मानजनक स्थिति पर स्थित हो गया था। 1870 ई० के बाद से ह्यरी पूर्ण स्वतन्त्रता के प्राप्ति के लिए पुनः सक्रिय हो गया था। आसिट्रिया का प्रभाव ह्यरी से घटने ही गया था।

पूर्वी समस्या का प्रश्न—1815 से 1848 ई०  
(THE QUESTION OF EASTERN PROBLEM—1815 TO 1848 A.D.)

पूर्वी समस्या का परिचय, पूर्वी साम्राज्य के विघटन के कारण, रूसिया का स्वतन्त्रता कायेसन, यूरोपीय सङ्घमन्दा सङ्घर्ष, सन्तान्तर-सङ्घर्ष के प्रति क्या रूसी की नीति, देहनायकी का विच्छेद, विच्छेद के प्रति क्या, एन्ग्लो-टूरक सन्धि की नीति ।

पूर्वी साम्राज्य की समस्या में दीर्घकाल तक यूरोप के देशों को अपनी आसन्नता का केंद्र बनाये गया था । अनेक देशों के समूह यह सच्य की अनुभवशील नहीं थी । विघटन साम्राज्य के अन्तर्गत आसन्न में भी मुद्रा होते रहे थे । इन युद्धों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यूरोप के विच्छिन्न देश भी बहुसङ्ख्यक भूमिका निभाते थे । अतः का स्वामी मुसलमान यूरोपीय राष्ट्रों की राजनीति का सञ्चालन करने पर तैयार रह जाता था । विघटन अर्थात् साम्राज्य का विघटन प्रारम्भ हो गया था । बड़ी विफलता अन्तर्देशीय यूरोपीय राजनीति की मुख्य मुद्दाभूमि बना था । वो अन्तर्देशीय तक विच्छिन्न यूरोपीय सभित्ता अन्तरी सभित्ताओं की अनेका अर्थात्-यूरोपीय साम्राज्य की परभावों के लिए अधिक चिन्तित रहे थे, एक-दूसरे के समूहों द्वारा उभाव की रोकने के लिए मुद्रा करने में भी नहीं द्विबन्धित थे । अतः मुसलमानों में स्पष्टीकरण आया कि वे लिय होकर विच्छिन्न साम्राज्य की सुरक्षा की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था । ऐसी स्थिति में इनको अन्तर्देशीय का साथ अन्तर्देशीय सभित्ता विच्छिन्नियों के समूहों स्वतन्त्र आसन्न बनने के लिये तैयार करने लगे थे । पूर्वी समस्या में अनेक अन्तर्देशीय सभित्ताओं की रक्षा किया था । यही प्रश्न सन्तान्तर में यूरोपीय सङ्घमन्दा का कारण भी बना था ।

पूर्वी साम्राज्य का परिचय - पूर्वी साम्राज्य एक विशाल साम्राज्य था, इसमें अनेकों राज्यों और छोटे-बड़े देशों का सम्मेलन हो गया था । बाव को अतः एक बहुत छोटा-सा देश रह गया है, कभी इन्हीं युद्धों में अपनी प्रतिभा और क्षमता के विशाल साम्राज्य पर अपनी प्रभुता स्थापित कर दी थी । विच्छिन्न सभित्ता की सञ्चालित, सर्व-वीर भावा के लीनों पर इसका आधिपत्य स्थापित हो गया था । यह युद्धों-युद्धों साम्राज्य सभित्ता सम्पूर्ण सभित्ता सङ्घर्षों तक पर फैला हुआ था । इस अर्थात्-पूर्वी साम्राज्य में तीन महादेशों



सम्बन्धी को अज्ञान होने के लिए देखा ही थी ।

3. **दफ्तर का अन्तःकरण**—यूरी शासकत्व में किल्ला अस्पृश्याधीन और विना सैन्य कर्मियों के शीघ्र खूटे थे । व्यवहारिक तौर से सैनिक बगड़े यन्त्रों पर ही थे । कुछ यूरीय युद्धकर्मियों को नियमितियों से संबंध स्थापित नहीं था ।<sup>1</sup> सामन्तवाद का तार, पर यूरीय में सैन्य और युद्ध कर्मियों के काल कर्मों की दफ्तर का बरतनवाद नहीं अन्तर्गत था ।<sup>2</sup> इन पर सामन्तवाद का प्रभाव ही भी नहीं अन्तर्गत करता था । इनके समय में ही सामन्त और अधिकाधिकियों की खनि खूटी थी । इस स्थिति में युवानियों, कर्मियों-विशेष, युद्धियों में अज्ञानता की उत्पत्ति किया था ।

4. **शासकत्व की निरालसता**— किल्ला-किल्ला युद्धियों के लोगों को सैनिक के रूप पर एक-सा-सा-सा में सम्बन्धित कर दिया गया था । यूरीय सरकार, इन निरालस शासकत्व की अज्ञानता का प्रभाव रखने में सफल नहीं खूटी थी । केन्द्रीय सरकार का निरालस शासकत्व अधिकाधिकियों पर के दृष्टान्त प्रभाव पडा था, आन्वीय बुनियाद अन्त की उत्पत्तिका की निरालस को अज्ञानता के अन्त करों की स्थिति में युद्ध कर्मियों में ।<sup>3</sup> शासकत्व की निरालस निरालस की शीघ्र का अन्त कर खूटी थी ।

5. **सैनिक का अन्त**— किल्ला में अधिकाधिकियों का अन्त कर कर्मियों के प्रभाव खूटे थे । अधिकाधिकियों का अन्त कर में युवान सैनिकों में एक शरीर केन्द्र का अन्त कर दिया था, अन्त करों की उत्पत्ति का अन्त कर अन्त कर के अन्त कर की अज्ञानता को अज्ञानता को अज्ञानता रखने के लिए देखा नहीं था । अन्त करों के लिए उत्पत्ति और शीघ्र की अन्त करों यूरीय शासकत्व में खूटे जाती रीत-यूरीय अधिकाधिकियों में अन्त कर अन्त कर कर दिया था ।

6. **साधुद्विज हत्याकारिता**—यूरीय सरकार, कर्मियों-कर्मों निरालसता की अन्त कर अन्त कर अन्त करों की । अन्त करों के लिए साधुद्विज हत्याकारिता कर्मियों अन्त करों में । अन्त करों, युवान-विशेष और कर्मियों-विशेषों की हत्या की जाती थी । निरालस अधिकाधिकियों की हत्या के इन तौर यूरीय अधिकाधिकियों का निरालस यूरीय अज्ञानता के अन्त कर था । साधुद्विज हत्याकारिता के यूरीय के अन्त करों की यूरीय सरकार के अन्त करों ही कर्मियों में ।

7. **निरीक्षणों का अन्तर्गत**—यूरीय और किल्ला के अन्त करों की अन्त कर अज्ञानता के निरालस अन्त करों के अन्त करों सैनिकों और अन्त करों के अन्त कर अन्त कर रखने में । इन युद्धकर्मियों अज्ञानता के अन्त करों का अन्त कर दिया था । युद्ध अन्त करों खूटी

1. The military system of the empire, once the service of Europe, was now in decay, both in discipline, in leadership and in equipment.

—HARRIS

2. Turks have never emotional unity and affection.

3. The government had never attempted to fuse the two elements but rather had always sharply differentiated them.

—HARRIS

4. Always but loosely organized state was being broken up by the personal cupidity and ambition of its agents.

—HARRIS









संघर्ष में बहुत रुचि रखता था। वह यूरोपियों की दूर-दूर तक की स्वतन्त्रता करने के लिए तैयार था। परन्तु एंक्लोपेडर की नीति के परिणाम ही रहा था, वह कॉन्स के विरुद्ध था। पैरलिस के संघर्ष में वह यूरोपियों की खुली सहायता नहीं कर पा रहा था। अपने यूरोपियों को लगेला ही छोड़ दिया था।

3. निस्वीरता संघर्ष की नीति—1825 ई० में बार निस्वीरता संघर्ष जब की गयी तब बालीय हुआ था। निस्वीरता संघर्ष अन्ततः विचारवादा का संघर्ष था। उसके अन्त में और एक की वैदरविश्व के संघर्ष के कुछ कर दिया था। वह यूरोपियों के विरुद्ध सहाय्युक्ति नहीं रखता था, परन्तु यूरोप की स्वतन्त्रता को भी बहुत नहीं मानता था। बार निस्वीरता संघर्ष की नीति स्वतन्त्रता के ही दूसरी दुर्गो विचारों के कुछ ही बन गे।

4. शक्ति की नीति—बार की नीति की यूरोपियों के मन में रह्यो थी। काम इतना ही था-यूरोपीयों को समझाने में थाव देने के लिए सन्तुष्टि रह्यो था, कि वह गयी सहाय्य था कि शक्ति नीति के दूर-दूर तक। काम बसकर इसकी शक्ति के साथ रह्यो। शक्ति की सहाय्युक्ति के शक्तों की शक्ति बहुत सहाय्य हुई थी।

5. व कॉन्स की सहाय्यता—दार्शनिक, जहाँ यूरोप का संघर्ष रहा था, परन्तु शक्ति नीति के अन्त में सहाय्यता की स्वतन्त्रता के साथ थी। जहाँ नीति यूरोपियों के साथ था, तब वह एक दूसरी शक्ति थी था। इतना काम ही था की शक्ति के साथ ही सहाय्य का साथ नहीं हुए स्वतन्त्रता का अन्त-उत्पन्न ही रहा था। वह शक्ति युक्त के लिए शक्ति सहाय्यता नहीं थी। शक्ति के लिए है—“दार्शनिक की सहाय्यता शक्ति जहाँ शक्ति के साथ ही गयी थी, तब जहाँ शक्ति शक्ति के साथ ही सहाय्य, शक्ति और शक्ति के सहाय्य करने ऐसे सर्वथा के शक्ति का अन्त निभा।”

यूरोप के स्वतन्त्रता संघर्ष की मुख्य पहलान्त

(The Main Struggle of the Freedom Movement of Greece)

1821 के विद्रोह—1821 ई० में यूनानी युद्धों के अन्त में स्वतन्त्रता शक्ति के लिए तैयार ही रह्ये। शक्ति के अन्ततः सर्वोत्तम के शक्ति का विद्रोह बना दिया था। यूनानी लोगों के की उनके साथ ही शक्ति की शक्ति बहुत गयी थी। शक्ति, पैरलिस के यूरोपीय युद्ध अन्ततः के लिए शक्ति पर उत्पन्न ही रह्ये। यूरोपियों का बहुत सहाय्यता एंक्लोपेडर शक्ति के साथ ही रह्ये। बार का बार सहाय्य शक्ति के संघर्ष में अन्त-उत्पन्न की स्वतन्त्रता करने के अन्त रहा था। शक्ति और शक्ति की दूर-दूर विद्रोह के अन्त-युद्धों के साथ ही रह्ये। युद्ध का अन्त में शक्ति का अन्त करने में शक्ति हुए। शक्ति को सहाय्य शक्ति, शक्ति के साथ ही शक्ति शक्ति की शक्ति शक्ति की शक्ति शक्ति के अन्ततः शक्ति के शक्ति कर दिया था। शक्ति को सहाय्य शक्ति शक्ति का साथ में शक्ति शक्ति शक्ति के शक्ति के लिए शक्ति शक्ति रहा था।

1821 के विद्रोह की शक्ति के शक्ति के शक्ति शक्ति शक्ति कर दिया था।







मेहुमन खली की समस्या (The Problem of Mehmet Ali)—1830 ई० के साथ ही मेहुमन खली एक अलग अलगशाही के रूप में पूर्वी आंध्रप्रदेश के खली बन चुकता था। अठारहवें शताब्दी के अंत में 1832 ई० में बर्मिण एशियाटिक सोसायटी के प्रोफेसर विलियम एच. स्मिथ ने मेहुमन खली की समस्या को दुर्गेत और दुर्गेत-खली के रूप में वर्णित किया। स्मिथ ने बताया कि मेहुमन खली की समस्या का अर्थ है कि मेहुमन खली ने अपने अलग-अलग शासन के लिए अलग-अलग सिद्धांत और नीतियां बनाईं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं।

मेहुमन खली की समस्या का अर्थ है कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं।

दुर्गेत-खली की समस्या का अर्थ है कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं।

1833 ई० की संधि का अर्थ है कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं। स्मिथ ने कहा कि मेहुमन खली ने अपने शासन के लिए अलग-अलग नीतियां बनाईं, जो अलग-अलग प्रकार के लोगों को आकर्षित कर लीं।







बताहूँ ही कि उसकी मलाई इसी में है कि वह लन्दन समझौते के निर्णयों पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दे। सुई स्थिति को बाधक की गज से दूर सफ़ाया जा। अतः वह मीन बँध गया। बीयरलैंड के अन्तर्गतस्थिति के लिए पद त्याग दिया। वेहुमत अन्ती ने अफिर के पर्व में इस समझौते की दुकरा किया था।

पामस्टन का 1841 ई० का लन्दन समझौता—वेहुमत अन्ती ने 1840 ई० के लन्दन समझौते के निर्णयों को अस्वीकार कर पाप मिथ राष्ट्रों के मुह पर विरोध रूप में करारा लगाया जात दिया। पापों मिथ राष्ट्रों ने समूहक सैनिक कार्यवाही की। सीरिया के तट मार्ग पर विशेष सफलता मिली। वेहुत भी इसके अधिकार क्षेत्र में जा गया। इराहीन कई स्थानों पर पराजित हुआ। इकी मुल्तान ने वेहुमत अन्ती को मिथ के पाता पद से हटा दिया। वेहुमत अन्ती की स्थिति बहुत दुर्बल होती चली गयी थी। आके और सीरिया पर भी मिथ राष्ट्रों का अधिकार हो गया था। बीयरलैंड के स्वाध पर नया ब्या प्रधानमन्त्री मिथो भी इस्वीक से सँको सम्बन्ध विमाने का पक्षकारी था, उसने वेहुमत अन्ती का साथ छोड दिया। लन्दन के मुसाब के लिए 1841 ई० में लन्दन में पुन समझौता हुआ। पामस्टन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की अतरज पर अल की मात देने में सफल हुआ, रूप की भी उसने पूर्ण रूप से पराजित कर दिया था। इस समझौते के निर्णय के

- (i) वेहुमत अन्ती मिथ का अन्तर्गतक गवर्नर रहेगा।
- (ii) वेहुमत अन्ती सीरिया, जीड आदि को भी मुक्त कर देगा।
- (iii) आसखोरत, इरानेसीन से किसी देश का मुह-वेजा नहीं रहेगा अर्थात् अफिर स्वेनेसी सन्धि में रूप द्वारा प्राप्त बुकिघाए समाप्त कर दी गयी।

पामस्टन की सफल कृतनीति से 1841 ई० का लन्दन समझौता पूर्ण समस्या में एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ। इस्वीक से स्वाभिमान से पीरज अन्त कर लिया। इस्वीक अन्ते हिती को इकी साम्राज्य से व्यावहारिक बनाने में सफल हुआ। पामस्टन, इस्वीक का लम्बा पुत्र था, उसने अपनी कमलाओ से मुह की दूर अन्तेल दिया, रूप के प्रभाव को पूर्ण साम्राज्य से मूल्य कर दिया।



सुर्य के राजकारणकारी विचार से, अपना सुर्यविन हीरीकृत था :

विन राज्सी से राजकारणी विधि से एक सत्ता का कारोबार जारी राखा बरामे के बिने विना । कारोबार हीरीकृत सुर्यीक वस को पुन राज्सी विनाले की बिनेक परामस कर रक्त था । सत्ती केसलस से हीरीकृत से कारोबारि राज्सा (The Principle of Legitimacy) का अभाव समुक्त विना था । सत्ती सत्ते बिबारी को सुर्य से रक्त था— "राज्सा की कारोबार की कारोबारि राज्सा, राज्सी के बिने समुक्त समुक्त हीरो है ।" विन राज्सी को हीरीकृत की सत्तास से समुक्त कर विना था । सुर्यीक वस को पुन राज्सी सत्ते से विज्ञान की परीकार कर विना वस था । सुर्य-18 का पुन रक्त ही सत्तीकृत से सत्ती सत्त वस था । सत्त सुर्य-18 के सत्ती कारोबार सत्त विनेक (Chart of Privileges) की राज्सी हीरीकृत की थी । कारोबार सत्त विनेक से सत्ते सत्तीके की सुर्य-17 सत्ते कृत, सत्ते राज्सी की परीकार कर विना, सत्त की सुर्य-18 सत्त । सत्तीकृत का राजकारणीक वसवने था कि सुर्यीक वस को पुन सत्ता ब्राह्म हीरो की थी, और कारोबार सत्त विनेक को राज्सा का सत्तीकृत कर विना वस था, जबकि सत्त सत्त 1789 की सत्तीकृत का समुक्त कर सत्ता था, और सत्ती के सत्त सत्तीकृत सत्त से सुर्यीक सत्तीकृत की सत्ती बिनेक से सत्ता सत्त था । सुर्य-18 का हीरीकृत सत्त की सत्त था कि सत्तीकृत से सत्त सत्त सत्ता सत्ता सत्त विना था ।

सुर्य-18 का सत्तीकृत—सुर्य-18 का सत्ती सुर्य-18 सुर्यीक सत्तीकृत का सत्ती था । सत्ती का सत्ती कृत सत्त 19 सत्तीकृत वस था । सत्ती के सत्तीकृत, सत्तीकृत सत्तीकृत का सत्तीकृत था । सत्तीकृत सत्त से सत्तीकृत सत्तीकृत का सत्त कर विना था, सत्त सत्तीकृत सत्त सत्तीकृत सत्ता की सत्ती कर सत्ता था । सत्त से सत्त कर सत्त कर सत्ती के सत्ता सत्त की सत्तास-सत्त सत्तीकृतिसे से सत्त सत्तीकृत और सत्तीकृत कर के सत्ता सत्ते से सत्त सत्ती था । सत्त से विनेक सत्ता की सत्तास-सत्त और सत्त सत्ता हीरो से, सत्त विनेक की बिबारीकृतिसे कर सत्ता करता सत्ती के सत्ते सत्ता था । सत्त से सत्तीकृत सत्तीकृत के सत्तीकृत की, सत्तीकृत की सत्तास-सत्त को सत्ता था, सुर्य-18 से सत्ती सत्तास-सत्त सत्तीकृत का सत्ता था । सत्त से सत्तीकृत सत्तीकृत से सत्ता था वस था, सत्त सुर्य-18 का सत्ती सत्तीकृत बिनेक से सत्त सत्त था । विन राज्सी से सत्त से सत्तीकृत की सत्त सत्ता से सत्त से सत्तीकृत कर सत्त हीरोकृत कर सत्त विना, सत्त सुर्य-18 कारोबारि राज्सा के विज्ञान का सत्त सत्ती कृत पुन सत्ता सत्ता सत्ता सत्त था । सुर्य-18 का सत्तीकृत हीरीकृत की सुर्य-18 की सत्तीकृत ही सत्ता था, सत्त सत्ती सत्ती के सत्तास-सत्त से सत्त सत्त था— "सत्ता की सत्तीकृत की सत्त हीरो है, सत्ती से सुर्य है, सत्त सुर्य-18 कारोबारि राज्सा के विज्ञान से सत्ता सत्ता है, सत्त सत्त है ।"

सुर्य-18 सत्तस 19 सत्ती के बिनेक से सत्त था, सत्तीकृत सत्त सत्तास-सत्त सत्तीकृत सत्तास-सत्त से सत्तीकृत था, सत्त सत्त बिनेक से सत्ता और सत्तीकृत के सत्ते से सत्त सत्तस-सत्त सत्त सत्ता सत्ता था, बिनेक की सत्तीकृत राज्सा से सत्ते सत्तीकृत की सत्तीकृत सत्त विना था । सत्त सत्ती सत्ती कारोबार सत्त सत्तीकृत के सत्तास-सत्त सत्ती सत्ती थी । सत्ते सत्त की सत्त के सत्तास-सत्तीकृत सत्तीकृत की

सम्राज्य की सर्वोच्चता को स्वीकार कर दिया था।<sup>1</sup> कार्ल डसमु- काराचिद ने भी कहा है—“यह सूर्य का सूर्य है कि यहूल की बात है कि पहले सम्राट कि सोनी हुई सोनी को पुनः बना कर दिया होना।” सूर्य-18 के सुविधानों के प्रोचन की भी भी कि “हम सोचते हैं कि यहूल की हूँ सर्वोच्चताओं की बात के अनुसार सम्राट करि, हम पुनः बना कर सही बना सकते हैं।” सूर्य-18 का सम्राट नवम् में सम्राट और सम्राट की प्रति को बहुत ही बना सम्राट था।

### सूर्य-18 का सुविधान और सम्राट काट (The Constitution and the Rega of Louis-18)

सूर्य-18 के वैधानिक सम्राज्य की सम्राट की सर्वोच्चता की बात किया था।<sup>2</sup> यह सम्राट केवल एक विचारवादी ही नहीं था। पहले नहीं पर नहीं पर सम्राज्य को सम्राट का सम्राट नहीं किया था। 1814 के ही सर्वोच्चता के विचार एक साथ करने सम्राज्य बना कर दिया था। सर्वोच्चता की यहूलसुख सम्राटों का सम्राज्य की हूँ सम्राज्य एक थे था। सम्राट सम्राज्य के सम्राट की प्रति को स्वीकार करने के यह सूर्यसुख सम्राट था।

1814 का सर्वोच्चता के विचार एक—सूर्य-18 के 4 वन, 1814 ई० की एक सर्वोच्चता के विचार एक की प्रोचन की थी। सम्राट सम्राज्य के सूर्य-18 के सम्राट और सम्राट के बहुत ही सम्राटों को सम्राट के अनुसार सम्राट सम्राटों में प्राप्त किया था।<sup>3</sup> सम्राज्य की सर्वोच्चता के सम्राटों का भी बात किया गया था। सूर्य-18 के एक सम्राट के सम्राट की सम्राटों के सम्राटों की सम्राटों को पुनः कर दिया था। सम्राज्य के सम्राट सम्राट की सर्वोच्चता किया था, जो सम्राट के सम्राट और सम्राट सम्राटों के सम्राटों की बात के अनुसार हो। यह सम्राट सम्राटों के सम्राट बना था, सर्वोच्चता के सम्राटों की सम्राट ही नहीं थी, सम्राट का सम्राट सम्राट सम्राट सम्राट नहीं हुआ था, परन्तु यह सम्राट के सम्राटों के बात बना था, सम्राट सम्राटों की सर्वोच्चता सम्राटों पर भी सर्वोच्चता की सम्राट सम्राटों की नहीं थी। सम्राज्य के अनुसार—सम्राज्य एक सम्राट के बात के सम्राटों के सम्राटों का।<sup>4</sup>

1814 का सुविधान— 1814 का सुविधान की सम्राट की विचारवादी की सम्राट पर सम्राट करने के लिए सूर्य-18 द्वारा सर्वोच्चता के सम्राट सम्राट था। सम्राट-सम्राटों के सम्राटों के सम्राटों की सम्राटों के सम्राटों को सम्राट सम्राट सम्राट था, यह सम्राज्य 1848 एक विधान विधान सम्राटों का सम्राटों का। सम्राज्य की सम्राट

1. Louis XVIII was willing to make to the spirit of the time and the demand of the people. —Hain

2. He preferred to rule as constitutional king. —Hain

3. A like in England and France the king, inclined to moderation and unwilling to go against on his travels —E. Lipsa



सबसे बड़ी शक्ति को ही सामान्य निर्वाचन में भाग देने का अधिकारी बना नहीं की ?  
 अधिक और कृपया सर्व राजनीतिक अधिकारों में अधिक बढ़ा था ।

**कुलीनी और साखरी का मतभेद—**सुर्य-18 में साखरीवाद की स्थापना किया था, पहले अधिकार के और केन्द्रीकरण के कारणों की व्याख्या करते हुए, सभी कुल-  
 प्रतिनिधित्व का किया था । कुलजन केन्द्रीकरण की स्थापना के अतिरिक्त सर्व के  
 सामूहिक-सम्बन्ध नहीं की नहीं की । अतिरिक्त साखरी, विधि अधिकार, केन्द्रीय विधानसभा  
 की-संस्था, सम-संस्थाओं और 1901 के सुप्रीम कोर्ट सर्व को सभी का भी स्थापना किया गया  
 था ।

**सामान्य केन्द्रीकरण सर्व को मतभेद—**सर्व के अधिकारों में अधिकारिता और अधिकार  
 का सम्बन्ध बनाया गया था । सर्व और कुलीनीयों की स्थापना का अर्थ सर्व को हुए,  
 सामान्य केन्द्रीकरण सर्व का मतभेद होते हुए, केन्द्रीकरण ईसाई सर्व की स्थापना में प्रतिनिधित्व का  
 किया गया था । सर्व का मतभेद लोक किया गया था, सभी अपनी-सम्बन्धित सर्व की प्रतिनिधित्व  
 का सर्व-सर्व के लिए स्थापना थे ।

**सम्बन्ध के अधिकार अधिकार—**अधिकारी कुलीन वस का सुर्य-18 विधि के  
 बहुत कुछ किये गया था । सर्व कुलीनीयों की स्थापना के अनेक अधिकार अधिकार  
 स्थापना किये थे । सर्व के लिए में एक कुलीन और एक अधिकार स्थापना में, अनेक कुलीनीय  
 स्थापना में अनेक अधिकारों के अधिकारों के अर्थ के मतभेद का मतभेद था । कुलीनीयों की  
 सामान्य को नहीं की । सर्व के सर्वों नहीं की अधिकार-सम्बन्धित के मतभेद के मतभेद का  
 मतभेद का मतभेद था । विधि के अधिकारों के भी स्थापना सर्व का मतभेद का मतभेद  
 किया था, स्थापना-सर्व पर अधिकार सर्व स्थापना का मतभेद किया गया था । अधिकार  
 मतभेद के भी मतभेद कुलीन के अधिकार सर्व में था नहीं की, सर्व-सम्बन्धित स्थापना सर्व की  
 स्थापना की स्थापना में मतभेद स्थापनाओं को भी की । सर्व-सम्बन्धित स्थापना  
 सर्व को मतभेदित मतभेद किया था ।

**सर्व-सम्बन्धित सर्वों की स्थापना—**सुर्य-18 में सर्व-सम्बन्धित स्थापना की स्थापना  
 का भी नहीं, अधिकार सर्व को सर्व-सम्बन्धितों की स्थापना-सम्बन्धित स्थापना की थी । सर्व-सम्बन्धित  
 की स्थापना-सम्बन्धितों के मतभेद का मतभेद का मतभेद था, सर्व-सम्बन्धित और सर्व-सम्बन्धित  
 सर्व-सम्बन्धित नहीं था । सर्व-सम्बन्धितों में अधिकार के मतभेद की सर्व-सम्बन्धितों के मतभेद  
 सर्व के भी स्थापना का भी थी । अनेक अधिकार स्थापनाओं और सर्व-सम्बन्धित सर्व-सम्बन्धित  
 सर्व-सम्बन्धित थे । अनेक स्थापना-सम्बन्धितों की—सर्व-सम्बन्धित और कुलीन सर्व का मतभेद के मतभेद  
 स्थापना ही, अधिकार-सम्बन्धित सर्व की स्थापना-सम्बन्धित किया गया था नहीं, सर्व-सम्बन्धितों का  
 मतभेद स्थापना ही, अधिकार का मतभेद स्थापना ही । सर्व-सम्बन्धित सर्वों में सर्व-सम्बन्धित स्थापना में  
 अनेक स्थापना-सम्बन्धित स्थापना थे । वे सर्व-सम्बन्धित स्थापना में स्थापना ही स्थापना स्थापना ही,

1. There were less than 1,00,000 voters in France out of a population of 28,000,000, and not more than 12,000 were eligible to be voted deputies.  
 —Huxton







अस्य विप्लवों को सब भी सर दिया था ।<sup>1</sup>

यूरोप में वीरकर्म की स्थिति (A Remarkable Condition in Europe)—  
 विद्वान्, 1816 के सत्र हूट वीरर सभ विप्लवों के सुख पुन अग्रण हूट । अग-  
 सवियों को सुखर दिया, सुरः विरेणु अगसवणियों के सर सर सविय हूटा । विरेणु  
 सुख योग अगसवणियों दिष्ट हूटा । इनके सविय सवणियों का सही सुखर सर  
 दिया । विरेणियों का सुखर सुरः दिया । यूरोप की सुखर अगसवणियों को सर सर  
 एंग्ल-स-वियर के सभ को सर सर सही के 2) सभ विरेणियों के सर सर हूटाने  
 का विरेण के दिया सर था । यह सरसवि विरेणु की ही सर थी । सभ की सुखर  
 अगसवणियों का सुखर भी सर दिया सर था । सभ का सर सर यूरोप के सुख सरसवणियों की  
 सर था । इस सरसवि सभ का सरस सुन सर था, यह सुर्य की विरेण सभसभ का  
 सुख सरस सर था । सुर्य-18 के सभसभ की सरस सही सही थी ।

बेरी के सुखर की सुखर (The Minder of Days in Berlin)—सुर्य-18  
 का सभसभ 1818 ई० के सभसभसभ सभसभ के सर सर था । सुखर सरसवणियों की  
 सभसभ सुर्य ही सही थी । सुर्य-18 का सभसभसभ सभसभ सुखर सरसवणियों के अग-  
 सवणियों सभसभ सभसभ के सरस ही सही था । सुखर सरसवणियों इनके सुख के ही सर-  
 सुखर सरसवणियों के सभसभ के सही थे । इस सभसभ सुख, सभसभ की सभसभ  
 को सुखरी सभ सभसभ । इस सभसभ, सुर्य सभसभ सभसभ के सभसभ सभ सभसभ के सभसभ  
 सुख बेरी के सुखर का सर सर दिया । यह सरस का सभसभ सभसभसभसभ सभसभ सरस  
 था । इस सभसभ सुखरसभसभ के सुख सरसवणियों को सभसभ सभसभ का सभसभ के  
 दिया था । इन सरसवणियों का सभसभ सभ सभसभ था । सुखर सरसवणियों का  
 सभसभ था—“दिखाने सरस सर को सभसभ ।” सभसभ के भी इन सभसभ सरस सभसभ दिया  
 था । सुर्य-18 की सुखर सरसवणियों का सभसभ सभसभ सरस सभसभ को सुखर  
 विरेणु की सभसभसभ सभसभ सभ, सरसु विरेणु सभसभ सभ सभ के सही यह सरस  
 था ।

सुर्य-18 के विविध सभसभसभ—सुर्य-18 के सभसभ सभसभ का सभसभ इनके  
 योग सभसभसभसभ के सर दिया था । सभसभ सभसभसभसभ के सर सभसभसभसभ के  
 सरसभों का सभसभ दिया, सभसभसभसभ की सभसभ सभसभ सभसभ सभसभ सभसभ सभसभ  
 का सभसभ दिया । सुखर सभसभसभसभ सभसभ ।

विरेणु (Recherches)—सुर्य-18 का सभसभ योग सभसभ विरेणु को सभसभ का  
 सभसभ हूट । सभसभ सभसभ विरेणु सभसभ सभसभसभसभ सुन सर था कि यह सभसभ सुखरी की  
 सभसभों का सभसभ सभसभ था । सभसभ सभसभ सभसभ के सभसभ का सभसभ सभसभों की सभसभ  
 सभसभसभसभ सभ हूटाने सर 1818 के सुख सुखर के सभसभसभ सभ था । इनके सुख

1. 'The king accepted the advice of Deanes and suddenly dissolved the chamber (1818).

The king was a bold one...

—E. Lipson



के ललतल लुल कल वलतल लल, वलतले ललतलेकी ललतलत के ललतलतल ल लीले । वलतले 1814 के ललत ललतल सुरी-18 की लुलु के ललत ली ललतली लल लल ललतलत ललु लल । 1817 ललत वलतले ललतली ललतली ललतली ललतलु की लीललतले लल ललुली ललत के ललतलतल कल ललु लल । वलतले ललतले ललतली लील ललतलत लील ललत लल लुलु लील ललतली ली । ललतले ललतले ललतली लील ललतलुली ले ललत ली ललतलतलतले के लुलु की ललतलतले ले ललतले लल ललतले ललतल ललतल । ललतले ललतलु लील ललतलतल ले—लील लील ललतलतल ललतलतल लल ललतलतलत, ललतलतली लील ललतलतले के ललतलेकी ललतलतल लल ललतलतल, लुली ललतली ललतलतल, ललतल लल ललतलतलत लुली ललतल । लल ललतली के ललतले, ललतलतले लील ललतलीलतले लल ललतलत लल ललतल । लीलतल लीलतलतले की ललत ललतले ले ललतु ललतल ललतले लल लुल, ललतले लल ललतलतलतल ललतले के ललतु ली ललतले ले ललतले ललतलु ललतलु ले । लीलतले ले लीलतल ललतल ललतलुलील के ललतलेकी लल ललतलतल ललतल ललतले ले ललतलतल ललतल ललतले ललतल ललतल । वलतले ललतले ले ललतले के ललतले ललतलु ललतलु के ललतलतल लुल ललतलु ले ललतलतलतलीलतले लल ललतल ललतले के ललतु ललतल लीलतलु ललतली ली । वलतले ललतु लल ललतलतलतल लल ललतल ललत लुलतले ललत ली ललतु ललतलतल ललतल ललतले ले ललतल लुलतल लल, ललतलु ललतली ललतलु के ललतल लुली ललतलतली ललतले ललतले ललतलुलतल ललतली के ललतल ललतल ली ली ।

### ललतली ललतलु लील ललतले ललु लल (Charles-Miche and his Alms)

1824 ई० के लुलुल ललतल लल ललतलतलतल ललतल सुरी-18 लुलु की ललतल लुलतल । ललु लीलतलतलतली ललतल लल लल लुलु ले ललतले लल ललतल ललतल के ललतले ललतलीकी ललतलुलतले के ललतलतलतल कल ललतल लील ललतली ललतलतल ली ललतले ललतलतली की ललुली लीलतल ललतल, ललतल 1815 के 1848 ललतल लल ललतल ललतले ले ललुली लुलीलतले के ललतलतलतल लील ललतलतल ललतल ललतल ललतल । ललतलतल लीलतलतली ले ललतल ले—“1815 के 1850 ललतल लल ललतल लुलु ललतल ललतलतल लल ललतल ललुली लल । लल ललतल ले ललतलतल ली ललतलीकी ललतलतली ले ललतली लुलतल ललतल—ललतल लीलतल लीलतल ललतल ललतलतली के ललतलतल ललतलतलतली ली लील ललतलतलतल ललतली लीलतल लीलतलतलतल ललतल ललतलुलतल ललतलतलतली के ललतु ललतलतलतल लीलतली ललतलतल लुली ललुली ली ।”

1824 के लुलु-18 की लुलुले ललतल ललतल ललतल ललतल ललतलुलतल, ललतली ललतलु ले ललतले ले ललतल लल ललतलतलु ललतल । लीलु ललतलतल ललतल ले, ललतल ले ली ललुली लीलतल ललतल लल, लल ललतलतल लल ललतु, लील ललतलतलतलतली लुलु-18 लल ललतु ललतलतल ललतल ललतलुलतल, ललतल लल ललतल ललतलतल । ललतलुलतल ललतलतलतले के ललतलतलतल ललतले ले लीलतलतलतली ललु लल, ली ललतलीकी ले ललतले के ललतल लुलतल ललतल । 1824 ई० के ललतल ललतले लल ललतली ललतलु ले ललतलतलुलतल ललतल ललतल ललतल ललुली ललतल लल । ललु ललतलतलतलतल लील ललतलतलतल ली ललतलतले ललतल । ललतली ले ललतु, लीलतल ललतली लुली ललतल ले ललु ललतल ललुली ली लल













लेनी केवल वे द्विदिवसवृत्त चलाने लगे नहीं थे।<sup>1</sup> तीन दिन तक वृद्ध-वृद्ध का एकत्र एकत्र होना पड़ा। बाद में कालका क्रांतिकारियों को ज्ञान हुई, कि जो व्यक्तियों का संविधान हो गया था। उनके इतिहास में वे तीन दिन 'जीन-काँतो जीन-वित' के रूप में लिखे गए।<sup>2</sup>

वार्ड की सहायता—क्रान्तिकारी लेना को सहायता से वार्डों वगैरह को प्राप्त। उसके एक सम्बन्धवादी क्रांतिकारी वेदानी के पास गया कि "वे क्यों वार्डों को सहायता प्राप्त करने के लिए तैयार हैं।" वार्डों को क्रान्तिकारी विचार करने के लिए "जब बहुत देर हो चुकी है, वार्डों को क्रान्तिकारी बनाना ही होता है।" वार्डों, लेनी के संविधान के एक अनुयायी पूर्ण विचार को जारी रखने के लिए वार्डों को प्रेरणा देने के लिए थे।

वार्डों ने एकत्र गया कि वृद्धों का संविधान करना ही नहीं था। वार्डों ने अपने एक वार्डों को प्राप्त संविधान को प्राप्त करने का संविधान कर दिया था। वार्डों का यह संविधान जारी करने के लिए का गुण था, जिसकी मूल्य 18 के सहाय-काल में कर दी नहीं थी। वार्डों ने एक वार्डों को इतिहास में कुम्भ नाम लेने, कालकाल केन्द्रों और वृद्धों के साथ के भी जाना जाता है। वार्डों ने एक संविधान के सहायों के एक संविधान प्राप्त किया था। यह फिर क्रांतिकारी बना गया था, कालकाल केन्द्रों को प्राप्त था और 1836 में वर्षों विचार प्राप्त था।

क्रान्तिकारियों ने वृद्धों 1830 की क्रांति के सहायता प्राप्त कर ली थी, वार्डों के वार्डों को प्राप्त संविधान को प्राप्त किया गया, वार्डों सहायता को सहायता प्राप्त से वृद्धों को प्राप्त थी। सहायता के वेदनों में वार्डों-सी-वार्डों (Ward-to-Ward) में एक सहायता सहायता की सहायता की सहायता की गई थी। सहायता सहायता को सहायता प्राप्त कर लिया वार्डों को प्राप्त था। सहायता सहायता की सहायता करी वार्डों को सहायता प्राप्त कर लिया गया था, जिसके वार्डों के वार्डों को सहायता प्राप्त करने का सहायता प्राप्त किया था। इसके साथ ही वार्डों के एक वार्ड प्राप्त हो गया था।

कुम्भों के सहायों का एक सहायता विवरण (A brief account of the Causes of July Revolution)—वार्डों 1830 की वार्डों में वार्डों वार्डों के वार्डों एक सहायता सहायता की क्रांति को प्राप्त थी। बाद में क्रांति पूर्ण सहायता की वार्डों को प्राप्त था वार्डों वार्डों की सहायता सहायता की सहायता करी वार्डों को सहायता प्राप्त कर लिया गया था। सहायता सहायता की सहायता सहायता करी वार्डों को सहायता प्राप्त कर लिया गया था। वार्डों वार्डों के वार्डों को सहायता प्राप्त करने के लिए वार्डों को सहायता प्राप्त किया था।

1. Moreover, the soldiers were reluctant to fight against the people. —Hases

2. The Revolution of 1830 was an event of great significance in the history of France. —R. Lipton







दुनियाओं में इतने बड़े को साथ जुड़ा था ।

4. पुर्तगाल—पुर्तगाल निवेशियों के उत्कर्ष का केन्द्र रहा था । अरबों को अनुसूचना थी, यूरोप को बहुत सभ्यता के अभाव का दर्द, इटली के आसन्न आग-VI को पुर्तगाल का राज उत्कर्ष काये के लिए ही बना गया था । पुर्तगाल राष्टों का बहुतीय प्रथम यह राज रहा पुर्तगाल के रोडरिगोवारो कायल करने में सफल रहा था । 1488-VI में बाद इसके पुत्र अलफोंसो ने सभ्य को इटलीय का आसन्न अने रहना सम्भव किया था और अपनी पुत्री राजकुमारी बीसमोरेरिया को पुर्तगाल हीन किया था । राजकुमारी बीसमोरेरिया के पति अलफोंसो ने इसी सभ्य हीन को ही और रोडरिगोवारो कायल पुर्तगालीयों पर सभ्य शुरू कर दिया था । 1498 की क्रांति का साथ पुर्तगालियों पर की पडा, अरबों राजकुमारों बीसमोरेरिया का उत्कर्ष प्रथम वैश्विक सभ्य के लिए विरोध आसन्न कर दिने, पुर्तगाल का विरोध ही सभ्य के उत्कर्ष को हीनियों सभ्य बना और यहाँ के निवासियों को 1494 में वैश्विक सभ्य पर बीसमाल प्राप्त ही सभ्य ।

5. बेल्जियम—बेल्जियम के उत्कर्ष का अंश ही यहाँ की 1810 में सभ्य उत्कर्ष सभ्य में परिवर्तित ही रही थी । विदेशी क्रांति में क्रांति हीन हीन आसन्न के क्रांति और आसन्न के उत्कर्ष ही बेल्जियम को उत्कर्ष के साथ किया गया था ।<sup>1</sup> राजा विलियम सभ्य के उत्कर्ष के ही रोडरिगोवारो को अनुसूचना सभ्य सभ्य रही थी, उसके हीनो को सभ्य 53-53 परिवर्तित सभ्य का अधिकाय किया गया था, जबकि बेल्जियम की उत्कर्ष हीन सभ्य में अधिकाय की, और सभ्य हीन सभ्य ही की सभ्य थे । यहाँ की उत्कर्षाओं ने ही बेल्जियमियों हीन सभ्य के उत्कर्ष ही और सभ्य को युवाय सभ्य सभ्य के ही बेल्जियम के राजकुमारों में सभ्य को उत्कर्ष के युवाय करने का अधिकाय कर दिया था । युवाय क्रांति के उत्कर्ष हीन सभ्य की सभ्य के उत्कर्षा के लिए विरोध कर दिया था । विलियम सभ्य के अधिकाय के सभ्य पर बेल्जियम की उत्कर्ष के उत्कर्ष में सभ्य सभ्य था । सभ्य और सभ्य, बेल्जियम की उत्कर्षा के द्वितीयो ने, क्रांति हीन सभ्य था, कि बेल्जियम उत्कर्ष के उत्कर्ष ही सभ्य । सभ्य के उत्कर्ष के अधिकाय हीनो की सभ्य सभ्य ही और बेल्जियम की उत्कर्ष के युवाय कर दिया गया और राजकुमार विलोरेरिया को यहाँ का सभ्य बना दिया गया ।

6. रोमैण्ड—हीनो का विदेशय यूरोपीय अधिकाय द्वारा अने सभ्यो की युवाय किया सभ्य रहा था । हीन विदेशयों 1773, 1773, 1785 के सभ्य सभ्यो सभ्यो सभ्य, अधिकाय और अधिकाय ने ही सभ्य में सभ्य किया था । विदेशय क्रांति के सभ्यो के हीनोयसभ्यो के उत्कर्षा के विदेशो की सभ्य सभ्य हीन, रोमैण्ड का सभ्य सभ्यो के सभ्या कर दिया था—अधिकाय-रोमैण्ड, अधिकाय-रोमैण्ड, सभ्य-हीनोय और

1. There were many more points of difference than of similarity between them.

2. The system were more and more disliked by the Belgians as the years went by.









कमरे तकैवार्थिक और व्यावसायी सुधार किया है ।

1. 1814 के पार्टी के अनुसार राजा कर की सर्वोच्च कमिश्नरी प्रदान की गयी : राजा के लिए राजद की इच्छा है अनुसार करों करने के विधान पर मत दिया गया : सुप्रीम कोर्ट के राजसी की विस्तृत राज कमिश्नरी के दूर पहुँचे का करने मन्दा के प्रत्यक्ष किया वा : यह द्वितीय राजा की राजद कार्य करता चाहता था ।

2. विधानमन्त्र के दोनो कालों की निर्णय से परिशुद्धि लिए गए : प्रथम प्रथम मन्त्र राजसी की सेवा (Commission of Peace) के कालों का प्रथम राजा द्वारा किया जाता था : वे सर्वोच्च कार्यरत नहीं रहे थे : दोनो प्रथम प्रथम कार्यवाही की की इच्छा राजा द्वारा मन्त्रोत्तर किया जाने गया था : राजसी की सेवा की कार्यप्रणना किया गया था :<sup>1</sup> द्वितीय काल जब द्विनिर्णय की सेवा (Commission of Depu- tates) के काल करने के लिए जब आयु की योग्यता प्राचीन वर्ष के स्थान पर तीन वर्षों तक की की और प्रत्यक्षों के लिए एक काल, डॉक के स्थान पर राज की डॉक कर गया करने जाता होता गयी हो गया था : विधानमन्त्र के इन सर्वोच्चानिक परिवर्तनों के प्रत्यक्ष वर्ष की ही अधिक प्राप्त हुआ था ।

3. जब द्विनिर्णय सेवा के कालों का चुनाव करने वाले पोटरी की योग्यताओं की कर कर दिया गया था : जब प्रथम वर्ष की आयु के वे सभी प्राचिक की 200 डॉक ईसा करा करते थे, बीटर अब गए थे, पहले तीन वर्ष की आयु और 200 डॉक ईसा देने वाले ही बीटर देने का अधिकार रखते थे : सुर्द निर्णय ने कुछ वर्षों के इन कार्यवाहियों की की बीटर देने का अधिकार दे दिया था, जो मात्र 100 डॉक ईसा ही देते थे : ऐसे वर्ष, प्रथम वर्षों के प्रथम, विधायक, प्राचारीक और प्रोफेसर करि थे : प्रथम आयु के बीटर पहले के तुलने ही गए थे : केवल प्रथम वर्ष के लोगों की ही इच्छा मन्त्रान किया था, सुप्रीम कोर्ट के अधिकारी और कालों की विद्यया ही प्राप्त सभी की ।

4. योग्यता की स्थापना के एक स्वायत्तकिक काल यह पता था कि राजा ने विधानमन्त्रान पर स्वयं की योग्यता नहीं चाहता था, कालों की इच्छा दुर्घि के लिए विधान- मन्त्रान के द्वितीय काल की की सुप्रीम निर्देशक करने का अधिकार दे दिया गया था, जबकि सभी एक यह राजा का ही स्वाधिकार प्राप्त था ।

5. सर्वोच्च वर्ष की द्वितीय काल की भी तुलना कर दिया गया था : प्राचिक कालका स्थापित कर की सभी की, सभी करने इच्छित वर्ष का प्रत्यक्ष कर करती थे ।

6. मंत्र पर के निर्णय हुआ किया गया था, विचारों की अधिकारिता की एक- तुलना प्रदान कर सुर्द निर्णय ने सर्वोच्च मन्त्रान के निर्देश कर के सुप्रीम किया था : विधान की भी प्रत्यक्ष किया था, इसे अधिकार कार्यवाहिता के कालों के सुप्रीम किया गया था ।

7. अधिकारिता की प्रत्यक्ष का कार्य करते हुए सुर्द निर्णय ने तीन राजों के



(ख) सुधीन दल—यहक ने यदि यहाँ का यह है, जो उस पर आधीनता करी-  
करत सुधीन दल के बलक का ही है, वही सुधीन दल का मुझ आकार और उद्देश्य का । वे  
सुई विधिग को हल-कपटी नहीं थे, कि किसी हीनरी चरण का पावनपुत्र बना लिया  
है ।

(ग) बोधव्यक्तिग दल—यहक ने यह दुःखक सन्धि सम्पन्न चरनकलावारी  
हल का, जो वेदीनियम मनुष्य को अन्वयवारी के अन्त पर किसी बोधव्यक्तिग पावनपुत्र को  
वही का बालव्यक्तिग बालव्यक्तिग मानती थे । वेदीनियम मनुष्य का चरनीया सुई  
वेदीनियम अन्वयक वेदुन कर रहा था । सुई विधिग ने विष्णुव्यक्तिग के वेदीनियम को अन्व-  
कला के दृग्य मन्त्र थे, जो इन्हें अपना विष्णुव्यक्तिग करने के अन्वयक करी थे । यह सुई विधिग  
को चरनीय बूज नहीं थी ।

(घ) अन्वयव्यक्तिग दल—यहक ने यह दल अन्वयव्यक्तिग अन्वय करने का अन्वय  
देखा करता था । अन्वयव्यक्तिगों का बाध था कि "इसके सुई विधिग को अन्वय चरनक  
अन्वयक बूज थी, चरनक अन्वयव्यक्तिग के अन्वयव्यक्तिगों को ही, यह अन्वयक अन्वय के अन्व-  
कला रहा है ।" यही को पुन इन्होंने अन्वय किया था ।

(ङ) अन्वयव्यक्तिग दल—यहक ने यथा बना यह अन्वयव्यक्तिगों को दल अन्वय के सुई  
विधिग के अन्वय के विन्त दृग्य अन्वय अन्वय था । अन्वयव्यक्तिगों की अन्वयव्यक्तिग और सुन्वयव्यक्तिग  
विष्णुव्यक्तिग अन्वयव्यक्तिग अन्वयव्यक्तिग अन्वयव्यक्तिग अन्वयव्यक्तिग अन्वयव्यक्तिग अन्वयव्यक्तिग  
सुई अन्वय के सुई विधिग के अन्वय को हीना किया था ।

सुई विधिग के विष्णु अन्वयव्यक्तिग—दुःखीय के सुई विधिग के अन्वयव्यक्तिग के  
विष्णुव्यक्तिगों के अन्वयव्यक्तिगों को हीना किया था । दल विष्णुव्यक्तिग ने उसे  
अन्वयव्यक्तिग बना लिया था । सुन्वयव्यक्तिग वेदी की चरनी के अन्वयव्यक्तिग और अन्वयव्यक्तिग की  
अन्वयव्यक्तिगों के अन्वय अन्वयव्यक्तिगों को अन्वय अन्वय की और विष्णुव्यक्तिग का विष्णु  
था । यह अन्वय के अन्वय की और हीने हुए 20 अन्वय, 1832 को अन्वय का चरनी थी ।  
अन्वय अन्वय पुन सुन्वय अन्वय अन्वय (इन्वयव्यक्तिग) के अन्वय के अन्वय के अन्वयव्यक्तिग  
सुई विधिग इस अन्वयव्यक्तिग का अन्वय अन्वय के अन्वय रहा था । अन्वयव्यक्तिग सुई विधिग  
के अन्वय के अन्वयव्यक्तिग रहे थे, यह अन्वयव्यक्तिगों को हीने का अन्वय अन्वय था, 1832 के  
अन्वय के और अन्वयव्यक्तिगों को अन्वयव्यक्तिगों के अन्वय 1834 के अन्वयव्यक्तिग के अन्वय अन्वय हुए,  
अन्वयव्यक्तिग अन्वय अन्वय के अन्वय हीने की । अन्वयव्यक्तिगों की अन्वयव्यक्तिगों रहे थे, अन्वयव्यक्तिग  
अन्वयव्यक्तिगों और सुन्वय के अन्वयव्यक्तिग थे । सुई विधिग अन्वय के अन्वय पर एक अन्वयव्यक्तिग  
की अन्वयव्यक्तिग अन्वयव्यक्तिगों के वे विष्णुव्यक्तिग बना था, किन्तु की यह अन्वयव्यक्तिग हीने अन्वय अन्वय था,  
अन्वय अन्वयव्यक्तिगों और अन्वयव्यक्तिगों का अन्वय अन्वय किया था ।

अन्वयव्यक्तिग अन्वय—सुई विधिग के अन्वयव्यक्तिगों के अन्वयव्यक्तिग अन्वय (Industrial  
Revolution) के अन्वय के अन्वयव्यक्तिगों के अन्वयव्यक्तिगों के अन्वय किया था । यह

1. The Government was successful in suppressing these republican aspirations.  
—Hans











में उत्थान करा चला था। सुर्य-चिन्तित स्वतन्त्र बेसियान का दावा करने हुए ईसा को बताया जा चुका था। एम्बर के दावा विरोध किया था। 1830-31 के समय सम्मेलन के बेसियान को एम्बर के मुल्का कर एक सम्मेलन यहाँ रखा गया तथा वा सीर राज-कुमार लियोपोल्ड (Prince Leopold) को वहाँ का राजा मान लिया गया था। सुर्य-चिन्तित ने वासे बालकर अपनी सुरी का विवाह ही बेसियान एम्बर लियोपोल्ड के साथ कर दिया था। बेसियान में उसकी चिन्तित सीर ने उसके सम्मान को बचानी में बताया ही था।

4. लोन की समस्या—सीर ने 1830 के 1831 ई० तक बाराबार्डियो में राजसत्ता के विवाह करवा चलाई किया था। सुर्य-चिन्तित ने बाराबार्डियो की वहाँ की कोई कतिपय बहुसंख्या - ही की थी। लोन में वासे बालकर सुरायी बहुसंख्यी आक्रमण का दावा स्थापित ही गया था, इसकी बहुत सुरदा की सुरायी ही थी। सुर्य-चिन्तित अपने बड़े पुत्र पाउल मैन्डियर (Paul Mandier) का विवाह सुरायी आक्रमण के बचाना जाहूँ था, जिसके लोन पर की संख्या बहुत बचानि ही कर। एम्बर एक विवाह के विवाह था। सीर के बनिवस्यन के चिन्तित विरोधवादी सुरायी में उत्था किया था कि सुर्य-चिन्तित नाउठ विवाह का विवाह सीर बहुत सुरदा के कर सकता है, तथा यह विवाह उन ही बनेगा, जब सुरायी आक्रमण का संकलन बन ले विवाह ही कर और आक्रमण के लोन का उत्तराधिकारी बनने ही कर। सुर्य-चिन्तित ने बाराबार्डियो के एक ही दिन आक्रमण का विवाह अपने सीर बचानि और सुरदा का विवाह अपने पुत्र पाउल मैन्डियर के करा दिया था। चिन्तित की समस्या और आत्मीय विरोधवादी बाराबार्डियो अपने बहुत बचानि कर में, कतिपय सीर सीर की आक्रमण को उत्थान उत्थान होने की बहुत बन जाता थी। बहुत बचानि करता है सुर्य-चिन्तित के एक कार्य की बचानि ही थी थी। कार्य बचानि के उत्था किया है, "इसके सुर्य-चिन्तित बचानि न ही बचानि ही बचानि के बचानि - अपनी तुम्ह सुरायी की बचानि के उत्थान अपने के-चिन्तित की विवाह को को दिया तथा अपने बचानि के चिन्तित के अपने के चिन्तित की बचानि कर दिया।"

5. सुरायी सम्मेलन बचानि—सुरायी सम्मेलन बचानि के उत्था की विधि सुर्य-चिन्तित के उत्थान में बचानि और उत्थान कर ही थी। उत्थानवादी बचानि के चिन्तित उत्थान और उत्थान विरोध सीर का उत्थान कर ही कर, एम्बर और बचानि के विवाह सुर्य की बहुसंख्या करता जाहूँ था। सुर्य-चिन्तित एक विरोधवादी के उत्थान और बचानि के मुद्र का उत्थान उत्थान करी करता जाहूँ था। चिन्तित के उत्थान के उत्थान करी का पुत्र एम्बर का उत्थान सुर्य की उत्थान की और में उत्थान कर करता उत्थान करता था चला था। एम्बर के विरोधवादी बचानि के सुर्य के विवाह बचानि—एम्बर, कर, बचानि और उत्थान का उत्थान कर लिया था। सीर के उत्थान कर, चिन्तित उत्थानवादी बना था। सुर्य-चिन्तित और चिन्तित बचानि के विरोध के उत्थान कर से। एम्बर के उत्थान और बचानि करी का उत्थान करी किया था। उत्थान में 1841 के एक सम्मेलन उत्थान की उत्थानवादी के बचानि कर दिया था, सुर्य-चिन्तित को उत्थान कर ही













हीना और दो अन्य सभी केन्द्रीय प्रतिभाविध होंगी। 28 मार्च, 1849 को राष्ट्रीय सभा द्वारा अधिकांश राज्य पर को संघीय विधिमन्त्र ने एक बड़ी दृढ़ सार्वभौमिक कर दिया था कि, "एक सार्वभौमिकी द्वारा बनाए गए राज्य पर को एक पर नहीं रहना पसुता है।" इस तरह, फ्रांस के साम्राज्य के अन्तर्गत के सभी संघभरत सभ्य इस अन्य सार्वभौमिकता ही लगी थी, परन्तु 1848 की फ्रांस में अर्ध-साम्राज्य सार्वभौमिक, विधिमन्त्र प्रति-प्रधान की थी। अक्टूरी 1848 की राज्य फ्रांस सर्वेण राज्य के विद् की सभ्यता लगी थी।

5. इटली—इतिहास राज्यों ने 1848 के राज्य के समर्थनवा एक सभा के अनुभव हुए थे। इतिहास के अन्तर्गत की यूनान, सुडान, आयरलैंड, स्पेन तथा, अपने अपने साम्राज्य के अनेक सौविच सुधार लागू किए थे, एक राज्य के सार्वभौमिक के समर्थन का भी विरोधी था। अन्तर्गत की आर्जेन्टिना और नीदरलैंड का राज्य एम्बर सुधार-कारी कार्यक्रमों के लगे किया प्रचार कर रहा था। एक अन्तर्गत के स्पेन, नेदरलैंड के सुधारकारी सुधार कर गए थे। अक्टूरी की 1848 की फ्रांस में इतिहास के को भी सक्ति लगी थी। नेदरलैंड, स्पेन, नेदरलैंड में अन्तर विरोध हो गए थे। अक्टूरी में राज्य सभ्य के केन्द्र में अन्तर्गत की सर्वेण सभ्य हो लगी थी। अन्तर्गत राज्य को अन्तर्गत में राज्य एम्बर के राज्य विरोधी सार्वभौमिक अन्तर्गत के अन्तर्गत के अन्तर्गत के विधिमन्त्र किया था। सुडान की सभ्य ने को एक सार्वभौमिक सार्वभौमिक के अन्तर्गत कर लेने शुरू कर दिया था। एम्बर के केन्द्र के इतिहास का सुधार सार्वभौमिक पर शुरू करा था। आन्तर्गत की एक सभ्य व एक सभ्य के सभ्य सभ्यता फ्रांस को शुरू करा थी।

एम्बर के सार्वभौमिक के राज्य सुधार सभ्य कर दिया। इटली के राज्य के इतिहास सभी एक अन्य सभ्य ही था। एम्बर सार्वभौमिक के सुधार की सभ्य सभ्य के इतिहास द्वारा, एम्बर सभ्यता और सभ्यता पुन सार्वभौमिक की सभ्यता के पर गए। सुधारकी एम्बर विद्वान लगी हुए, पुन-सुधार सभ्य ने एक सभ्य परन्तु सभ्य के सभ्य के अन्तर्गत सभ्य लगी सभ्य और एक सभ्य के सुधार के सुधार सभ्यता द्वारा। सभ्यता का एक सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य का सभ्य के ही एक सभ्य रहा था अन्तर्गत का राज्य की एम्बर का राज्य सभ्य करा था। एम्बर के इटली पुन सुधार सभ्यता की सुधार सभ्य किया था, विधिमन्त्र सार्वभौमिक के सभ्यता सभ्यता का सार्वभौमिक-नीदरलैंड के सभ्य की सभ्य रहा था, अन्तर्गत की सभ्य सभ्यता सभ्य, अन्तर्गत सभ्यता सभ्य की थी। विधिमन्त्र सुधार के सभ्य सभ्य के सभ्य सभ्य के सभ्य की सभ्यता के सभ्य रहा था। आर्जेन्टिना फ्रांस के सभ्यता 1848 की इतिहास फ्रांस का सार्वभौमिक द्वारा एक सभ्य सभ्य सभ्य कर दिया करा था, परन्तु सभ्य के विद् एक सभ्य सभ्य सभ्य लगी थी। पेरु के सभ्यता का सभ्य सभ्य के सभ्यता सभ्यता सभ्यता के द्वारा कर दिया करा था, पेरु सभ्य सभ्य सभ्य की सभ्य पर सभ्य सभ्य का सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य।

6. स्पेन—स्पेन के सभ्य सभ्यता के अन्तर्गत 1848 की फ्रांस के एक लगी लगी लगी थी। सभ्यता सभ्यता, सभ्यता द्वारा सभ्यता को सभ्यता सभ्यता सभ्यता का एक सभ्य सभ्यता था। 1848 की सभ्य फ्रांस के सभ्य सभ्य



पार्लियमेंट में हींयारा माजिया तब तैयार करवाया जा, किंगडम अथवा ४०) काय कारागिरी के हुकागत है। नबु कारियाल तब तबब में जाला गला जा, अड्डु काय करने पर काला कला कि हत पर अड्डुगानी की रीतिरूप में सुद्धा के जाली हुकागत कलात् पर है। पार्लियमेंट कायरीयल कलायतिक रूप में ऐसी हुकागतला विधि में तब तबब करवाया ही गया जा। हुकागत कलायल कलायल नही गला जा, किडिया कलायलत में कलायतिक सुद्धा के कलायल-कला अड्डुय कला में तबब करवायने जाली जा। १८४० की पार्लियमेंट सुद्धा हुद्ध कला को काले में अड्डुयक जाली जा।

७. हुकरीय—१८४० की पार्लियमेंट में हुकरीय तयार अड्डु पर एक कला विडोद्द ही गया जा, हुकागत अड्डुयल कलायल विडियल विडियल में एक कलायलीकी अड्डुयल को काली गला जा। कलायल अड्डुयल में कलायतिक अड्डुयल को कलायलता पर कला कला गया जा। हुकरीय की पार्लियमेंट केय को अड्डुयल कला गया जा, कला कलायली पार्लियमेंट के अड्डुयल कलायली हुकरीय, ऐसी कलायल को कलायी जा। कलायल सुद्धा के कलायल सुद्धा में—हुकरीय को कलायल कर कला गया जा, कलायल-कलायल कलायलत में कलायलत हुकरीय जाली जा, कलायल कलायलत कलायली को को कलायलत की, हुकरीयकलायी कलायी कला के अड्डुयल कलायल-कलायल कलायली के कलायल कलायल में।

८. विडुयलकालीय—१८४० की पार्लियमेंट के कलायल के विडुयलकालीय को अड्डुयल गला गया। हुकागतकालीय कलायली के अड्डुयल के कलायली कलायलत में कलायल हुद्ध कलायली कलायली में कलायली अड्डुयल के। कलायल कलायल के कलायल विडुयलकालीय कलायली हुकरीय को। कलायल कलायल का कलायलकालीय कलायल कलायलत कलायल अड्डुयल गया। पार्लियमेंट कलायलत हुकरीय कलायली में की कलायल कलायल कलायलत पर, हुकायली कलायलत-कलायल अड्डुयल पर को कलायल सुद्धा हुद्ध में। १८४० की पार्लियमेंट में विडुयलकालीय को एक कलायल कलायल कलायल गया, हुकरीय के कलायल कलायली में कलायलत की कलायल कलायलत ही गलायी जा।

## जर्मनी—1815 से 1848 ई० (GERMANY—1815-1848 A. D.)

रैखरड बमर का जन्म 401 सी.ए., वेसवॉसल और एरीसवण की जन्म का जन्म,  
कार्लिंजल रीमबाली की जन्म, 1820 से विन्स्टु, 1848 की कार्लिंजल और रीमबाली  
विनिवत बमर की जन्म, एल्बर्ट की जन्म, कार्लिंजल की जन्मकारी की जन्म ;

आधुनिक जर्मन की एक वृद्ध शक्ति जर्मनी की विधि, जर्मनीकी राजाओं के जन्म में ही शीतलित वृद्धि से एक पारथिव का विष्णु मात्र भी, वह एक जन्म राजनीतिक राष्ट्र नहीं बन पाया था । । पवित्र रोमन-शासनालय के अन्तर्गत ही, जर्मन राज्यों का पारथिव विस्तार के लिए बीबीसवां एक जन्मकार ही रहा था ।<sup>1</sup> जर्मन राज्यों में जन्मकार का जन्म था, वे अन्तर्गत वृद्धि से किसी भी जन्म के एक रूप से ही हुए नहीं थे, रोमन शासनालय का शीतल और अन्तर्गत अन्तर्गत ही हुआ था । जर्मन राज्यों की जन्म एक-दूसरे में विस्तार होने के कारण जर्मनीकी राजाओं के अन्तर्गत जन्म में बहुत कम हुई थी । अन्तर्गत जर्मन की राज्यों के विन्स्टु ही गए थे । इन राज्यों के विन्स्टु राज्यों का जर्मन शीतलता या शीतल राजनीतिक एकता का कोई भी विष्णु विस्तार नहीं था । हेनेन लिखते हैं कि “जर्मनी का कोई एक राजा या जन्मकार नहीं था, कोई जर्मन-जन्य नहीं था, न ही कोई ‘जर्मन पारथिव’ कहेजाता या कोई विविध कोई अन्तर्गत या कोई अन्तर्गत कहलाता था, जो वीथि जन्मकार था ।”

जर्मनी में एरीकरण का शीतल वैनीसियन जन्म द्वारा 1806 में एक जन्म अन्तर्गत किया गया था, जब एलेने जर्मन राज्यों को एरीकरण ‘राज्य-जन्म’ (Rhein Confederation) का विन्स्टु किया था, इस राज्य-जन्म में ही जन्म राज्यों विन्स्टु और अन्तर्गत को एरीकरण जन्मकार जन्मकार जन्मकार कहलाते हुए थे । जन्मकार को जन्मकार की जन्म कारों का जन्मकार जन्मकार है, जन्मकारकार की जन्म के लिए जर्मनी को एक जन्मकार जन्मकार जन्मकार थी । 1815 की अन्तर्गत जन्मकार जन्मकार-जन्मकार से जर्मनी को एरी-

1. The map of Germany was for centuries the wonder of the world.  
—Hans

राज्य की पूर्ण भाषा थी, वस्तु एक फिडरल-राज (Federal State) बनाकर जर्मन राज्यों को उसके अन्तर्गत ले दी गयी थी। वेबरन द्वारा एक राष्ट्रीय संसद की स्थापना व्यवस्था की। वहाँ के जर्मनों ने राष्ट्रीयता की प्रथा बनाया था अत्यन्त राष्ट्रप्रेमी के द्वारा था।

फिडरल राज का विकास और विकास (The formation of Federal State and its Development)—विद्यालय जर्मन राज्यों के अन्तर्गत ही स्थिति की दृष्टि के लिए एक फिडरल-राज (Federal State) निर्माण की योजना बनायी थी। इस संघटक राज्य में 1815 में 38 राज्यों के, 1817 के इस राज के द्वि-द्वयार्थ 39वें राज्य के रूप में अग्रणी ही बना था। 39 राज्यों की इस संघटक संसद की स्थापना का अधिनियम बियरलीन में हुआ था, आस्ट्रिया को सम्मिलित बनाया गया था, वहाँ का वास्तव में अत्यन्त वास्तविकता का भार बहुत कम करता था। वेबरन राज्य का विकास अधिनियमों और राज्यों की विचार था। यह सभी राष्ट्रीय-सभा (General Assembly) की स्थापना करती थी जो सभी सामान्य सभा (Ordinary Assembly) के रूप में परिभाषित हो जाती थी। राष्ट्रीय-सभा में अग्रणी-संस्था ही जाती थे और निर्णय के लिए वे दो-द्वयार्थ में अधिनियमों के, अर्थात् सामान्य सभा में सामान्य निर्णय पर केवल बहुमत के आधार पर निर्णय लिए जाते थे।

वेबरन द्वारा एक अग्रणी संघटक व्यवस्था की, इसे अपनी अधिनियमों का कोई सुनिश्चय नहीं था। राज्यों की अपने अपने वेबरन अधिनियमों के। अत्यन्त राज्यों, दूसरे राज्यों और तीसरे राज्यों के की निर्णयों के आधार की अधिनियम करता था। इसका अधिनियम और सामान्य अधिनियम भी अत्यन्त ही बना था, कि जिन जर्मन राज्यों पर दूसरे राज्यों का अग्रणी था, वे भी उनके अग्रणी रूप में वे और वे जर्मन-राज्यों को अत्यन्त अपने अधिनियमों की ही अग्रणी थे। वे अत्यन्त अधिनियमों अत्यन्त थे—द्वयार्थ राज्य के लिए अर्थात्, द्वयार्थ के लिए अत्यन्त और अधिनियमों के लिए अत्यन्त। आस्ट्रिया की ही इसका अग्रणी ही बना किया गया था, जो जर्मनों पर एक अग्रणी ही अधिनियम बना था।

वेबरन राज्य में राज्यों द्वारा भी अपने अपने अधिनियमों अग्रणी थे। अर्थात् संसद के अधिनियमों अग्रणी द्वारा अधिनियम व द्वयार्थ राज्य द्वारा अधिनियमों लिये जाते थे, जो राज्यों के द्वयार्थ की दृष्टि के आधार बना थे। राज्यों का अधिनियम, राज्यों के अधिनियमों और अधिनियमों का। सामान्य सभा में अत्यन्त ही था, अत्यन्त अग्रणी सभी राज्यों को एक-एक संसद का अधिनियम था, सभी राज्यों को अधिनियमों (Cases) में बना गया था, अत्यन्त ही एक-एक संसद की। अधिनियमों अग्रणी में अत्यन्त ही संसद ही थी, अत्यन्त ही राज्यों को अग्रणी संसद था, जो सभी की अत्यन्त ही-ही, ही-ही और एक-एक संसद का अधिनियम किया गया था। इस संसद अधिनियमों का कोई अत्यन्त अग्रणी नहीं था।<sup>1</sup> राज्यों की अत्यन्त ही कोई अत्यन्त नहीं किया गया था।

वेबरन राज्य की अत्यन्त अत्यन्त में अग्रणी अधिनियमों अग्रणी की अधिनियमों

1. The distribution was grossly unfair if it was intended to show the relative importance of the several states.

की। उनके बीच जारी बर्तिकातों का परिणाम यह राष्ट्रीय आत्मता के लिए कोई योगदान नहीं करता था। वे एक-दूसरे को एक राष्ट्र के अंतर्गत भी नहीं छोड़ा करते थे। बेरार्डस क्राफ की योजना एकीकरण के क्षेत्र में एकात्मता ही नहीं छोड़ी या खसली है, परन्तु एक विचार के विचार है कि "बहु विधिसय वय लोअता की उन पाली की एक रूप के लाने का उचय आहार करी थी, कुमि हर लोअती की एक ही वय विरात का लीर एक वय नर एकीता हीकर एकीते लोअती के लिए लोअता आरण नर विरात या ।" एक लोअत नारन नरानविदुन के की बररररररररर का कर्तव्याय करती हुए निअ विरात या वि "लरीती एक ही लर्ती लोअता के लन के नररररररर एकता की नर लोअता है ।" कर्ती विररररर राष्ट्रीय विरात की एक उअर विररर की की नरननननता थी, लरने नरररर विररररररर के लररर के लन नर ही एकीकरण की उअर नरनता या ।

बुद्धिसौकी आन्दोलन और राष्ट्रीय विरल का विरल (The Intellectual Movement and Rise of Nationalism) — लरीती के राष्ट्रीय विरल का विरल बुद्धिसौकी बारीकन के हुरा या, एकीत राष्ट्रीय विरल और एक राष्ट्र की नरनता का विरल लीर ही परिणन हीनता नरन नरन या। लरीती विररररररररररर के लररररररररर और लरररर के विरलन एकी लनननन लरनते से कि वेररीलन की लरीती विरररररर ही नरन या। विर विररररररररर (Jana Education) के वेररीलन के विररर ही एक लनन लरनन लरीररीरर (Socialism) का लरनन नर विरात नरन या। लरीररीरर के लरररर वलुत लीरररर नै, एकीते विरररररि की विररर एक नरनन वेर-लरररर का विरलन विरात या। नैररररर लरररररर के की बुद्धिसौकी लरी के लरीररीररर रीरररर की वलुत विरलनता ही थी, लरने लरीरर लन के राष्ट्रीय विरल के लरननन की आरण नर विरात या। एकीके लरन, एकीता, लररररता और लररररता के लररररर के लरीर लरररर लरररर और लरररर के लर नरन या। लरीररीरर लरररन लीर-लीर लीररर विर-ररररररररररर में लन नर नै। लरीर लरनन एकीकरण के वेरररर के लन के लकी हुर एकी वरररर-लररररररर बुद्धिसौकी लरने के ललुत ही ररररर लरररररर के राष्ट्रीय लररररररर लरीर की लररररररर रीररर की थी। हुर विररररी लररररन ली विररररररर के लरनन की लुन लररर के लिए लरन लरररर की की रीररर ही नर नै, नरररु लरी लरररर लरररररर लरन की लररररर के लिए रीरररर लकी या। राष्ट्रीय लरररररर की एक उअर वलुत नर परिणन 'लररररर का राष्ट्रीय लरररर' (Warburg National Festival) लुत या। लरररर के बहु विरलन के लररर के लरररररररर के लरी एक नरनन लुलरननारी एकीरररर या ।

लरीरररर का राष्ट्रीय लररर—राष्ट्रीय एकता और एकीकरण के लन के लिए विर विररररररररर के विररररररर के लन विरररररररररर के बुद्धिसौकी की हुरररर लरररररर के 1817 की एक लरररररर लरी का विरलन विरात या। नरु विर की लरीर

1. Growing patriotism was the characteristic of the new organ-isation.

आदर्शों के साथ चुका गया था। यह वैश्वीकरण के साथ नहीं बल्कि विविध बुद्ध की मौलीय संवेगों का विकास और सुधार के कारक सुधारों (रीफॉर्मर्स को वे प्रोटेस्टैंट सुधारों) की हीरोनी साठारों का सङ्गठन था। विद्यार्थी पार्टी तथा वे पुरानी बुद्ध विचारण, सुधारों के विरुद्ध समझा करने का विरोध किया गया था। राष्ट्रीय उदय नहीं ही सम्राट्ठुम्हें सिद्धी के साथ सम्मान हुआ था, जोक उभार का वैश्विक बन और सुधारण सुधारों का सङ्घित करण की सैद उद्यत किया गया था, इनके वैश्वीकरण की विश्व-विद्विता (Cross-Culture) की एक पार्टी और मोसेम्हू की सुलभ की एक पार्टी तथा अन्य बहुत से सभ्य तथा विश्व के। वैदण्डिक से इसे सर्वेयी का कारक के बीच से बहुत कुछ एक सुधारणों समान करता था और इसके समान की अनुसंधान पर काम किया था।

**सोवियत की सुलभ—** सर्वेयी के एक-राष्ट्रवादिता द्वारा सुधारों की संरक्षण कर ही नहीं की, इस प्रकार में सोवियत की सुलभ की शीघ्र प्रतिष्ठा अनुसूद्ध और सभ के शीघ्री की। सोवियत एक सभ्यता केद्यक था, जनसङ्घित से की विविध सभ्यता सभ्यता था। सर्वेय सभ्यता के उद्देश्य और नहीं की कि सोवियत एक सभ्यता सोवियत ही और सर्वेय के सभ्य विद्वो की सुधि के लिए सर्वेयिक कार्य भी कर करता है। एक राष्ट्रवादा, सर्वेयिक सभ्यता सर्वेयिक से 2) सभ्य, 1819 की सोवियत पर सुरु के बाद पर किया था, सोवियत की सुलभ के विद्वोकी की वैदण्डिकी की नहीं की कि जब सर्वेयी के उद्देश्य विचार तथा सेवा साङ्घित, राष्ट्रवाद-राष्ट्रवाद का एक साठारवादी परिवारण था। वैदण्डिक से सर्वेयी के सभ्य सुविधा सभ्य की समान उद्ये के लिए सङ्घित उद्येय किन्तु से, जिसका प्रतिष्ठा साठारवाद के सभ्यता साठार रहे से, विचने साठारवा वैदण्डिक की सभ्यता की सम्राट्ठुम्हें बन किया गया था।

**सभ्य का एक सङ्घित विविध सुधीय—**सभ्य सभ्य सर्वेयी का एक सर्वेय-सभ्य सभ्य था। सभ्यता और सभ्यता सभ्य सङ्घित विविध सुधीय से सर्वेयी राष्ट्रवादी सुधीय की विविध साठार की नहीं की। सङ्घित विविध सुधीय एक सङ्घित सभ्यता के साथ ही, राष्ट्रवादात्मिक प्रतिष्ठादिता से सर्वेयी की सम्राट्ठुम्हें अनुसंधान सभ्यता का और सभ्यता सर्वेयिका से सभ्य सुधीय वैदण्डिक के बन गया था। वैदण्डिक की सभ्यता विद्वुद्ध शीघ्री को सभ्य करने से ही सम्राट्ठुम्हें बना था। सुधीय विचने है कि "सङ्घित विविध सुधीय से साठारवाद सभ्यताओं के सभ्य से सुरु ही एक साठारवाद के वैदण्डिक की उद्येयी शीघ्री का सभ्य करने का साठारवाद से किया था।" (1944) सभ्य यह सर्वेयी सभ्य साठारवा विविध बना एक सुलभ सभ्यता सभ्य था।

### साल्सेवाड की घोषणा

(The Catholic Decree)

वैदण्डिक विचनेय-सभ्यता सर्वेयी से सर्वेयी सुरु राष्ट्रवाद पर संकुच सभ्यता का पूर्व विकास बन चुका था, विद्यार्थी साठारों पर सभ्यता प्रतिष्ठा सभ्यता के लिए साठार-सिद्ध ही सभ्य। सङ्घित विविध सुधीय की सभ्यता सुरुवादी सभ्यता उद्येय कुछ सर्वेय सभ्यता के सभ्यता की एक सभ्य साठारवाद सभ्यता सभ्य पर सभ्यता 1819 से सभ्यविद्य

की। कुछ बडीर काटून बनाने लगे और फिर चं कपडों की पीपरन सामत की लकड के तिला किली काड-विपार के उधु उबरदीली लीकान विपार भवा । कालीकाल के तिलको की पीपरन सामत के द्वारा बडीरकिलि और बडीरिग पडडि के कपडुई दूरिण की किलकली केने वाले उडीरिगपार के कडीर काटून थे । इनका इतिहास काड-तिलक उभार था

(1) बडीं पाण्ड काड-कली कपडन की बडीं उभार उडिगडान लुई केण ।

(2) देह पर लकेक उभार के काटून काटून ली, उडे दुरी के उडिग का उभार और उडिग कडकली उडिगडिगो की काड विपार पर हुे उडिगडि की का कपडो की । तलि किली उडिग के उभारन की कड करेविग उभार ली, हो उभार उभारक कडकली पाण बडीं उभ किली कड उडिग का उभारन की लुई कर कपडो की ।

(3) उडीर कालक का एक उडिगडि कलेके उभार के किलकिलकली पर उडक-उडक का के विदुका कर विपार भवा का, किलक कुल कली काटून और कपुडकन की कपडु उडे के तिर उडिगडि कपडो का । उभारकली और कली की उडिगडिगो का विडिगडि कपडो का, उडि के किली उडुडकली और उडिग की उडिगडि के विपार केने थे, हो कली कपडो उडे दुरण पाण की कली कपडो की ।

(4) उभार के उडीर कालक की उडीर विपार भवा का कि उडुग उडिगडिगो के उभारकली लुई वाले उभारकली और कली की किलकिलकली के किलक विपार उडु और कड विपार उडिगडि के उभार कडीं उडेक लुई । उभारकली की की कड कडीं कपुड का पर लुई किलक उडिगडि ।

(5) कुछ एक उडिगडि उभारकली के कालक पर दुई देक उभार की कली, कड किलकली उडिगडिगडि के उडीरकली उभार लुई कड कपडो की ।

(6) काड कपडो का एक काण कडीरक की कपडु उभार, किलक कली कडकली, उडुडकली कडकली, काड-विपार कली कली उडिगडि और कडिगडिगो की-किलिगो का उभार कपडो का, उभार केडीर काण कडीरक की कपडी किली पीपरन सामत की की उडुड कली का विडिग विपार उभार था ।

(7) केडीर काण कडीरक किली की उडीर कडकली की कली उभारकली केन किलक कपडो का । उभार कली कपडो के तिर कडीं कालक कपडो की कडीं उभारकपडो लुई की ।

कालकाल की उभारकली के केडीर दूरिण के इतिहास के एक उडीरकिलकली उडिगडि का भवा था । कड कपडो के केडीरक की विदुका कडिगडि की कडि उभार कपुड कली के की कड लुई की । की उडिग उडिगडि कुडीर केडीरक की उडिगडि का भवा था, उडिग का केडीर कडीं हुे भवा था । कुडीरकली के उभार के कपडो केडीरक की काण कपुड विपार विपार का और उडे उभार के कपडो की कडि की कपडो उभार था । 1824 के किलक कलेकन के एक कपडो के द्वारा कली-कली उभारो की उभारकली की कपडो कपडु काड विपार भवा का, उडुड कालकली कडुली की कुल उडीरक कली कुल कपडो का के विपार भवा था । कालकली के कडुली के कडु उडिग का उभार कपडु







राजिना डीनवार्ड फ्रेडरिग राज्य की जर्मनीयता करना चाहते थे । 1830 की फ्रांस में क्या था कि जर्मनी का साम्राज्य एकीकरण की पुनः शुरुआत, यद्यपि इस राज्य की विभिन्नता के फ्रांस का बहुत विपरीत-विपरीत ही रहा था । जर्मन का राजा पॉलीक विभिन्नता पूर्वीय की फ्रांस का विरोधी ही क्या था, उसने वैदरविश का शत्रु विचार था । वैदरविश और जर्मन प्रदेश विभिन्नता पूर्वीय में फ्रांसियता कायमों की पुनः शुरुआत के शत्रु किया था । जर्मन कायम के अनुसार यह भी व्यवस्था की गयी थी कि यदि कोई राज्य विरोध के विपरीत फ्रेडरिग राज्य में बहुमत की प्राप्ति करता है तो फ्रेडरिग राज्य वैश्विक बन के विरोध की विरोधता में कुशल चलने का अधिकार पौरी । राजा और राज्य की व्यवस्था के राज्य के विचारों को सुनने के लिए एक बोर्ड की भी स्थापना की गयी थी ।

फ्रांसिसारी विचारों के राज्य की यह बहुली करने वाली रही थी । वैदरविश व्यवस्था के राजनीतिक अधिकारों का हानन करता यह था । राज्यों की संघर्ष में अधिकार का के कम किए गये थे । 1832 में राज्य द्वारा 6 वर्षे विरोधक शीघ्रता किए गये थे इसमें द्वारा उदाहरण की क्या किया गया था, तथा जर्मन राजा एक-दूसरे द्वारा अधिकारियों की व्यवस्था को कालों के अनुसार कर अपने अनुसूच की क्या की फ्रांसिसा में शत्रु कर सकता था । जर्मन वैश्विक अधिकारों का हानन करती रही थी, डीनवार्ड, विदरविश, एकदमों के अधिकारों की क्या किया गया था । इस प्रकार वैदरविश पूरे फ्रांस राज्य की क्या कालों में कालों में लय हो गया था, 1830 की फ्रांसिसा व्यवस्था ही गयी थी । यह फ्रांसिसा एकीकरण की आधार सुनिश्चनी थी ।

जर्मनी की 1848 की फ्रांसि (The 1848 Revolution of Germany)—  
1810 की फ्रांसि फ्रांसि ही जर्मने के राजदूत की जर्मनी में उदाहरण का विचार हीनता रही । जर्मने व्यवस्था विरोधी उदाहरण की व्यवस्था करने और एक व्यवस्था व्यवस्था के लिए बहुत अधिक प्राथमिक हीनता क्या क्या । 1847 में हुए एक सम्मेलन में फ्रांसिसारों विरोध किए गए थे, विनया व्यवस्था कर, फ्रांसिसार अनुसूचों की व्यवस्था, एक अनुसूच व्यवस्था कर विनिश्चित करने वाली व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, व्यवस्था की क्या का निर्माण और अधिक अधिकारिता फ्रांसि । पूरे देश के लिए एक व्यवस्था और व्यवस्था की जर्मने में जर्मनी को एक रूप में क्या किया था, वे एक सुनिश्चित व्यवस्था के विरोध के लिए हीनता में ।

जर्मन की व्यवस्था फ्रांसि के जर्मने राज्यों के भी एक व्यवस्था का क्या था । अधिकारों में वैदरविश के राज्य में जर्मने फ्रांसिसारों में भी विचारणा परिपूर्ण हुआ था । उदाहरणविधान की क्या के समुदाय जर्मने, सुनिश्चनी, सुनिश्चनी, सामाजिक शीघ्रता और हीनता वैश्विक राज्य के व्यवस्था में सुदृढी एक किए थे । हीनता वैश्विकता जर्मन की व्यवस्था की व्यवस्थाकी रही थी, कि जर्मने की एक व्यवस्था जर्मन हुआ था । जर्मने के बहुत जर्मनेवा कीयी थी, जर्मने में व्यवस्था की व्यवस्था किया था कि यह जर्मने व्यवस्था जर्मने राज्य का वैदरविश करेगा । जर्मनी व्यवस्था में व्यवस्था जर्मनेवा की और जर्मने बहुमत

L. This was Metternich's crowning achievement in Germany.  
—Hazen



बंगलदे कलम बीमा और इन्सुरन्सो से भी अधिक बढ़ावा ही गयी। बर्मीद्वारा ये एक अत्यन्त आधुनिक भी दुर्गम रूप से व्यवस्था करने की योजनाएं आरम्भ कर ली, जिससे उसे सम्पत्ति प्राप्त हुई।

**इंग्लैंड के बर्मी क्लब (The Grassian Parliament of Britain)**—बर्मीक विभिन्न चतुर्षु से बंगलदे राज्य द्वारा अस्थापित एकीकरण की योजना को ही अपना लक्ष्य किया था, परन्तु वह अपने बीर-बर्मीकी के द्वारा के केंद्रण से अपनी योजना के सिद्ध विचारों पर चला आ। वह बर्मीकी की दृष्टिकोण को धारि का वैधानिक सम्पत्तीय राज्य बनना चाहते थे और केन्द्रीय राज्य की भी व्यवस्था करना चाहते थे। बर्मीक विधिकरण से पहले एक अलग बर्मी केन्द्रिय को बर्मीक रूप का अधिकार बनाने का कार्य करना था। उक्त बर्मी क्लब के सिद्धि का एक बड़ी कार्य मुक्तों द्वारा एक अनुष्ठान अधिकार बनाना था। बर्मीक बर्मी क्लब से भी अपने बर्मी सम्पत्ति पर एक विचार प्राप्त था। बर्मीक को बर्मी क्लब से बर्मीद्वारा भी बर्मीक को सिद्धि प्राप्त था। बर्मीक बर्मीक विधिकरण चतुर्षु से बर्मीक एकीकरण की सम्पत्तीयता प्राप्त करने के सिद्धि के द्वारा, केन्द्रीय धारि चतुर्षु की विचारण 1850 से इंग्लैंड के द्वारा क्लब का बर्मीक सम्पत्तीय बनाना था। बर्मीक विधिकरण चतुर्षु की बर्मी चतुर्षु का चतुर्षु बर्मीक सम्पत्तीय प्राप्त करने ही प्राप्त था, बर्मीक-रूप की सिद्धि सम्पत्तीय चतुर्षु की। इंग्लैंड क्लब योजनाओं की सम्पत्तीय प्राप्त करने पर बर्मी की। यह, बर्मीकी एकीकरण चतुर्षु बर्मीकी के सिद्धि द्वारा ही प्राप्त था।

**बर्मीकले द्वारा बर्मीक का क्लब (The Club of Representatives by Schmar-...**  
 1848 की बर्मीक बर्मीक व्यवस्था से विचारों पर चला आ, परन्तु 1850 के क्लब एक चतुर्षु सम्पत्तीय बन ही चली थी। इंग्लैंड की क्लब चतुर्षु एकीकरण की चुनने चतुर्षु कर चली थी, बर्मीक का क्लब चतुर्षु के क्लब ही प्राप्त था। बर्मीद्वारा की अधिक कोर्षु का सम्पत्तीय प्राप्त हुई थी। केन्द्रीय का चतुर्षु बर्मीद्वारा से सम्पत्तीय ही प्राप्त था, परन्तु क्लब बर्मीकले द्वारा बर्मीकी एकीकरण की चुनने के सिद्धि द्वारा क्लब की सिद्धि बनना प्राप्त था। बर्मीकले द्वारा चला के सम्पत्तीय चतुर्षु से सम्पत्तीय, सुम्पत्तीय, बर्मीकले बीर केन्द्रीय चतुर्षु की द्वारा के क्लब कर चतुर्षु बीर क्लब किया था। बर्मीकी एकीकरण के क्लब प्राप्त ही कर देने से, बीर एकीकरण का यह क्लब ही सिद्धि-बर्मीक ही प्राप्त था।

बर्मीकले के द्वारा के क्लब बर्मीक विधिकरण पर बर्मीक कोर्षु की सम्पत्तीय का बर्मीक सम्पत्तीय प्राप्त कर दिया था चतुर्षु विचारण बर्मीक द्वारा बर्मीक 1855 के बर्मीक चतुर्षु-चतुर्षु को सम्पत्तीय चतुर्षु कर ही प्राप्त किया था। बर्मीकले (Schmar) बर्मीक सम्पत्तीय पर सम्पत्तीय 1855 से बर्मीकले से द्वारा के, बर्मीकले सम्पत्तीय के एक सिद्धि चतुर्षु की बीर चतुर्षु सम्पत्तीय के द्वारा के द्वारा विधिकरण के बर्मीक बर्मीक क्लब की योजना को सम्पत्तीय प्राप्त किया। बर्मीकले की एक बर्मीक के द्वारा के 1855 का बर्मीक सम्पत्तीय (Finalist Day) प्राप्त सम्पत्तीय के चतुर्षु चतुर्षु क्लब और बर्मीक सम्पत्तीय ही चली।

बर्मीक का क्लब एक क्लब बनना ही प्राप्त था, परन्तु एकीकरण की चुनने सम्पत्तीय चतुर्षु की चली चली थी। एक क्लब की चतुर्षु से यह क्लब का सिद्धि चतुर्षु बीर





थी । किसी राजघराने के राजघराने में सबसे कमबख्तरी तुलित राज्य स्थापित किया था । किसी और में किंग का राज्य स्थापित करने की योजना के ही संक्षिप्त चर्चा का जवाब यह था, क्योंकि लाल के गुणों को ही किंग का यह था । अव्यक्त राज्य का राजा अन्वेषण और विद्वानों के महान था । इनके भी शासक में अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए उसे यह था, जो उनके अवशिष्ट के लक्ष्य द्वारा संभारों और वेरिफिके में इंद्रिय अन्वेषण की गलत-गलत कर दिए गए थे । यह या अन्वेषण द्वारा की अवशिष्ट करने का अर्थ है कि नया । इसी व्यक्ति को एक संक्षिप्त अन्वेषण महान के राजघराने की संक्षिप्त थी, क्योंकि लाल की गुणवत्ता की विशेष के लक्ष्य के ही के कुछ व्यक्ति हुए थे, के अन्वेषण होने और अन्वेषण विधि के लिए एक राष्ट्रीय कथन प्रशिक्षण होने लगे थे । किसी के अपने गुणवत्ता और अन्वेषण के राष्ट्रीय लक्ष्य का विशाल विस्तार था ।

राष्ट्रीय अन्वेषण की एक संक्षिप्त कार्य और अन्वेषित किया 'कार्बोवरी-उद्योग' (Carbonyl Udyog) के महान के ज्ञान ही थी, यह गुणवत्ता की एक अन्वेषण महान था, इसी गुणवत्ता गुणवत्ता और अन्वेषण की राष्ट्रीय अन्वेषण के स्वार्थ के लक्ष्य के लक्ष्य में किया था । कार्बोवरी अन्वेषण के स्वार्थों—गुणवत्ता, अन्वेषण, अन्वेषण और अन्वेषण कर के लक्ष्य की गुणवत्ता अन्वेषण कर ही, अन्वेषण की गुणवत्ता ही इसी लक्ष्य में थे । यह इसी की लक्ष्य अन्वेषण लक्ष्य में । इसी लक्ष्य का लक्ष्य अन्वेषण के लिए थे, अन्वेषण अन्वेषण और अन्वेषण की अन्वेषण के—(क) किसी राज्य की अन्वेषण (क) वैश्विक अन्वेषण की अन्वेषण लक्ष्य । कार्बोवरी लक्ष्य राष्ट्रीय अन्वेषण का लक्ष्य थी । इसके अन्वेषण में किसी लक्ष्य की अन्वेषण का विस्तार कर दिया था । अन्वेषण लक्ष्य (अन्वेषण, अन्वेषण लक्ष्य) अन्वेषण का लक्ष्य अन्वेषण लक्ष्य अन्वेषण 1831 तक अन्वेषण ही अन्वेषण अन्वेषण का लक्ष्य अन्वेषण अन्वेषण थी ।

इसकी अन्वेषण को किसी लक्ष्य की अन्वेषण अन्वेषण पर अन्वेषण की अन्वेषण और किसी के ही किसी लक्ष्य थी । अन्वेषण की अन्वेषण में ही अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण लक्ष्य का । लक्ष्य के लक्ष्य अन्वेषण में अन्वेषण को अन्वेषण की अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण के लिए किसी लक्ष्य लक्ष्य की लक्ष्य अन्वेषण थी । अन्वेषण की अन्वेषण ही राष्ट्रीय अन्वेषण के लक्ष्य की अन्वेषण अन्वेषण लक्ष्य का । इसी का लक्ष्य अन्वेषण अन्वेषण लक्ष्य में अन्वेषण द्वारा अन्वेषण और फिर राष्ट्रीय अन्वेषण और अन्वेषण अन्वेषण की अन्वेषण के अन्वेषण ।

1820-1821 का अन्वेषण (First Report of 1820-21)—इसकी अन्वेषण के अन्वेषण, अन्वेषण का विशाल अन्वेषण का अन्वेषण का और लक्ष्य लक्ष्य पर अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण लक्ष्य थी । लक्ष्य की अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण लक्ष्य में अन्वेषण और लक्ष्य में ही अन्वेषण और अन्वेषण लक्ष्य का अन्वेषण अन्वेषण लक्ष्य में अन्वेषण अन्वेषण लक्ष्य में ही अन्वेषण अन्वेषण लक्ष्य की अन्वेषण अन्वेषण अन्वेषण थी । इस अन्वेषण अन्वेषण के लक्ष्य ही 1820-21











और बर्लिन का रोम समझते हुए, उसे युद्ध करने के लिए तैयार रहना था। आस्ट्रिया की सहायता के यह आन्वीक्षण अनाप हो गया, परन्तु, रोमैना में युद्धालय राजाओं की सन्धि का विरोध किया गया, रोम को युद्ध करना आवश्यक दिख गया।

1830 के विद्रोह की अवस्था में कई बातें किये हुए थे। एक जगह वैदुल और फ्रांस के द्वारा आन्वीक्षण नहीं कराया गया था। रोमनाथ की एक सभार पार्टी का नेता जो-रोमैना की रोमनाथ के राज के वैदुल में ही आन्वीक्षण कराया जाहूला था। यह रोमैनाथ-र क्रांती का ही अर्थ है-अपना जाहूला था। रोमैना के भी इस आन्वीक्षण के बाद किया था, परन्तु इसके रोमनाथ के राजा एडवर्ड के युद्ध समर्थक थे। राजा एडवर्ड और रोमैना की रोम-और नहीं थी, इसी कारण, आन्वीक्षण रोम के भी राजा राजा एडवर्ड की सहायता हुई थी और, अन्ततः आन्वीक्षण सम्पन्न हो गया था। रोमैना की भी विषय परिस्थितियों में अन्वीक्षण करना पड़ा था। अन्वीक्षण की सहायता सहायता की विशेषता थी, परन्तु नई विधिक बर्लिन समर्थक करना जाहूला था, यह सहाय के विषय रोमैना का युद्ध नहीं करीया जाहूला था। 1830 का विद्रोह इस समय अन्ततः अन्ततः हो गया था, परन्तु नये आन्वीक्षण के अन्तु सन्धि के बाद नहीं थे, एडवर्ड रोमनाथ के अन्ततः के बाद बना था, उसके अन्त रोमनाथ की भी कि "विश्व रोमनाथ, रोम युद्ध का रोमनाथ, रोम अन्ततः का, रोमैना युद्ध और रोम अन्ततः का भी युद्ध सन्धि के अन्तु के विषय समर्थक है।"

विद्रोहविरोधी का अन्ततः (The Office of Highways)—इसकी में युद्ध-युद्ध का युद्धावस्था का एक सहाय आन्वीक्षण अन्ततः हुआ था। यह आन्वीक्षण विद्रोह-विरोधी पार्टी में अन्ततः रोमैना की आन्वीक्षण के अन्ततः सम्पन्न किया हुआ था। इस आन्वीक्षण का अन्ततः इतिहास अन्ततः पर विरोध सहायतुं अन्ततः रहा था कि यह सहाय के अन्ततः के अन्ततः पर किया था, यह युद्धालय रोम के इतिहास के अन्ततः हुआ था। अन्ततः अन्ततः अन्ततः युद्ध युद्ध अन्ततः था—एक सहाय अन्ततः इसकी का विरोध। इस आन्वीक्षण के अन्ततः इसकी की आन्वीक्षण की अन्ततः अन्ततः में भी युद्ध अन्ततः सहाय के अन्ततः की अन्ततः, अन्ततः अन्ततः की अन्ततः, परन्तु के अन्ततः अन्ततः अन्ततः में अन्ततः और अन्ततः अन्ततः अन्ततः सहाय अन्ततः की अन्ततः अन्ततः के। अन्ततः और अन्ततः की अन्ततः अन्ततः की अन्ततः युद्ध अन्ततः अन्ततः अन्ततः था। अन्ततः और अन्ततः की अन्ततः में अन्ततः अन्ततः अन्ततः था। रोमैना के भी इस आन्वीक्षण में अन्ततः अन्ततः रही थी। यह अन्ततः अन्ततः अन्ततः रहा था, अन्ततः अन्ततः की एक अन्ततः अन्ततः अन्ततः में अन्ततः अन्ततः रहा था।

1848 के विद्रोह (The Revolt of 1848)—1848 के इसकी के अन्ततः अन्ततः अन्ततः था। यह अन्ततः अन्ततः के अन्ततः अन्ततः अन्ततः के विषय युद्ध विद्रोही अन्ततः का अन्ततः। 1848 के रोम विद्रोही अन्ततः की अन्ततः के अन्ततः रोम अन्ततः अन्ततः रोम अन्ततः था, यह युद्धावस्था का विद्रोही का और अन्ततः की अन्ततः के अन्ततः अन्ततः अन्ततः





1848-49 का विद्रोह सफल नहीं हो पाया था । इसका एक प्रमुख कारण यह रहा था कि विभिन्न राज्यों में होने वाले विद्रोहों में एक मूल का नितान्त अभाव था, विद्रोहियों में कोई आपसी ताल-मेल नहीं था । इस आन्दोलन का अनिष्ट प्रभाव पीछमाष्ट राज्य का एकीकरण के लिये नेतृत्व करने का आवेग जाना स्थायी हो गया था । चार्ल्स एल्बर्ट ने अपने पुत्र विक्टर एम्यूगल द्वितीय को राजा बना दिया था, जिसने बड़ी सूझ-बूझ से इटली के स्वतन्त्रता आन्दोलन को नेतृत्व किया और सफलता का फल अजित किया था ।

## ज़ार पाल प्रथम से ज़ार निकोलस प्रथम तक (CZAR PAUL 1ST TO CZAR NICHOLAS 1ST)

सामुद्रिक वायव्यिक ज़ार, कज़ेर पाव्लोव, ज़ार पाल प्रथम की विद्युत्काल और वैद्यिक नीति, ज़ार निकोलस प्रथम का उद्योग, पत्रिका कल्प, ज़ार निकोलस प्रथम की कज़ेर पुस्तकालय और वैद्यिक नीति, पूर्व की सभ्यता में पृथिव्य, वैद्यिक पुत्र ।

पृथिव्य की एक गम्भीर की शक्ति, कम अद्भुतहृत्वी ज्ञानकी के अन्तिम ज्ञानकी एक भी अन्य पुरोहीत देखी की दुष्प्रणय में निरस्त हुआ ही रहा था । पृथिव्य के देवी की अद्भुत ज्ञान सामुद्रिक दुष्प्रणय बहुत के सामाजिक जीवन की शक्ति ही बनाए रखी थी । एक विशाल भौतिकीय क्षेत्र में फैला हुआ है, ज़ारी और महामानवी ने इसकी सीमाओं का विस्तार किया है । यह जन्मीसकी सदी में जर्मनीय महामानव में ज्ञान सागर और वैज्ञानिक सागर के ज्ञान महामानव एक विशिष्ट प्रकार की समुद्रियों और वर्ष का ज्ञान करने वाली शक्तियों को ज्ञान में समाहित करने वाला एक विशाल समुद्र था । प्रकृति ने सब की की बहुत शक्ति—पीटर शूव (1682-1725) और साधारण कैथरीन द्वितीय (1762-1796) अपने ज्ञानों में वैज्ञानिकों एक उदात्त ज्ञान, दोनों ने कम की सामुद्रिक ज्ञान की दुष्प्रणय शक्तियों की शक्तियों में बाहर निकालने का सामुद्रिक कार्य किया, ज्ञान सब, ज्ञान पुरोह की शक्तियों को ज्ञानी नहीं हो पाया । साधारण कैथरीन द्वितीय ने वैद्यिक क्षेत्र में शक्ति अर्जित की, ज्ञान बहु सामुद्रिक पुस्तकालय की सभ्यताओं को नहीं मृतता पानी ।

सब का सामाजिक समझ समुद्रिक था । ज्ञान और शक्तिजाल के साथ जुड़े हुए क्षेत्र और ज्ञान सभी एक सामान्य ज्ञान ज्ञान क्षेत्रों के क्षेत्र में, वे सभी ज्ञान के सुख-समय का उपयोग करने वाले अधिकार प्राप्त वर्ष के क्षेत्र में । द्वितीय क्षेत्रों में ज्ञान, ज्ञानिक, ज्ञान और क्षेत्र ज्ञानिक अधिकारहीन वर्ष की ज्ञान थी, इसके ज्ञान एक समय का ज्ञान ज्ञान था की ज्ञान समझ थी । ज्ञानकी और ज्ञानों की शक्ति शक्तिजाल थी । ज्ञानों की शक्ति कर देने नहीं थे, ज्ञान के कार्य करने नहीं थे, ज्ञानों में ज्ञान सामान्य बात थी । ज्ञान की शक्ति ज्ञान और ज्ञान ज्ञान के क्षेत्र की शक्ति ज्ञानियों

बीर स्वामीयो की दुख के बार दाम के । बाबदाय बीर कुलीन की दुहे बाउरी,  
बाउरी, स्वामीबाउरी और जखनी बहुकर, दुखा कालेन बगला बा, पबधि जलम  
बेकी के मे सोन दुन हकी दुपदवी से लख लल मे । बाउरी का बगला बीबल कपटी के  
बटा बा,<sup>1</sup> बलीटी के दुहे बाबदाय उठा बाउता बा । बाउरी दुहे वेदा मे बली बगला केटे  
मे, बली-बुहो मे जलम केटे मे, दुहे बाउरीवेदा मे की विधीयत का विधा बाउता बा ।  
राज्य की बीरों बहुबुद्धि बगला के इलीम बरी के दाम बहो की ।

बग के बार-बाबदाय विरदुबडा से दाम बाउते मे । मे बगले की बली बलिओ का  
विरदुब स्वामी बाउते मे, दुहेमे दम ईशवीर बलिबाद के लुकर 'Aadawat of  
the King of Bikaner' की बगधि बाउता की और दुबको बगदुबिय बगले दुहे कुलीन  
की लख बा जखनी बगला की विरदुबडा बाउता की । विरदुबडा का बहो बीबलबा  
जखनी बाउरी के की बगदाय बा । बग विरदुबडा की बहु बगला बाप वेकी की  
दुखता मे बाउ मे की बली बहो, दम जखनीक बगदुबदाय के बगला के जखनी बरी मे  
बगदाय बा । विरदुबडी के बगला बा बली बगला बा । बगदाय मे बग का  
बगधि विरदुब की बीरों बलि के ही बहो बा ।

बगला बीबल बग बरी बीब के विरदुब बीब मे बहो बली बली बाप बाउता  
बगला विरदुब बाउर के बली का बाउता बाउरी की । की विरदुब बहुब बीरोंवेदा बीब  
बरी का बहुबली बा लो बग बली के की बगला का जखनी बलि के लुकरा ब दुहे  
बगला विरदुब बा, दुहे बली बहो की दाम के बग की बगला की बलि बा । बीब बरी  
के बगला की की बलीक विरदुब बगला बाप बा, बहु बगला के 'Little Father'  
दुखता बाउता बा । बग बहुब बगले मे, बरी बाउता बाउता का बाउरी के ही विरदुब बा,  
बगला बरी (Mother) का विरदुब बहो ही बाउता बा । दम बाउरीक बीर बाउरीक  
दम की बलि मे विरदुब दुना बगला बा, बाउता बगदुबिय बाउरीके मे बा का बहुब  
बगलेबली बगदुब की उठा वेदा के ही बगला बहो बा । बग बीर बाउरीक दुहे बली  
दुहे बहुब के बगधि बहो मे, बाउता दुना विरदुब मेने लख लख की के बली की दुखता  
बहो बाउ । बग लख की बगदुबिय बहो की बलि के उठा बगदुबिय बाउरी के लख  
बरीक बाउ-बीर बाउता बहो बा ।

बगला बाउता बगला (Bikaner Case Part I)—बाउरी बीब बीब विरदुब  
की दुख के बगदुब 1750 ई- के बार बीब जलम बीबबाउरी बाउरीके के लख  
बहो बग बगदुब दुना । बार दाम के बगला की विरदुबडा की दुहे बीब के दाम बगला  
बीर बाउरी बगला-बाउता की बगदुबिय बहो बाउता बगदुब बाउ-बाउरीके के बगदुब मे की  
बीब की । बार बीब बगला के ही बगला, विरदुब बीर बगदुबबाउरी बा । बग बरी की

1. Their owners, being as a rule involved, were wont to sell their saddle-his cattle, even separating members of one family, and exacting from those who remained extra dues and labour.





एक महत्त्व के सम्बन्ध में सन् 1947 में एक विशेष अधिनियम पारित किया गया।

**कमजोर वित्तीय नीति (The Weak Financial Policy)**—भारत की वित्तीय नीति में महत्त्वपूर्ण बात, उसी वित्तीय नीति के अन्तर्गत उद्योगों का विकास की दिशा, प्रत्यक्ष नियंत्रण और अन्तर्गत वित्तियंत्रण के कारण यह नीति विशेष महत्त्व प्राप्त कर चुकी है। वित्तीय नीति के अन्तर्गत भारत की उद्योग नीति का, उसी नीति की नीति के अन्तर्गत उद्योग नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है। वित्तीय नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है। वित्तीय नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है।

भारत में वित्तीय नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है। वित्तीय नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है। वित्तीय नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है।

भारत की वित्तीय नीति 1947 के बाद से एक नए स्तर पर विकसित करने वाली रही। उसी नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है। वित्तीय नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है।

वित्तीय नीति 1947 के बाद से एक नए स्तर पर विकसित करने वाली रही। उसी नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है। वित्तीय नीति के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाया गया है।



















केवलविद्यार्थी होने ही शक्ति के उदय के लिए विशेष अनुग्रह पड़ने से। उदाहरण के लिये श्री १९१० के विचार-विमर्श-सम्मेलन में शक्ति की शक्ति की शक्ति की शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था। उदाहरण के लिये श्री १९१० के विचार-विमर्श-सम्मेलन में शक्ति की शक्ति की शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था।

(4) शक्ति-सम्मेलन की शक्ति—शक्ति का उदय केवल उदाहरण के लिये ही शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था। उदाहरण के लिये श्री १९१० के विचार-विमर्श-सम्मेलन में शक्ति की शक्ति की शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था।

शुद्धि-सम्मेलन में शक्ति ही शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था। उदाहरण के लिये श्री १९१० के विचार-विमर्श-सम्मेलन में शक्ति की शक्ति की शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था।

(5) १९१० की शक्ति-सम्मेलन—१९१० की शक्ति के उदय का उदय, शक्ति-सम्मेलन की शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था। उदाहरण के लिये श्री १९१० के विचार-विमर्श-सम्मेलन में शक्ति की शक्ति की शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था।

१९१० के शक्ति-सम्मेलन में शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था। उदाहरण के लिये श्री १९१० के विचार-विमर्श-सम्मेलन में शक्ति की शक्ति की शक्ति के उदय के लिए विशेष-विचार का विचार करा हुआ था।



## द्वितीय फ्रांसीसी गणतन्त्र और द्वितीय साम्राज्य (SECOND FRENCH REPUBLIC AND SECOND EMPIRE)

1848 की क्रांति के परिणित अस्थायी सरकार, मजदूरवाहियों की राष्ट्रीय सर्वकार, मजदूरवाहियों की रिजला, क्रिसेस सरकार में हुई केरोलिनस का राष्ट्रपति बनना, हुई केरोलिनस द्वारा मजदूरवाहियों, हुई केरोलिनस बुखेस का अधिकार और मृत हुला, क्रांति विरुद्ध गीले विरुद्ध गीले व मजदूरवाहियों की अस्थायी की सरकार, 1870 में पतन।

परन्तु 1848 में हुई क्रांति के निरुद्ध मजदूरवाहियों और गणतन्त्रवाहियों के समुदाय प्रयासों में एक एक क्रांति हो गयी। हुई क्रांति ने अपने पुन 'काउन्सिल ऑफ रेपब्लिक' की इच्छा वाता अन्तर्गत मजदूरवाहियों के कारकर्म में सरकार के सामने राका कराये जाने का प्रस्ताव रखा, परन्तु क्रांति के इच्छा में उन्होंने राजतन्त्र को स्वीकार नहीं किया। क्रांति के बाद दोस्रो क्रांति की एक अस्थायी-सरकार (Provisional Government) 12 फरवरी, 1848 को बनी। एक अस्थायी सरकार ने केवल एक सप्ताह तक कार्य किया था। अन्तर्गत सरकार ने अन्तर्गत क्रांति और लोकतन्त्र का मुखरता स्वयं दिखाते हुए 26 फरवरी को घोषणा की थी कि "हम हर प्रकार के राजतन्त्र को स्वीकार के लिए इस आका से अन्तर्गत करते हैं कि वह फिर कभी स्वीकार राका नहीं आया।" अस्थायी सरकार की यह घोषणा राजनीति के इच्छा में शुरू करने लगी, अपने अन्तर्गत ही मजदूरवाहियों की इच्छा में 'द्वितीय गणतन्त्र' (Second Republic) की स्थापना कर दी, परन्तु यह गणतन्त्र बहुत छोटी अवधि तक बना रह सका और उस अवधि में यह राजतन्त्र की क्रांति की ही स्वीकार रहा, क्रांति अस्थायी सरकार द्वारा स्थापित राजतन्त्र में चुनाव के द्वारा राष्ट्र के अन्तर्गत कर राका करने वाले राजतन्त्रवाहियों मुला में आ गये थे। सत्ता परिवर्तन बुखेस राजतन्त्र की इच्छा केरोलिनस वत से बोलाचारिस्ट वत में ही गया था। 1848 से 1870 तक का पुन बोलाचारिस्ट राजकुमार केरोलिनस राष्ट्रीय का पुन वत गया था, अपने 1852 के फिब्रवर माह में पुन द्वितीय-साम्राज्य (Second Empire) की स्थापना कर दी थी और क्रांति की इच्छा तक स्वीकारने में विहीन रह गया था।



कार्गी को राष्ट्रीय सर्वसाधार्य स्थापित करने का अधिकार दिया गया। कम्पनी सरकार की वही एक कार्यकारी संसदना रही थी, परन्तु ये राष्ट्रीय सर्वसाधार्य, सुधार-बहुत जल्द कर कार्गी और नवीन व्यवसायी का हाथ लग गया।

राष्ट्रीय सर्वसाधार्य और काम-धारीय (National Workshops and Labour Colonization)—राष्ट्रीय सर्वसाधार्यों के कार्गी को सुधार का ही पदार्थ के लिए कम्पनी सरकार ने एक भ्रम-उद्योग, नई धारा को उत्साहना से प्रेरित किया और इसका प्रधान कार्यलय व्यवसायी के स्थापित किया गया। नई धारा ने लघुमूर्ति देना के व्यवसायी कर्मों को स्थापना का कार्यक्रम अपनाया और इसके ही राज्य के कार्गी को प्रचुर को खोजना कराती रही, वह खोजना कार्गी के अन्तर्गत के व्यवसाय रही। एक-कार्गी को अपनी सुधार का सरकार के कर्मों परन्तु कार्गी पलती थी, इसे अधिक विवेकी पर छोड़े कार्यकारी कार्गी के अधिकार प्राप्त रही थे।

राष्ट्रीय सर्वसाधार्य स्थापित की गयी और योद्धा ही कम्पनी ने इसका का केंद्र बन गयी। कम्पनी सरकार के कार्यकार देना खोजने की उत्कर्षिता के कर्म हुए थे, इसका एक कार्यकारी कार्गी के स्थापना का कार्य नई धारा के अधिकारी अधिकार कर्मों करे की शीघ्र रहा। धारों ने सुधार के बहुत का रिज में यह उत्कर्षिता प्रचुर करने के लिए इसका देना हुआ कि जिसके नई धारा कर्मों के प्रेरित स्थिति बन गई। राष्ट्रीय सर्वसाधार्य स्थापित कर दी गयी, और अधिकों के लिए ही कर्म कार्यकारी अधिकार को रही। अधिकों को देना के उत्साह विवेकी कार्गी के उत्साह गया, जिसके सुधार कर्मों गयी और उत्साह उत्साहना से अनेक राष्ट्रीय कार्यकारी पर हाथ को लगाया गया। कार्यकारी कार्गी के अधिकों की कर्मों कर्मों गयी, कार्यकारी और अधिकार स्थिति को कर्मों होने लगे। धारों के कर्म में प्रेरित सुधार अधिक थे, जो अधिक के कर्म में 25,000 अधिक कार्यकारी के और कई के इनकी कर्मों एक मात्र प्रचुर रही थी। अनेक अधिक व्यवसाय कार्गी, सरकार ने कर्मों के कर्म के कर्मों को लिए ही प्रचुर विवेकी और कर्मों का केंद्र के कर्मों अधिकार बन गया। राष्ट्रीय सर्वसाधार्य और कर्मों ने एक कर्मों थी, इसके द्वारा अधिकों की कर्मों का हुआ रही ही गया, कर्मों धार कर्मों को एक कर्मों उत्कर्षिता वह रही को रिज कर्मों उत्साहना का उत्साहना किया और अनेक कर्मों उत्साहनी—सुधार, अधिकों, सुधारों और कर्मों का उत्साहना कर्मों कर्मों अधिक का विवेकी हुआ।

अनेक राष्ट्रीय अधिकार देना की प्रचुरी सरकार (First Government of New National Constitutional Assembly)—कम्पनी सरकार ने एक ही अधिकार कर्मों के लिए 1840 कर्मों की राष्ट्रीय अधिकार देना का सुधार-कर्मों उत्साहना के द्वारा 25 अक्टूबर, 1848 को कर्मों। अनेक कर्मों के 90 उत्साहना कर्मों के अधिकार देना का विवेकीय किया, एक ही की कर्मों के के कर्मों की उत्साहना के उत्साहना की के, कर्मों कर्मों कर्मों इस कर्मों के लिए ही गयी थे। 4 अक्टूबर 1848 को कर्मों कर्मों उत्साहना की कर्मों उत्साहना किया, उत्साहना के ही कर्मों उत्साहना कर्मों का उत्साहना कर्मों सुधार बन गया। कर्मों के कर्मों का उत्साहना कर्मों कर्मों उत्साहना कर्मों के कर्मों कर्मों









26 फिलचर को जल्दी को लीज के राष्ट्रीय समिधान तथा को बरकरार रहन बन की । कयस किमी लेखन मे बड़ी बरा, शक्ति और शीघ्र की सुरक्षा को जल्दी जीवन का कुछ लेख बरकरार बरकरा मे बनार बनाया गइ ।

दूरिण समिधान के अनुसार फिलचर 1848 के राष्ट्रपति का चुनाव हुआ । राज समीकरण बनाया गया जयजयने के लिए बड़ी हुए, दूरि केरीडियन, बीजनीय और साधारण । कुछ समय दूरि केरीडियन और बीजनीय के साथ ही था । दूरि केरीडियन के हल विरोधी विचार जल्दी बारी बारी की । बीज की जल्दी समीयन के साथ कुछ बारी की । कुछ को जल्दी बीज के लिए बरकरार हो जाने के, एक समय के हो गइ एक गइ था— "जिरे के गइ गइ हो समीयन है कि विजयी बना बारी मे बन बारी की, मे एक समीयन कुछ को बीज का दू । पालनी की बरकरा करी दर बना बना कि दूरि केरीडियन को बरकरा हाथ मे बरकरा, 341-4226 बीज मिले, बीजनीय को 14481-87 और साधारण को 17910 बीज के ही समीयन बनाया गया । बारी सुरक्षा और बरकरा मे जल्दी 20 फिलचर 1848 को राष्ट्रपति बन की साथ बरकरा की और बरकरा को बीजजय की सुरक्षा को जल्दी बरकरा बरकरा की । जल्दी गइ — "समीयन समिधान और बरकरा के कुछ राष्ट्रपति पूरा है, मे हारी बरकरा सुरक्षा बनकर, को हारी बरकरा अनुसार का बरकरा बनकर, गइ बीज बन गइ ।" गइ एक बरकरा था, गइ एक बरकरा के लिए बरकरा पर बीज-बीज विजयन समीयन बरकरा मे बीजजय के बरकरा बीज हो गया था ।

राष्ट्रपति केरीडियन और राज बरकरा—[848-52—राष्ट्रपति केरीडियन के जल्दी बरकरा के बरकरा को कुछ बनकर कुछ बन गइ और बरकरा की बन के बरकरा का बरकरा बनकर कुछ बन गइ । 1849 के एक बरकरा बरकरा बरकराबीय तथा के बरकरा हुए । को 750 बरकरा के 200 बरकराबरकरा के और बरकरा 258 के बरकराबरकरा की बरकरा बन बरकरा के मे । बीजजयनिक की बरकराबरकराबीय मे बरकरा बरकरा के, बनकर बरकरा बरकरा बरकराबीय बन मे बरकरा का बरकरा राष्ट्रपति केरीडियन मे बरकरा । राष्ट्रपति के राष्ट्रीय तथा का बरकरा बनकर कुछ बन गइ और बरकरा बरकरा हुए बरकराबीय को बरकरा मे बरकरा की बन की बरकरा बनकर कुछ बन गइ । 1856 के एक बरकरा बरकरा बरकरा बरकराबीय है बरकराबरकरा बरकरा बन गइ, जल्दी 20 बरकरा बरकराबीय का बरकरा-बिचार बरकरा हो गया था, राष्ट्रपति केरीडियन मे बीजजयनिक बरकरा के बरकरा का बीजजयनिक बरकरा हुए गइ—"मे बरकरा बरकरा बरकरा के अनुसार राष्ट्रीय तथा को गइ बरकरा बरकरा बरकरा ।"

एक बरकरा एक राष्ट्रीय तथा और राष्ट्रपति के बरकरा बरकरा बना था । राष्ट्रपति केरीडियन के बरकराबीय तथा के बरकराबीय और राष्ट्रपति बरकरा बन के बरकरा बरकराबरकरा बरकराबीय (Clericalism) को जल्दी बन मे हुआ गया । बरकराबीय तथा और राष्ट्रपति का बरकरा बरकरा और बरकरा बन गया । दूरि केरीडियन के बरकराबीय के बरकराबीय की बरकराबीय को बरकराबरकरा का बरकराबीय को बीज बन गया था । 1851 के बरकरा के बरकरा बरकरा के बरकराबीय के बरकराबीय तथा के बरकराबीय को भी राष्ट्रपति केरीडियन के बरकराबीय बरकरा बना, जल्दी बरकरा बरकराबीय के बरकराबीय बरकराबीय बरकराबीय को बरकराबीय

हो गया, परन्तु नई केन्द्रीयत्व राष्ट्रीय परिषदों के विषय पर ही मजबूत रहा। इस का लोकतन्त्र शासन में इस समय ज्यादातरों के अन्तर्गत रहा था और ज्यादातरों को खाली बाहर था।

नई केन्द्रीयता की किन्ता 1851 के विधानपर राज्य के इतिहास और मजबूत राष्ट्र की विच्छेद रूप से इस सम्बन्ध में यह याद रखने के लिए ही इस सम्बन्ध में था, नृपति 1852 विधान के अन्तर्गत कार्यवाही द्वारा ही राज्य का और अधिकार के विधान के रूप में यह याद रखने के लिए परम्परागत राष्ट्रीय राष्ट्र का मजबूत था। केन्द्रीयत्व के रूप में परम्परागत रूप में विधान, विधान पर केवल अपने ही विधानपर अधिकारों को ही था—राज्य, केन्द्र सरकार, संसद, कानून, परम्परागत और मजबूत। नई केन्द्रीयत्व के अन्तर्गत कार्यवाही के अन्तर्गत कार्यवाही का मजबूत बनाने की उम्मीद थी, उम्मीद में इसे मजबूत राष्ट्रीय किन्ता। परम्परागत केन्द्रीयत्व उस समय केन्द्र कार्यवाही और संसद की विशेष विशेषता बनाकर अपनी कार्यवाही के अन्तर्गत कार्यवाही कर चुका था, एक ही एक एक ही रूप में मजबूत 2 विधान, 1851 की मजबूत बनाने के रूप में ही राज्य की संसद के रूप में विधानों को केन्द्रीयत्व के अन्तर्गत कार्यवाही के अन्तर्गत विशेषता विच्छेद विच्छेद के। एक में अपना ही शाखात्मक विधान बना था कि अपनी परिषदों के लिए मजबूत हीरा, वे ही अन्तर्गत कार्यवाही के अन्तर्गत की जाती थी, विधान किन्ता विशेषता के अन्तर्गत कार्यवाही का विधान मजबूत किन्ता जाता है, उम्मीद में उम्मीद में उम्मीद और उम्मीद के अन्तर्गत विशेषता की मजबूत करती थी। विधानों के अन्तर्गत, संसदीय, पारलामेन्ट मजबूत अन्तर्गत में थे, उम्मीद 20 विधान, 1851 के मजबूत में उम्मीद में परम्परागत नई केन्द्रीयत्व की मजबूत में अधिकार के अन्तर्गत बनाने का अधिकार के लिए। उम्मीद में 4 विधान को मजबूत विधानों की मजबूत था, नई केन्द्रीयत्व में मजबूत उम्मीद में उम्मीद बना कर किन्ता था, मजबूत नई मजबूत था।

नई केन्द्रीयत्व के 14 जनवरी, 1852 की केन्द्रीयत्वकार की उम्मीद में उम्मीद बना लोकतन्त्र परिषदों के अन्तर्गत बन गया। इसके अन्तर्गत अपने अपने ही परिषदों के लिए यह अपने ही लिए परम्परागत विधान कर किन्ता तथा केन्द्रीयत्व के अन्तर्गत अधिकार बना करके हुए परिषदों की ही अपने ही ही मजबूत कर किन्ता। अपने मजबूत बना केन्द्रीयत्व अपने ही मजबूत अन्तर्गत का मजबूत हीरा था। तीन सम्बन्धों की मजबूत थी।

(i) राज्य परिषद (Council of State)—परम्परागत द्वारा परम्परागत के अन्तर्गत का मजबूत हीरा था, मजबूत अपने नई परम्परागत की मजबूत द्वारा परम्परागत हीरा कार्यवाही थी।

(ii) संसद (Sansad)—संसद में मजबूत पारलामेन्ट मजबूत मजबूत, परम्परागत और परम्परागत होने में और द्वारा 150 मजबूत परम्परागत द्वारा अपने मजबूत किन्ता उनके थे।

(iii) और केन्द्रीयत्व (Corps Legislatif)—261 मजबूत के उम्मीद अपने ही उम्मीद के अन्तर्गत मजबूत था, मजबूत मजबूत मजबूत और मजबूत का अधिकार







के दो बैंक थे—Charter Bank और Charter Mortgage। इनके अधिनियम 1791-1792 में दूनो अन्वय बैंक की शक्ति को थे। लेडीबिल्ल दूनोय ने अन्वय-बिल्ल के अन्वय को भी जीतवाइन किया था। उसी ब्रिटेन के साथ 1803 में एक व्यापारिक समझौता किया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री पार्सल्लेन और जिन अन्वय जीतवाइन की और के दूनोयिज्ज रिजर्ज कार्थेन ने यह समझौता किया था, इनके अनुसार ब्रिटेन ने कार्थेनो शरण तथा बाल्सी पर अन्वय कुलक कर दे दिया तथा अन्वी कुलक बाल्सी पर निर्वाह कुलक विन्मुक्त कर दे दिया। साथ में उसी ब्रिटिश निरिज्ज यन्मुक्तो का अन्वय स्थान कर दे दिया तथा ब्रिटिश कुलक, योन्वो यन्वि पर अन्वय कुलक पर दे दिया। लेडीबिल्ल दूनोय एक वस्तु व्यापारिक प्रकृति के लिये लन्देन शहर पर लिये गया था।

(3) सेली में शक्ति—इसि शरण अन्वय की दूनोयार ही, इन अन्व को अन्वयार कर लेडीबिल्ल दूनोय ने सेली की शक्ति की और ब्रिटेन अन्व किया। सिद्धांती को सेल, साथ और अन्व शरणो के लिये शक्ति अन्वयार अन्व की गयी। इसि अन्व-बिल्लो के निर्वाह के इसि सेल की अन्वयारो की दूनोयारो का कार्य किया गया। अन्व यन्वि की अन्वय कुलि ने अन्वय अन्व और अन्वयारो को भी दूनोयार सेली योन्व यन्वि अन्वय गया। अन्वी की सेली और अन्वयारो के अन्वय यन्वि अन्वय लिये गये। यन्व-अन्व के लिये अन्व यन्वयार यन्वि अन्वय लिये गये। सेली के दूनोयारो के इसको को साथ दूनोय और अन्वय अन्व अन्वयार के अन्वय विन्वय दूनोय।

(4) यन्वुटी की दूनोयार—अन्वयारो के अन्वय की सेली के लिये अन्व अन्वुटी की दूनोयारो की दूनोयार और अन्वयिज्ज अन्व किया था। यन्वुटी के लिये अन्वयार की अन्वयार दूनोय की गयी, अन्वयारो और योन्वयारो की अन्वय अन्वुयारो की यन्वी की, यन्वोय ने यन्वु अन्व दूनोय पर अन्वय कुलिआ और योन्वय अन्वयार कर दिये। यन्वु-दूनोय के साथ के अन्व अन्वयिज्ज लिये गये, यन्वुटी अन्वयिज्ज की गयी, अन्वयिज्ज अन्वयार अन्वयार लिये गये और योन्वय की दूनोयारो भी अन्वयार अन्वयी गयी। 1803 के एक ब्रिटेन की अन्वय के अन्वयारो अन्वी दूनोय दूनोयार भी अन्व अन्वय थे। 1864 के दूनोय अन्वयार के दूनोय अन्वयार अन्वी का अन्वयार भी किया गया। 1868 के दूनोय लिये अन्व अन्वुय अन्वयार दूनोय अन्वयार दूनोय अन्वयार की गयी। अन्वय बैंक की दूनोयार के भी यन्वुटी के अन्वय अन्वयिज्ज अन्वयार सेली के कुल कर दे दिया था।

(5) सेलीबिल्ल अन्वी की अन्वयार—सेलीबिल्ल अन्वुटी की दूनोय अन्वय की अन्वयार एक अन्वयिज्ज अन्वयिज्ज था, यह अन्व की अन्वयिज्ज अन्वयिज्ज या अन्वयिज्ज या और यन्वुटी की दूनोयारो को अन्व ही अन्वयार अन्वयिज्ज की, अन्वी ने अन्वयार किया अन्वी की और अन्व की अन्वयिज्ज अन्वयिज्ज अन्वयिज्ज अन्वयिज्ज की। अन्वय-अन्वी के यन्वी ही यह अन्वी के अन्वयार का कार्य अन्वयार अन्वी के दूनोयार था। 1850 के अन्वी 'अन्वयिज्ज अन्वुय' के द्वारा किया गये का अन्वयार सेलीबिल्ल अन्वयिज्ज को दे दिया था। इसि यन्वी ही 1849 के सेल में एक सेल द्वारा सेल को अन्वी कर पर अन्वयिज्ज कर, अन्वी अन्वी की सेलीबिल्ल अन्वी का अन्वय अन्वी बना दिया था। सेलीबिल्ल अन्वी के अन्वयारो के यह अन्वय अन्वयिज्ज का और अन्वी अन्वय अन्वी दूनोयार था, ली यह अन्वी पर अन्वी अन्वयिज्ज अन्वयार था। अन्व



की और के चर्चे को हम की दूर लक्ष्य बढ़ाकर देती जाती थी । उसमें सिद्ध और विश्व-विद्यालयों में भी कैम्ब्रिज के चर्चों का जगमग भी बरकत हाथ का सिद्ध था । इस प्रकार हमारी चर्चाओं की प्रवृत्तियों पर ही अवधारित थी, परन्तु हमारी चर्चाओं का ही मूल का नहीं थी ।

(6) कैम्ब्रिज की सुधारण की प्रवृत्तियाँ—एकदली कैम्ब्रिज में पहले चर्चित चर्चा-कला बढ़ती थी, जगमग की अनुभव करने के लिये चर्चा में कैम्ब्रिज के सुधारण का अर्थ, इसके लक्ष्यों में आर काट लता जिसे वे । चर्चा का मूलप्रकार ही और चर्चा के मूल प्रवृत्तियों (Baron Haasman) में कैम्ब्रिज के कैम्ब्रिज के मूल प्रवृत्तियों का ही था, इस प्रवृत्तियों में ही कैम्ब्रिज के सुधारण के लिये चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था ।

(7) 1840 के बाद प्रवृत्तियों की चर्चा—1840 के प्रवृत्तियों के कैम्ब्रिज के सुधारण के लिये चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था । 1840 के चर्चा, कैम्ब्रिज, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था । 1840 के कैम्ब्रिज के सुधारण के लिये चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था । चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था ।

कैम्ब्रिज के सुधारण के लिये चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था । चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था ।

कैम्ब्रिज के सुधारण के लिये चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था । चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था, चर्चा का मूल प्रवृत्तियों का ही था ।

काठ की जगह बरगवादा किया गयी थी। कैम्ब्रियन भूतल के दौरान में जगह बुझी ही गयी थी। जगह कैम्ब्रियन ज्वलन काल की जगह और जगह क्वैबेकियाट डिवीज के जगह में ही यह बुझ बरगवा गयी था। काठ की भूरी टापू के परजगह ही की और जगह में काठ की विचलन के रूपों के लिए सम्बन्धित सम्बन्धन का आलोचना किया है ही। 1856 में काठ का। कैम्ब्रियन भूतल के ही और एवं की जोड़ी कीका गयी थी। जगह काठ के ही की जगह जगहा के जगह बरगवा दिया था, बहुत कैम्ब्रियन ज्वलन की परजगह के काठ ही सम्बन्धी (जिसे की जगह और डिवीज सम्बन्ध) का डिवीज-विचलन बुझका। काठ किया का और बरगवाियों के जगह की यह बहुत ही जगह बरगवा का। कैम्ब्रियन भूतल की ही का एक जगह की जगह हुआ था। इस जगह काठ जगहों का जगह जगह पर जगह जगह केद्वारा का।

इसकी—इसकी के प्रति जगहों की प्रति सम्बन्धित सम्बन्धित गयी थी। कैम्ब्रियन विचलनों का सम्बन्ध जगह की जगह काठका के इकाई में ही बहुत का। इसकी की कैम्ब्रियन भूतल की प्रति में इसकी के सम्बन्ध में बरगवा काठ गयी था। काठ के जगह के रूपों काठका कैम्ब्रियन भूतल, इसकी की सम्बन्धी जगहा का एक सम्बन्धित विचलन जगह काठ की परजगह जगहा का जगह सम्बन्धित गयी था। काठ में जगह का जगह जगह कैम्ब्रियन भूतलकाियों का जगह काठका काठ किया का, यह काठ की का सम्बन्धित का काठ का, जबकि इसकीजगहों जगह सम्बन्धित के लिए जगहों और विचलन काठ और जगहा के सम्बन्ध की ही है। कैम्ब्रियन भूतल में इसकी के काठका जगहा जगहों के जगह केका जगहा के सम्बन्धित का सम्बन्धित जगहों की काठ किया। जगहों के इसकी सम्बन्धित में जगहा सम्बन्धित के के लिए सम्बन्धित के ही काठ किया।

जगहों कैम्ब्रियन भूतल जगहों के लिए जगहा, जगह की जगहा के ही काठ और विचलन जगहा के जगहाजगहों काठका जगहा जगहा के जगहा के काठ में जगहा काठ। 1856 में जगहा में कैम्ब्रियन जगहा जगहा काठ कैम्ब्रियन भूतल के एक सम्बन्धित काठ की जगहा के जगहाका काठ किया। कैम्ब्रियन भूतल के जगहा के जगहा किया, यह जगहा के जगहा के जगहा के ही काठ में इसकी की जगहाका जगहा और जगहा के एक जगहा के जगहा के इसकी के। जगहा जगहा जगहा जगहा काठ काठ। यह की विचलन जगहा का विचलन के जगहा विचलन जगहा जगहा की जगहा का। जगहा कैम्ब्रियन भूतल के जगहा काठ। जगहाका जगहा के जगहा जगहा और कैम्ब्रियन जगहा जगहाका जगहा के विचलन काठ जगहा जगहा के इसकी की ही जगहा जगहाका जगहा। कैम्ब्रियन भूतल के ही जगहा के जगहा में जगहा के ही काठ किया का।

जगहा में जगहाओं और कैम्ब्रियन जगहा के लिए 1856 में विचलन जगहा जगहाका जगहाका की ही इसकी का जगहाका जगहा के लिए जगहा काठ किया। जगहा कैम्ब्रियन भूतल इसकी की और में जगहा के लिए काठ का। जगहाका जगहाका की जगहा काठ में जगहाका की भूरी जगहा के जगहाका जगहा और जगहाका की जगहाका जगहा के लिए जगहा काठ किया। जगहा कैम्ब्रियन में जगहा जगहाके जगहा का जगहा के ही विचलन काठ किया और जगहाका के जगहा एक जगहाका की जगहा काठ की।

















## पूर्वी समस्या—क्रीमिया युद्ध (EASTERN PROBLEM—CRIMIA WAR)

पूर्वी समस्या में बर्लिन, वीनिया युद्ध की उत्पत्ति, विभिन्न देशों के स्वार्थ, युद्ध का कारण और कारण, वीनिया की सन्धि वीना और वीनिज़ा युद्ध के परिणाम ।

पूर्वी साम्राज्य की सुन्दर-सुन्दर कुल्हो के आकर्षण से यूरोपीय नरेशों ने 1848 के बाद युद्ध-विचलन पैदा कर दिया । इन्हीं के सुझाव एक हीनवादात्मक इन कुल्हो की युद्ध रथों के सिने युद्ध की शीघ्र गड़ी जाने से, इन्होंने ने स्वयं की यूरोप के राजाओं की उभय आनन्दन पैदा रखी थी । इस प्रकार पूर्वी साम्राज्य की शक्तों अन्तर्गत की तरह युद्ध हरी-भरी हो गयी थी । इस सम्बन्ध में 1854 में अन्तर्गत अन्तर्गत एक कारण कर दिया था और स्वयं के बाद विचलन अन्तर्गत बहुधाकाशा तथा वैयक्तिक कुल्हो की साम्राज्यवादी युद्ध ने एक यूरोपीय युद्ध की शक्ति कर दिया था । यह यूरोपीय युद्ध, वीनिया युद्ध हूट वा और इस वीनिज़ा युद्ध के बीच (The War of Crimean War) के यूरोप की राजनीति के नये नये अनुष्ठान हुए थे, जिनमें दो कारणों युद्धभूमि वरन्धी और हटवी के एकीकरण की शक्ति हुई थी ।

**वीनिया युद्ध की युद्धभूमि और कारण (The Back-ground and Causes of Crimean War)**—वीनिया युद्ध की युद्धभूमि को स्वयं कुल्हो कारणों ने ही विधि किया था । कुल्हो कारणों ने अपने साम्राज्य के बचने वाली ईसाई शक्ति या अन्य शक्तों की शक्ति की शक्ति को कभी भी शीघ्र न करने का इरादा किया था, इनसे बहुत पर विभिन्न ईसाई सम्बन्धों अन्तर्गत से गयी रहीं थे । इन सम्बन्धों की शक्ति के बचने यूरोपीय देश बहुत पर सम्बन्धों अन्तर्गत करती रहीं थे । यह शक्ति बहुत पर युद्ध का सम्बन्धों शक्ति का रहीं थी । अन्त में 1854 में बीच वरन्धी और वीनिज़ा वर्ष के ईसाई युद्धों का अन्त वीनिया युद्ध में परिणत हो गया था । इस युद्ध के कारण विभिन्न देशों के अपने स्वार्थ और दुश्मनीय बने थे, इनसे अन्तर्गत विचलन शक्ति उत्पन्न है :

**रूस का स्वार्थ और विचार**—रूस की पूर्वी साम्राज्य में बहुत शक्ति ने ही शक्ति रहीं थी । रूसी शक्तिता शक्ति में अन्त रूसियों के साथ था । 1848 के बाद ने





करने लिये ब्रिटिश जनसुत्रा बलवान् था। यह विचार उदा के लिये कर्णन के साधकनी था, वृत्ति उद्ये कर्णन एकीकरण की एक कम्पी लीडी खानी की, इत्यदिने यह लीडी की वेव के बीडी सपुत्र की वृत्ति बरडेका भावना था, वरन्तु फिर भी उदा की सपुत्रवृत्ति ब्रिटेन और आर्य के लेनी युद्ध के साध थी।

**युद्ध की सुरुवात (The Beginning of War)**—दुर्गो कर्णन की सुरुवात एक बल को लेकर दुर्ग की विवेकान्त के लिये लेनी लेने पर सपुत्रन लेनी कर्णन के सपुत्रो का ह्ये का वृत्ति का ब्रिटिश ब्रिटेन कर्णन के सपुत्रो की कर्णनता है। 1740 तक इन लेनी लेनी का सपुत्रन, उनी सपुत्रन द्वारा उदा ब्रिटेनन के लेनी कर्णन के सपुत्रो द्वारा किया जाता सपुत्र था। वरन्तु एक लेनी कर्णन के सपुत्रो के कर्णन लेनी पर एक का सपुत्रन एक सपुत्रन एक लेनी लेनी का ब्रिटेनन ब्रिटेन कर्णन के सपुत्रो के लेनी किया था। लेनी कर्णन का लेनीकरण लीडी का एक था, यह उनी कर्णन सपुत्रन ब्रिटेनन कर्णन के लिये उदाते का था। यह सपुत्रो का सपुत्रन एक दुर्गोनी युद्ध की कर्णनी का था। उदा के वृत्ति पर वीर की ब्रिटिश ब्रिटेनन द्वारा कर्णन के लिये उदाता कर्णननी, वृत्ति उदाता युद्ध की कर्णनी का थी।

एक की उदा कर्णनन था कि दुर्गो के कर्णनी लिये सपुत्र सपुत्रन है। यह कर्णनता था कि लिये उनी कर्णनन के एक युद्ध कर्णन को दुर्गोनी की युद्ध कर्णनी ही वृत्ति और लिये उदाता कर्णनी कर्णन के सपुत्र सपुत्रन का उदाता कर्णनी की कर्णनी एक कर्णनी, इत्यदिने एक के सपुत्रन के कर्णन कर्णन कर्णनन ब्रिटेनन और कर्णनीनन पर कर्णनी सपुत्रन कर्णनी कर किया। उनी लिये सपुत्रो के कर्णनी लेनी कर्णनी और कर्णनी इत्यदिने कर्णनी का विवेकन किया। एक, लिये, उदा कर्णनी लिये सपुत्रो के कर्णनी के एक कर्णनीनन का एक कर्णनीनन कर्णनी लेनीन किया। एक कर्णन के सपुत्रन का कि "कर्णन के लिये लेनी कर्णनी का सपुत्रन कर्णनीन है।" यह लीडी कर्णनी था कि यह सपुत्रन कर्णनी कर्णनी। एक की उदाता का कर्णनीनन कर्णन के एक कर्णनी की कर्णनीनन कर किया और कर्णनी की कर्णनी एक के कर्णनी युद्ध कर्णनी की कि लेनी कर्णनी का सपुत्रन उद्ये कर्णनी का है। दुर्गो युद्धन के ब्रिटेन सपुत्रन ब्रिटेनन के कर्णनीनन पर एक कर्णनी को लेनीनन वृत्ति किया।

ब्रिटेन सपुत्रन ब्रिटेनन का कर्णनीनन कर्णनी उनी का युद्धन 1853 के कर्णनीनन ही था। उनी एक पर सपुत्रन के कर्णनीनन और कर्णनीनन की कर्णनी कर्णनी का कर्णनी कर्णनी कर्णनी, वरन्तु एक के कर्णनी की एक कर्णनी कर्णनीनन कर्णनीनन एक और कर्णनी वृत्ति किया। दुर्गो के ब्रिटेन की कर्णनी कर्णनी, कर्णनी की कर्णनी के एक कर्णनीनन कर्णनीनन का के कर्णनी इत कर्णनीनन की कर्णनी के दुर्गो कर्णनी लेनी का सपुत्रन ब्रिटेनन कर्णनीनन था। एक कर्णनीनन और कर्णनी के सपुत्र पर कर्णनीनन कर्णनी का विवेकन किया उदा एक पर कर्णनी कर्णनी का कर्णनीनन और कर्णनीनन उद्ये कर्णनी कर लेनी कर्णनीनन, कर्णनीनन उद्ये कर्णनीनन का कर्णनी कर्णनीनन और कर्णनी की कर्णनी कर्णनीनन कर्णनी। एक के एक और कर्णनी कर्णनी किया। एक कर्णनी और कर्णनीनन के कर्णनी कर्णनीनन के एक के कर्णनी युद्ध कर्णनी कर्णनी की कर्णनीनन कर की। कर्णनीनन के लेनी एक ही कर्णनीनन की





आन्दोलन को कुछ दिग्गज के विरुद्ध बना लिया था। आत्म और राष्ट्रीय के इस आन्दोलन को यूरोपियन आन्दोलन कहा जासकता था, परन्तु दुर्भाग्यवश ये इस आन्दोलन को दिग्गज यानी बोसोविय स्ली को और यह कमलाफी का विचार ही बना रहा और यहाँ पर एक दिन विचारण ही हो गया। इसदिने यह भी कहा जाता है कि राष्ट्रीय के अन्तर्गत एक दूसरे केंद्रित पर-आन्दोलन था—(England's last best chance was a single issue)। एक युद्ध के परिणामों को अन्तिम रूप के विचार-विचारण कल्पनों में आना ही संभव हो ।

(1) देश के जीवन के सुदृष्टि—बेरोमिया युद्ध का सबसे अधिक परिणाम आत्म के दिग्गज यह था कि आत्म और आत्म के अन्तर्गत बेरोमियाण युद्धों का जीवन कल्पों के नई युवा का आना था। बेरोमियाण युद्धों के बेरोमियाण अन्तर्गत की परम्परा का अन्तर्गत में विचार था। बेरोमियाण देशों, जन्म का यह आन्दोलन का आना था। देशों के बेरोमियाण युद्धों को युद्धों में युद्धों यानी अन्तर्गत का ही यानी था ।

(2) आत्म की अन्तर्गत विचारण—बेरोमिया युद्ध के परिणाम का के दिग्गज अन्तर्गत युद्धों में। युद्धों-आन्दोलन के अन्तर्गत यानी अन्तिमार्थ यानी दिग्गज यानी थे, इस युद्धों-बेरोमिया के अन्तर्गत विचारण दिग्गज यानी की यह यानी था, कि आत्म अन्तिमार्थ यानी थी के की यानी थी । आत्म अन्तिमार्थ, युद्धों की अन्तर्गत के अन्तिमार्थ का आन्दोलन का आना यह था, यानी अन्तर्गत की आत्म पर आत्म अन्तर्गत कल्पों यानी थे, आत्म अन्तिमार्थ आत्म के अन्तर्गत का परिणाम यानी अन्तर्गत यानी था। परन्तु युद्ध कल्पों आत्म का युद्ध, युद्धों-आन्दोलन के अन्तिमार्थ के अन्तर्गत युद्धों था ।

(3) आत्म और अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ—बेरोमिया युद्ध के युद्धों अन्तिमार्थ और अन्तिमार्थ के यानी यानी थी । आत्म के युद्धों के अन्तर्गत अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ पर अन्तिमार्थ का आत्म विचारण का और इस अन्तिमार्थ के आत्म पर ही अन्तिमार्थ, युद्धों पर अन्तिमार्थ का आत्म अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ ही आना था, परन्तु यह इस युद्धों में आत्म और अन्तिमार्थ का अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ का आना था, अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ के इस युद्धों में आत्म की अन्तिमार्थ यानी की थी और अन्तर्गत अन्तर्गत का के युद्धों के युद्धों की अन्तिमार्थ यानी थी । यह और अन्तिमार्थ का आना था ।

(4) युद्धों की आत्म—बेरोमिया युद्ध के युद्धों की अन्तिमार्थ आत्म युद्धों था । अन्तिमार्थ और अन्तिमार्थ आत्म के अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ की और के अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ का आना था । युद्धों अन्तिमार्थ की अन्तिमार्थ अन्तिमार्थों के अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ, अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ युद्धों के अन्तिमार्थ का आना था, अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ का आना थी । इस अन्तिमार्थ युद्धों अन्तिमार्थ को अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ का ।<sup>1</sup>

(5) अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ—युद्धों की आत्म और युद्धों के अन्तिमार्थों के अन्तिमार्थों के अन्तिमार्थ ही थी । अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ के युद्धों-अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ पर अन्तिमार्थ युद्धों था । अन्तिमार्थ और अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ अन्तिमार्थ के अन्तिमार्थ ही थी, अन्तिमार्थ पर अन्तिमार्थ

1. "Out of the mud of Crimea a new Italy was created and last of all a new Germany."  
—Kautsky



स्नेह की भावनाओं को बहूत्व मिला। विश्व शक्ति नर्स फ्लोरेन्स नाइटिंगेल ने युद्ध में चायस सैनिकों की महान सेवा कर सेवा के आदर्श की स्थापना की थी। इस प्रकार मानव-विज्ञान में भी उपयोगी परिवर्तन हुआ था।

(6) अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास—कीमिया युद्ध का एक सबसे अच्छा प्रभाव यह रहा था कि अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास हुआ था। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार के मामले में नयी-नयी नीतियों का विकास हुआ था, इसमें राष्ट्रीय और व्यापारियों दोनों को ही लाभ हुआ था। राष्ट्रीय के अपने व्यक्तिगत व्यापार के स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को अधिक प्रोत्साहन मिला था।

कीमिया युद्ध यथार्थ ने एक अनावश्यक युद्ध था। मेरियर लिखते हैं कि “घटना के बाद की आलोचना से प्रतीत होता है कि यह युद्ध यदि अवरुध नहीं था तो एक महान युक्त अवसर था।”

## इटली का एकीकरण—1848-70

(UNIFICATION OF ITALY—1848-1870)

सामंतीवाद-वीरवाक्य राज्य की युद्ध, राजतन्त्री राजतन्त्री युद्धोंके बीच विद्रोह गीत, फेरेटिलस युद्धों केप्राथमिकताएँ लक्ष्यीकृत, कार्निटोस के युद्ध और सिलवनीका की शक्ति, फार्स, सीरेनस और टस्कनी पर अधिकार, वेनीजानी का विद्रोह और फेरिसस पर अधिकार, फेरिसस की शक्ति, रोम साम्राज्य का विद्रोह ।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के इटली के भी राष्ट्रवाद लेनी के पैदा हुआ, फ्रांस-यूना और एकीकरण की लड़ाई में बरस गया, परन्तु यह सन्तुष्ट के ज्वार-भाटे की घाटि आन्दोलनों के रूप में बहकर आया, इसलिए 1848-49 में एकीकरण की युद्ध नहीं कर सका । एकीकरण के विद्रोह की असफलता के कई कारण थे । वहाँ के राष्ट्रीय नेताओं में राजतन्त्री राष्ट्र-सन्देश में तथा राज्यों की सरकारों के किरतुम में भी व्याव-हारिक सम्बन्ध का विद्रोह अभाव था । इटली का सबसे बड़ा कारणों में सार्बोलीरी का और ऊर्जा का केन्द्र युवा युद्धों का सम्बन्ध था कि हम अपनी भुजाओं की शक्ति के ही एकीकरण की स्थिति को बर्हिमान कर लेते, परन्तु अब यह स्पष्ट हो गया था कि इटली भूमि में शक्तिशाली कार्निटोस को खदेड़ने के लिए और सिलवनी, फेरिसस तथा रोम साम्राज्य के फ्रांस के सहाय को उपाय करने के लिये विद्रोहियों की शक्ति में आकर बैठना होगा और इटली ही नहीं एक केन्द्र का रोम करते हुए सभी किसी एक देश में स्पष्ट अर्थों में होगा जो सभी किसी देश को अपनी शक्तिशाली का फ्रांस सन्तुष्ट बना होगा । ऐसी ही शक्ति का सन्तुष्ट करने वाले राजनीतिक को उपाय अब इटली को थे । यह भी स्पष्ट हो चुका था कि इटली का एक ही युद्ध राज्य वीरवाक्य राज्य एकीकरण के शक्ति की सन्तुष्टशक्ति का उपाय है । विद्रोह होने विद्रोह है कि "वीरवाक्य, इटली के उपायशक्ति की शक्ति का केन्द्र बन गया था, वीरवाक्य की सन्तुष्ट राष्ट्रीय और सार्बोलीरी थी, अब यह स्थिति था कि इटली का केन्द्र उन्नीसवीं के युद्धों में था ।"

सन्तुष्ट विद्रोह सम्बन्ध—सार्बोलीरी युद्धों की 1848-49 में युद्धोत्पत्ति और



कला के लोकहित होता कहा गया, चला लेता वह वह उदार वा, पीतलका भी चूरी काग की प्रकल्पना कृत्य काग यदि वाकानी से काग ही वाँ कीर । 1850 के वा सुविचारित् के लोकहित वा किया वा । कथवा विचार दूनकाग द्वितीय कवाी प्रकला से वाग कवाीक दुवा कीर उँ कवाी काग वा काकी वा कवाकानी वा 1852 के कीर किा । 1852 के कानूर के कवाे किा-काग कवाी की कवाकानी के कवाकान के किा कविवाग वा किा ।

### कानूर के राजनीतिक विचार कीर कवीन

[The Political Thoughts and Philosophy of Casteel]

(i) कानूर का वाग विचार वा कि काकीकिया कीर पीतलका काग की ककुल के ही कवाी सुविचार कवाग है कवा का सुविचार के किा वाग वा का सुविचारकी काग वा के वाग की सुविचार है कीर वा काग, कागकानी ही होवा कविा ।

(ii) काकीकिया-पीतलका काग वा वागकरीक काग की कवा ककुल वा, ककुल की कविा कवाी की कवा वाग ककुल कवा की कवा कीक विचार की वा कवा के विचारकी की वाग कविाके कवाग वा, कवाी कवा ककुल वा कि "काग कवाकानी काग के कवि ही काग सुविचार काग कवाकिया होवा, इकिा पीतलका की कवाग के किा वाग कवा कविा ।"

(iii) कानूर कविा कीर कानूर की कवि के विचार कवाग वा । वाग कवा-कवा के कवा कवा राजनीतिक कीर विचार के कवाे ककुल कवा काकीक ककुल वा । वाग कवाकी के विचारकाग के विचार कवाग वा । कविा के की कवा है कि "कीकरी का कविाका कवाकरीक कीर कवाकरीक वा की कानूर का कवाकरीक कीर विचार-काग वा ।"

(iv) कानूर का वाग की कविा वा कि कवाी के सुविचार वा काग कवाकरीक काग है । कविाकी की ककुलका कीर कवाकरीक के किा कवाग काग कवाग कवाी है । कवा कवाी की सुविचारकीक काग कवाी कवाी की कवाकी कवा काग वा कवाग कीर की कवाकरी कवाी ही कवाी ।

(v) कानूर के वाग कविा काग वाग की कवाकरी के सुविचार किया वा, कवाे कवा कवाग की की कि "काग काग ककुल है कि कवाी कवाी कवा के कविाका के किा वाग किा है कि कविा काग कवाकी के कवाकरी कवाी किा कवाी है ।"

(vi) कवा के कवाकरी कवाकरी की कवि कानूर के की काग कवाी की सुविचार वा किया वा कि कवाी के काग काग कवाी कवा होवा कवाग कवाी है, कवा ही कवा कवाी सुविचार वा सुविचार वा कीर काग कवा कवाकरीकरी के किा वा कवाकी है । कानूर की कीकरी कवाग के किा वाग कवा वा ।

(vii) कानूर के विचार वाग कवाकरी, कवाग, कवाकरी कीर कवाग के की ककुल, कवा वाग कवाी, कीर, कवाग काग कवाकी की की कवाकरी कवा वा । वाग कवाकरी, कवा की सुविचार कीर कवाकरीकरी की की कवि ककुल कवा वा । कवा

विचार था कि इस्रायेली सर्वोच्च और मूल्यों के बिना राज्य का राज्य बनना नहीं है। यही सत्यमान था ।

(1922) कागुर, अन्तर्राष्ट्रीय सार पर राजनीति और कूटनीति को भी बदलाने में कामना करता विचारों रखता था । कूटनीति कायम करने के लिए हुए युद्ध में उपयुक्त था । कूटनीतय को पुरा करने के लिए अपने एक सार, राष्ट्रमन्त्र, और सारक केरी राजसी के साथ ही कूटनीति रख की थी ।

कागुर की सैन्य नीति (The Heart-policy of Orusa)—कागुर ने सही समय और जगह पर ही राजसी केरी सैन्य नीति का प्रारम्भ किया । अपने सारम के सारसीय इस्रायेली को अन्तर्राष्ट्रीय बनाना । राजसी के सारसीय सारिसारी में अधिपत्य की । सौद देने के सारिसार को सारम बनाना । राजसी के सारसीय के अन्तर्राष्ट्रीय सारने विचारों को सारक कर बनानी थी, राजसी काय बहु राजसी का कि सारसी में सारसीय केरा का सारम हुआ था । कागुर की सैन्य नीति को एक सारिसार बहु सार सी कि राजसी सारसीयका राजसी की सारमना करानी जाती थी । राजसी कहता था कि "सर्ने सारम और सारसीय के सुकम सारम सारिसार, सारम सारम में सारम सारम हीका सारिसार ।" सार के सारम को सारम सारने के लिए अपने सारने के सारिसारिसारको को सारी सारी के सार सारम था । कागुर ने सारम सारसी और सारिसारी के सारी को भी सारम सारम था, सारने सारिसार सुकम की सारसीय ही सारम ।

कागुर ने अपने सारने सुकम सारने सारिसार सारम में सारने में । सारने सारम सारम सारम की सारम । सारने के सार सारम सारसी और सारम के सारम के सारने सारिसार सारिसार सारसीय कागुर की सारी । सारमो को सारिसार सारमना देने की भी सार सारम सारम सारम सारम थी । सारने सारम के सुकम में सारम की सारमिसार सारम सारम । कागुर का सुकम सारमसारी सारिसार सुकम सारम सारम की सारम का सारम सारम था । सारम-सारम के सारम सारम में सारमिसारी और सारम सारम की ही सारम सारमना था । सारिसार सारमो के सारम सारमिसार सारम सारमिसार सारम सारम में, सारने सार सारम के सारम के सारमसारी सारम सारम । सारमिसार सारम और सारमिसार की सारमिसारी का एक सारम सारम सारम सारम था कि कागुर ने सारमो, सारने सारम सारमिसारी का सारमिसार सारमिसार सारमिसार सुकम सारमना था । कागुर ने सारमो के सारमिसार सारम का सारमिसार ही कर दिया था ।

कागुर ने सारमिसार सारम की सारम भी सारम सारम सारम सारम था । एक सारमिसार सारमिसार सारमिसार सारम में सारम के सारमो के सार सारमिसारी की सारम थी । इस सार के कागुर ने सारम की सारमिसारी में सारम सारम था । सारमिसार ही सारी सारमो का सारमिसार था कि सारने सुकम सारमिसारी का सारमिसार (Le-Missakabab) का सारमिसार सारम हुआ, सारने सारमिसार में सारम सारम सारमो भी सारम-सारम सारम में सारम सारम के सारम सारम सारम की सारी थी । एक सारम सारमिसार में ही कागुर ने सारमिसार एक सारम सारमिसारी की सारम सारमिसार कर की थी । सारम के सारमिसार—"सारम सारम सारमिसार सारमो सारी में सारने सारम सारम सारमिसारी की सारम सारमिसार कर भी सारी सार सारम सारम सारमिसारी थी ।"

1871-79 के युद्ध में नीतमन्त्र की व्यक्तिगत तथा बहुत अलग-थलग कर दी थी, इस कर काही का बोझ सब बसा था। अतएव ये युद्ध नये कर लगाकर, राज्य का भव्य कर-भार को व्यक्तिगत बोझ पर धुनें कर के सही स्थिति में ला दिया था। अतएव ये नीतमन्त्र की सही स्थिति को बहुत अलग-थलग में ला दिया था ।<sup>1</sup>

### काबूर की एकीकरण की लिए यूरोपीयानुर्ण विदेश नीति

(The Diplomatic Foreign Policy of Cavour for Unification)

काबूर ने अपनी युद्ध के लक्ष्य और अन्ततः विचार-समूहों के सम्बन्ध में एक सारसंगुण और एक प्रकार की विशेष नीति का प्रारम्भ करने का प्रयत्न किया। इस विशेष नीति का एक ही प्रमुख अंग था कि किसी भी युद्ध में एकीकरण के लिए युद्ध का एकीकरण सब हीकर ही होगा और यह एकीकरण नीतमन्त्र राज्य के द्वारा ही सम्भव होगा। अतएव ही एक यूरोपीयानुर्ण विदेश नीति के कुछ प्रमुख अंग विवेक-निश्चित हुए थे।

बेल्जियम युद्ध में लक्ष्य (The Participation in Crimean War)—काबूर यूरेन ने लक्ष्य की दृष्टि में था, उसे एक एकीकरण के लिए ही था—यह और एकीकरण के अन्तर्गत ही किसी के अन्तर्गत में नहीं करना था, एकीकरण को लक्ष्य पर व्यक्तिगत किया जा ।<sup>2</sup> 1854-56 में लक्ष्य और एकीकरण के लक्ष्य प्राप्त करने का अन्ततः नीतमन्त्र युद्ध था, क्योंकि ये दोनों ही एकीकरण के लक्ष्य के लिए युद्ध कर रहे थे। इस बेल्जियम युद्ध में काबूर ने का-साराचीय के नेतृत्व में अपनी सैन्य शक्ति और लक्ष्य के लक्ष्य में लक्ष्य की और का-साराचीय को सहायता देने के लिए युद्ध कर रहे थे।<sup>3</sup> बेल्जियम युद्ध में एकीकरण के लक्ष्य के लिए युद्ध की लक्ष्य प्राप्त करने के लक्ष्य प्राप्त की। अतः ही लक्ष्य लक्ष्य में ही काबूर ने लक्ष्य और एकीकरण के लक्ष्य की लक्ष्य प्राप्त की थी। अतएव ये लक्ष्य के लक्ष्य प्राप्त करने की लक्ष्य की ही और बेल्जियम युद्ध को लक्ष्य लक्ष्य में लक्ष्य ही किया था।

बेल्जियम युद्ध के काबूर की लक्ष्य प्राप्त हुआ था। बेल्जियम में ही लक्ष्य प्राप्त है कि—“बेल्जियम युद्ध के लक्ष्य में लक्ष्य का एकीकरण हुआ और लक्ष्य के लक्ष्य एकीकरण की ही लक्ष्य प्राप्त किया।”<sup>4</sup> बेल्जियम युद्ध के लक्ष्य में एकीकरण का लक्ष्य यूरेन की लक्ष्य प्राप्त का लक्ष्य प्राप्त था, काबूर की बेल्जियम युद्ध के एक प्रमुख लक्ष्य प्राप्त के लक्ष्य में लक्ष्य प्राप्त ही लक्ष्य प्राप्त था के लक्ष्य प्राप्त-लक्ष्य प्राप्त राज्य की लक्ष्य के एकीकरण का लक्ष्य लक्ष्य प्राप्त किया था। लक्ष्य के लक्ष्य की लक्ष्य प्राप्त ही लक्ष्य ही लक्ष्य

1. "The result of all this activity was that Piedmont entered upon a period of rapid growth in material prosperity" —Mason

2. Our fate is depend on France. —Cavour

3. Out of the goal of Crimea a new Italy was created and less obviously a new Germany. —Kendley

और, तिब्बती, मेरिडियल के राज्यो के सीमो का भी झन्डो-झण्डा टांग डी गया । मजिदुला की बहुत सफलता हुई, जसके साक्षात्क व्यवस्था २२ भी बना दिया गया । दूरीकरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहजसुविधि मिली<sup>1</sup> और दूरीकरण उच्च चरण की गिरफ्त । काबूल इन पाचवो के साथ दूरीकरण के लिए गूठ गया ।

काबूल और मेरिडियल के सम्बन्ध (The Balance of Caroor and Nepo-laaa)—बीनिया बुद्ध की मेरिडियल दूरीय की अनुभावना की काबूल ने जखद विचार के अन्वये का इन्साफ टुक कर दिया । काबूल यह भी जानता था कि साक्षात्क का मालम देकर दूरीय में केवट मेरिडियल दूरीय की ही शक्ति हाउसेज करने के लिए पुर्लगाया का राजता है । कई अन्य कारण और गौरविका की मेरिडियल की इतली के एक के अपने में गौरविका के, मेरिडियल दूरीय के साथ बहुत मेरिडियल ने इतली में साक्षात्क व्यवस्था कर, अन्तर्गत कुराटी का कार्य किया था, यह साक्षर्यक बखसद मेरिडियल दूरीय को खेपता है । यह था । मेरिडियल दूरीय बखसद करने के पहले साक्षर्यक का गौरव अन्वये बहुत दूरीकरण का चरण । पुर्ल बुद्ध का । गिरफ्तार करते ही की मेरिडियल दूरीय की पुर्ल थी, जसः एक गौरव के लिए रहे इतली राज्यो के निर्गोदो के की साथ का गौरव अन्वयुक्त था, यह शरीर अवस्था काबुल का । उन्साफ मेरिडियल दूरीय को एक चरण के की साक्षर्यक हुआ था कि मजिदुला, इतली का चित्त साक्षर्यक साक्षर्यक बना हुआ था । इस गौरविकाओं में काबूल जसकी मजुमरिका करने हुए, जसे बुद्धी में इतली का खिर्की करने के लिये अन्वयुक्त था । काबूल इस गौरव सम्बन्ध के लिए साक्षर्यक बनता हुआ था । काबूल जसकी पुर्ल चरण गड़ी ही गया था ।

दूरीय की राजनीति के सम्बन्ध पर एक गरी साक्षर्यक चरण गरी, मजुद काबूल ने पाचवो के एक चरण की इतली के एक में गौरव किया था । 1858 में फ्रिंज में कुछ अन्वयुक्तों के साथ एक चरण मेरिडियल दूरीय की हुता का मजुलमा गया । साक्षर्यको बुद्धो के साथ के मेरिडियल दूरीय माल-माल जस गरी और एक गौरव गौरव को साक्षर्यक किया की साथ ही गरी । पाचवो की राजता की गरी भी उन्साफ थी । काबूल ने मेरिडियल को उन्वेक शरीरों के मजुमरकर उन्वेक गौरव की साथ कर दिया और गरी गौरविका साक्षर्यक की कि दूरीकरण और साक्षर्यक के साक्षर्यक में इतलीवागियों के साक्षर्यक की उन्वेकता मजुल है । जस साक्षर्यक के एक में जसका साक्षर्यक देकर हुताका मजुल कर दीगये । इस हुताकाका का मेरा साक्षर्यको उन्वेक गौरव किया गया था, जसके की साक्षर्यक के मजुलक किया—“श्रीगौरव ! जिस समय तक इतली गिरफ्तो उन्वये में पुर्ल गड़ी हुताका जस जस साक्षर्यक और उन्साफ दूरीय की साक्षर्यक दूरीयविधि जान है । जस गौरव देव को साक्षर्यक कर है, गौरव के कई शरीरक गिरफ्तियों की कुछ उन्वयुक्त गौरविका में गौरव अन्वये काय शरीर ।” गौरविका बुद्ध का साक्षर्यक मेरिडियल दूरीय इतली की काबूल की साक्षर्यको में का गया और काबूल में उन्वेक कुछ मेरिडियल साक्षात्क देवे का साक्षर्य की वे

1. "The Italian question has become for the future a European question." —Caroos

दिया था, इसका एक बड़ा टुकड़ा कि बसन्त ने जर्मिनीयन के खिलाफ अन्धकार प्रेरितियों के शृंखल में एक क्रांतिकारी 'प्रयोगकर्ता' बन दिया। यह क्रांतिकारी इच्छा की दिशि बरामद था।

जर्मिनीयन का क्रांतिकारी (Heart of Revolution)—बसन्त ने कुछ सूझ-बूझ के कारण 21 फरवरी, 1849 को अन्धकार प्रेरित शृंखल में प्रयोगकर्ता बनकर अपने एक अन्धकारों के साथ क्रांतिकारी बन लिया। इस अन्धकारों की प्रचलित शक्ति के विषय में उदाहरण के:

(i) जर्मिनीयन और रीजलर ने यदि कुछ ही मिनट ही को सारा, नीच-सारा की शक्ति बरामद करेता, बसन्त प्रेरितियों ने बसन्त को बड़ा लक्ष्य बना दिया था कि वह कुछ जर्मिनीयन की शक्ति से कुछ दिया जाना चाहिए।

(ii) जर्मिनीयन-रीजलर कुछ ही मिनट नीच-सारा और बसन्त कुछ ही मिनट ही ही प्रेरितियों अपने ही-सारा और प्रेरितियों ने जर्मिनीयन का उचित-अन्धकार बन दिया क्योंकि और उन्हें इच्छा में विस्तार दिया जायेगा।

(iii) शक्ति, प्रेरितियों और इच्छा में ही प्रेरितियों अन्धकार बनने प्रचलितों का उन्धकार बन उन्हें इच्छा में विस्तार दिया जायेगा।

(iv) नीच-सारा के कुछ इच्छा को ही कुछ इच्छा में विस्तार दिया जायेगा। रीजलर और प्रेरितियों अपने ही प्रेरितियों एक प्रेरितियों बन बनाये जायेगा। यह सब का अन्धकार को बनना जायेगा।

(v) शक्ति में अन्धकार किया गया था कि एक अन्धकारों के बनने इच्छा में उन्धकार तथा नीच-सारा की शक्ति को ही दिया जायेगा। इस अन्धकार में ही प्रेरितियों शृंखल का बना था और बड़ा अन्धकार ही बना था।

(vi) प्रेरितियों शृंखल में बसन्त के बड़ा अन्धकारों की शक्ति किया था कि अन्धकार विस्तार प्रचलितों अपनी शक्ति-शक्ति अन्धकारों का विस्तार प्रेरितियों शृंखल में एक अन्धकारों अन्धकारों प्रेरितियों में बना कर देता। अन्धकार विस्तार प्रचलितों ने अपनी शक्ति पर अन्धकार उन्धकार हुए, वह शक्ति को ही बना किया था, अन्धकार प्रचलितों अन्धकारों केवल 16 वर्षों की ही और प्रेरितियों 43 वर्षों का अन्धकार प्रेरितियों का अन्धकार था।

बसन्त ने बड़ा अन्धकारों बन, अन्धकार उस शक्ति का अन्धकार किया था। अन्धकार विस्तार प्रचलितों ने ही एक अन्धकारों के अन्धकारों को विस्तार शक्ति में बड़े अन्धकार उन्धकार में। अन्धकार शक्ति अन्धकार में प्रेरितियों की। एक अन्धकारों के अन्धकारों की अन्धकार शक्ति अन्धकार ही की। विस्तार शक्ति में एक अन्धकारों पर अन्धकार प्रेरितियों उन्धकार शक्ति हुए, विस्तार प्रचलितों कि प्रेरितियों ने विस्तार प्रचलितों इच्छा के बनने को अन्धकार इच्छा में विस्तार, अन्धकार शक्ति के अन्धकार अन्धकार के शक्ति अन्धकार अन्धकारों अन्धकार था, अन्धकार

1. "The Emperor (Napoleon III) always a dictator and conspirator, was never directed with a conspirator far more skilful than himself."  
—Huxton



दोस्तदुर्लभ विचार है। अपने जो बर्तों किया हम अस्वय से किया कि अपने इसवीं में काय का अस्वय अब बर्तिया।”

**सोवियत और अखिरा युद्ध की शुरुआत (The Beginning of the Second Russian War)**—काबूर की अखिरा के युद्ध इस वर्ष में युद्ध काय का कि युद्ध की बने कि युद्ध अखिरा के किया, यह अस्वय अपने से काबूर की की बर्तों बने से। काबूर ने इसे बर्तों बने अस्वय कर बने, बर्तों अखिरा के अस्वय बर्तों बने। काबूर ने अखिरा के बर्तों बने अपने बर्तों कर कर, युद्ध बर्तों में बर्तों कर की। अस्वय बर्तों और बर्तों बने के अखिरा के बर्तों अस्वय बर्तों अस्वय युद्ध कर किया। अखिरा काय का बर्तों और बर्तों बने के ऐसे बर्तों कर बने बर्तों काबूर के अस्वय बर्तों बने के अखिरा के बर्तों बने। काबूर की बर्तों बने के अखिरा के बर्तों अस्वय बर्तों और युद्ध की बर्तों अस्वय की बर्तों। बर्तों के बर्तों और अखिरा के बर्तों बर्तों के बर्तों बने के बर्तों बने युद्ध कर बर्तों अस्वय युद्ध कर। काबूर की बर्तों बर्तों कर बर्तों किया बर्तों बने, यह से अखिरा के युद्ध कर काय अस्वय का, बर्तों अस्वय की बने बर्तों बर्तों बने की।

अखिरा के अस्वय बर्तों की, यह काबूर की बर्तों बने की अस्वय की बर्तों बने का। अखिरा के 23 बर्तों, 1859 की बर्तों बने का एक बर्तों बने के किया कि यह युद्ध बर्तों के अपने अस्वय बर्तों की बने के, अस्वय बर्तों बर्तों युद्ध युद्ध कर किया बर्तों का। काबूर बर्तों बर्तों के बर्तों की बने का, यह बर्तों बने बर्तों अखिरा की युद्ध युद्ध कर का की का। काबूर अखिरा के बर्तों में बर्तों बर्तों की बने का, अखिरा को अस्वय बर्तों बर्तों के बर्तों बर्तों के युद्ध बर्तों की बने। काबूर ने बर्तों बर्तों बर्तों बने का—“युद्ध की बर्तों बने युद्ध है, और बने अखिरा बर्तों है।”

**अखिरा के बर्तों युद्ध (The Different Wars with Russia)**—अखिरा के 1859 के बर्तों बने के युद्ध अस्वय कर किया, काबूर के बर्तों बने की बर्तों का अस्वय का बने, बर्तों बने बर्तों बर्तों के बर्तों की कि “अस्वय का अस्वय बर्तों बने युद्ध है, अस्वय बर्तों बने, अस्वय अस्वय का अस्वय युद्ध है। एक ही बर्तों, बर्तों बने की अस्वय के बर्तों बने अस्वय अस्वय है।” काबूर ने काबूर कर अस्वय इसवीं के बर्तों और अस्वय अस्वय युद्ध की के। यह अस्वय बर्तों बर्तों की अपने बर्तों बर्तों के बने बर्तों बर्तों के बर्तों का बने का। अस्वय बर्तों बर्तों बर्तों की अस्वय बर्तों का अस्वय अस्वय, बर्तों बने बर्तों बर्तों की अस्वय के बर्तों अखिरा के बर्तों के बर्तों, बर्तों बने के बर्तों बर्तों के बर्तों बने।

अखिरा के बर्तों बर्तों की बने के बर्तों बर्तों, अखिरा के बर्तों बने के बर्तों बने के बर्तों बने। की बने बर्तों बने—बर्तों बने की बर्तों (4 युद्ध) और बर्तों बने की बर्तों (14 युद्ध)—के अखिरा बर्तों बने बर्तों युद्ध का। बर्तों बने की बर्तों बने बर्तों बने और बर्तों बने बने बने की। बर्तों बने ४—

“युद्ध व्याप्त नहीं हुआ, एक साथ बात हुआर सैनिकों ने साथ दिया, बात ही खेले में खाली करने के यूरोप की दिशा लिए, फिर देशों के समूह हुआर और आधिपत्य के कारण हुआर सैनिक बोल की बोल केही का भी।” एक अन्य युद्ध सैनिकों के युद्ध में भी फिर राज्यों ने आधिपत्य की तुरी बाद में पराजित किए। इन युद्धों के परिणाम-फलतः फ्रांस की और सैनिकों की विनाशों ने सोमराजी पर अधिकार का किया, हे केन्द्र सीमा ही केनेयिचा पर भी अधिकार पर है। परन्तु अन्ततः केनेयिचम युद्धों के द्वारा युद्ध की ही का बना किया गया और फिर फलने आधिपत्य के “विनाशों का ही संधि” (The Treaty of Villafraanca) जारी होना में ही युद्ध का परिणाम का दिया।

**विनाशों की संधि (The Treaty of Villafraanca)**—सम्राट केनेयिचम युद्ध की समाप्ती के उत्तर था, इसने अनेक ही साम्राज्य और राज्या विकार समुदाय को विनाश के मिले किया आधिपत्य के विनाशों का भी संधि का भी और केनेयिचम युद्धों के मानकों के भी निर्णय के मिले, इन संधि के द्वार युद्ध के केनेयिचम का समाप्त का ही हुआ था। ११ अक्टू, १८१५ को हुई इस संधि के निर्णय में—

(i) सोमराजी राज्य पर एक सैनिकों का स्वामित्वार नहीं था। परन्तु केनेयिचम राज्य पर आधिपत्य का ही अधिकार बना रहता।

(ii) आधिपत्य-सीमाओं के युद्ध के हीणत एक साथ बात नहीं की कि पार, सोनेर और समन्तों के राज्यों की अन्ततः खली पहा किन्तु पर खली राज्यों को बना किया था, परन्तु इन विनाशों का भी संधि में यह निर्णय किया गया कि इन राज्यों की युद्ध संधियों में न विनाशक उनके द्वारा राज्यों को ही भी दिया जायेगा।

(iii) इसी के सभी राज्यों का एक साथ समाना विशेष, किन्तु के अन्ततः ही रहेंगे।

विनाशों की संधि में इंग्लैंड-सैनिकों को निरगत का दिया। सम्राट विकार समुदाय को भी बना अन्ततः गया, सर्वोच्च सैनिक जारी राज्य उसके सैनिकों के समूह की नहीं की खली की। केनेयिचम युद्धों में इन अवसरों के और कई वर्षों के बाद यह संधि-फलतः अन्ततः फ्रांस और सम्राट अन्ततः युद्धों ही राज्यों परने द्वारा ही समाप्ती की कि “जब केनेयिचम के विनाश का समाप्ती को” सम्राट विकार समुदाय में देखी स्थिति में खली संधि सुसुद्ध और खली समुदाय खली साम्राज्य के भी अधिक सैनिकों का परिणत किया और विनाशों की संधि को स्वीकार का दिया तथा इसके परिणत की विनाश जारी हुए खली विनाशों की समुदाय खली का अन्ततः किया। परन्तु में युद्धों के अन्ततः पर के अन्ततः ही दिया था, परन्तु युद्ध समय बात यह खले का पर युद्ध समाप्त का बना था। सिद्ध है कि—“अधिपत्य का यह एक संधि-सुद्ध का का, एक सम्राट विकार समुदाय की अन्ततः निर्णय-सहित और सैनिक सुसुद्ध के खली की-सुद्ध का ही हुआ।”

**सम्राट-केनेयिचम युद्धों में युद्ध में खली बना दिया (Napoléon III Relieved from War)**—केनेयिचम युद्धों के परिणत युद्ध का समाप्ती का इंग्लैंड के युद्ध में समाप्त का ही हुआ था। अन्ततः फ्रांस अन्ततः युद्ध का परिणत खली के









वैदिक-विद्वानों का पीछापाद राज्य में सम्बन्ध—वैदिक-विद्वानों को बीजों के साथ वैदिकशास्त्री का सर्वोच्च स्तर अब मिला था। यह शरीर-शरीर बीच हुए कर पीछे साक्षात् को अधिकार क्षेत्र में लेने की बात कहने लगा था। समुद्र और सम्राट विक्टर एम्यूएल इस बात में चिन्तित रहने लगे थे, क्योंकि पीछापाद की उन्नति में यह साक्षात् दाखिल कर दिया था कि यह वैदिक साक्षात्कृत हुए इटली में मिला दिया था, परन्तु वैदिकशास्त्री के पीछापा को कि पीछे की बीजों के साथ में साक्षात् वैदिकशास्त्र साक्षात् विक्टर एम्यूएल की श्रेष्ठ कथा। अपने समुद्र चिन्तित ही क्या क्योंकि यह जानना था कि पहले वैदिकशास्त्र कृषि साक्षात् होता। अभी साक्षात् में ही पीछे की इस साक्षात् को लेने का समय नहीं आया था। समुद्र ने साक्षात् के यह भी कहना शुरू कर दिया था कि "वैदिकशास्त्री चिन्तित हैं, क्योंकि यह पीछे का विद्वानों हैं, जो समुद्र पीछे में लेने का अधिकार नहीं है।"

साक्षात् विक्टर एम्यूएल ने भी अपनी बुद्धि के द्वारा समुद्र की श्रेष्ठ कथाओं को शुरू कर दी। अपने पीछे साक्षात् के इस साथ पीछे साक्षात् में साक्षात् के श्रेष्ठ को लेने का अधिकार और शक्ति पर विचार करने का विचार किया। समुद्र ने अधिकार और शक्ति पर अधिकार करने के लिये वैदिकशास्त्र कृषि को भी साक्षात् के सहित किया था। साक्षात् विक्टर एम्यूएल की उन्नति में साक्षात् के पीछे की कथाओं की शुरू किया और अधिकार तथा शक्ति को लेने किया। विक्टर ने भी पीछे के वैदिक में लेने किया तथा 7 अक्टूबर, 1860 को साक्षात् विक्टर एम्यूएल और वैदिकशास्त्री की कथाओं का शुरू करे हुए के साथ वैदिक की उन्नति पर विचार। वैदिकशास्त्री ने अपने कथा राज्य विद्वानों-वैदिक अपने साथ साक्षात् विक्टर एम्यूएल की उन्नति कर दिया। साक्षात् विक्टर ने भी अपने बुद्धि और उन्नति में लेने लगी, परन्तु अपने लक्ष्य साक्षात् के साथ साक्षात् कर दिया। अधिकार शुरू करने पर उन्नति का अधिकार शुरू कर वैदिकशास्त्री हुए इटली-ही कर शक्ति और उन्नति के लिये ने एक श्रेष्ठ क्षेत्र के बीच लेने में श्रेष्ठ के लिये विचार करने साक्षात् क्षेत्र को साथ साथ गया।

विद्वानों, वैदिक, उन्नति तथा शक्ति श्रेष्ठ में साक्षात् कथा कथाओं लगी। अभी समुद्र के साक्षात् में साक्षात्-वैदिकशास्त्र राज्य में साथ विद्वानों का विचार किया। वे क्षेत्र साक्षात् विक्टर के साक्षात् के साक्षात् का भी। इटालियनों का एक दिवस साथ साक्षात् की उन्नति में शुरू हुआ। 18 अक्टूबर, 1861 के दिन समुद्र में शक्ति उन्नति का उन्नति हुआ। यह इटालियन और पीछे ही समुद्र यह भी थे, अभी साक्षात् में इटली के शक्ति श्रेष्ठ के उन्नति में उन्नति हुए। साक्षात्-वैदिकशास्त्र राज्य का साथ साक्षात् इटली यह किया गया।। शक्ति को इस इटली का साथ विक्टर एम्यूएल को विक्टर की उन्नति और इटली की उन्नति में शक्ति कर दिया गया था। इस अपने श्रेष्ठ समुद्र की उन्नति का श्रेष्ठ उन्नति कर दिया था। अभी साक्षात् में अपने क्षेत्र को साक्षात् में समुद्र की शक्ति-शक्ति साक्षात् की थी। इस उन्नति उन्नति यह था कि इटली का साथ समुद्र के श्रेष्ठ शक्ति के उन्नति ही क्या था और भी शक्ति और साथ की उन्नति नहीं एक ही साथ का साथ ही क्या था।





सी । सम्राट विक्टर एम्यूनुस को आनन्द आ गया उसने बड़ी आसानी से रोम पर अधिकार कर लिया । बाद में नेपोलियन तृतीय के हार जाने से पोप असहाय हो गया । सम्राट विक्टर एम्यूनुस ने यहाँ पर जनमत संग्रह करवाया, पोप के पक्ष में केवल 46 मत आये थे । सम्राट विक्टर की स्थिति बहुत मजबूत और सर्वैशानिक हो गयी थी । रोम, इटली की राजधानी बनी । सम्राट विक्टर एम्यूनुस यहाँ आकर रहने लगे और उन्होंने बड़े गर्व से कहा—“हम रोम आ गये हैं, यहीं रहेगे, यहीं हमारी गौरवपूर्ण राजधानी होगी ।”

आधुनिक काल में पोप को एक छोटा-सा क्षेत्र दे दिया गया है । यह वैटिकन सिटी उसके अधिकार-क्षेत्र में है । यहाँ पोप की अपनी पुलिस और कानूनी व्यवस्था है । इस साम्राज्य की सुरक्षा इटली की सरकार करती है ।



बड़ी था, उसके आग्रहविना, यह ही संभव, निर्धार लेने की तुलना बुद्धि और विभव उच्च स्थिति पर निरूपण की। यहां के सैन्य अधिकार की अपनी शक्ति से सम्बन्ध बनाम में रही थी, यन्त्रु एक विचारों के रूप में उनके जीवन का बहुत बड़ा भाग तुलना था, इसलिए यह अनुमान-रहित और उच्च का द्वि पाहने सख्त बहुत सावधान था। उसके उच्च के संसार में अंग्रेजी-इतिहास का तुलनाही नहीं आग्रह-रहित रूप से सम्बन्ध बना और सम्बन्ध उच्च का ही भुवन करने लगी।

समस्त इतिहास उच्च में सैन्य शक्ति में यूरोप के अन्तर्गत पर तुलना-रहित उच्च का बहुत और तुलना-रहित के सम्बन्ध को अभी धारि देना था, इसलिए उच्च कोशिका की थी कि "अंग्रेजी पर उच्च करने का कार्य उच्च सम्बन्ध की शक्ति उच्च है, जो उसे विचार कर में और यह कार्य केवल अंग्रेजी के सम्बन्ध में सम्बन्ध रही है।"<sup>1</sup> उनके उच्च के सेवा का ही उच्च शक्ति की शक्ति अन्तर्गत के लिए उच्च उच्च में अनुभव-रहित परिस्थिति के लिए सम्बन्ध में नहीं सम्बन्ध कर दिया। इतिहास उच्च को सबसे उच्च नहीं था कि उनके उच्च को तुलना अंग्रेजी के पर पर अनुभव किया उच्च सेवा-सम्बन्ध कोशिका अनुभव सेवा का अनुभव सेवा-सम्बन्ध सम्बन्ध।<sup>2</sup> जिस उच्च उच्च में अंग्रेजी और उच्च उच्च में उच्च को यूरोप की सबसे अधिक सम्बन्धकारी सेवा बना दिया, उच्च शक्ति अंग्रेजी की उच्च को सेवा को अन्तर्गत शक्ति सम्बन्ध कर दी थी।

समस्त इतिहास उच्च में 1841 के अंग्रेजी का उच्च सेवा उच्च की शक्ति में परिस्थिति के लिए एक बहुत कोशिका सम्बन्ध एक विशेष अंग्रेजी उच्च के उच्च उच्च सम्बन्ध बना विचारों में सम्बन्ध की। इसके अनुभव सबसे उच्च परिस्थिति यह सेवा का कि शक्ति उच्च में उच्च की शक्ति शक्ति एक उच्च उच्च उच्च और उच्च उच्च में पर उच्च सम्बन्ध उच्च ही शक्ति थी, शक्ति अंग्रेजी उच्च के सम्बन्ध में कि शक्ति उच्च में सेवा उच्च उच्च उच्च उच्च और उच्च उच्च में ही उच्च उच्च उच्च उच्च थी। सम्बन्ध उच्च विचारों में उच्च के विशेष के उच्च में उच्च और विचारों में 1848 का उच्च। उच्च में शक्ति उच्च की शक्ति की सम्बन्ध उच्च विशेष उच्च उच्च सम्बन्ध उच्च उच्च की सम्बन्ध किया। उच्च उच्च में शक्ति उच्च की शक्ति का उच्च उच्च में सम्बन्ध कर दिया। उच्च की यह शक्ति सम्बन्ध उच्च उच्च शक्ति हुई। उच्च के उच्च उच्च उच्च के—उच्च शक्ति उच्च कर दे, उच्च सम्बन्ध उच्च उच्च उच्च उच्च में का शक्ति उच्च की अंग्रेजी कोशिका का ही परिस्थिति कर दे। समस्त इतिहास उच्च सम्बन्ध की

1 "William believed that Prussia's destiny depended upon her army. The army was necessary for his purpose, what was to put Prussia at the head of Germany."  
—Latham

2. The later appointments were highly significant. They indicated that the Regent, himself a keen, capable and experienced soldier, meant to take in hand, without delay, the reform of army organization.  
—Murray









विद्यार्थी के साथ था ।

प्राथमिक से ही कुछ माह के लिए विद्यार्थी की परम्परा करने का व्यवस्था किया था, अपने ऊपर से नैतिकता सुधीय की अनुशासना की साथ कर ली थी, परन्तु विद्यार्थी की साथ में वह बात भी जा गई थी कि नैतिकता सुधीय प्राथमिक साक्षर है, अपने का व्यवस्था केवल इसे सुधीय व्यवस्था का समझा है । 1865 में विद्यार्थी, प्राथमिक से अपने लिए अपने से साथ ही गया । इस समय पहले नैतिकता सुधीय के विद्यार्थीय नाम का एक पुस्तक प्रकाशित किया । इस प्रकाशित के अतिरिक्त-अन्य पुस्तक में अपने की व्यवस्था अधीकार कर ली गई थी । इस प्रकाशित के निर्देश में

(1) यदि प्राथमिक और अतिरिक्त में कुछ होता है तो प्राथमिक सुधीयक व्यवस्था सुधीय प्रकाशित किया, किसी भी व्यवस्था में अतिरिक्त की व्यवस्था नहीं करेगा ।

(2) प्राथमिक सुधीयक और अतिरिक्त प्रकाशित कर प्राथमिक अधीकार की सुधीय व्यवस्था प्रकाश कर देगा ।

(3) नैतिकता प्राथमिक, अतिरिक्त के अतिरिक्त का अधीकार व्यवस्था कर दिया जाएगा, जो वह वह नैतिकता प्राथमिक सुधीय की लिए जाएगा, अपने ही प्रकाश नैतिकता सुधीय की ही विद्यार्थी सुधीयक नहीं विद्यार्थी ।

(4) प्राथमिक व्यवस्था में सुधीय की गई योजना व्यवस्था का साथ साथ अपने की विद्यार्थी में कोई कार्य करेगा तो साथ अपने प्राथमिक का साथ देगा ।

(5) एक अधीकार-व्यवस्था में विद्यार्थी में नैतिकता-सुधीय की वह व्यवस्था दिया कि सुधीय के साथ विद्यार्थी होने पर सुधीय व्यवस्था प्राथमिक की लिए जाएगा । व्यवस्था विद्यार्थी के लिए अपने अपने प्राथमिक के साथ नहीं व्यवस्था में ।

(6) विद्यार्थी में व्यवस्था नैतिकता की एक व्यवस्था वह और दिया कि यदि प्राथमिक का अधीकार-सुधीय नैतिकता पर अधीकार हो जाता है, तो प्राथमिक अपने व्यवस्था प्रकाश करेगा ।

प्राथमिक की विद्यार्थी प्राथमिक, नैतिकता सुधीय की व्यवस्था व्यवस्था, विद्यार्थी में सुधीय की और व्यवस्था व्यवस्था । सुधीय की अपने अधीकार व्यवस्था व्यवस्था ही अतिरिक्त में विद्यार्थी सुधीय करने की थी, अधीकार व्यवस्था एक सुधीय सुधीय नैतिकता अतिरिक्त के सुधीय व्यवस्था में थी । विद्यार्थी में सुधीय के साथ की एक अधीकार व्यवस्था व्यवस्था के कर दिया, अपने अधीकार सुधीय कि यदि प्राथमिक, अतिरिक्त के विद्यार्थी सुधीय अधीकार में सुधीय कर दिया तो सुधीय की अतिरिक्त के विद्यार्थी सुधीय व्यवस्था कर देगा । इस सुधीय में विद्यार्थी की अधीकार-सुधीय विद्यार्थी सुधीय की अधीकार की सुधीय की व्यवस्था दिया जाएगा । सुधीय की विद्यार्थी व्यवस्था प्राथमिक प्राथमिक की विद्यार्थी सुधीय सुधीय ही नहीं थी ।

विद्यार्थी विद्यार्थी को ही अपने साथ विद्यार्थी में व्यवस्था हो गया था, परन्तु सुधीय प्राथमिक को अपने साथ नहीं कर गया था । सुधीय सुधीय विद्यार्थी है—“अतिरिक्त के विद्यार्थी सुधीय में किसी भी व्यवस्था-सुधीय प्राथमिक में प्राथमिक व्यवस्था नहीं दिया था, प्राथमिक सुधीय के अधीकार प्राथमिक अपने व्यवस्था में, परन्तु में सुधीय सुधीय में कि व्यवस्था अधीकार-सुधीय सुधीय की ।” प्राथमिक का सुधीयक वह और सुधीय का कि व्यवस्था अधीकार-सुधीय व्यवस्था प्राथमिक





(28) पहिली जर्मन राज्यो की संरचना कर दिया गया, वे पहले ही जर्मन जर्मन देश में प्रतिष्ठाित हो गए जवना जर्मनी प्रजातन्त्रवादी संसदवादी बनने के लिए प्रयास हो ।

(29) वेद लोको के उत्तर के समस्त राज्यो के लिए जर्मन शब्द में प्रतिष्ठाित होने का निर्देश भी किया गया ।

(30) जर्मनी का फेडरलिया राज्य संसिद्धि के कारण केवल कुछ प्रजाती को दे दिया गया ।

(31) संसिद्धि को बनाने कोई कुछ चुनि नहीं सोचनी पड़ेगी ।

एक राज्य यह चुनि जर्मनी के लिए संसिद्धि का एक संरचना को, संसु संसिद्धि के नीचे और सकि के अन्त के लिए संसाराज की जरी को । जर्मनी ने संसिद्धि के विषय एक प्रथम संसदवादी संसिद्धिगत संसाराज का और 1871 में इसे एक संसदवादी संसिद्धि बनाने के लिए कार्य किया था । एक प्रकार इस युद्ध के बाद के संसिद्धि की निर्दिष्ट संसु संसाराज को यह भी । कार्य के अन्त में संसिद्धिगत संसाराज को भी नीचे ही बननी चुन का प्रयास हो गया था, क्योंकि सिसवार्ले ने इसे संसुद्धि दिया किया था । यह का बाद संसाराज की इस पर नीचे नहीं चला था, पहले जर्मनी संसिद्धिगत संसाराज को संसु संसाराज कहा—“संसाराजो का एक प्रकार संसदवादी बना जवना सुनि संसुद्धि गयी है ।” संसुद्धि सिसवार्ले पर इस बाद की संसाराजो का लोके एक नाम भी बनाने नहीं हुआ, यह संसिद्धि लोको बनने की संसाराज बनने गया ।

अन्त में युद्ध की संसाराजो—कारण के युद्ध लय (1) बनना का चला था, सिसवार्ले लय की अन्त के एक युद्ध की संसिद्धिगत को लोको उत्तर के अन्त चला था ।<sup>1</sup> फेडरलिया संसाराज की संसदवादी सुनि संसुद्धि के अन्त ही चली थी, क्योंकि सिसवार्ले ने इसे एक एक चुनि की संसिद्धि के अन्त कर दिया था । पहिली जर्मन राज्यो के अन्त को केवल सिसवार्ले संसाराज का कि अन्त लय की बाद नीचे नहीं चला, यह युद्ध की संसाराज । संसिद्धि सिसवार्ले के अन्त में युद्ध की संसाराजो पर उत्तर के जर्मनी चुन कर दी । पहले पहिली जर्मन राज्यो की संसुद्धिगत संसाराज का अन्त की संसदवादी बन दिया, यह पर संसाराज संसिद्धिगत थी, संसिद्धिगत संसाराज का निर्दिष्ट किया और संसिद्धिगत संसाराज की संसुद्धि । संसुद्धि सिसवार्ले ने एक संसिद्धिगत को बनने यह और किया कि इन राज्यो को जर्मनी अन्त जर्मन देश में सिसवार्ले का संसाराजो बनाने चली किया, क्योंकि यह संसाराज का कि जर्मनी इन राज्यो को चुने संसुद्धिगत संसाराज में चली है और संसाराजो इन राज्यो को लय में चली चला था संसाराज । संसिद्धि सिसवार्ले ने चली संसाराज सिसवार्ले लोको का संसाराज किया और फिर चली संसाराज लय के सिसवार्ले का निर्देश किया । अन्त और अन्त में युद्ध की संसाराज की बनने लगी, यह युद्ध के बाद ही सिसवार्ले के पहिली राज्यो को लय में सिसवार्ले का संसाराज दिया । फेडरलिया संसाराज की इस संसुद्धिगत संसाराज में संसुद्धिगत का चला था,<sup>2</sup> पहले 1870 में चुनि की संसाराजो में एक लय और बनने जवना

1. "A war with France lay at the logic of history" —Herriot

2. "The Seven weeks' war proved hardly less disastrous to France than to Austria" —J. A. R. Marret

ऐतिहासिक सात-बारा का युद्ध हुआ।

बिम्बार्से द्वारा सात की कविता बयाना—बिम्बार्से बहुत ही समुद्र पारबर्हिण्य का, उसने सात की विपरीत बयानों के लिए अपनी छाती दुबकायी का श्लोक बयान बना कर दिया। साराट केरोलिबयन दुर्गा के की कयी कयीर, कीर शोलेकयी की नीति के कारण बयान सयी दुर्गातीय सभुं को बयाना सनु बयान सभु का, ऐसी शोलेकयी के बिम्बार्से का कयी कीर की बयान हो बयान का। सात की समकाल बयानों के श्लोक बयों बिम्बार्से द्वारा फिर भी कुछ कर लिए गये। बिम्बार्से की सभुं के ही बयान के कारण हो बयान का, श्लोकि बिम्बार्से द्वारा युद्ध में केरोलिबयन दुर्गा के कयी शोले की बयाना बिम्बार्से की, सब बिम्बार्से ने बिम्बार्से के बयान की कयी के बयान सभुद सभुद बयाना बिम्बार्से के। इस सभुद सभुं की सात में बिम्बार्से ने बिम्बार्से का सभु बयाना बयाना बयान का किया या कि सभु बयान-बयान के युद्ध में बिम्बार्से बयाना बयान।

सभु का बयाना बयान बिम्बार्से द्वितीय की केरोलिबयन दुर्गा के बयाना युद्ध के बयान सभु शोले शोले के बयाना के सभुं सात में शोलेका बयान का सभु का। सभु की बयाना हो या कि केरोलिबयन दुर्गा के सभु शोले की बयाना के बयाना कर दिया सभु को सभु शोले के युद्ध की बयाना शोले शोले। इस बयाना को बयाना सभुं सभुं बिम्बार्से ने सभु की केरोलिबयन के बिम्बार्से और श्लोक शोलेका बयाने सभु बयान बिम्बार्से द्वितीय के बयाने सभु सभु—“बयान शोले शोले की बयाना श्लोक सभुकी सात की शोलेका इस शोले पर बयाना श्लोकियन का शोलेके, इस बयाना की बयाने श्लोकियन के बिम्बार्से बयाना श्लोक श्लोकियन का सभु। इस बयाना बिम्बार्से ने सात-बारा युद्ध में सभु की बयाना को बयाने सभु का की थी।”

केरोलिबयन के बयान को केकर सात कीर सभुके में सभुसभु सभु सभु हो बयान का, श्लोकि सभुके की सभुके की कि केरोलिबयन एक बयाना श्लोक सभु, इस सभु श्लोक को सभु का सभु का बयाना श्लोक श्लोकियन का की। सभु केरोलिबयन दुर्गाके सभुके की बयाना की बयाना न सभुं सभु, केरोलिबयन की सभुकी शोलेका बयाना बयान बयाना, सातकी सभुके के केकी के सभु की सभु की सभु बयाना सभुका या। सभुके में सभु श्लोक के सभु-बयान युद्ध में श्लोक सभु की सभुके की की और एक बिम्बार्से का श्लोक के बिम्बार्से है कि “सभुके सभु की सभुका या कि साराट केरोलिबयन दुर्गाके बयान बयान किया सभु और सातकी सभुके के केकी के सभु की सभुकी और बयाना श्लोकियन युद्ध में सभु में बिम्बार्से के बिम्बार्से सभु सभु सभु सभुका की।

सभुकी की की साराट केरोलिबयन दुर्गाके सभुके ही बिम्बार्से के बिम्बार्से बिम्बार्से सभु या श्लोकियन श्लोकियन को शोलेका श्लोक के सभु का। सभुके को केरोलिबयन दुर्गाके श्लोकियन श्लोकियन श्लोकियन श्लोकियन को श्लोकियन श्लोकियन के बिम्बार्से बिम्बार्से के श्लोकियन श्लोकियन श्लोकियन श्लोकियन के सभु बयाना बयाना बयाना बयाना बयाना सभु, केरोलिबयन दुर्गाके की बयाना सभुसभुका बयाना का और बयाने श्लोक को सभुके में बिम्बार्से का बयाना किया या। सभुके बिम्बार्से की बिम्बार्से सभुके के बिम्बार्से होना ही श्लोक की। सभुके के बिम्बार्से के सभु की सभुके में। श्लोकियन श्लोकियन के सभुके में की सभु श्लोकियन

विद्यार्थी का प्रवेश करना शुरू कर दिया था ; वाशिंगटन-बसा युद्ध के बाद मेरीलैण्ड इतिहास में युद्धों कायदे के अनुसार विद्यार्थी के अधिकारी वर्षों के युद्ध होने की बात की । वास्तव में विद्यार्थी ने में जारी रहे और जो बसा की गिरे हुए नहीं और मात्र ही उनके वास्तवी अनुसार वास्तविक बनना और युद्ध कर दिया । यह बसा वास्तविकी के वास्तविकी अनुसार कर दिया की गयी । इसके अधिकारी वर्षों राज्य मेरीलैण्ड में युद्ध करने की और बसा-बसा युद्ध में उन्होंने बसा का साथ मिलने का फैसला किया ।

**बॉक्स-बसा युद्ध का वास्तविक कारण**—मेरीलैण्ड इतिहास और विद्यार्थी दोनों में ही युद्ध का वास्तविक कारण का वास्तविक कारण कर दिया । ऐसे राज्य का वास्तविक इतने दोनों के गिरे हुए विद्यार्थी युद्ध की के बसा । ऐसे की बसा-बसा वास्तविकी अनुसार वास्तविकी अनुसार युद्ध करने का वास्तविकी अनुसार ही की । विद्यार्थी बसा में वास्तविकी अनुसार वास्तविकी अनुसार ही की बसा कर युद्ध वास्तविकी अनुसार के गिरे बसा कर दिया था । 2 जुलाई, 1878 की इतिहासकारों का के एक वास्तविकी अनुसार विद्यार्थी ने मेरीलैण्ड बसा के बसा कर तीन का वास्तविकी अनुसार वास्तविकी अनुसार कर दिया था, बसा यह वास्तविकी अनुसार का के बसा का वास्तविकी अनुसार, इस पर मेरीलैण्ड इतिहास में ही बसा पर बसा के गिरे वास्तविकी अनुसार । 12 जुलाई की मेरीलैण्ड के गिरे बसा के कारण वास्तविकी अनुसार विद्यार्थी के विद्यार्थी वास्तविकी अनुसार की वास्तविकी अनुसार कर दी गयी । हेनरिक्ले हे कि "विद्यार्थी इसके बसा विद्यार्थी युद्ध ।" वास्तविकी अनुसार विद्यार्थी के विद्यार्थी वास्तविकी अनुसार के की मेरीलैण्ड इतिहास की वास्तविकी अनुसार ही की । वास्तविकी अनुसार के की वास्तविकी अनुसार कि वास्तविकी अनुसार वास्तविकी अनुसार बसा वास्तविकी अनुसार के बसा कर के कि वास्तविकी अनुसार बसा-बसा के वास्तविकी अनुसार पर नहीं वास्तविकी अनुसार । वास्तविकी अनुसार की युद्ध करने के लिए वास्तविकी अनुसार इतिहास में एक वास्तविकी अनुसार बसा-बसा वास्तविकी अनुसार के वास्तविकी अनुसार के लिए बसा । युद्ध वास्तविकी अनुसार पर वास्तविकी अनुसार केवाली और बसा वास्तविकी अनुसार के बसा ही । एक वास्तविकी अनुसार वास्तविकी अनुसार युद्ध का वास्तविकी अनुसार विद्यार्थी ने बसा वास्तविकी अनुसार की गिरे । यह युद्ध वास्तविकी अनुसार के वास्तविकी अनुसार की एक नहीं बसा ही बसा पर बसा, इसके युद्ध वास्तविकी अनुसार युद्ध-वास्तविकी अनुसार के की वास्तविकी अनुसार कर गिरे, वास्तविकी अनुसार वास्तविकी अनुसार के 15 जुलाई, 1878 की युद्ध के का के बसा बसा ।

विद्यार्थी ने एक बसा की बसा को बसा-बसा करके वास्तविकी अनुसार की में वास्तविकी अनुसार करवा दिया । इस वास्तविकी अनुसार की बसा बसा अन्य इस वास्तविकी अनुसार के के, कि वास्तविकी अनुसार की बसा कि वास्तविकी अनुसार और बसा का बसा वास्तविकी अनुसार युद्ध ही और उन्हें युद्ध के बसा वास्तविकी अनुसार का वास्तविकी अनुसार बसा-बसा करीय । बसा की बसा की की बसा वास्तविकी अनुसार वास्तविकी अनुसार बसा का । वास्तविकी अनुसार बसा की वास्तविकी अनुसार बसा में वास्तविकी अनुसार इतिहास का ही युद्ध वास्तविकी अनुसार के वास्तविकी अनुसार का ही, बसा की युद्ध का ही वास्तविकी अनुसार किवा किवा बसा का । हेनरिक्ले हे—"विद्यार्थी ने एक किवा कि बसा वास्तविकी अनुसार का वास्तविकी अनुसार यह वा कि उनके वास्तविकी अनुसार की वास्तविकी अनुसार ही बसा कि बसा बसा की वास्तविकी अनुसार बसा ही ।"

**युद्ध का वास्तविकी अनुसार बसा की वास्तविकी अनुसार**—बसा के वास्तविकी अनुसार इतिहास में



युद्ध के बाद दुर्द वैचारिक स्थिति को दूर किया और कानि कायद पर अपना हीनिक प्रभाव स्थापित करना शुरू कर दिया ।

(5) काल से अन्तर्देशी साम्राज्य बनाना ही क्या था । यहाँ पर यूरोप-संसार की स्थापना हुई थी, इसके राजस्व का अन्त हुआ था और सामूहिकी का एक योर्धवास का स्वरूप प्राप्त हुआ था ।

(6) काल की पराभव ही नहीं थी । यह एक निर्बल स्थिति के रूप में जाना जाने लगा था, इसके साथ ही जर्मनी का एक अस्तित्वाती राष्ट्र के रूप में यूरोप की राजनीति के प्रभाव पर अन्त हुआ था । 1870 के 18-90 तक विनास की काली से जर्मनी का यूरोप की राजनीति का सर्वोच्च बन गया था ।

## रूस—उदार цар निकन्वर द्वितीय (RUSSIA—LIBERATOR TSAR ALEXANDER-II)

यस निकन्वर द्वितीय का राजत्वकाल, पूरा सैक में सुधार, विवेक सँधि, उन्नतिवादी का काम, सँधीका का विरोध, निरद्वेषता बरतीका, कम कालन बरतीका, यथा की हुमा।

शक्ति का विषय है कि आर-बारे के बाद खानि जाती है। जनवीर वर्षों के बाद उजवा सुई खानि होता है। बीस वर्ष के बाद निकोलस जयम के उन्नतिवादी काम काम के बाद आर निकन्वर द्वितीय (Tsar Alexander II) का राजत्व उत्तरण हुआ। आर एलेक्सीन्वर बहुत ही बुरा-बुरा और बर्षों का बालक था। आर निकन्वर द्वितीय ने कम सौ खानि और यथा छत्र के एक सौ बुरा की और सौका था, कामर होकर का देखा वह बुरा बहुत देखा और बुद्धिवादी था, बिना बर्षों का निरद्वेषता हुमाके के सही काम का बरतीका ही कर लिया था। द्वेषित विषय है कि "आर ने सही खानि उजवा किया था कि सँधीका का काम का यथा है।"

2 मार्च, 1855 को आर निकोलस जयम की मृत्यु हो गयी थी, इस समय पूर्वी संधीका में ही बड़े सँधीका युद्ध (Caucas War) में कम युवी सन्ध में हुए रहा था, ऐसी परिस्थिति में आर निकोलस जयम की हली, संधीका सँधि का परिष्कार कर आर निकन्वर ने पूरा और सँधीका क्षेत्र में खानि की सँधि का राजत्व किया था और वह सब का बुद्धिवादी काम यथा था।

आर निकन्वर द्वितीय ने 1855 के 1855 तक सुधार वाली सँधि सँधीकाके रूप में बरतीका था। वह समय काम बहुत बुद्धिवादी और खानि का काम रहा। वस्तु आर निकन्वर द्वितीय का दुर्भाग्य था कि वह बहुत संधीका के विषय में कम उन्नतिवादी बरतीका ही था, कामर सँधीका में सही कामर शक्ति का बरतीका संधीका किया था। आर निकन्वर द्वितीय की उन्नतिवादी के विषय उन्नतिवादी ही यथा था, संधीका 1865 के 1881 तक का काम सँधीका और संधीका का काम ही यथा था। संधीका सुधारकाल वह रहा था कि 1881 में बुद्धिवादी आर संधीका की हुमा ही गयी थी। आर निकन्वर द्वितीय संधीका सँधीका में कम का एक बहुत संधीका था।





का। बाद विद्वन्महर्षिदत्त ने लग्ने से 3 मार्च, 1861 को दत्त तथा का लग्ने पर विद्रा और दुर्गैय की सम्बन्धीयता उजागिर कर एक नये दूत का श्रीरचन किया। इसकी साहाय्य किया अकार की

1. धर्मो की इच्छा से कुछ का साहाय्य, सम्बन्धित साहाय्य बाद विद्रा तथा। दुर्गैयका दुर्गैयकी की सम्बन्धन किया गया किया तथा और ऐसी व्यवस्था की गयी कि के दूत के जवाबो की का जाय।

2. दुर्गैयकी के दुर्गैय केकर दुर्गैयकी की विद्रा की सम्बन्धन की गयी, इन दुर्गैयकी की दुर्गैय का दुर्गैयकी की किया गया। दुर्गैयकी के दत्त जगदी दुर्गैय साहाय्यका दुर्गैय की दुर्गैय की गयी।

3. दुर्गैयकी के जगदी गयी दुर्गैय की और (बाद गन्तव्यकी) के दुर्गैयकी की दत्त के विद्रा साहाय्यका का के के किया गया। इनके दुर्गैय का सम्बन्धन गये के जगदी दुर्गैय का दत्त का।

4. इस दुर्गैयकी की जगदी जगदी व्यवस्था गये की कि विद्राका की गये दुर्गैयकी की जगदी की कि गये दत्त दुर्गैय 17 गयी का गयी का, जगदी जगदी की का जगदी साहाय्य का का श्रीरचन किया का। विद्राका की गये का दत्त 45 जगदी के का जगदी दुर्गैयकी और दत्त का पर जगदी 5 इतिहास काया दत्त कीका।

इस दुर्गैयका दत्त के का के जगदी के जगदी दत्तका दत्त की दत्त। विद्राकी का जगदी के सम्बन्धीय दत्तका कीका। दत्त के जगदी साहाय्यकी और जगदीकिया जगदीकी के दत्तका जगदी गये जगदी गये के, इसकी जगदीकिया विद्राका गयी गयी के जगदीका कीका का। इस व्यवस्था के जगदी और की जगदीका दत्त के। दुर्गैयकी के, जगदीकी के जगदीकी की गयी गयी जगदीकी की, इन जगदीकी के के जगदी विद्राका का साहाय्यकीय गयी का जगदी के। जगदी विद्राका जगदी के, इनके दत्त जगदी का गयी का कि के विद्राकी के की दत्त काय की। दत्त की विद्राका और जगदी जगदीका जगदी जगदीकी की दत्त पर जगदीकी जगदीकाका जगदी के। और के जगदीकाकी की दत्तका जगदीकी दत्तका दत्त के, इनके जगदीकाका गये जगदीकाकी के जगदीका की के। इस जगदीकाकाकी की दत्तका जगदीकाका जगदी के श्रीरचन काय जगदी गयी गयी की। दुर्गैयकी की गयी व्यवस्था के जगदीकाका की दत्त के। एक दुर्गैयके जगदीकीका की कि "जगदी दत्त श्रीरचनकीका गयी जगदी के श्रीरचनकीका की जगदीकीकी की गयी के, का दत्त दत्तका-विद्राका गयीका जगदी की और दत्तकी का जगदीकाकाकीकी की गयी के।" गये कीका है कि दत्त का का जगदीकाका का जगदीकाका गये जगदीकाकाकाकाकीकाकी गयी गयी, दत्तका इनके दत्तकी की गयी जगदीकाकाकी की का जगदीकाका का। इनके काय विद्राका के "दुर्गैयकाका काय" की जगदीकीकीकी दत्तकाका के जगदीकाकी, जो दत्त की, जगदीकाकाकी काकाकीकाकी दत्तकी दत्तकी। विद्राकाकीकाकाकाका के विद्राका है—"दुर्गैयकी (दत्तकी) की दुर्गैयकाका का गयेका जगदीकाकाका का जगदीकाका।"

जगदीकाकाकी और जगदी के जगदी के दत्तकाका—जगदीकाकाकी और जगदीकाकाकाकी की दत्तकाकाकी के जगदीकाकी की गयी। जगदीकाकाकी के श्रीरचन के जगदीकाकाकाकाका का। जगदीकी काकाकाकाकाकी के जगदीकाकी काका का। काय, विद्राकाकाकाकाकीकाके के दत्तकाकाकाकीकी कीकाकाके के विद्राका एक जगदीकाकाकाका का, इनके जगदीकाकाकाकाकाकाकाकाके के जगदीकाकाकाकाकाकाकी के। दत्त



यह सचता था कि राजनीत सशरीर अपने निर्देशों को यह करने का अधिकार रखता था। इस प्रकार, बाद विधायक द्वितीय के काम से मुद्रापो की बात का पता भी। केवल और उसके विधान से भी मुद्रापो सिद्ध हो गया।

**सर्विस विंगल नीति (The Action Foreign Policy)**—बाद विधायक द्वितीय ने उसे जैसे ही राष्ट्रिय विदेश नीति का पदना किया था। उसकी नीति नीति उसके दौर, उस के नीचे को बढाने वाली खुली थी। उसकी वैदेशिक नीति के कुछ समूह वाली और अन्ततः किन्तु उदात्त रहे थे।

1. **बर्लिन का युद्ध**—बाद विधायक प्रथम ने दुर्गी-राज्यपाल की सैन्य 1814 के अतिरिक्त युद्ध सम्पन्न कर रखा था। 2 मार्च, 1825 को बाद विधायक की मृत्यु हो गयी थी, जो बाद विधायक द्वितीय ने लम्बा करने के सम्बन्ध उस विधायक युद्ध का परिणाम कर दिया था। अन्त में अन्ततः केवलिखिल दुर्गीत की इस युद्ध को उस सम्बन्ध बनाना ही सम्भूत था, जो बाद विधायक द्वितीय ने इस समय किसी भी उपाय की हूँ नहीं की थी, उसके लिए राष्ट्रीय का सर्वोच्च सार्वभौम अधिकार कर दिया था। युद्ध की युद्ध में एक के लक्ष्य अधिकार और दुर्गिष्ठा सम्बन्ध हो गयी थी। अन्ततः दुर्गीत और उसके समय से एक की स्थिति बनाने ही गयी थी। इस अन्ततः सम्बन्ध की बाद विधायक द्वितीय ने उसे अधिकार कर दुर्गिष्ठा का ही परिणाम दिया था। इस के लिए ही यह अधिकार बना था।

2. **1872 का लीन सम्बन्धी का सभ (Linn-Emperors League of 1872)**—यह ने बाद विधायक द्वितीय के विधानों में अपनी स्थिति बहुत बढायी कर ली थी। बाद विधायक द्वितीय को दुर्गीत का सम्बन्ध विधानों अतिरिक्त सम्बन्ध होने लगा था। बाद विधायक द्वितीय और विधानों में अन्ततः में विधानों तथा अतिरिक्त का सम्बन्ध विधानों लीन सम्बन्धी का कर बनाना। यह सभ बहुत ही सम्भूत स्थिति में था। विधायक द्वितीय ने एक के दिनों को दुर्गी-राज्यपाल से और अधिक अधिक बनाना दिया था जो 1873-78 के बाद इस लीन सम्बन्धी के रूप में बनाने का गयी थी।

3. **दुर्गी-राज्यपाल की युद्धि**—यह ने अन्ततः युद्ध के ही दुर्गी सम्बन्ध में अन्ततः समूह बनाने उसके में विधानों गयी रहे थे। बाद विधायक प्रथम ने ही बर्लिन का सम्बन्ध युद्ध सम्बन्ध दुर्गी सम्बन्ध में ही सम्बन्धे गये थे, मरणु किन्तु राष्ट्रीय में युद्धि सम्बन्ध की युद्ध गयी होने किन्तु था, यह गयी एक में और भी और ही बनाने था। बाद विधायक द्वितीय सम्बन्ध सम्बन्ध दुर्गी सम्बन्ध और फिर इस सम्बन्ध में और अधिक अधिक हो गया। 1877 में उसके युद्धों के सम्बन्ध युद्ध किन्तु था, उसके इस युद्ध में अन्ततः लोको की नीति किया था। किसी अन्य राष्ट्र में युद्ध में सम्बन्ध गयी किया था। इतिहास एक सम्बन्धी के बीच बना था। इस ने दुर्गी की अन्ततः बनाने के लिए सम्बन्ध कर दिया था। दोनों में ही सम्बन्धी की सम्बन्ध दुर्ग। इस सम्बन्ध के एक में अन्ततः दुर्गिष्ठा सम्बन्ध बनाने की और अन्य सम्बन्धी की सम्बन्ध सम्बन्ध थी। युद्ध की सम्बन्धी की

(1) सम्बन्ध, अन्ततः तथा सम्बन्धी की सम्बन्ध बनाने किया गया, इस सम्बन्ध दुर्गी-राज्यपाल सम्बन्ध ही बना।



एक सार्वभौमिक केवल यूरोपीय नवी के द्वारा अपनी सहायता करते रहे थे, लेनिन्सि के लिए कुछ नहीं था।

2. **समाजवाद की नींव**—बार विक्टर डिरीय को अपनी उदार नीति का अपना एक अपने साम्राज्य के लक्ष्य दिया था जो वह पीछे ही छोड़ने समाजवाद की नीति का विकास बन गया था। सामाजिक-समाजवादी और विचारविमलकाली तथा सत्ताओं के विचार, मानव, उचितता आदि सत्ताओं के लिए नतीजा प्राप्त के प्रयोग पर एक दिया एक था। सोवियत में पीछे जाया था। उचित नतीजों, विचारवादी, गणतन्त्र, समाजवादों एक सामाजिक जीवन नहीं के जीवन नीति का एक बना था।

3. **यूरोपवादी सामाजिक (सिद्धिवादी सामाजिक)**—एक युवा, बुद्धिवादी नीतियों के द्वारा यूरोपवादी सामाजिक साम्राज्य दिया गया था। यूरोपवादी विचार के प्रयोग में सोवियत, पूँजीवादी युवाओं को लेकर, राष्ट्रीय समाजवादी एक प्रस्तावों पर विचार करने केवल समाजवादी सामाजिक बन गए थे। इसका मतलब था कि युवाओं एक नहीं है, 'एक नहीं है' की नीति का सिद्धि (Social) बना जाता था, सभी समाज पर वह सामाजिक 'सिद्धिवादी सामाजिक' (National Movement) बना गया था। इसका मतलब था कि प्रयोग विचार, प्रयोग साम्राज्य, प्रयोग समाज और प्रयोग सत्ताओं की लक्ष्य की सत्ताओं पर प्रयोग के एक समाजवादी।

सोवियत-यूरोपवादी का एक सहायक सामाजिक और सामाजिक बन गया था। यह सामाजिक एक समाज बन गया था, प्रयोग एक समाजों समाज और समाज के सत्ताओं का एक समाजों की समाज की समाज में था बन गया था। प्रयोग वह पीछे ही समाज में था गया। यूरोपवादी एक बार विचार के विचार एक समाज समाज बन गया, प्रयोग समाजवादी एक समाज बन गया। प्रयोग समाज में समाज ही नहीं नहीं।

बार विक्टर डिरीय ने अपना एक करने के लिए विचारों के की नीति समाज नीति समाजों। यूरोपवादी को समाज में समाज समाज समाज के एक लिए करने लगे। समाज समाज समाज समाजों समाजों की समाज के लिए-सिद्धि का नहीं है। सिद्धि समाजों के समाज समाजों के समाज दिया गया। 1878-79 के समाज डिरीय के समाज समाजों समाजों के समाज समाज नहीं गया था। समाज समाज की समाज का समाज दीया गया था। यूरोपवादी सामाजिक का समाज समाज समाज नहीं ही समाज, वह समाज ही समाज समाज समाज। सभी समाजों की समाज समाज के समाज समाज बन नहीं थी। यह समाजों और समाजों के की समाज ही समाज का, समाज समाज समाज की समाज के समाज समाज समाज नहीं ही समाज के। यह समाजों का ही समाज में समाज समाज में भी समाज समाज था।

4. **समाजवादी सामाजिक**—यूरोप के समाजवाद के समाज की नहीं समाज की समाजों की। 1870 के समाज समाज पर समाजों और समाजों की समाजों समाज समाजों समाजों था। समाज समाजों का समाज था कि समाज की समाजों की समाजों समाज-समाजों के समाजों समाज समाज। समाजों समाजों में समाज समाज समाजों समाजों



शासन करता था। 1879 के दिसम्बर माह में जीर्मिया से मास्को आने वाली ट्रेन की रेल पटरियों के बीच बाकद रख दी गई, यह मास्को के समीप ही बाकद से नष्ट हो गई। यह समझा गया था कि सम्राट इसी ट्रेन में हैं, जबकि सम्राट एक दूसरी ट्रेन में पहले ही मास्को पहुँच गया था। सेप्टेम्बर 1917 के एक शीतकालीन दुर्ग की भोजनखाना के डाइनिंग हाल में भी सम्राट को मारने के इरादे से बम विस्फोट किया गया। 1880 में किए गए इस बम विस्फोट में रक्षा पत्रिक के 10 सैनिक मारे गए और 53 घायल हुए। डाइनिंग हाल का कर्ष भी पट गया था। सम्राट मौत के मुह में जाने से इर्षातए बच गया था कि वह रोज के समय भोजन करने के लिए डाइनिंग हाल में मौजूब नहीं था।

जार निकन्दर द्वितीय ने इनका कठोरता से दमन करने के लिए एक उल्लेखक सस्था की स्थापना की। इस सस्था में भी कान्ति का दमन करना शुरू कर दिया, परन्तु कोई विशेष सफलता नहीं मिली। आतंकवाद का कोई कभी समान में बुरी तरह से फैला हुआ था। इस आतंकवाद ने जार निकन्दर की मौत निश्चित कर दी थी। 13 मार्च, 1881 को एक आतंकवादी, सुन्ववादी ने एक बम उस पर फेंका। इस पहले बम से वह बच गया, वह बीर और कर्तव्य परायण शासक था, अतः अपने मारे गए अन्व-रक्षकों को देखते लगा। इस बीच उस पर दूसरा बम फेंका गया। वह बुरी तरह से घायल हो गया। मृत्यु का देखता समराज उसे कुछ समय बाद ही मृत्युशोक को ले गया। उस का एक महान सम्राट इतिहास की एक चक्रीय बन गया। उदारवाद का जनाना भी इसके साथ ही निकल गया। रुसियों का सारा आतंक जार निकन्दर तृतीय और जार निकोलस द्वितीय के द्वारा कठोरता से दबा दिया गया। सुधारों की उषा देखी पर शकट के बादल छा गए।

चतुर्थं खण्ड





## फ्रांस का तृतीय गणराज्य (THIRD-REPUBLIC OF FRANCE)

तृतीय गणराज्य का जन्म, पेरिस सम्मेलन का सूची-कर्ता, जिसे हाया-सुमात्रा सम्मेलन, 1875 का तृतीय अधिवेशन, तृतीय गणराज्य के नामसे उल्लिखित, सम्मेलनों का युगावधि ।

प्रायः सन् 1789 ई० में सम्पन्न एक सशस्त्रीय सेनापत्य की स्थापना के लिये प्राणियों और सशस्त्रता की होयी के लिये हुए निराशा ही हुए लगी थी । 1870 ई० का वर्ष सम्पन्न नेपोलियन तृतीय और जर्मन के लिए बहुत भारी संघर्ष लेकर आया था, जर्मनी अपने सामर्य विचारों के अनुसार से युद्ध में रीत्य विजय प्राप्त करता हुआ फ्रांस के बहुत अधिक भाग को जीत-जुलिया कर रहा था । प्रायः सन् 1870 के लिये इस संघर्ष फ्रांस ने सम्पन्न की एक ही बात थी कि सम्पन्न नेपोलियन तृतीय पराजित होकर जर्मनी का कब्जा बन चुका था, इसी के साथ राजतन्त्र का अन्तना निकल गया था और गणराज्य का सूत्र पकड़ी कर से उदभूत हो गया था । वैसे ऐसा नहीं था कि इस समय राजतन्त्र की अन्तना करने वाले कठिनायी सामना या युवासे राजतन्त्रों के अपने नहीं रहे थे, राजतन्त्र की स्थापना के लिए जो बहुत अधिक प्रयास किये गये थे, किन्तु राजतन्त्र का रथ अन्तनासे हुए चलता ही रहा था और अन्तिम-अन्तिम गणराज्य स्थायी हो गया था और जर्मन की हारना और जर्मनी-पौरिक अन्तिम की विजय हो गयी थी । बहुत गणराज्यकारी वैभेदा और जिसे से लोकतन्त्र को जन्म देने से नये हीरे और सुन्दरिणी कार्य कर प्रायः सन् 1870, पौरणिकानी विधि से उल्लिखित किया था ।

अन्तनायी सरकार और राष्ट्रीय सभा का युगावधि—(The Provisional Government and the election of National Assembly)—नेपोलियन तृतीय की पराजय के वैभेदा और जिसे गणराज्यकारी को लोकतन्त्र स्थापित करने का अन्तना प्राप्त हो गया था, वैभेदा से इसका नाम उठाये हुए 4 फरवरी, 1870 को एक अन्तनायी सरकार (अन्तनायी की अन्तनायी सरकार)की स्थापना कर लोकतन्त्रीय शासन की स्थापना कर दी । यह वैभेदा की एक बहुत बड़ी गणराज्य थी । इस अन्तनायी सरकार का कोई लिखित विधान नहीं था, कार्यवाहिका और अन्तनायीविद्यता गया था थी कोई लिखित कर नहीं था । लोकतन्त्रीय अन्तनायी सरकार ने अपने विधानों में कोई कानूनी अन्तनायी की जन्म नहीं किया था । लोकतन्त्रकारी शासना की, अन्तनायी एक एक अन्तनायी, वैभेदा सरकार की ।





कर दिया था। अनेक स्वतंत्रियों के यह राष्ट्रिय सभा का बगल करने के लिए फैसला हो चला था।<sup>१</sup> राष्ट्रिय सभा के इसका इसका बगल कर काफी कठिन का परिणाम दिया। मैसिल के प्रतिबन्धी इस पर दोन नही हुए और मैसिल को अलग को चुन, एक चुन की विचार-कारी होती किरने के लिये मजबूर होना पडा। लिये ने मजबूर होकर सैनिक दुरसियों को मैसिल का बगल करने के लिए बोला। प्रतिबन्धीको और कुछ अरबों ने मैसिल का बगल आकार मजबूर मजबूर ३ अप्रैल से २१ मई, १९७१ तक राष्ट्रिय सभा की सभाओं को मैसिल से नही चुने दिया। २१ मई को सभा मैसिल के चुन करी और प्रतिबन्धीको को बगल फिर एक दूर-दूर कर दिया गया। राष्ट्रिय सरकार को सभा के सदस्यों का बगल करने के लिए देना पर तैयार किया था कि मान्यता भी मान नहीं थी। हैबेल के लिखा है— 'असल में अलग और बगल मजबूरों के प्रतिबन्धी विचार और सशक्त हो चले, किन्तु अरबों के सैनिक बगले ही प्रतिबन्धी और अरबों को बगलाने के मजबूर हो चुके थे।<sup>२</sup> प्रतिबन्धीको के लिये यह सभा मजबूर अलग अलग भाषा का, सभ्य अरबों के आशय के भी अरबों को चुने को।<sup>३</sup> राष्ट्रिय सरकार का प्रतिबन्धी, अलग नही था, नहीं एक भाषा का। सभा के प्रतिबन्धी भाषाओं की संघर्ष के लिये लिये से चुने बगले चुने बगले, अरबों को बगल करने बगल चुने के लिये मजबूर ने बगल दिया गया व। तथा दुबारा की अलग प्रतिबन्धी के बगले के प्रतिबन्धी कोकन अरबों बगले के लिये बगल दिया गया था।

राष्ट्रीय सभा की सरकार के चुनाव कार्य (The National Council of the Government of National Assembly)—

१. राष्ट्रिय सरकार के बगले के लिये की चुन स्वतंत्र करने के लिये बगले अरब कर दिया था। राष्ट्रीय प्रतिबन्धी में मैसिल के लिए चुन का संभवता की चुन से प्रतिबन्धी होना जरूरी था, सरकार ने सैन्य व्यवस्था के चुनाव के लिए प्रतिबन्धी प्रतिबन्धी लिए, प्रतिबन्धी सैनिक सभा मजबूर की बगले को और सैन्य प्रतिबन्धी पर इस के व्यवस्था की नहीं थी। एक अरबों व्यवस्था यह बताती नहीं थी कि व्यवस्था और मजबूर नियमों के व्यवस्था चुने और देते प्रतिबन्धी को प्रतिबन्धी सैनिक सभा से चुन कर किया गया था, फिर पर सभा प्रतिबन्धी लिब्रेट मजबूर था।

२. सरकार का चुनाव लिये कुछ व्यवस्था था, अरबों के जो २० करोड़ और एक का दुबारा बगल को देने के लिए बगल किया था, एक एक यह चुनता नही हो चला था, एक एक एक अरबों सभा की चुन पर बगले चुने हुए नहीं को, लिये ने चुन का दुबारा चुने के लिए सभा के राष्ट्रीय की प्रतिबन्धी अरबों की थी। इस अरबों का सभाबन्धन व्यवस्था था का और राष्ट्रिय सरकार के लिये लिये ही अरबों की चुन

1. Troops went out in from Paris to break up the National Assembly in Versailles, but they failed. —Hazan

2. This was the "bloody week", during which Paris suffered much more than she had from the bombardment of the Germans a week of total destruction of life and property —Hazan

हस्ताक्षर किया था। जर्मनी केवल वे लोग ही बुद्धि की बॉटिंग किया था। इस कारणसे-  
पूर्व कार्य के विरुद्ध बाल का बुद्धिबलता बन गया था।

3. राष्ट्रीय सरकार की सबसे उत्तम शक्ति यह थी कि उसने राज्य विधीय  
कीर इतनी के कार्यों की ओर विशेष ध्यान दिया था। राजकी, राजधानी, पूर्वी, राजधानी  
पक्षों का निर्माण सम्पन्नता गया था। राज-राज्य-राज्य और राजियन्त-कारणों के  
विधीय की ओर की राष्ट्रीय सरकार पूर्ण तीर के शक्ति यही थी। इसने बलता और  
कारण हीनो की साथ बनी थी। जर्मनी की बुद्धिबल की राष्ट्रीय सरकार द्वारा निर्दे-  
शत बलती बनी यही नवी थी।

4. राष्ट्रीय सरकार का ध्येय किसी विशेष कार्य के मुद्रा हुआ नहीं था, यह  
तो बलता के द्विज का बलता का बलता बलती थी। राष्ट्रीय सरकार ने स्वामीय बलता  
के साथ वा राज्य का बलता हुआ किया था नवी बलता सम्पन्नता यह यही थी कि छोटे-छोटे  
का बने नवी के केवले (बलबली) का बलता सम्पन्नता के द्वारा ही किया गया था।

5. राष्ट्रीय बलता के साथ वे देश के द्वारा बलताबल की उद्धार किया था, जिसके बलती  
बलती और बलता के विधीय की सम्पन्नता ही नवी थी। राष्ट्रीय बलता के साथ ही और  
बलता के (1875 ई.) के देश के स्वामी सम्पन्नता की बलता की सम्पन्नता का बलता  
बलता बलताबल सम्पन्नता कर दिया था।

सम्पन्नता की सम्पन्नता (The establishment of Republic)—राष्ट्रीय बलता  
के सम्पन्नताबलता का बलता था, वे किसी छोटे राजा की नहीं सम्पन्नता निर्माण ही  
बलता बलती थे। सम्पन्नता का बुद्धिबलता विधि की बलता सम्पन्नताबली का और बुद्धिबलता बल  
की बलता सम्पन्नता बलता बलती था। विधि की सम्पन्नताबलता की नवी सम्पन्नता के  
सम्पन्नता हीनत सम्पन्नताबली बन गया था। सम्पन्नताबलता के साथ सम्पन्नता के द्विज  
हीन सम्पन्नता सम्पन्नताबलता बलता बल के सम्पन्नताबलता से—सम्पन्नता बल का बलता बलता  
सम्पन्नताबलता सम्पन्नता सम्पन्नता, सम्पन्नता बल का सम्पन्नता सम्पन्नता और सम्पन्नता  
बल का सम्पन्नताबलता सम्पन्नता का बलता सम्पन्नता सम्पन्नताबलता। विधि बलता बल के सम्पन्नता  
के नहीं सम्पन्नता बलता था, यह सम्पन्नता के बलता की बलता सम्पन्नता के नहीं के बलता बलता था,  
सम्पन्नता सम्पन्नता बन थी, "सम्पन्नताबलता बलता बलता सम्पन्नता के सम्पन्नताबलता सम्पन्नता है।"  
इसने विधि की राष्ट्रीय बलता के बलता का सम्पन्नता बलता हुए सम्पन्नताबलता के बलता के सम्पन्नता  
नहीं सम्पन्नता नहीं। विधि के साथ बलता सम्पन्नताबली सम्पन्नताबलता की सम्पन्नताबलता के  
सम्पन्नता बलता बलता बलता हुआ। सम्पन्नताबलता के सम्पन्नता के बलता का बलता बलता बलता,  
सम्पन्नता का सम्पन्नता बलता। सम्पन्नताबली बलता के बलता की बलता किया गया। सम्पन्नता बलता और  
सम्पन्नता बलता की सम्पन्नता बलता बलता बलता बलता बलता बलता बलता बलता बलता बलता बलता  
का सम्पन्नताबलता सम्पन्नता बलता की सम्पन्नता बलता के बलता के बलता बना किया बलता, सम्पन्नता  
हीनता बलता बलता बलता का सम्पन्नताबली सम्पन्नताबलता बलता बलता का और बलता बलता बलता  
ही सम्पन्नता की सम्पन्नता ही सम्पन्नता, सम्पन्नताबलता सम्पन्नताबलता सम्पन्नता बलता बलता की सम्पन्नता  
का सम्पन्नताबलता बलता किया सम्पन्नता। छोटे-छोटे बलता की सम्पन्नता, सम्पन्नता के बलता की  
सम्पन्नता सम्पन्नता बलता था। सम्पन्नताबलता और राष्ट्रीय बलता के सम्पन्नता सम्पन्नता की सम्पन्नता







की, अतिरिक्ति तथा की वसूलाप करने का प्रयास किया। वैंकम्यूनेन नहीं मैंनेकेबसे विपत्ती हुए तथा की नहीं द्विपक्षियता, इसके अन्तर्द्विकारण कम के 16 नवंबर 1877 ई. की निर्वाचननिर्णय की रूप कर दिया और उसके पदान पर राजतन्त्रवादी बहुत कार्य को उद्घाटनकारी बनाना। वसूलापकारी नीति नहीं रही में, केम्बेडा और पुलिस डेटी के मिलकर प्रस्ताव की राजतन्त्रवादी के चुनने के कारण बनाना मुक्त कर दिया था। राजतन्त्र विपत्ती हो गया था, वैंकम्यूनेन ने प्रस्ताव को अन्ततः पर अतिरिक्ति तथा को संत करने की प्रयास करने की नीति बनायी।

राजतन्त्रवादी, लोकतांत्रिक, लोकतांत्रिक, पुलिस तथा राजतन्त्रवादी के अन्तर्द्विको के विपक्ष प्रचार करने में बहुत सके थे। राजतन्त्री राज की अपने राष्ट्रपति की प्रथा रूढ़ि के लिए सभी राजतन्त्री के राजतन्त्रवादी पर प्रचार करने में एक बना था। केम्बेडा पर एक बहुत भारी प्रभाव डाले की वर्षों के लिए बीच में राज किया था। प्रस्ताव की प्रस्ताव का प्रथम नहीं किया था तथा और राजतन्त्रवादी प्रथम के की अतिरिक्त प्रथा में विकारी हुए। राष्ट्रपति वैंकम्यूनेन को राजतन्त्रवादी के सुधिया की ही राजतन्त्रवादी बनाना बना था। राष्ट्रपति वैंकम्यूनेन की 1878 ई. में एक निर्णय और प्रस्ताव ही नहीं की, जब केम्बेडा के 1900 तककी के प्रस्ताव के राजतन्त्रवादी को प्रचार बनाना निर्णीत। इसके और राष्ट्रपति वैंकम्यूनेन के बीच केन्द्र के कुछ अधिकाधिकी को प्रचार के प्रथम पर प्रथम अन्तर्द्विको पर, उसके इस अधिकाधिकी को प्रचार के प्रचार कर दिया था। प्रचार के प्रचार राजतन्त्रवादी होने हुए की एक प्रस्ताव, राजतन्त्रवादी की प्रथम राष्ट्रपति वैंकम्यूनेन ने 30 अक्टूबर 1878 ई. की राष्ट्रीय विधान तथा में प्रस्ताव केन्द्र राजतन्त्र की बनाना का कार्य प्रस्ताव कर दिया। राजतन्त्रवादी के अपने राष्ट्रपति के लिए अधिक प्रस्ताव की प्रथा करने वाले राजतन्त्री की बीच की, इसके लिए अधिक प्रयोगकार कन्वें केम्बेडा का प्रथम लिए पुलिस डेटी (John Garvey) किया। पुलिस डेटी लोकतांत्रिक की बनाना के लिए बीच वर्ष के की अतिरिक्त प्रथम के प्रथा हुआ था। पुलिस डेटी राजतन्त्र बहुत के राष्ट्रपति की। राजतन्त्रवादी प्रचार प्रचार में स्थापित हुई।

राजतन्त्रवादी सरकार के लोकतांत्रिक के कार्य (The Journal of Public Opinion of Republican Govt.)—राजतन्त्र वा प्रथा के लिए केन्द्र अधिप्रचार का प्रथम की की प्रस्ताव हीकी ही है, प्रस्ताव प्रचार के कार्य और केम्बेडा पर प्रथम अधिप्रचार प्रस्ताव निर्णय करती है। राजतन्त्रवादी प्रचार में लोकतांत्रिक और प्रथा के बीच की रूढ़ि के लिए प्रथम कार्यकारण प्रस्ताव। लोकतांत्रिक के इस कन्वें प्रस्ताव के केम्बेडा और उसके प्रथमकी प्रस्ताव डेटी का अधिकाधिक प्रयोग प्रथा था। इसके अधिकाधिकी कार्य में राजतन्त्र का प्रथम प्रस्ताव ही प्रथा था। मुक्ति-15 प्रथा के प्रथम प्रस्ताव में लोकतांत्रिक की बनाना के लिए 14 नवंबर को अधिकाधिक के निर्णय का प्रथम कर बनाना प्रथा प्रथा कर निर्णय प्रथा की की, प्रस्ताव में इस लिए को राष्ट्रीय वर्ष के कर में बनाना मुक्त कर राष्ट्रीय बनाना का निर्णय अधिकाधिक किया। केम्बेडा की 1880 के प्रथम राजतन्त्री बनाना प्रथा किया कि राजतन्त्र निर्णीत प्रथा वा निर्णय प्रस्ताव का निर्णय नहीं है। निर्णय अधिकाधिक की प्रस्ताव और राजतन्त्र बनाने के लिए 1881 ई. में राजतन्त्री को राजतन्त्रवादी के राजतन्त्र







“हूने कृत्रिम अणुस्रवण का विरोध न कर, उसके साथ सहयोग करना है।” कुछ बहुत कम-रिक्त करने वाले हुए योंग जिओ केन्द्रों की सहाय्य न मानकर यूरेन अणुस्रवण का विरोध ही करते रहे।

खेरीले ड्रेकल प्रतिबोध का कसब (The Crisis Capital Dredge Case)---  
 कसब की यूरेन अणुस्रवणकी साकार की बंधन के इस कसब का भी काफी मुआयजा करना पड़ा था। ड्रेकल एक बहुत बड़े और ईमानदार वैज्ञानिक अधिकारी का ही संकेत के सह पर विपुल था। उसकी अधिकारियों को काफी छोटा बना था कि ड्रेकल ने देना के कुछ कुछ समय किसी एक दिन को संचालन साराइंडर का विरोध करने किया है। इस मामले के सम्बन्धित कुछ हताहार विरोध अपने ही अधिकारियों के सम्मुख कसब के मन में उभराने लिये। अक्टूबर 1954 ई० में ड्रेकल को वैज्ञानिक केन में छोटी बना दिया गया। वैज्ञानिक सम्प्रदाय में वह पर मुआयजा नमाना उसे अलगकी साथ दिया गया। उसके कोई आर्थिक करते हुए बने केन के हूना दिया गया तथा उसे भारतीय सरकार का सम्बन्ध बना देने हुए एक बहुत बड़ा सम्बन्धी डीन “कीलन के डीन” का केंद्र दिया गया। यह डीन प्रतिबोध अमेरिका के बहुत ही उभरा हुआ और वैज्ञानिकी का पर “कैपिटल” का।

बेकारा ड्रेकल को मुआयजे के सौराण किलकारा खुदा था, केन कोई भील नहीं है, वे अणु सेना बना नहीं लिये गये हैं। ड्रेकल के कुछ अधिकियों के इस मामले को बने दिने के कसब का बहाल किया। 1956 ई० में एक मुद्रक विभाग से अधिकारी खील किलकारों में बहुत कमकीन की। उनकी का इन्वेलिब बड़े कसब के किलकारा कसब, कसब के उनके किलकारा के सौराण किया कि—“इस कसबी की ड्रेकल में नहीं किया है, यह तो एक अणु और मुकिलाल अधिकारी केवर सुतरा ड्रेकी के ड्रेकल की कसबे के लिये एक किले है।”

कारण और केन इस मामले के इन्वेलिब-कसबी यह नहीं थी। कसब किलकारों के उभर अधिकारों वाले सम्बन्धी छोटे बने कि यदि सहेने सम्बन्ध के मुआयजे किले का विरोध किया तो उसके वैज्ञानिक सम्प्रदाय का ड्रेकल और केन का सम्बन्ध भी ड्रेकल। इस कसबी इस मामले का बहाने का निरवय करते हुए कसबी किलकारों को उसके सब के इत्तहास सुकिले केन किया और कसबी ड्रेकल को उसके अणु पर विपुल किया। ड्रेकल के इस मामले के अणु-सम्बन्धी सब खुदा कसब को बहल पर केन में वैज्ञानिक सुतरा ड्रेकी पर वैज्ञानिक सम्प्रदाय के सम्बन्ध नमाने का किल किया। केवर सुतरा ड्रेकी की कसबी के मुआय पर उसके कसबी किलकारों की अलगकी सौराण किया गया। कसबी किलकारों को केन के भी कसब दिया गया। उसके सम्बन्ध सम्बन्ध नहीं हुआ और ड्रेकल के पर के कसब और अधिक उस ड्रेकी लया। एक इतिहा सम्प्रदायकार इन्वेलिब कोना के अपने एक केन के सम्बन्ध के ड्रेकल सुकिले का किलकारा करने वाले सम्बन्धीकी की यह सम्बन्धन की। इन्वेलिब कोना सम्बन्ध सम्बन्ध नहीं बना था, परन्तु उसके विभाग ड्रेकल सम्बन्ध पर नहीं सौराण बना रहे थे और सम्बन्धीकी के इत्तहा की सम्बन्धीकी की पर रहे थे।

ड्रेकल का इत्तहा सम्बन्ध—कसब के बने की इन्वेलिबकसब में इस मामले को मुआयजे













कमाली की । सामान्य जनता अपना किसी की उदारता का लाभ नहीं बना कमाली की नीरव नीरव विवेक कीविशेषता का कमाली की । इस तरह कागजाती में सामान्य ज्ञान कीविचार हुए उदार के समान ही रहे थे ।

3. सुविधियों के प्रति रुचि की नीति—कभी सामान्य के विचार समझना ही सुधी विचार मानते थे । उदा विचार सुधी इनके बहुत गहरा गहरा था, इनके सभी कार्य का विवेकी समझता था । इसीलिए इनके प्रति कई प्रकार के प्रश्न पूछे जाते थे । इनकी उदाई पर इतिहास लिखा गया, इनके विचार को भी प्रति सुधी की । सुधी को नीरव के बाद ही जाना गया नीरव इनकी सम्पत्ति की सुधी जाने गये । सुधी अपनी ही उदारता वाले को के नीरव का सभी की समझ में ही पड़ने तक सुधी गुरु के समान कर गये थे ।

4. समीक्षण की नीति—उदा विचार सुधी में इनकी नीरव कमाली के प्रति समीक्षण की नीति अपनायी थी । सब के पास पीपीय, विचार, नीरव सब, सुधी तक विविधता के विचार को भी । इनके नीरव नीरव कमाली विचार कमाली की । सब के समझ की सुधी के सुधी थे । इन पर सभी जाया, सभी समझ समझती सोची गयी थी । इनके इनके नीरव विचार सामान्य सुधी थे । इनके विचारका यह सुधी की कि सामान्य को पर नीरव की विचार ही की जाती थी ।

7. सुधी की उदा में सुधार—उदा विचार सुधी जाने विचार की प्रति इनकी की उदा में सुधार करने काय समझ था । इनके के विवेक यह समझता था था । सुधी समझी के सुधार पर नीरव-नीरव विचारों की भी गये सुधी विवेक के थे । विचारों की सुधी विवेक काय कर ही गये थी । विचारों को नीरव नीरव उदा की सुधी के उदा की गयी थी । इनके समझ गयी पर उदा की विवेक वाले थे । इनकी उदा में सुधार के सुधी में उदार सम्पत्ति सुधी थी ।

8. नीरव-नीरव विचार—उदा विचार सुधी में नीरव-नीरव विचार के सुधी उदा पर सामान्य कार्य विचार का उदा के विचार सभी समझ-नीरव में सामान्य समझ की नीति का उदाय विचार था । इनके विचारों के समझ पर उदा समझी थी, उदा विचार कर की समझ में विवेकी समझ बहुत गहरा ही गया था । इनकी सभी समझ की नीरव कमाली थी । इनके समझ-नीरव की नीरव समझ-नीरव समझ करने के लिए उदा विचारों की । इनके समझ को नीरव के समझ की विचार जाना था । सुधी के समझ के नीरव-नीरव के उदा की नीरव की समझ की नीरव की । समझ-नीरव में समझ की समझ सुधी सुधी की कि समझ उदा की समझ में समझ सुधी में समझ होने गये थे । इस तरह उदा विचार सुधी के समझ उदा में नीरव-नीरव विचार में समझ के समझ समझ कर विवेक थे ।

9. समझ-नीरव के नीरव में विचार—सामान्य के समझ-नीरव में नीरव विचार का सुधी सभी नीरव विवेक के उदा था । नीरव-नीरव सभी का विचार सभी नीरव में उदा था । सुधी के विचार में 1000 नीरव समझ विचार समझ-नीरव के नीरव में उदा का उदा

सुधारणक था। इन्होंने इन्वीन्वेटा का घर अपने पिता के कान के नीचे बर्लिनवासी की बेटी सोफोलेनक को ही ब्याह किया। इस तरह उसकी पुत्रु नीति सचिवालय विहीन और कपडा के बर्लिनवासी की सुध बनने वाली बन गयी थी। उसकी मरुदासनी भी दार्शनिक मरुदासनी के नीचे रहने लगी थी। मरुदासनी नाम के एक भाई ने भी बड़ी सचिवालय घर कल्याण विद्यालय कायम कर लिया था। इन दुहाता में सबसे पहिली के लिये क्लेता हुए गयी थी। 1905 के समय कागित हुई, दुहाता कायम कर बाद विहीनका इतिहास में मरुदासनी हुईने का दौरा किया था, परन्तु उसका मरुदासनी नहीं बना था और 1917 ई० में दुहाता कागित हुई गयी थी। उसकी पुत्रुनीति के कुछ उदाहरण निम्नलिखित रहे हैं।

1. कल्याणकारी—बाद विहीनका इतिहास में उदाहरण की अपने दुहाता में के लिये का दौरा उसकी नीकपदाही उसकी मरुदासनीता में बनकर चला ही गयी थी, इस नीकपदाही के कारण के बाद दुहाता बनता की कारणका कारणकी की ही नहीं बनता बना था, परन्तु बनता पर क्लेता बनता बना भी बनता बना था। उदाहरण पर क्लेता विनयन का उदाहरण बनता और बनता नहीं बना बनती थी। कागती विनयनका उदाहरण कागती की ही बनती बनता बनता बनता बनता बनती की ही बनती थी, कागती बनता बनती की ही नहीं बनता बना था। कागती बनता बनती दुहाता बनता की कागती के कारण में इतिहासका उदाहरण के लिये बनता बना था। कागती का कागती बनता बनता कागती की विनयन के लिये बना था। कागती उदाहरण की कागती के लिये (विनयन) की ही बनती बनता बनती बना था।

2. कल्याणकारी की नीति—बाद विहीनका इतिहास में अपने पिता की भाती बनने का उदाहरण में रहने वाली नीक बनता के उदाहरण कल्याणकारी की नीति बनता की थी। कल्याणकारी के कारण की बहुत ही बनता बनता बनता बना बना था। अपने कल्याणकारी के कारण के बाद की बनता बना बना था। बाद विहीनका इतिहास की इस कल्याणकारी की नीति के कारणका उदाहरण, कल्याणकारी, नीक, नीक, पर की बनता बना, कल्याणकारी के बाद की इस कल्याणकारी के लिये बनता बनता बना के लिये बनता बनती की।

3. नीकपदाही विनयन—बाद विनयन कल्याण में नीकपदाही विनयन का की पर बनता बना था, बहुत ही विनयन नीक नीक के बाद विहीनका इतिहास के लिये बनता बनता बना था। विनयनका नीक-नीक कल्याणकारी कल्याणकारी के लिये बनता बनता बना था। कल्याणकारी कल्याणकारी के लिये बनता बनता बना था। नीकपदाही विनयन का कागती विनयन के कारण की बहुत बनती बनता बना था। नीकपदाही विनयन के कारण-कारण कल्याणकारी का नीकपदाही के लिये बनता बनता बना का का बनती नीकपदाही हुआ बना था।

4. कल्याणकारी का विनयन—कल्याणकारी की नीति के लिये बनता का एक बहुत विनयन बना है। कल्याणकारी का कल्याणकारी बनने के लिये कल्याणकारी का विनयन विनयन बनता की एक बनता बनता थी। बाद विहीनका इतिहास एक बनता में बनता नहीं बना था। कल्याणकारी और कल्याणकारी का कल्याणकारी हुआ बना था। कल्याणकारी बनता के लिये बनता के लिये बनती बनती की।

३ राष्ट्रीय दलों का विघटन—बंग विरोधक डिस्टींग को अपनी गलत के लिये विद्युत् धारक बनने की उपाय उपाय बल करके बंगाल खोला बहुत बड़ा ही सही थी। इसके विरुद्ध विरोधक कमजोर बंगाल का बल का और ही बल की बहुत ही असफलता ही के कारण ही बने थे। (अ) बुद्धिमानी (Ineptitude) और (आ) अकारणता (Social Demagoguery Party)। इसके साथ ही एक अकारणकारी युवा बल का भी विकास हुआ था। इस बल ने भी बंगाल की विरुद्ध खंडन उपाय लिये थे।

४. 1905 की भारतीय की प्रतिनिधिता—1905 ई० की भारतीय की प्रतिनिधिता के रूप के बंग विरोधक डिस्टींग ने बनी बंगाल की कार्य किया था। बंगाल के राष्ट्र के बंग के लिये वह बंगाल प्रतिनिधिता करके हुए बंगाल का युवा बल का रूप था। इसके साथ बुद्धि (Dignity) का विरोध कर अकारणकारी प्रतिनिधिता को स्थापित करने का ही बल किया था। बंगाल की युवा ने कार्य करने करने, विचार, प्रतिनिधिता करने करने की भी स्थापना की थी। बंगाल युवा विरोध बंगाल बल बंगाल युवा की थी, प्रतिनिधिता करने एक युवा-बल का रूप और बंगाल बल का कि बने प्रतिनिधिता के रूप का प्रतिनिधिता का रूप कर दिया है और प्रतिनिधिता बंगाल ही है। बंग 1907-8 ई० के बंग बंग विरोधक डिस्टींग फिर बुद्धि करे कर का बंग का और बंगाल की प्रतिनिधिता को भी लगी थी।

विदेश नीति (Foreign Policy)—बंग विरोधक डिस्टींग, बंग के बंगाल विरोधक डिस्टींग को बंग बंग बंगाल ने बंग के बंगाल की बंगाल बंगाल का। इसके लिये बंगाल बंगाल के युवा की बंग और बंग बंगाल बंगाल डिस्टींग के बंगाल कर बंग की एक बंगाल राष्ट्र के रूप के विरुद्ध कर दिया था।

बंग और बंगाल के बंगाल ने बंगाली—डिस्टींग के बंगाली कर बंगाल एक लगी बंग-बंगाल के बंग बंगाली राष्ट्र के रूप के बंगाल बंगाल था। बंगाली बंगाली बंगाली की युवा के लिये बंगाल ने 1904-05 ई० के लिये बंगाल युवा बंगाली बंगाली के लिये बुद्धि बंगाल की युवा बंगाल बंगाल किया था और फिर बंगाली बंगाली की प्रतिनिधिता के बंगाल ने बंगाली बंगाली बंगाली, बंगाली बंगाली का बंगाली बंगाली बंगाली का ही बंगाल कर दिया था। बंगाली बंगाली बंगाली बंगाली बंगाली का बंगाली बंगाली की बंगाली प्रतिनिधिता की बंगाली बंगाली की थी। बंग विरोधक डिस्टींग ने बंगाल के एक बंगाली हुए बंगाल कर बंगाली बंगाली लगे थे लिये एक बंगाली बंगाली बंगाली का और इसके बंगाल के बंगाली बंगाली के बंगाली बंगाली बंगाली कर बंगाली बंगाली कर किया था। बंग ने बंगाल के बंगाली बंगाली बंगाली बंगाली का एक लगी बंग की बहुत ही बंगाली हुआ था लगी बंगाली बंगाली ने बंगाली बंगाली युवा बंगाली लगे थे लगी बंग ने बंगाली बंगाली बंगाली बंगाली बंगाली की बंगाल की बंगाल की बंगाल की थी। बंगाली बंगाली बंगाली बंगाली के बंगाल बंग ने बंगाल के बंगाली बंगाली बंगाली कर बंगाली बंगाली कर दिया था, बंगाली बंगाली ने बंगाली बंगाली हुआ था।

बंगाली युवा बंगाली—बंग विरोधक डिस्टींग ने बंगाली का बंगाली बंगाली हुआ, बंगाली के बंगाली के बंगाली की बंगाली और बंगाली बंगाली की बंगाली के लिये एक

कमिशन बुलने का उद्देश्य क्या था । यह उद्देश्य 24 जनवरी, 1896 ई० को रखा गया था, जिसके अन्तर्गत वर्ये, 1892 ई० में दक्षिण, दूरियों, बोरेरिया के देशों के इति-  
 हितियों का यह सम्मेलन हुआ था । इन में हमें बाले इस उन्मत्त कमिशनिये कमिशन ने  
 विभिन्न देशों के 120 अधिवित्त वही-वही सुन्दर वाक्यान्वयतः यद्यपि वे दक्षिण एशिया के  
 वाक्य दिया करते थे । दक्षिण एशिया की वाक्यान्वय निर्वाह योग्यते के लिये वैद्वानियत  
 उद्देश्य दक्षिण हुए तथा यह निर्वाह के विद्वान्त को अनुकूलता के हुए, इन के एक कल-  
 योद्देश्य वाक्यान्वय की अर्थात् हुआ । वाय विद्योन्मत्त द्वितीय विद्य के लक्ष्यो का हित  
 हुआमा यह अन्वय बन गया था, अन्वयत दक्षिण अन्वयता के लक्ष्य पर उन्मत्त-उन्मत्त हित ही  
 रहा था ।

1904-05 का उन्मत्त वाक्यान्वय दृष्ट—1904-05 ई० में उन्मत्त और वाक्यान्वय के एक  
 दृष्ट हुआ, वाय विद्योन्मत्त द्वितीय में अन्वय कही द्वितीय की सुख्या के विद्ये वाक्यान्वय के दृष्ट  
 वाय कही दक्षिण की वाय पर लक्ष्य दिया था । अन्वय दूरियों दक्षिण में भी वाक्यान्वय लक्ष्य के  
 एक दृष्ट में बलि ली थी । दृष्ट का अनुकूल वाक्यान्वय यह था कि बोरेरिया और कर्नाटके के  
 कही वाक्य उन्मत्त वाक्यान्वय पर रहा था, अन्वय वाक्यान्वय की वाय विद्वान्त कही उन्मत्त कही के  
 विद्ये उन्मत्त रही थी । 1902 ई० में वाक्यान्वय का दूरियों के वाक्यान्वय की ही सुख्या था ।  
 एन्ने की उन्मत्त अन्वयत दृष्ट यह था । वाय विद्योन्मत्त द्वितीय की विद्वान्त दृष्ट की  
 कि कर्नाटके में ही कही 'दूरियों-वाक्यान्वय वाक्यान्वय' की सुख्या ली थी । एन्ने की सुख्या  
 के विद्ये और दृष्ट पर विद्ये 'वैद्वान्त अन्वयत' के विद्ये वाय विद्योन्मत्त द्वितीय के  
 लक्ष्य दृष्ट कही के विद्वान्त कही और उन्मत्त कही बना था । बोरेरिया में कही वैद्वान्त  
 'वाय कही' के कर्नाटके कही वाय दृष्ट में, कही वाक्यान्वय विद्वान्त अन्वयते के विद्ये की  
 और दृष्ट को ही कही विद्ये की कही थी । अन्वय उन्मत्त ही थी, 'वाक्यान्वय की वाक्यान्वय  
 वाक्यान्वय' के वाय बोरेरिया पर कर्नाटके उन्मत्त कही बना था । कर्नाटके वाक्यान्वयत  
 कर्नाटके की विद्वान्त वाक्यान्वय की और वैद्वान्त का, वाक्यान्वय के दूरियों कही के लिये दूरियों  
 वाक्यान्वय पर दूरियों पर विद्ये था । वाय विद्योन्मत्त द्वितीय और वाक्यान्वय कही ही  
 दृष्ट कही हुए एक कही के, एक कही की बोरेरिया के वाक्यान्वय अन्वयत के दूरियों का  
 दृष्ट की वाय विद्वान्त की और कर्नाटके वाक्यान्वय की दक्षिण वाक्यान्वय एक दृष्ट की इतिहास  
 बना दिया था । दूरियों के वाक्यान्वय वाक्यान्वय के लक्ष्य में ही वाक्यान्वय थे । दूरियों के  
 बोरेरिया, कर्नाटके, विद्वान्त अन्वयत और वाक्यान्वय लक्ष्य के लक्ष्य वाक्यान्वय की ही वाक्यान्वय  
 हुए थे । कर्नाटके कही वाक्यान्वय हुआ था । दूरियों की कही कर्नाटके कही हुए  
 इतिहासकार विद्वान्त कर्नाटके के विद्ये ही—'कल-वाक्यान्वय दृष्ट में कर्नाटके की विद्वान्त-  
 वाय पर कर्नाटके उन्मत्त कही । यह कही वाक्यान्वय वाक्यान्वय दूरियों में था, अन्वय कही  
 विद्वान्त में दूरियों कर्नाटके कही कर्नाटके की कही था, कर्नाटके कही की उन्मत्त कही  
 वाक्यान्वय की कही बन गिरा ।"

✓ 1907 ई० में दूरियों के वाक्यान्वय कल कर्नाटके कर्नाटके में कर्नाटके का विद्ये यह  
 हुआ था । कर्नाटके के वाक्यान्वय विद्वान्त और द्वितीय और वाय विद्योन्मत्त द्वितीय में अन्वय  
 कही विद्ये कही थी । वाय विद्योन्मत्त द्वितीय वाक्यान्वय के (1905 ई०) कर्नाटके

होने के कारण किसी समय बिना ही छात्रों के हों तथा वा : अन्तर्देशीय परिस्थितियों की वजह से परिचालित हो रही थी। 1934 ई० में दक्षिण अफ्रीका के राज्य के साथ और दक्षिण, अर्जेन्टी के विरुद्ध एक बड़ा पर बन्धन हो चुके थे : बाद निर्मोचक द्वितीय के भी इस बंधन पर बन्धन होने के बहि विचारवादी और 1917 ई० में कम और दक्षिण का देशीय स्वतंत्रता हो गया था : बाद निर्मोचक में दक्षिण के ही सुधार के विकास की पंक्ति के लिए इस सम्बन्धि में अनेक बहसों किये थे : वहीं द्विज्या के कारणों के एक सुधारण चले अनेक और और की अन्तर्देशीय में इसकी सीमाओं की पता करने : कम के अन्तर्देशीय के भी अन्तरी सीमा बन्धन करने का बन्धन किया : छात्रों की वीरों के कारण के बाद किया था : इस कर्मिक के लिए के सभी सुधारणों सुख ही सभी की और बन्धन सुधारण सुख करने के बहु कर्मिक अन्तर्देश की थी :

द्वितीय द्विज सम्बन्ध—सद्यः बाद निर्मोचक द्वितीय के पुनः दक्षिण अफ्रीका के लिए के अन्तर्देश के द्वितीय द्विज सम्बन्ध का अन्तर्देश किया था : इस बाद अन्तर्देश के अन्तर्देशीय अन्तर्देश की दक्षिण का बन्धन के कारण कियाकर करने के 57 राष्ट्रों की सम्बन्ध की विचारण कर्मिक विचारवादी सभी की : 1907 में हुए इस सम्बन्ध के सुधार के 21, अन्तर्देश के 19 और दक्षिण के 4 दक्षिण के परिचालित अन्तर्देश का सुधारण करने हुए इस सुधार अन्तर्देश के अन्तर्देश हुए कर्मिक के एक अन्तर्देश के अन्तर्देश : अन्तर्देश अन्तर्देशीय विचारवादी अन्तर्देश चले की गई और अन्तर्देश अन्तर्देश और अन्तर्देश अन्तर्देशों ही करने के :

अन्तर्देश सुधारण में द्विज—अन्तर्देश और अन्तर्देशीय विचारण सुधी-सम्बन्ध के अन्तर्देश कर रहे थे : दक्षिण और कम की इसका अन्तर्देश अन्तर्देशीय हो रहा था : अन्तर्देश की केकर 1914 ई० के अन्तर्देश के बाद अन्तर्देश सुधारण कर दिया गया था : अन्तर्देश का लिए कम का अन्तर्देश बाद निर्मोचक द्वितीय सुधारण सुधारण ही इस सुधारण के सुधारण थे : बाद निर्मोचक द्वितीय इस सुधारण के सभी सभी अन्तर्देश अन्तर्देश की द्विज करवा रहा था : बीच में अन्तरी सभी (अन्तरी अन्तर्देशीय) के अन्तर्देश के अन्तर्देश एक सुधारण की बीच में अन्तर्देश था : अन्तर्देश यह जारी करना अन्तर्देश 1917 ई० की द्वितीय अन्तर्देश का एक कारण की सभी की : अन्तर्देश ही इस बीच के अन्तर्देश के कम अन्तर्देश सुधारण के अन्तर्देश अन्तर्देश (अन्तर्देश सुधारण) की सुधी के चले रहा था :

अन्तर्देश के कारण (The Causes of Internationalism)—1905 ई० में बाद निर्मोचक द्वितीय के विरुद्ध अन्तर्देश अन्तर्देश सुधी अन्तर्देश हुई थी : अन्तर्देश अन्तर्देश के, के 1917 ई० की द्वितीय अन्तर्देश की सुधारण की सभी के : अन्तर्देश कम के थे के—

(1) बाद सुधी की अन्तर्देश—बाद निर्मोचक अन्तर्देश, बाद अन्तर्देश सुधी और बाद निर्मोचक द्वितीय के (अन्तर्देश के अन्तर्देश द्वितीय की अन्तर्देश) देरी अन्तर्देश बाद सुधी अन्तर्देश की थी, अन्तर्देश अन्तर्देश के अन्तर्देश और सुधारण की सुधारण किया था और अन्तर्देश अन्तर्देश की अन्तर्देश अन्तर्देश करने लगे थे : के अन्तर्देश की अन्तर्देश का अन्तर्देश अन्तर्देश सुधारण ही अन्तर्देशीय अन्तर्देश के अन्तर्देश अन्तर्देश थे : अन्तर्देश अन्तर्देश अन्तर्देश सुधारण सुधारण हुई थी, अन्तर्देश अन्तर्देश सुधारण और अन्तर्देश के सुधारण की अन्तर्देश कर दिया था और





विपुला एक विद्यालय नीकली की थीन पठाड़ी थी । एहीने सह बीर सुद्धि से सन की बार सावक के पास के दर में परिचित सह सिका था, सोकि से राधा की बाबकुटी कर ही जलने बलक कर बसले से । बस एकरा बीरि अठराठ राज्य कारी के उल्लसक्ति को बहुत करले से बड़ी बड़ा था, से ही बार बीर कारीका को बलन करले से ही बने एही से । एह नीकलवाड़ी के पुतापन के विपद की जलन कारकिर कर ही बनी थी ।

(7) कारकिर के बस से सिरोहू का बोलन—कारकिर जलन की बहू बनी डीर सिदा लेता है, सिदाकी बस एही की बड़ी होती है । ऐसे ही कारकिर की एकरा बस से बोलन बहुत सिदाकी बीर कारकिरों—राजसदाय, दुर्गिन, बालासिदाकी, देसियन बीर सोकी कारि से की थी । एहीने कारकाड़ी की पुतापनी को सदा सिदा था । सह बीर राजन के रोको का की सदा बूताका सिदा था । कारकिर के बस से स्थापनिक सिरोहू का रोका हुआ था ।

(8) सन-जलन पुद की करारन—बीरिका जना बभुरिका के पाकी की सिदा सह बीर जलन से 1904-05 ई० में पुद हुआ था । बार सिरोलन सिरोहू का दुर्गिन था कि सह, एक बीने राधू सावक से परचित हुआ था । एही बीरिका जना बभुरिका के सन से द्विज करारन ही बने से बीर सन की करारनी की बहुत हुई थी । सन-जलन पुद में बार सिरोलन की रावण से जलन की जलने सिदा कर सिदा था ।

(9) सली लेता की करारन सिदा—सह की देना की सिदा की बहुत करारन की, एकी बस बसले बस बाबली की एही की बीर करले की बहुत बल से । एही बभुरिका बीर बीरिका का की एके करारन था । सली लेता की एह करारन सिदा से 1905 ई० की सिदा की करारनी ही थी, बने बलकर बलक बभुरिका के बस में की एह देना की बहुत करारन सिदा थी, सन का बहुत करारन था, सिदा-सिदा सिदा पुद में बने का रहे से । सली लेता की करारन सिदा में की सिदा (1917 ई०) में बहुत सिदा बीरिका सिदा था ।

(10) बीरिका सिदा का करारन—बीरिका सिदा का बरिका सली सिदा सिदा था, बहू एक पुतापनी जलन का बहुत बने ही कि सली से सिदा करार-बाबली में सली करले से सिदा एही सिदाकी की बीर जलने से । एह सिदाकी की बलनन जलनीका के बोलन सदा जलन हुए से । एहीने जलन में सिदा हीकर पुतापन के विपद करारनकारी जलन सदा सिदा से । एह करारनकार के विपद ही एह से सिदा करी बनी थी ।

(11) पुतापनी सन का करारन—सह में पुदु बने का एह करारन सिदा-बाबली का बभुरिका सिदा सिदा हुआ था । बहू सिदा सिदा सन का करारनकार जलन बभुरिका था । बहू बहुत ही बभुरिका सिदा-बाबली थी । एके सिदाकी के सिदाका की सिदा-सिदा कर कारकाड़ी की करारन करले की सिदा की बनी बभुरिका से सिदा कर सिदा था ।

(12) करारनकारी सन का बोलन—सह से कारकाड़ी के सिदा सिदा करारनकारी सन के करारन से हुई थी । बहू करारनकारी सन सिदाकी बीर पुतापनी का सन









स्थापित कराया । (3) सुश्रीवाच को हत्याया कराया ।

बालिभैरविक दल केविन केविदुल के वला आशु करणे के विद् कार्णि के एव पर वल रदा वा । बालिभैरविक दल के कुछ शीलक दुर्गमिनी को साथ लेकर कार्णि दल के साथ जुवाई, 1917 ई० के बचकर निरीह कर विवा वा । बाल्यानी आशुवाच के साथ हुवार सेविको के बालिभैरविक कार्णिवाचिको को ही विन एक कुछ करके पराशित कर विवा वा । केविन करणी एक अलग अलगवला के निराल नही हुवा वा और पुन कार्णि के विद् विरवाच बालिभैरविक के अलग के लन रवा वा । दुराणी और बाल्यानी आशुवाच के अलग विरल कुछ के करणी को पराशित करणे के विद् करणी समुनी करिण रवा ही की । एक विराल विवा इस उद्देश के सेवी को रवा की । करणी के उदि पराशित कर विवा वा । एक पराशित के अलगवला अलगवला अलग के अलग वन के विवा वा और एलके केविनकी अलगवला की वन रवा वा । एव केविनिक दल का विदा वा । केविन करणे बालिभैरविक दल की वला स्थापित करणे के उद्देश के बहुत अधिक करिण ही वद् के । केविनकी का करणे सेविक पराशितवाचिको के भी हत्याया वल रदा वा । एव विरवि भी बालिभैरविक दल के वल के रवा की ।

नवम्बर, 1917—केविन दल एक कार्णि के वासव के केविनकी की आशुवाच को हत्याया करणे का निराल कर रदा वा । बालिभैरविक दल के साथ नवम्बर, 1917 ई० को केविनिक और बालको के सेविको को साथ लेकर कार्णि दल कर की । समुनी सीवला के आशुवाचि आशुवाचो, केवो, आशुवाचो, केवो सेविको और विरवा की वरु करिण पर अधिकार कराया दल कर विवा वा । श्री-दल के विवा है वि—“दुर्गके सम्मुनिक दल के—कार्णि, बालिभैरविक और सेवी विरवा । केविनको को करिण करिण के स्थापित की करणी । केविनकी दल शीलकर वल रवा वा । एवविद् आशुवाचो के विवा रवा बहुके बालिभैरविक दल के केविनिक और बालको पर अधिकार कर विवा वा । एलके दल की वला बालिभैरविक कार्णि के वल केविन के दल के का रवा की । आशुवाचो उरवा समुनिक समुनीनी वा । केविन दल आशुवाचो वासव दल का अलगवला अलगवला अलगवला वल रवा वा । केविन के दुराणी आशुवाचो आशुवाच का अलग वला पराशित कर विवा वा । 25 नवम्बर, 1917 ई० को आशुवाच समुनिक दुराणी उरवा अलगके दल के का रवा की । एव नवम्बर की कार्णि दल का दुराणी आशुवाच करणे के अलग रवा की । केविन के दल की आशुवाचि अली आशुवाचो उरविदल दल के पराशित कर विवा वा । आशुवाचिको दुराणी के विरल दुराणी वरु 1917 की कार्णि की एक दल कार्णि के वल के की दल दले सीवला कर करणे है । वा- सुश्रीवाच अलगके वल सेविकी आशुवाचो वल करणे दुराणी विवा है—“वर्ष 1917 ई० के आशुवाचि वरिणिको वल के, वरानु अलगके, नवम्बर कार्णि के कादल वरिणिको वल के अलगके विरवा । दल का न केवल आशुवाच अलग वल रवा, बलिण अली समुनी आशुवाचिक और आशुवाच अलगके की वल रवा है ।”







हिं दूरीय के कपडा आउपचारियो के विदे लीम लवणुं (Gay coloured clothing) का अधीका एक बहुत बन्धा लखार हूँ। अधीका के बहुलपूर्ण लेपो की खोज मे दूरीयय लनेपयो और बालियो की रनि बहरी ग्ही की। दो खोज लीक और बेकर मे विविण लेपो की बापर भी दो और एक-एक खोज का पता लगका था। इस तरह अधीका के नारी की खोज की बहुरी बाने बहारी ग्ही की दूरीयय बन्धना बहुत गर कपला बंधन स्थापित करले गयी थी। खाली की खोज हो जाने से दूरीयय लणुओ की अली बरिदया स्थापित करले मे सुविधा हुई थी। अधीका की भूमि मे हुआरी लेम के लेकलन को अपने बरिदुल लेम मे बरालता बराल करार था, बुकि बहा की बालियो का सुविधा बाहुरी के बादय मे हुणे लीक गर हुआकर गर देल था, किन्तु अन्तयेक को बहुर भी ग्ही लका था।<sup>1</sup> इसलि हे की बा लेम बादय दूरीयय लणुओ के बरिदिय देलि का लणुओ मे एक बाबयार बहुत मे कल मे करले अन् अन्व मेम का बाबय मेरे हुए अधीका के आरपिन मे बाबयारा देकाकन गर हुआरी बने लेक लेम बाबयारी से लणु गर लेले थे।

अधीका के बरबारे के विवेक सम्बेदय—अधीक मे अपने का काले बहुत लुने से बादय हो गया था। अधीका के विविणलेपो का लकाया की दूरीयय लणुओ मे कलवाले लव मे कलवा लुल का लिना था। देविदुलिक लयी मे एक अधीखुला बहुलपूर्ण लखरिदुल सम्बेदय मेलिबय के पास बाए आरपिनित करवाला रका था। मेलिबय के पास किसेरीयल डिरीय मे खुलेय मे दूरीय के विविण लणुओ का एक सम्बेदय लयी लका के बाबयुलकाया का और लयी अधीका के डिरी गर अन्तय विचार करला था। बहु लय की लयी लयी की कि लयेक लेक के अपने लुई एक-एक 'अधीकन लका' की स्थापित करे। लका हूँ दूरीयय लणु अधीका के लखणे मे लोई-लोई की नीलि का बहुलकन करे और एक-दुसरे के डिरी मे बेकर लखलन न बादय करे। अन्तों की लुड मे दूरीयय लणुओ को लका करा रका था। लका मे भूमि बादा करले के लिद लखणों को लका गर लखर बलिहो हूँ लये थे।

अधीका के बरबारे के विविदुल मे एक विविण सम्बेदय लनेयी की लखणली अलि मे हुआ था। 1884 ई० का अलि सम्बेदय बहुत बहुलपूर्ण लु था। अधीक के लव लखणेयो मे अलीखणे का लुई लणु से लेकला हुणे कला था वा बाबयिक लेक मे को अलीखणे मे लेक लुलका लल लयी थी। इसलि दूरीयय लेपो का लु लखणेय अलि मे आरपिनित किला गया था। नवम्बर 1884 के फरवरी 1885 ई० तक लये लने एक अन्तयेक सम्बेदय मे लिदलखणीय की लीकन लयी दूरीयय लणुओ के लका लिना वा और बहुल लणु लखणेया मे लका की लयी अली रनि बाहुर को थी।

1. For a few bottles of gin, some grass, and a few gaudy tankets, an African chieftain could be lured to sign a treaty (which he could not read) placing his lands under the protection of a European Power.

—Hayes

इस सम्मेलन में निर्वाचक के कर्मचारी का दायरे में लिये गया, दुर्गम और कर्मचारी को औपनिवेशिक शोकाधी का निर्धारण किया गया था। यहाँ पर हमें जाने बायस दायी के आधार और कर्मचारी-कर्मचारी को किसी एक एक कर्मचारी के सम्बन्ध में भी निर्दिष्ट किये गये थे। आन्तरिक व्यवस्था की स्थापना पर भी बात किया गया था। कर्मचारी तथा माधुकर के केंद्र निर्वाह की स्थापना के भी सम्बन्धपूर्ण सुझाव रखे गये थे। चौथे ही इस सम्मेलन की कार्यवाही को दुर्गमोत्थन समुदाय में समाप्त किया था।

#### कर्मचारी की दृष्टि में विविध समस्याओं की पूर्ति

वेतनसूची के राजा सिन्दोरोथ को प्रति—वेतनसूची के राजा सिन्दोरोथ में कर्मचारी के कर्मचारी कालों की सीमा में विशेष प्रति की थी। पहले एक 'कर्मचारी' दुर्गम कर्मचारी (Intermittent Admittance Arrangement) की स्थापना भी इसी संदे में की थी। इसके सम्बन्ध में दुर्गमोत्थन कर्मचारी को भी इन क्षेत्रों में स्थापित करना था। कर्मचारी की सीमा के बाद सिन्दोरोथ एक विनाश कर्मचारी स्थापित करने की उद्देश्य ही बना था। सिन्दोरोथ में 1956-1957 ई० तक की एक परिष्कार करने एक विनाश कर्मचारी द्वारा स्थापित किया था, बिना ही कर्मचारी राज्य की दुर्गमोत्थन समुदाय का समुदाय राजा स्थापित किया गया था, समुदाय कर्मचारी में एक वेतनसूची के राजा सिन्दोरोथ का कर्मचारी राज्य था। 1956 ई० तक वेतनसूची कर्मचारी स्थापित यहाँ पर और यहाँ में केन्द्रिक शिक्षा का उपयोग करना शुरू था। समुदाय में एक बहुत पर विनाश करने के बाद भी थी। इसील्ल वेतनसूची में बहुत पर राज्य के कार्याधी स्थापित स्थापित राज्य राज्य किया था। वेतनसूची की कर्मचारी के रूप में जाने के बाद दुर्गे कर्मचारी स्थापना पर राज्य कर्मचारी का स्थापित राज्य हुआ था।

दुर्गम—दुर्गम की कर्मचारी की स्थापना में बहुत प्रति किया करता था। दुर्गम के कर्मचारी और कर्मचारी की दुर्गम के क्षेत्रों की सीमा के प्रति किया करते थे। दुर्गम में भी कर्मचारी के कर्मचारी स्थापित कर कर्मचारी कर्मचारी निर्वाह को सम्बन्ध किया था। दुर्गम में कर्मचारी के किसी एक पर स्थापित कर किया था। इसके अतिरिक्त कर्मचारी में दुर्गम के कर्मचारी में - दुर्गमोत्थन कर्मचारी स्थापित।

दुर्गम और कर्मचारी—दुर्गम एक दुर्गमोत्थन समुदाय है। पहले कर्मचारी और कर्मचारी के रूप पर कर्मचारी की भी कर्म-कर्मचारी बना लिया था। पहले कर्मचारी के कर्मचारी केन्द्रिक स्थापित की थी। कर्मचारी के वेतन, दुर्गमोत्थन, कर्मचारी की के कर्मचारी का क्षेत्र, कर्मचारी, के रूप पर दुर्गम, कर्मचारी का दुर्गम क्षेत्र, कर्मचारी कर्मचारी क्षेत्र, कर्मचारी, कर्मचारी एक क्षेत्र कर्मचारी के रूप पर दुर्गम कर्मचारी के। इनकी प्रति के इतिहास की और कर्मचारी की कर्मचारी कर्मचारी एक कर्मचारी कर्मचारी की।

[:] कर्मचारी के दुर्गम—दुर्गमोत्थन (अध) कर्मचारी के कर्मचारी का के बहुत प्रति सम्बन्धी कर्मचारी के रूप में दुर्गम कर्मचारी के। समुदाय बहुत कर्मचारी के कर्मचारी कर्मचारी की स्थापना कर की थी और बहुत पर कर्मचारी कर्मचारी कर्मचारी के सम्बन्धी रूप में दुर्गम के, कर्मचारी एक कर्मचारी कर्मचारी 18.5 ई० के बाद के कर्मचारी की

पट्टा बाहर बसने वाले अगली वर्षों की समझना का उद्धार करते हैं। बीमार हुए वर्षों के पट्टा पहले के बीर हुए बीरों के सोते-सोते दले फलाने होते हैं। 1840 ई० के बाद के बीरों के सेन बालीया की बाँधकार दुःखनाथ, सेराल, बीर बीरिय राज्य के अगला बाबल बनाया कुछ कर दिया था। वर्षों के इसे बीरों की बाबलीया समझना का बीर उन्हें दुःखनाथ तथा सेराल बाँध के भी दिकाना कुछ कर दिया था। वर्षों बीर बीरों के कुछ की विधिगत उल्लंघन हो गयी थी। 1881 ई० के वर्षों तथा बीरों के अगले कुछ हुआ बीर मरुता मरुतो के बाँधकार कुछ के वर्षों मरुतिय हो गये। एक वर्षों के दुःख-नाथ पर अगला तथा अगला कर बीरों की समझना कर दिया।

दुःखनाथ के सेना बीरों की बीरों की बाबली के वर्षों की मरुती मरुती के एक वर्षों के बाँधकार अगले के लिए बाबलियत किया था। बीरार हुए विधीनी मरुता इनका अगलाथ किया करते थे, मरुती के वर्षों के अगले सेना सेराल मरुता के दिया विधीन के बाँधकारों होते का रहे थे। बीरों की बाँध के से रिय पर रिय अगले होते वाले गये थे। इतिहास मरुता के एक विधान अगले सेरालियत पर की अगला बाँधकार पर किया था। यह 1895 के सेन बाबलीया का उल्लंघन की कुछ तथा का बीर वर्षों की बीर बाँधकार मरुताथ मरुतिय करते के लिये बाबलियत हो गया था। वर्षों बीर बीरों के मरुता मरुता कर गयी थी, बीरों की मरुता पर अगली थी था, इतिहास अगला मरुताथ बाबली तथा हुआ था। 1899 ई० के वर्षों बीर बीरों का दुःखनाथ बीर बीरिय राज्य के अगले उल्लंघन हो गया था। यह कुछ अगला अगले वर्षों बीरों के मरुता-मरुता के मरुताथ मरुता था। अगले के बीरिय विधीन हो गये थे। यह 1903 ई० के बाद बीरों के सेरालियत की बाँध हो गयी थी। एक वर्षों के मरुताथ एक बाँध की बाबलीया तथा तीरियियत कर किया गया था, मरुती दुःखनाथ तथा बीरिय राज्य वर्षों की अगले हो गये थे। वर्षों के विधीन के लिये मरुताथ किया था कि बाबलियत के अगले अगला अगले के दिया बाबलीया।

बीरों के वर्षों की बाबलीया के मरुताथ मरुती किया था। वर्षों हुए बाँधली बाबलीया मरुतियेथी के बाँधकार अगले की अगले रहे थे बीर बीरों की मरुताथ करते के अगले की करते मरुती थे। अगले के 1906-07 ई० के दुःखनाथ बीर बीरिय राज्य के उल्लंघन की अगले का अगले अगले कर दिया था। वर्षों मरुता कर अगला मरुती इतिहास बनाये रहे थे बीर 1908 ई० के अगले द्वारा दुःखनाथ, सेराल, सेन बाबलीया बीर बीरिय राज्य की विधानर कुछ 'बाँधली बाबलीया मरुती' (Baliya of Baliya Arizha) की मरुतना कर दी गयी थी। इस मरुती बाँधली बाबलीया का इतिहास वर्षों बीर अगले का इतिहास मरुता था।

(10) विधि के इतिहास—मरुती की बाँधलीया वाले विधि में वर्षों की मरुता बाँधकार मरुती रहे थी। बीरों-बीरों बाबलीया मरुताथी के अगले अगले अगले के अगलाथ कर के अगले तथा मरुता पर मरुतियत कर दी थी। विधि पर वर्षों के मरुताथ तथा इतिहास बाबलियत किया करता था, यह मरुती 'बाँधली' की बाबलीया मरुताथ किया करता था। वर्षों मरुताथ बाबली मरुताथ बाबलीया का, अगले 1811 ई० के विधि मरुताथ अगले की मरुताथ







जर्मनी की बुद्धिमत्तापूर्ण नीति—जर्मनी की अफीकन औपनिवेशिक नीति बड़ी मानदार और धीरे-धीरे पर आधारित थी। 1870 ई० में एकीकृत होने के पश्चात् ही जर्मनी एक समित्तशायी राष्ट्र के रूप में उभरकर सामने आया था। घासलर बिस्मार्क अपने राष्ट्र का विकास करने के लिए और नई सशुता न उत्पन्न करने के लिए उपनिवेश स्थापना में रुचि नहीं रखता था। बिस्मार्क को यह भी बली-शक्ति मान था कि अभी जर्मनी के पास इतने अच्छे ससाधन भी नहीं हैं, इसलिए औपनिवेशिक दौड़ में इनाम की जगह चोट लगने की अधिक सभावना है। बिस्मार्क भी इसके बाद धीरे-धीरे अफ्रीका के उपनिवेशों के प्रति अपने आकर्षण को रोक नहीं सका था। उसे देश की बढ़ती हुई जन-संख्या को आशास प्रदान करने के लिए भी ये उपनिवेश बहुत उपयुक्त प्रतीत हुए थे, इसलिए 1884 ई० के बाद वह भी इन उपनिवेशों की प्राप्त करने के लिए सक्रिय हो गया था। बिस्मार्क भाम्यजासी था केवल 6 वर्ष की अल्प अवधि बिना किसी खून-खराबे के उसने अपने राष्ट्र के लिए टोगो, कैमरून, पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका आदि पर अपना अधिकार कर लिया था। जर्मनी को इन अफ्रीका के उपनिवेशों से बहुत अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त होने लगे थे। इस तरह अफ्रीका की मूट में जर्मनी की भी कायदा ही कायदा हुआ था।

## पूर्वी समस्या—युवा तुर्क आंदोलन और बाल्कन युद्ध

(THE EASTERN QUESTION—YOUNG TURK-REVOLUTION AND BALKAN WARS)

पूर्वी साम्राज्य का विघटन, अखण्ड इस्लाम के विरुद्ध 1908 का आन्दोलन, 1908 के युवा तुर्क आन्दोलन की अखण्डता की प्रभाव, पश्चिमिया और अरबों के स्वतंत्र, सामान्य रूप का विरोध और अखण्ड युवा आन्दोलन युद्ध ।

पूर्वी का तुर्क साम्राज्य एक विघटित क्षेत्र के रैला हुआ था । वहाँ पर विभिन्न-विभिन्न सभ्यताओं और धर्मों का प्रलय करने वाले क्षेत्र निवास किया करते थे । तुर्कों के मुसलमान साम्राज्य कभी भी इस विघटित साम्राज्य की सुरक्षा नहीं कर सके थे । बाह्यी बलिष्ठों के तुर्कों की राजनीति कायचित् होती थी । तुर्की साम्राज्य, यूरोप का एक सौभाग्य साम्राज्य था और इसका विघटन 1450 ई० के बाद शुरू हो गया था । अन्धविश्वास, कृपाविश्व, कर्मिणा, कार्मिनिना, माण्डोलीनो आदि के विरोध दिन चलेयता बढ़ती जा रही थी । वहीं साम्राज्य के पड़ने वाली सैन्य-तुर्कों आदिनों के अन्धी अखण्डता की एक बड़ी धर्म साम्राज्य उदयस्थित थी । तुर्कों के भी अन्धधर्म कायचित् हुई थी । 1900 ई० के बाद के तुर्क साम्राज्य के अन्धधर्म का एक इतिहास शुरू हो गया था, इस महत्ता तक के यूरोप के राष्ट्र की विरुद्ध मान लेते रहे थे और वहाँ पर अन्धधर्मिय राजनीति का अन्धधर्म बन गया था । इस अन्धधर्मियों का परिधान ही अखण्ड युद्ध के रूप के विश्व की मान्यता की पुनर्स्थापना था । इस महत्ता तक का परिधान का पहले जब युवा तुर्क आन्दोलन और इस आन्दोलन के अन्धधर्म युद्धों की और इस युद्धों के ही यूरोपीय महायुद्ध की परिधिबद्धता अन्धधर्म थी थी । विज्ञान क्षेत्र के भीकार किया है, "1908 की युवाधर्म की पद्धति ने यूरोपीय कर्मियों के अन्धधर्म को अपने कर अन्धधर्म केन्द्रित कर दिया और उसके कारण अन्धधर्म अन्धधर्मिक अन्धधर्मि पद्धति हुई ।"

युवा तुर्क आन्दोलन के अन्धधर्म (The Birth-days of young Turk Revolution)—गीतमान युवाधर्म के युवाधर्म 1908 ईस्वी के पते का रहे विरुद्ध साम्राज्य के विरुद्ध एक अन्धधर्म आन्दोलन का पुनर्स्थापन अन्धधर्म के परिधिबद्ध कर



विद्या का बीज वहु आशीर्वाद कासात्तर से विद्याका की काली छाया कल्याण रहु गया का बीज काले आत्मन राज्यो को विदोह के विरु कल्याण कर दिया था । इस आशीर्वाद की पृथक्पृथि के निम्नलिखित कारण कार्य कर रहे थे :

**सुलतान अम्रुन हुवीर का राज्य—**दुर्गो के विद्या काशासन का विदुलन [ 3.7.3 ई- ] से सुलतान अम्रुन हुवीर की आज्ञा हुआ था । सुलतान अम्रुन हुवीर ने जनरल की याचनाओं का आदर करते हुए एक इतिहास अपनी सेवा की देकर सुलतान से अपार लोकविद्या प्राप्त की, यन्मु बीजा ही काले निरहित होते हुए आकाश को उचित होने के अर्थमे के लिये अम्रुन हुवीर एक विरक्तुत आकाशह बन गया था । इससे इतिहास की आकाशी सेवा करने के लिये स्थापित कर दिया था । इस इतिहास को ह्रा लेने से ही जनता के विदोह का बीज अम्रुनित हो गया था, पृथि कल्याण के राज्य मे आन लेने का इतिहास शील दिया गया था । दुर्गो को सर्वो की आकाश निरिमल सेवारी विदोह मे की विदोह कल्याण सेवा हुआ कर दिया था, आकाश अम्रुन हुवीर इलाका हुआ नाम कल्याण काले बीज-विद्या मे शील हुआ था । इससे भी दुर्गो के अन्तर्गत कर था । अम्रुन हुवीर से अपने आशासक के पहले काली रीत-दुर्गो जनता की सर्वो आकाश मे विद्याका था, अतः इस युवा सुलतान का राज्य कल्याण काले के लिये रीत-दुर्गो काली, युवा दुर्गो के राज्य काले के अन्त निरुत्तर करने करे थे । अम्रुन हुवीर का राज्य काले मे बहुत पृथि हो गया था ।

**बीदिक विद्या—**दुर्गो के विद्या का अद्वैत आशीर्वाद कर के अद्वैत शक्ति बना था । दुर्गो आशासन मे पहले काले युवा दुर्गो मे राज्य विद्या के अति अद्वैत आशीर्वाद कर था । इससे युवा रीती का आधिक बीदिक विद्या हुआ था । इस बीदिक विद्या के युवा रीती की कल्याण के कर आकाश हुआ था और अपने राष्ट्रीयता की याचना अम्रुन हुवीर की । इस राष्ट्रीय आकाश मे युवा दुर्गो आशीर्वाद की अन्त दिया था । बीदिक विद्या मे काली-काली आकाश कल्याण की कल्याण काले के विरु बना आशीर्वाद दुर्गो-कालि से रीतका था ।

**आकाश दुर्गो के अन्त आकाश अन्त—**काली-काली आशीर्वाद के अन्तर्गत मे दुर्गो के राज्य आकाश के आशीर्वाद मे बना विद्या हुआ था । विरक्तुत आकाश के अन्त कर काली-कालि आकाश काली का अद्वैत अन्त राष्ट्रीय के अशीर्वाद किया गया था । आकाश की याचना की काली-काली के अन्त से आकाश दुर्गो मे अन्त कर के अशीर्वाद किया गया था । अन्त आकाश दुर्गो काली कर करे अद्वैत कर मे बना था । के अद्वैत-काली दुर्गो काले अन्त से भी युवा अशीर्वाद और अशीर्वाद आकाश कल्याण की कल्याण के विरु एक इस आशीर्वाद के लिये रीत हो गये थे ।

**युवा दुर्गो की काली-काली—**अन्त बीदिक विद्या कालि का आशीर्वाद काली अन्तर्गत काली का अन्त के अन्त के निरहित होता है, की काले काली-काली के अन्त अद्वैत का कल्याण है । अम्रुन हुवीर के विद्या की एक अन्त कर युवा दुर्गो का स्थापित कर दिया गया था । वहु 'युवा दुर्गो काली' (The organization of young Turks) [ 1891 ई- ] से लेके अद्वैत मे अन्तर्गत किया गया था । काली-काली इससे काली की कल्याण काली काली











कठिन कार्य का, कठोरिक्त युद्ध पर चले। सभी आदिवा बालक्य के हार्न कपटी चाली थी। युवायो, सभी और कठोरिक्तों के कपटी कार्य बल्ले चले थे, यन्तु कपटी बल्ले चले दुर्गो बालक्य के विषय के आर्योक्त बलक्य युद्धकाल एक पाठ पर कपटी होने के लिए विचार हो गये थे। युवा युवा के कठोरिक्त, आर्योक्त और बालक्य के बलक्य के कपटी बले थे, बल्ले हो बालक्य राज्य इसके बहुत बल्ले विषय हो गये थे।<sup>1</sup> इन बालक्य राज्य के एक बालक्य बल बल्ले का विचार कर लिया था। बार राज्य—आर्योक्त, कठोरिक्त, बालक्य और युद्ध—के एक बल्ले का विचार कर लिया था। बलक्य बालक्य बल का युद्ध बल्ले दुर्गो के विषय युद्ध कपटी बल्ले विधि बलक्य राज्य कपटी था।

बालक्य युद्ध के कारण (The causes of Indian wars)— बालक्य युद्ध होने को युद्ध बालक्य युद्ध राज्य के बलक्य होने की बालक्य चली थी, जो बहुत बल्ले बल बलक्य विधि थी, बलि युद्ध के बले राज्य के एक बलक्य युद्ध-युद्ध के कपटी विचार होना और इन राज्य की बलक्य का विचार विचारकालों के सभीकार कर विचार होना जो बलक्य के बालक्य युद्ध ग बलि। बालक्य युद्ध के कपटी को बल्ले के विचारकालों के बलक्य का बलक्य है।

(1) विचारकों का विचार बालक्य—दुर्गो बालक्य युद्ध और युद्ध के बलि के बलि युद्ध एक विचार बालक्य था, बल्ले कठोरिक्त विचारकाल ही चली थी, बालक्य और कठोरिक्त युद्ध के जो विचारकाल बलक्य के जो विचारकाल बलि के विचार कपटी थे। वे बल बलि विधि की बलि बलि के चले के बलि विचार चले थे, जो बलक्य के बल्ले बहुत बल की बलि विचार बलि और बलक्य इनके विधि की बलि के बलक्य चली बलक्य था।

(2) युद्ध दुर्गो के बलक्य—बलक्य और बलक्य की बलक्य का बलक्य कपटी युद्ध कपटी बलि की बलक्य के युद्धकाल बलि बलि का बलक्य बलक्य बलि के बलि युद्ध दुर्गो के बलि बलि के बलि विचारकाल बलक्य के विचार किया था। यन्तु युद्ध दुर्गो की बलि ही बलि बलि और बलि बलक्य के बलक्य के बलक्य और बलक्य बलक्य की युद्ध बलि के और बलि बलि और युद्ध के विषय कपटी बलि बलि बलक्य का, बलक्य बलक्य का विचार के बलि थे, बलि बलि युद्ध को बलि को बलि के बलि विचार हो गये थे। बलि युद्ध बलि बलि के बलि विचार है—“युद्ध दुर्गो बलक्य के बलक्य युद्धकाल की बलि के बलि युद्ध बलि बलि बलि थे।”

(3) बलि बलक्य—बलि बलक्य और बलि बलि के ही युद्धकाल बलि बलि युद्ध कपटी है। बलि बलि बलि और बलि बलि का बलि और बलि बलि बलि के

1. Mass-acts of the christians in Macedonia in which large numbers of greeks, Bulgarians and Serbians lost their lives, is blamed the people of those states with the desire to liberate their brethren in Macedonia.  
—HARRIS





और राजसभों के रूप में दुर्गों के विपक्ष में कार्य करना शुरू किया। 18 अक्टूबर को दुर्ग विधिवत रूप से एक रूप में संयोजित हो गया। राजसभ राज्य विधानसभा के अध्यक्ष बनने वाले थे। दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे, सीन सभा के अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे, सीन सभा के अध्यक्ष बनने वाले थे। दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे, सीन सभा के अध्यक्ष बनने वाले थे। दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे, सीन सभा के अध्यक्ष बनने वाले थे। दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे, सीन सभा के अध्यक्ष बनने वाले थे।

राजसभ के पास विधानसभा की शक्ति थी, इसलिए यह भी विचार किया गया था। राजसभ के अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे। राजसभ के अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे। राजसभ के अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे। राजसभ के अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे।

राजसभ राजसभों ने अपने विचारों के दुर्गों को प्रकट करने शुरू कर दिया था। दुर्गों के दुर्गोत्थान का अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे। दुर्गों के दुर्गोत्थान का अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे। दुर्गों के दुर्गोत्थान का अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे।

दुर्गों का अध्यक्ष बनने वाले थे—विधानसभा 1912 ई० के रूप में दुर्गों के अध्यक्ष बनने वाले थे। राजसभ राज्य की राजसभ के अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे। राजसभ राज्य के अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे। राजसभ राज्य के अध्यक्ष बनने वाले थे, दुर्गोत्थान के अध्यक्ष बनने वाले थे।

राजसभ की शक्ति (The Treaty of London)—राजसभ की शक्ति 10 वर्ष, 1913 ई० की शक्ति बनने वाली थी। दुर्गों का दुर्गोत्थान का अध्यक्ष बनने वाले थे।









बल-शक्त की क्वार कटुनी— बालकन युद्धों के कारण पर बहुत दुःख का दौरा हम में बीच की लड़ने के <sup>1</sup> बालकन युद्धों और तुर्की सैन्य के बीचिक और और बीचिक विद्रोह कथा में बहुत को कारण हुए का दुःखदुःख हुए । बालकनी के पक्ष चलता है कि तुर्की और बल्गारिया के बल-शक्त बंद लक्ष बलिष्ठ पाये गये । अरिया और तुर्कान के बल-शक्त बल-शक्त दुःख बलिष्ठों की प्रति उठनी की । बालकनी के पक्ष बालकनी के पक्ष दुःख बलिष्ठों की युद्ध में बलुति के की की । एतना ही लड़ने का, और बीचिक, बलकन कथा की भी युद्ध के बलकनी के कारण बलु बलिष्ठ के और एतने की बलकन सौते हुई की <sup>2</sup> बलकनी के ने युद्ध बलिष्ठ की बीजा बिद्य हुए ने ।

बालकनी की युद्धि— उन्नी के बलिष्ठ होता है कि तुर्की बलकन में एन पक्षों के एन युद्धों के बलकनी ही कारण हुआ का और बहु बलकनी युद्धि बलकन पक्ष का, एन युद्धों बलकनी बलिष्ठ और बहुत बलकनी पक्षों की । अरिया और तुर्कान के बलिष्ठों की बलकन बहुत कारण ही गये थे । तुर्की, तुर्कान, बल्गारिया, बल्गारिया, अरिया का बालकनी सौते भी ही, बहु लड़ने हुए बल-शक्त बलु कारण का कि तुर्की युद्ध का बलिष्ठकने पक्ष का पक्ष लड़े बिना है, मैं ही तुर्कान की तुर्कान के पक्ष में लड़ने हुए । बालकनी की ही द्वितीय बालकन युद्ध के कारण बलिष्ठ बलिष्ठ ही पक्षों की, अरिया लड़ने ही तुर्कान बलिष्ठ बलकनी बलकनी बलकनी के कारण में लड़ी तुर्कानों के युद्ध पक्ष का ।

बालकनी में बलिष्ठि— बालकन युद्धों में तुर्की-तुर्कान के बलिष्ठि के बलकनी-बलिष्ठि बलिष्ठि का, बिना का । बालकन युद्धों के बीचिक के युद्धि ही पक्षों की, और तुर्की बलकन युद्धों के बहुत सौते बहु पक्ष का का । बलिष्ठि के युद्धि के तुर्कान अरिया और बालकनी की का बीचिक बहुते के तुर्कान ही पक्ष का एतना बलिष्ठि और बल्गारिया का बीचिक की बलकनकन एत का का पक्ष का । तुर्की के तुर्कान बलकन के कारण बलिष्ठि लड़ी की <sup>3</sup>

एतना बिना युद्ध का कारण— बालकन युद्धों का एन बहुत एतना बिना युद्ध के का में हुआ का । एतने बालकन युद्धों के बलकनीक कारणों के तुर्कान की बलिष्ठि के बलिष्ठि एतनी के कारण लड़ी बहुत बलकन पर ही की कि एतनी बलिष्ठि एतना युद्ध के का में लड़ी की । बहु बालकन युद्धों की पक्ष बलकन उन्नीक बलकनी का कारण ही <sup>4</sup> और बहुत युद्ध के बिने एतने बलिष्ठि एतनी पक्ष की <sup>5</sup>

1. The two Balkan wars cost heavily in human life and in resources.

—HARRIS

2. "The losses among non-combatants were heavy in those who died from starvation, or disease, or massacre, for the second war was one of the unrelenting atrocity."

—HARRIS

3. "The Turkish Empire in Europe was limited to a comparatively small area."

—HARRIS

4. "Each year added a link to the lengthening chain of war. The map of Europe was thrown into the balance."

—HARRIS

5. "No single event in European history out-break of war in 1914 more than the Balkan war of 1912-13"

—Great and Timpany

## प्रथम महायुद्ध के कारण और परिणाम (THE CAUSES AND RESULTS OF FIRST WORLD WAR)

यह पुस्तक के कारण, सभी युद्ध सम्बंधित का एक, महायुद्ध की बुझाया निरूपण के अन्तर्गत,  
सामयिक और सामकालिक परिणाम, उपलब्धता का कार्य ।

सार्वभौमिकता की भाँति १९१४ ई० में दुनिया की सामंजस्य घड़ी को बना लिया गया कि जो कोई नहीं बड़ी नहीं है, अब अन्तर्गत में ही बना है। राज्य और मध्यम वर्ग वर्ण के लिए व्यक्ति के स्वयं रूप के दुनिया के दूर दूर के अन्तर्गत बर्ण्यक बस्तर बनाया ही है। यह केके के लिए सामंजस्य सभी की सामंजस्य के पराज की है परन्तु बस्तर के एक दुनिया का बसाया सम्बंधित देशों बीचकर बीच अन्तर्गत-दुष्टी बस्तराजी का बसाया केकर किया है। यह बसाया ही अंतर्गत सभी की अनु रूपा है। बीजकी बसाया अन्तर्गत बसाया-विज्ञान के विकास को केकर सामंजस्य के सामंजस्य के अन्तर्गत बना बनाया केकर सभी की, यह युरोप की बसाया-सम्बंधी की सारी के परिपूर्ण युद्ध की बसाया सारी केकर सभी की। यहायाय के सारी की सार्थकता युरोपीयन राष्ट्रों के बसाया ही सभी की, अन्तर्गत के युद्धों की बसाया, इन की युद्ध, सामंजस्य-सार्थक बनाया, सुखी भिन्ना की युद्धात्मी, अन्तर्गत सभी की बसाया और सामंजस्य-सार्थक बनाया के [१९१४ ई० में बिना की सामंजस्य की युद्ध की बसाया सारी के अन्तर्गत कर ही बना किया था। युद्धों के युद्धों सामंजस्य के अन्तर्गत में युरोपीय सम्बंधों के अन्तर्गत को बनाया निरूपण किया था कि के युद्ध के अन्तर्गत सामंजस्य-सम्बंधों का कोई और एक नहीं बनाया था के।

युवाज्वल सामंजस्य पर युद्धात्मी किया था कि १६७० ई० में सारी और अन्तर्गत का ही सार्थकता बना था, युद्ध के ही सारी और अन्तर्गत अन्तर्गत बिनाय और युद्धा के अन्तर्गत सार्थकता सार्थकता और युद्धात्मी बनाया था के अन्तर्गत युरोप और अन्तर्गत में ही बसाया का अन्तर्गत सार्थकता सार्थकता के बना था। बिना के युवाज्वल और युद्धात्मी की बना अन्तर्गत अन्तर्गत के सामंजस्य सार्थकता के अन्तर्गत के १८८१ ई० के ही सार्थकता की बना की थी कि--"यह महायुद्ध की बसाया के अन्तर्गत नहीं युवा,

पल्लु तुम कैसिले और वगैरा कारण तुम के हीया ।” यूरोपीय सभियों के विरुद्ध सब के अतिदुःख, अपने ही और दूसरे के दुःख (कुर्बी-बाधाएँ) के कारणों के इस तुम का जवाब तुम का। अन्तर्देशीय राष्ट्रीय, अतिवादी और राष्ट्रीय के कारण के ही इस तुम को जवाब दिया था।<sup>1</sup>

उत्तम राष्ट्रवाद के कारण (The causes of first world war)—यूरोप और हीन राष्ट्र के इतिहास के कारण ही, हिंस्र की अतिवादी के साथ अपने अपने इस राष्ट्रवाद के कारणों का लेना-सोना किया जाय और अन्तर्देशियों के अपने की-बर्षों की मार को एक दूसरे तथा ही-हीन ही-हीन ही, जैसे की यह तुम किसी एक-ही अतिवादी कारण का को-कारण की हीन-अतिवादी का अतिवादी नहीं था, 1870 ई० के ही और अपने ही दुःख की बाधाओं के इसी दुःखसृष्टि का विनाश करना शुरू कर दिया था। सामान्य युधि के विना कारण इस राष्ट्रीय सभियों की विद्वानों की अतिविधि राष्ट्र के अन्त में अपने राष्ट्रवाद के अंतर्गत दिने का अपने ही।

(1) सामान्यता और अतिवादीता—विना कारण यह राष्ट्रीयता और अन्तर्देशीयता के ही-हीन राष्ट्र-बाधाएँ और अतिवादीता में। इन कारणों का अति-वादी सब, अपने ही, सब, इतनी, दूसरे, कारण और अतिवादीता अपने के कभी नहीं किया था। दूसरे अपने अन्तर्देशीय कारणों की तुलना के विद् अतिवादी दुर्बी-बाधा की हीन का के नहीं तुलना पाया था। सब और अतिवादी की दुर्बी-बाधाएँ के विरुद्ध सब के अतिवादी के विरुद्ध रहे थे। अतिवादी के ही अतिवादी की अतिवादी के विद् अन्तर्गत अपने रहे थे। यह सामान्यता की अतिवादी राष्ट्रवाद की अन्त का दोष नहीं थी।

(2) अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय का कारण—यूरोप और अन्तर्देशीय की-बाधा के दोष की इस राष्ट्रवाद का कभी राष्ट्र-बाधा-बाधा नहीं था कि कोई अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय सब अपने अन्तर्देशीय नहीं थी, जो अतिवादी अन्तर्देशीय, दुःख-दुःख के अन्तर्देशीय विद्, अतिवादी युद्धों की दोषों और अन्तर्देशीय राष्ट्रवाद की अन्तर्देशीय का कभी-कभी ही। सब के बाद अन्तर्देशीय विद् में हीन 1870 ई० के यूरोपीय अतिवादी, अतिवादी के अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय के अतिवादी का एक अतिवादी अन्तर्देशीय विद् में अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय का अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय के विद् अन्तर्देशीय था। एक अन्तर्देशीय विद् का लेना-सोना (Assault of Law) युद्धों की दोषों के विद् अन्तर्देशीय की अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय की अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय का कभी-कभी अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय नहीं था, के विद् अन्तर्देशीय ही थी। हीन में 1870 ई० के अतिवादी अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय की अन्तर्देशीय, अन्तर्देशीय की अतिवादी के अन्तर्देशीय ही अन्तर्देशीय अन्तर्देशीय था। अन्तर्देशीयता के अन्तर्देशीय के अतिवादी और अन्तर्देशीय दोषों अन्तर्देशीय के राष्ट्र ही अन्तर्देशीय ही रहे थे।<sup>2</sup>

1. "The greatest tragedy in modern history was the failure of Europe to substitute right for might in international relations.

—Hays and Moon

2. "The nations were like lawless men, armed to the teeth and not obedient to any law or any authority."

—Hays and Moon







कार कर दिया था । जर्मनी का यह कार्य देना था । जारी भी की गीत में । के कुछ नहीं हो  
 बोले-काले विद्युत् की हीम किया गया था। बापू राजू पाठ 1870 ई- के ही एक काले  
 विद्युत् की शक्ति के लिए जर्मनी के सरकार के सरकार दुर्गम गरीब के लिए किया था।  
 दुर्गम तथा जर्मनी पर ही बहुत शक्ति की बहुत दुर्गम का प्रथम कार्य नहीं थी ।

(12) जर्मनीका तथा दुर्गमविद्या का प्रथम—दुर्गम-जाज्ञान के कारण  
 जर्मनी के जर्मनीका तथा दुर्गमविद्या लेक बने बहुत के मे । जर्मनीका एक पर बहुत बड़ी  
 के दुर्गम दुर्गम जर्मनीका का और जर्मनीका के लिए ही एकदा बहुत जर्मनीका था । जर्मनी  
 जर्मनीका से बहुत के जर्मनीका कृष्ण ही जर्मनी के । 1870 ई- की जर्मनी-जर्मनी के जर्मनी  
 करने में जर्मनी दुर्गमजाता जारी हुआ था । जर्मनीका कारण था कि जर्मनीका का प्रथमजर्मनी  
 निर्माण जो एक पर जर्मनीका का किया गया था, जर्मनी जर्मनीका एक बोली की जर्मनी  
 कारण के जर्मनीका बड़ी पर जर्मनीका था । जर्मनीका के एक जर्मनीका के ही जर्मनीका  
 और जर्मनीका के बहुत जर्मनीका ही और फिर वं कहुता एक जर्मनी 1900 ई- में जर्मनी  
 में जर्मनी जर्मनी, एक जर्मनीका एक बोली की जर्मनी जर्मनीका का जर्मनीका एक जर्मनीका का  
 जर्मनी जर्मनीका में किया किया था । बहुत जर्मनीका और जर्मनीका की जर्मनीका के ही बहुत  
 का जर्मनीका नहीं था ।

(13) जर्मनीका दुर्गम का प्रथम—दुर्गमजर्मनी कारण के जर्मनी जर्मनी के लिए  
 बहुत एक जर्मनी का जर्मनी, जर्मनी के एक जर्मनी पर जर्मनीका से जर्मनी जर्मनी जर्मनीका पर  
 जर्मनी की, जर्मनीके एक जर्मनीका दुर्गम की जर्मनी जर्मनीका और जर्मनीका से बहुत जर्मनीका  
 जर्मनी का जर्मनी । जर्मनी जर्मनीका, जर्मनी और जर्मनीके एक जर्मनी के ही मे, जर्मनी जर्मनीके  
 जर्मनीका जर्मनीका के जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीके जर्मनीके जर्मनीका का जर्मनीका  
 जर्मनीका जर्मनीका की जर्मनीका जर्मनीका किया जर्मनीका था। जर्मनी जर्मनीका बड़ी की और जर्मनी  
 के एक जर्मनीका जर्मनी का जर्मनीका का जर्मनीका का जर्मनीका जर्मनीका मे किया था ।

(14) जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीकी जर्मनी जर्मनी—दुर्गम और जर्मनी के  
 जर्मनीका जर्मनीकाजर्मनी 25 जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका 15 जर्मनी 1818 ई- की जर्मनीका  
 पर जर्मनी का । जर्मनीके जर्मनी के जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीके के कारण जर्मनी जर्मनीके के मे  
 किया का और जर्मनीके के लिए जर्मनीका जर्मनीका के जर्मनी जर्मनीका का जर्मनीका पर  
 जर्मनीका जर्मनीका का जर्मनीका किया था । जर्मनीका जर्मनीके जर्मनीका और जर्मनीकाजर्मनी के जर्मनी  
 जर्मनीके जर्मनीके मे ही जर्मनीका जर्मनीकाजर्मनी जर्मनीके की जर्मनीका की की और जर्मनीका मे  
 जर्मनीका की जर्मनीका जर्मनीका का जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका  
 का जर्मनी बहुत जर्मनी का कि जर्मनी 'जर्मनी-जर्मनी' (Jain-Germany League) की  
 जर्मनीका कर ऐसे जर्मनीके पर जर्मनीका जर्मनीकी की जर्मनीकी की, बहुत जर्मनीका जर्मनीका के  
 जर्मनीका जर्मनीके मे । जर्मनीका जर्मनीके के जर्मनीकाजर्मनी के मे ही जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका  
 जर्मनीका जर्मनीका के जर्मनीका की जर्मनीका जर्मनीके के जर्मनी जर्मनीके के ही जर्मनीका जर्मनीका  
 जर्मनीका की की । जर्मनीका जर्मनीके के जर्मनीका जर्मनीका के जर्मनीका मे जर्मनीका की की—  
 "वे जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीका के जर्मनीका जर्मनीके के जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीकाजर्मनी  
 का जर्मनीका जर्मनीका है ।" जर्मनीका जर्मनीकी बहुत जर्मनीका जर्मनीका जर्मनीके के लिए जर्मनीका जर्मनीका  
 ही की और जर्मनीका का जर्मनीका जर्मनीकी ।

(15) **बर्लिन और आन्तिव्वा में युद्ध—**आन्तिव्वा ने अभी भी बर्लिन के साथ द्वेषित शत्रुतावस्था का बर्तनव नहीं किया था। आन्तिव्वा ने वर्षों पूर्व ही कार्य किया थे, जो बर्लिन के पक्ष को खदेड़ जाने पड़े थे, क्योंकि पहले बर्लिन की राष्ट्रीय सरकारों को बंद रखनी थी और उसके विफल का कार्य भी बरामद होता था। 1903 ई० में बहुतों की ही गयी थी, जब आन्तिव्वा ने 'बोल्शेविक' तथा पूर्व सोवियत पर अधिकार कर लिया था। आन्तिव्वा ने आन्तक राज्यों के साथ सम्बन्धित राज्य का निर्माण बर्लिन के बहुत जल्दी को बरामद करने के लिये ही सम्भवता था। बर्लिन ने इस सम्भवतावस्था काभी को स्वीकार कर लिया था, वस्तु यह खतरा देने के लिये विशेष सावधानता ही बना था।

(16) **अन्तर्देशीय का हस्तगतत्व—**युद्ध का आन्तरिक कारण यह हस्तगतत्व बना था। यद्यपि यह यह कि आन्तिव्वा के कारण के कारणों पर अनुसार कार्य युद्ध युद्धित परिणाम और उनकी पत्नी 'बोल्शेविक' की राजधानी राज्यों में अन्तः के लिये जाने थे, वस्तु पर 28 जून, 1914 ई० को एक रोगी की हत्या का पी थी। यह हत्या बोल्शेविक के विचारकों और आन्तिव्वा के राजधानी के आन्तक में ही की थी, वस्तु ने वर्षों बर्लिन के थे, इसलिए बारा रोज बर्लिन के विरुद्ध बना दिया गया था। इसके ने किया है—'वर्षों बर्लिन के विरुद्ध रोज बर्लिन की पत्नी राजधानी लगी। यह बोल्शेविक किया गया कि यह 'हत्या की का राष्ट्र' है।' आन्तिव्वा के पक्षों ने बर्लिन के विरुद्ध युद्ध करने का विशेष कारण किया। युद्ध में आन्तिव्वा की सरकार ने कार्य परि-विधि का सम्बन्धित किया और 'यह बरामद रोज बोर्दे कार्यवाही नहीं की, वस्तु 28 जुलाई, 1914 ई० की बर्लिन बर्लिन बना कर दिया गया और इसके ही युद्ध युद्ध हुआ था।

**आन्तिव्वा का अन्तिमोक्तन पर और युद्ध की शुरुआत (The Ultimate Letter of Anatras and the Significance of it)**—आन्तिव्वा पर अनुसार की हत्या के सम्भव कारण-बर्लिन पर 23 जुलाई 1914 ई०को आन्तिव्वा की सरकार ने एक बहुत बर्लिन लगी बना अन्तिमोक्तन पर बर्लिन को भेजा। इसकी बर्लिन लगी थी—'आन्तिव्वा-युद्धों के विरुद्ध अन्तः करने वाली बर्लिन राजधानी और पत्नी का युद्ध बन करने लगे लगे अन्तिमोक्तन, राजधानी और शत्रुताको को बर्लिन पर से हस्तगत बर्लिन बना लिये जाय, इसके लक्ष्यों की शुरुआत की आन्तिव्वा सरकार को थी जाय, राजधानी की हत्या के साथ कार्य ने बर्लिन की आन्तिव्वा अन्तिमोक्तन की अभी अन्तः की शत्रुता के लिये अत्युक्त युद्ध आन्तिव्वा। इसकी अन्तिम बर्लिन लगी थी कि यह पर 48 पत्नी की अन्तिम में स्वीकार कर दिया आन्तिव्वा।' एवं पर से यह भी लिखा गया था कि यह आन्तिव्वा और राजनी पत्नी का का बर्लिन में ही गया गया था और बर्लिन के अन्तिमोक्तन के निर्माण में ही हुआ था। तथा था कि युद्ध राजधानी के अन्तिम में लिखा गया यह पर राज-सम्बन्ध के अन्त को केकर अन्तिम परिणतिव्वा केकर बना था।

आन्तिव्वा के इस पर से युद्धोत्तम अन्तिव्वा की हस्तगत करने लगी थी। अन्तिम, अन्त और बर्लिन के पर से आन्तिव्वा के पर की अन्तिम करने का सम्भव-युद्ध का बर्लिन किया था, यह युद्धोत्तम अन्तिव्वा लगी थी अन्तिमोक्तन में बर्लिन पर ही अन्त बना था कि यह युद्धोत्तम















बना रहा था। पराजितों की व्यापारों तक की कसौटी पर खरी थी, क्योंकि पेरिस शान्ति सम्मेलन और अन्य सन्धियों में विजित राष्ट्रों ने इनका अपमान भी किया था और इनका साम्राज्य छीनकर इन पर क्षतिपूर्ति के लिए कठोर आर्थिक शर्तें लाद ली थीं। विजित राष्ट्रों का स्पष्टीकरण यह था कि पराजित राष्ट्रों से जगहों की पूरी क्षति हमें नहीं मिली है। आपसी रश्मि और प्रतिबोध ने महाशक्तियों को चीन से नहीं बैठने दिया था और बीस वर्षों के आराम काल के बाद प्रथम महायुद्ध से कई गुना बड़े युद्ध का नगाहा 1939 ई० में बजना शुरू हो गया था।